राजभाषा भारती

1992

राजभाषा भारती

भारती

ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लि. के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री जी.वी. राव भारतीय साधारण बीमा निगम से अध्यक्षीय राजभाषा शील्ड लेते हुए। प्रबंधक (राजभाषा) श्री एम.आर. बेदी भी साथ में खड़े है।

भाषा विभाग, राजस्थान द्वारा आयोजित राजभाषा समारोह में भाषा परिचय के उपकरण अंक का विमोचन करते हुए शिक्षा एवं भाषा मंत्री श्री हरि कुमार औदिच्य (बीच में) उनके दाएं खड़े हैं कुलपति राजस्थान विश्वविद्यालय के डा. रामेश्वर शर्मा एवं भाषा निदेशक श्री कलानाथ शास्त्री एवं मंत्री जी के बांए खड़े हैं शिक्षा एवं भाषा सचिव श्री ईश्वर चन्द्र श्रीवास्तव एवं राजस्थान विश्वविद्यालय के कुल सचिव श्री रोहित ब्राण्डन।

दिवसेनैव तत् कुर्याद् यन रात्रौ सुखं वसेत् ।
अष्टमासेन तत् कुर्याद् येन वर्षा : सुखं वसेत् ।। --विदुर नीति

मनुष्य को चाहिए कि दिन में ऐसा कार्य करे जिससे रात्रि में सुख पूर्वक रहे, किसी प्रकार की चिन्ता न हो । इसी प्रकार वर्ष भर के आठ महीनों में ऐसा प्रयत्न करे कि वर्षा काल में सुखपूर्वक रह सके ।

राजभाषा भारती

राजभाषा विभाग की त्रैमासिकी

वर्ष : 14
अंक : 56

माघ--फाल्गुन 1913 शक
जनवरी-मार्च, 1992

संपादक

डॉ. महेशचन्द्र गुप्त डी. लिट.
निदेशक (अनुसंधान)
फोन : 617807

उप-संपादक

रणजोत कुमार सेन
अनुसंधान अधिकारी
फोन . 698054

संपादन सहायक

शांति कुमार स्याल
फोन: 698054

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है

निःशुल्क वितरण के लिए

पत्र-व्यवहार का पता :
संपादक, राजभाषा भारती,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
लोकनायक भवन (11वां तल)
खान मार्किट, नई दिल्ली-110003

संपादकीय **अनुक्रम**

पाठकों के पत्र

☐ **चिंतन**

1. हिंदी और तेलुगु साहित्य-तुलनात्मक अध्ययन का दिशा-निर्देश --प्रो. जी. सुंदर रेड्डी 1
2. अनुवाद के आईने में सांस्कृतिक प्रतिबिंब --डा. अमर सिंह वधान 4
3. सूचना एवं प्रसारण संबंधी कार्यों में हिंदी --हरि बाबू कंसल 6
4. बारहवीं सदी से राज-काज में हिंदी --डा. राम बाबू शर्मा 7
5. हिंदी में काम के मेरे अनुभव --आई.पी. हिंगोरानी 9
6. स्वतंत्र भारत में शिक्षा --विश्वंभर प्रसाद 'गुप्त बन्धु' 10
7. राजभाषा हिंदी और भारतीय अंतर्राष्ट्रीय अंक --डा. रमेश चन्द्र शुक्ल 13
8. आठवीं पंच वर्षीय योजना में हिंदी के विकास के लिए अपेक्षा --डा. वीरेन्द्र कुमार दुबे, डी.लिट. 15

☐ **साहित्यिकी**

9. उर्दू : साहित्य भाषा और राजभाषा --प्रदीप कुमार बक्शी 17

☐ **विश्व हिंदी दर्शन**

10. समाजवादी यूरोप में हिंदी 21
11. पाकिस्तान की हिंदी प्रचारक डा. शाहिदा हबीब 24

☐ **पुरानी यादें--नए परिप्रेक्ष्य**

12. रूसी अध्येता इवान मिनाएव --उदय नारायण सिंह 25
13. हरिवंश राय बच्चन: हिंदी के व्यवहार को बढ़ाने के प्रबल समर्थक --विश्वम्भर प्रसाद 'गुप्त बन्धु' 26
14. महान् हिंदी सेवी राजर्षि टण्डन 27
15. महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय को श्रद्धांजलियां 27

☐ **समिति समाचार**

(क) केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नई दिल्ली 28
(ख) हिंदी सलाहकार समिति 31
(ग) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें 32

1. अल्प संख्यक आयोग 2. खान मंत्रालय 3. वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद 4. दिल्ली प्रशासन की राजभाषा कार्यान्वयन समिति

1258 HA/92

(घ) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें 36

1. ईटानगर 2. भुवनेश्वर 3. तिरुअनंतपुरम् 4. सिलचर
5. बंबई (उपक्रम) 6. नागपुर बैंक 7. गुवाहाटी 8. वाराणसी

(ङ) अन्य राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें 45

1. क्षेत्रीय तसर अनुसंधान केन्द्र, केन्द्रीय रेशम बोर्ड इम्फाल
2. केन्द्रीय उत्पाद शुल्क समाहर्तालय : नागपुर
3. निदेशक अनुरक्षण (लेखा), पश्चिम दूर संचार क्षेत्र, केन्द्रीय तारघर परिसर, नागपुर
4. इलाहाबाद केन्द्रीय परिमण्डल, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग
5. पंजाब नेशनल बैंक अंचल कार्यालय, भोपाल
6. केन्द्रीय उत्पाद शुल्क समाहर्तालय, कानपुर
7. कार्यालय सहायक समाहर्ता, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क प्रभाग 1 इंदौर
8. आकाशवाणी, जोधपुर
9. केनरा बैंक अंचल कार्यालय, बंबई
10. भारतीय जीवन बीमा, मंडल कार्यालय, लखनऊ
11. इफको

☐ राजभाषा सम्मेलन संगोष्ठियां 54

1. नेशनल मिनरल डैवलपमैन्ट कार्पोरेशन लि. हैदराबाद
2. केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, तिरुअनंतपुरम्
3. डा. बालशौरीरेड्डी का आन्ध्र विश्व विद्यालय में भव्य सम्मान
4. राजभाषा क्षेत्रीय सम्मेलन, भोपाल
5. आकाशवाणी भोपाल
6. परिवहन एवं डीजल संगठन
7. नगर समन्वय समिति भेलपुरा (वाराणसी)
8. राष्ट्रीय संगोष्ठी, झांसी
9. नोएडा में कवि सम्मेलन

☐ हिंदी के बढ़ते चरण 69

1. तिरुअनंतपुरम् मंडल रेलवे
2. आर्डनैन्स फैक्टरी अम्बाझारी
3. हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कार्पोरेशन (हुड्को)
4. राजभाषा के प्रयोग में पंजाब नेशनल बैंक भोपाल

☐ हिंदी दिवस सप्ताह समारोह 64

☐ हिंदी कार्यशालाएं 90

☐ विविधा

○ समाचार दर्शन 93
○ राजभाषा प्रोत्साहन/पुरस्कार योजनाएं 102
○ प्रेरणा पुंज 105
○ पुस्तक समीक्षा 108
○ आदेश—अनुदेश 110

भारत में सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा—"हिंदी" सांविधिक रूप से संघ की राजभाषा है। परन्तु हिंदी को यह स्थान यकायक ही नहीं मिल गया। इसके पीछे व्यवहार की एक लंबी परम्परा है। आज से लगभग 800 वर्ष पहले अर्थात् बारहवीं शताब्दी में भी भारत में राज-काज में हिंदी का प्रचलन था। राजभाषा के इस शोधपरक तथ्य पर प्रकाश डाला है संबंधित विषय के विद्वान् डॉ. रामबाबू शर्मा ने।

अंग्रेजों ने अपने शासन काल के दौरान भारतीयों को पराधीन बनाए रखने के उद्देश्य से भारतीय संस्कृति अपहारक स्वभाषा भारत पर थोपी जिसका दुष्परिणाम अभी भी जारी है। स्वतन्त्र भारत के लिए भारतीय परिवेश के अनुकूल भारतीय शिक्षा पद्धति ही सर्वाधिक उपयुक्त है। इस शिक्षा नीति की विशिष्टियों को उजागर किया गया है श्री विश्वंभर प्रसाद गुप्त के सारगर्भित लेख में।

भारतीय अंकों के अन्तर्राष्ट्रीय रूप के बारे में सामान्यतः लोगों में बड़ा भ्रम है। आज जिन अंक-संकेतों (जैसे 1,2,3,.... आदि) का संसार के अनेक देशों में प्रचलन है। लोक भ्रम वश उन्हें अंग्रेजी अंकों की संज्ञा देते हैं जो सही नहीं है, लोगों के इस भ्रम का निराकरण किया गया है "राजभाषा हिन्दी और भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय अंक" नामक लेख में।

'चिन्तन' के अन्तर्गत इस बार हम हिंदी और तेलुगू साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर रहें हैं। हिंदी और तेलुगू दोनों ही भाषाओं के साहित्य का आरंभ मुगलों के आगमन से पूर्व हुआ और तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक परिवेश में उनका विकास-क्रम चलता रहा। दोनों साहित्यों की इस विकास धारा का दिग्दर्शन कराया है प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी ने।

अनुवाद और संस्कृति का घनिष्ठ संबंध रहा है। अनुवाद के स्वरूप—विश्लेषण के आलोक में बहुत कुछ लिखा जा चुका है परन्तु भिन्न संस्कृतियों को जोड़ने में अनुवाद की सक्रिय भूमिका पर बहुत कम लिखा गया है। अनुवाद के इसी पहलू पर प्रकाश डाला गया है, डॉ. अमर सिंह वधान के लेख में।

संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित भारत की 15 भाषाओं में "उर्दू" भी शामिल हैं। इस भाषा के साहित्यिक और राजभाषायी पहलू का शोधपरक दृष्टि से विवेचन किया है श्री प्रदीप कुमार बख्शी ने अपने लेख "उर्दू : साहित्य भाषा और राजभाषा" में।

"विश्व हिंदी दर्शन" के अन्तर्गत इस बार हमने "समाजवादी यूरोप में हिंदी" की स्थिति पर प्रकाश डाला है जिससे पाठकों को इन देशों में हिंदी के क्षेत्र में हो रही गतिविधियों की झलक मिल सकेगी।

लाहौर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्ष डॉ. शाहिदा हबीब ने लाहौर में "हिन्दी लिटरेरी सोसाइटी" की स्थापना की है। उनकी मान्यता है कि ..... "पाकिस्तान को मजबूत बनना है तो हिंदी पढ़नी होगी .....।" इस अंक में में हम आपका परिचय उक्त हिंदी अध्यापिका से करवा रहें हैं।

"मधुशाला" के लोकप्रिय गायक कवि "बच्चन" से पाठक वर्ग परिचित हैं। हाल ही में महामहिम राष्ट्रपति ने उन्हें "सरस्वती सम्मान" प्रदान किया है । इसी पृष्ठभूमि में कवि से संबंधित कुछ प्रेरक प्रसंग प्रस्तुत किए गए हैं।

समिति समाचार, हिंदी संगोष्ठियां / सम्मेलन तथा हिंदी के बढ़ते चरण और आदेश-अनुदेश स्तंभों में पूर्ववत् सामग्री दी गई है जिससे देश में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से संबंधित गतिविधियों की झलक पाठकों को मिल सकेगी ।

श्री वीरेन्द्र प्रकाश ने भारत सरकार के राजभाषा विभाग के सचिव के नाते पदभार ग्रहण किया है । उनके मार्गदर्शन में 'राजभाषा भारती' का प्रत्येक अंक राजभाषा हिंदी के प्रयोग में उत्तरोतर वृद्धि के संकल्प को पूरा करने के लिए समर्पित रहे, इसके लिए हम प्रयत्नशील हैं ।

आशा है कि पिछले अंकों की भांति आप पत्रिका के इस अंक को भी रुचिकर और उपयोगी पाएंगे। पत्रिका को और प्रभावशाली बनाने के लिए आपके सुझावों की हमें सदैव प्रतीक्षा रहेगी।

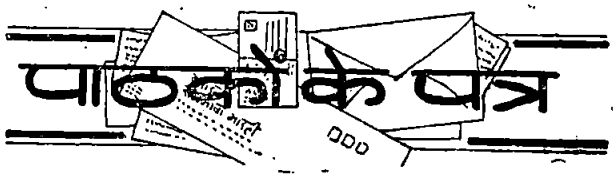

राजभाषा भारती (त्रैमासिक) पत्रिका राजभाषा अनुभाग में कार्यरत कर्मचारियों को राजभाषा के कार्यान्वयन में तेजी लाने के लिए तथा नए-नए तकनीकों को अपनाने के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होती है।"

—जी. पी. गुप्ता, उप-प्रभागीय प्रबंधक, सिंडिकेट बैंक, विजयवाड़ा □

पत्रिका में दिए गए आलेख एवं रचनाएं निश्चय ही राजभाषा के बहुत आयाम को आच्छादित करती है तथा हमारा ज्ञानवर्द्धन भी करती है। पत्रिका और निखरे, यही हमारी शुभकामना है।

राजभाषा अधिकारी, न्यू बैंक ऑफ इंडिया, प्रादेशिक कार्यालय, बंबई □

"राजभाषा भारती अंक-51 (अक्टूबर-दिसम्बर, 1990) मिला। राजभाषा भारती का प्रत्येक अंक विशेषांक एवं संदर्भ ग्रंथ का रूप धारण कर रहा है। हिंदी की प्रगति के कई आयामों के शासकीय प्रयासों का वर्णन मिलता है।

अंक में श्री जगदम्बी प्रसाद यादव ने बड़े अच्छे ढंग से हिंदी को राष्ट्रभाषा, राजभाषा व संपर्क भाषा के रूप में वर्णित किया है। हिन्दी को सारे राष्ट्र द्वारा राष्ट्रभाषा के रूप में लागू करना या व्यवहार में लाना कितना जरूरी है, यह मुझे तब अनुभव हुआ, जब मैं दिसम्बर, 1990 में सपरिवार दक्षिण भारत (कन्याकुमारी तक) छुट्टी किराया रियायत पर गया था, क्योंकि हम अपने ही राष्ट्र के नागरिकों से विचार-विमर्श करने में अपने आपको असमर्थ पा रहे थे। अतः समूचे राष्ट्र को हिंदी भाषा को एकदम अपनाना चाहिए ताकि हमारी संस्कृति और सभ्यता को बनाए रखा जा सके।

—पी०सी०रियाल, स्केल, अधिकारी, पंजाब नेशनल बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, हमीरपुर (हि. प्र.)

□

"अक्टूबर-दिसम्बर, 1990 का हिंदी दिवस विशेषांक भी मिला, तदर्थ धन्यवाद।

इसके सभी लेख सारगर्भित और उपयोगी प्रतीत हुए, इस विशेषांक के संपादन और प्रकाशन के लिए आपको हार्दिक बधाई।"

—युगल किशोर चतुर्वेदी, प्रियवंदा सदन, अशोक मार्ग, जयपुर (राज०) □

"विभिन्न केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों एवं उद्यमों में हो रही हिंदी गतिविधियों की जानकारी इस पत्रिका से प्राप्त होती रहती है। साथ ही साथ राजभाषा सम्बन्धी विभिन्न लेख, आदेश एवं निर्देश कर्मचारियों को न केवल इस सम्बन्ध में जानकारी ही उपलब्ध कराते हैं, वरन् उनमें राजभाषा के प्रति चेतना भी जागृत करते हैं। निश्चित रूप से राजभाषा-भारती इस क्षेत्र में एक अनुपम पत्रिका है।

—वी. के. सक्सेना, हिंदी अधिकारी, न्यूक्लियर पावर कार्पोरेशन राजस्थान परमाणु बिजलीघर, संयंत्र स्थल डाकघर-अणुशक्ति, कोटा (राज.)

□

"राजभाषा भारती अक्टूबर-दिसम्बर, 1990 देश के कोने-कोने में स्थित विभिन्न सरकारी कार्यालयों में हिंदी दिवस/सप्ताह के अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित करने की जानकारी देकर आपने अन्य कार्यालयों का भी उत्साह बढ़ाया है।

इसी अंक में डॉ. चन्द्रा सायता का लेख संक्षेपों की निर्माण प्रक्रिया काफी अच्छा लगा और हिन्दी संक्षिप्तों के निर्माण के लिए उन्होंने जो सुझाव रखे वे बड़े ही सटीक लगे।

—ए. जी. सोनी, हिंदी अधिकारी, रक्षा मंत्रालय, आर्डनेन्स फैक्टरी, अम्बाझरी, नागपुर-21

□

"राजभाषा भारती का अक्टूबर-दिसम्बर, 1990 का अंक मिला। यह अंक प्रकाशन की दृष्टि से एक वर्ष पुराना अवश्य है, किन्तु इसमें बासीपन कहीं नहीं है। इस अंक के सात-आठ लेख हमेशा काम में आने वाले हैं और अच्छी जानकारी देने वाले हैं। राजभाषा भारती के समकक्ष कोई दूसरा प्रकाशन नहीं, जो सरकारी हो और इतनी पठनीय सामग्री देता हो। हिन्दी भाषा के सामर्थ्य, शक्ति और प्रचार-प्रसार को प्रकट करने वाली पत्रिकाएं हैं। राजभाषा-भारती की पठनीय सामग्री सर्वश्रेष्ठ है।

—प्रो. विजयेन्द्र स्नातक, 5ए/3, राणा प्रताप बाग, दिल्ली-110007

राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित अक्टूबर-दिसम्बर, 1990 का हिन्दी दिवस विशेषांक पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

राजभाषा कार्यान्वयन सम्बन्धी संपूर्ण जानकारी, विचार-पूर्ण लेख, अद्यतन आदेश आदि देखकर अति प्रसन्नता होती है।

निःसंदेह यह पत्रिका राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति में बाधक मार्ग को प्रशस्त करने की सशक्त प्रेरणा पुंज की द्योतक है।

--एस. मंजुला, हिंदी सहायक, द मण्डया नेशनल पेपर मिल्स, लिमिटेड, बेलागुला, कर्णाटक--571606

□

प्रस्तुत अंक-51 में राजभाषा हिंदी की मुख्य-मुख्य गति-विधियों, कार्यकलापों तथा उपलब्धियों का सचित्र विवरण देखने को मिला, जो वास्तव में प्रशंसनीय एवं सूचनाप्रद है। भारत के प्रथम उपप्रधानमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल का संदेश राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आज भी प्रासंगिक और प्रेरणादायक है। आशा है, "राजभाषा भारती" हिन्दी की चतुर्दिक प्रगति और प्रचार-प्रसार में सतत् प्रयत्नशील रहते हुए इसे सुन्दर से सुन्दरतम बनाने में सफल होगी।

इसके सफल प्रकाशन के लिए हमारी शुभकामनाएं स्वीकार करें।

--बलराज शर्मा, हिंदी अधिकारी, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण 4, चौरंगी लेन, कलकत्ता-16

□

आपकी लोकप्रिय पत्रिका "राजभाषा भारती" का अक्टूबर--दिसम्बर, 1990 का अंक प्राप्त कर लिया है। पत्रिका शुरू से अन्त तक पढ़ा। राजभाषा भारती हिन्दी के प्रसार में उल्लेखनीय योगदान दे रहा है। पत्रिका उच्चकोटि की है, इसमें दो मत नहीं हो सकता। मैं पत्रिका की सफलता की कामना करता हूं।

--रामेन्द्र सिंह, पुस्तकालयाध्यक्ष, सर्वहितैषी पुस्तकालय, ग्राम पो. तेलमर, (नालन्दा)

□

पत्रिका में इतने सारे विषयों/स्तम्भों को जिस क्रम एवं ढंग से समेटते हैं वह भी एक कला है। वह कला जो प्रत्येक सुधी पाठक को अखिरी पृष्ठ तक पढ़ने इस पत्रिका को आद्योपान्त देखने से ऐसा विश्वास हुआ कि आप लोग इसको अधिक से अधिक उपयोगी बनाने की दिशा में प्रयत्नशील हैं। पत्रिका में डॉ. राम कुमार मिश्र, उपनिदेशक का शब्दावली से संबंधित लेख बहुत ही अच्छा लगा और इसका उपयोग अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के संदर्भ में बड़ा ही उपयोगी सिद्ध होगा। इसी प्रकार कार्यान्वयन और इलेक्ट्रानिक उपकरण से संबंधित लेख भी अच्छे लगे। पत्रिका में विभिन्न कार्यक्रमों के जो चित्र प्रकाशित किए गए हैं उनसे संबंधित संस्थाओं का उत्साह वर्धन तो होगा ही, अन्य कार्यालय एवं व्यक्ति भी इससे प्रेरणा लेंगे।

--डा. नागेन्द्र नाथ पाण्डेय, संयुक्त निदेशक केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, कामर्स हाउस, उरा माला, करीम भाय रोड़, बेलार्ड एस्टेट, बम्बई--400038

□

चिंतन

हिंदी और तेलुगु साहित्य-तुलनात्मक अध्ययन की दिशा-निर्देश

□ प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी*

इतिहास से स्पष्ट होता है कि ईसा की सातवीं शताब्दी में आंध्र प्रदेश पर चालुक्य राजाओं का अधिकार था और उन्होंने तेलुगु को राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया था। तत्कालीन शिलालेखों में इसके प्रमाण विद्यमान हैं। उन शिलालेखों की भाषा से यह भी ज्ञात होता है कि उस समय भी भाषा प्राकृत के निकट थी। अतः आंध्र भाषा का उद्‌गम सातवीं शताब्दी से ही माना जाता है। पर स्थायी साहित्य का सृजन ईसा की ग्यारहवीं शताब्दी में नन्नय्या के समय से होने लगा था। नन्नय्या के पूर्व भी आंध्र साहित्य के नमूने मिलते हैं। पर नन्नय्या के भाषा-सागर में वे सभी लहरें विलीन हो गई थीं। अतः नन्नय्या ही आंध्र के प्रथम उल्लेखनीय कवि माने जाते हैं।

इसी प्रकार अपभ्रंश या प्राकृताभास हिंदी के पद्यों का सबसे पुराना पता आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार विक्रम की सातवीं शताब्दी के अन्तिम चरण से लगता है। पर स्थायी साहित्य का सृजन विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी में मुञ्ज और भोज के समय से ही होने लगा था। इस से यही निष्कर्ष निकलता है कि हिन्दी और तेलुगु में भाषा और साहित्य का उद्‌गम एक ही समय के लगभग हुआ था।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं के साहित्य का आरम्भ मुगलों के आगमन के पूर्व ही हुआ था। पर उस समय की साहित्य प्रवृत्ति किसी निश्चित प्रेरणा पर आधारित नहीं थी। धर्म, नीति, शृंगार, वीर आदि कई विषय का साहित्य में समावेश हुआ। अतः हिन्दी में चन्द वरदाई और तेलुगु में नन्नय्या के प्रादुर्भाव होने तक का साहित्य बहुरंगी और विविध विषयात्मक था। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार यह अनिर्दिष्ट लोकप्रवृत्ति संवत् 1050 वि. से लेकर संवत् 1200 वि. तक रही। इसके पश्चात् ही चन्द वरदाई का "पृथ्वीराज रासो" प्रकाश में आया जो हिन्दी का प्रथम प्रबन्ध काव्य माना जाता है। ठीक इसी समय पर आंध्र भारती के चरणों में आदि कवि नन्नय्या द्वारा संस्कृत महाभारत का आंध्रानुवाद अर्पित किया गया था। यद्यपि यह अनुवाद कहा जाता है फिर भी नन्नय्या की अनुवादपद्धति इतनी परिष्कृत, स्वतंत्र और सरस है कि उसे पढ़ते समय मौलिक रचना का ही आनन्द प्राप्त होता है। मूल से भिन्न मौलिक उद्‌भावनाओं का भी यत्र-तत्र समावेश मिलता है। एक परवर्ती कविवर के द्वारा "प्रबन्ध मंडली" के रूप में इसकी प्रशंसा भी की गई थी। भाषा, छंद, प्रसंगयोजना, चरित्रचित्रण, गद्य-पद्य का सम्मिश्रण, रस-सृष्टि आदि में परवर्ती प्रबंधकारों ने नन्नय्या के आदर्श को ही अपना लिया है। अतः हिन्दी साहित्य के लिए चन्दबरदाई ने जो प्रशंसनीय सेवा की, आंध्र वाङ्मय के लिए नन्नया उससे भी महत्त्वपूर्ण कार्य कर गए।

ये दोनों अपनी अपनी भाषाओं के आदि कवि थे। दोनों राजाश्रय में पले हुए थे। इधर जब राजराज नरेंद्र भी राज-सभा में नन्नय्या की "नव्य-नवनीत" सदृशवाणी अपना विमल-विलास प्रदर्शित करती थी, तो उधर दिल्ली के अन्तिम हिन्दू सम्राट महाराज पृथ्वीराज के दरबार में चन्दबरदाई की ओजस्विनी गिरा (वाणी) भारतीय वीरता के बुझते हुए दीपक को स्नेहदान करती थी। दोनों की कविता में भारत के उज्ज्वल अतीत के वीर योद्धाओं और महाप्राण चेताओं का गुणगान ही मिलता है। दोनों की काव्य-शैली में प्रबंध रचना की प्रशंसनीय पटुता है। पर एक अंतर भी है। चंद की कविता पृथ्वीराज के गुणगान तक ही सीमित रही। उस अखिल भारतीय आदर्श का इस में समावेश नहीं हो पाया जो नन्नय्या की वाणी की विशेष विभूति है।

चंदबरदाई के द्वारा प्रचलित "रासो" काव्य की परंपरा के अनुकरण पर जिस प्रकार हिंदी के वीर-गाथा कवियों की कई महत्त्वपूर्ण रचनाएं निकलती थीं, उसी प्रकार नन्नय्या के द्वारा महाभारत का जो अनुवाद कार्य शुरू हुआ उसका

*विद्यानगर विशाखापट्टणम्-3

शेषांश अन्य दो प्रसिद्ध कवियों के द्वारा पूरा किया गया था। तिक्कन्ना और एर्राप्रगड ये दोनों चिरस्मरणीय कवि हैं। नन्नय्या, तिक्कन्ना और एर्राप्रगड को आंध्र के "कवित्रय" के नाम से अभिहित किया गया है। इन तीनों महाकवियों की अविराम सेवा के कारण आज आंध्र जनता के लिए संस्कृत महाभारत का स्वाद उसी की वाणी में आस्वाद्य हो रहा है।

संस्कृत में 'कादंबरी' और हिंदी में "पृथ्वीराज रासो" की भांति तेलुगु में नन्नय्या का "भारत" भी एक ही हाथ का प्रयास नहीं माना जा सकता। "कादंबरी" की भांति "पृथ्वीराज रासो" का भी अंतिम भाग चंद के पुत्र जल्हण ने अपने पिता के आदर्श पर पूरा किया था। नन्नय्या भी अपनी रचना के आरंभ में अपने एक आप्त मित्र नारायण भट्ट के प्रति अपनी कृतज्ञापूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते ह । उनका कहना है कि अर्जुन को श्रीकृष्ण ने जैसा सहयोग प्रदान किया, वैसा ही सहयोग नारायण भट्ट के द्वारा उन्हें मिला था । नारायण भट्ट की यह सेवा स्तुत्य है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार हिंदी साहित्य का आदिकाल संवत् 1050 से लेकर संवत् 1375 तक चलता है। इसे आंध्र साहित्य का भी आदिकाल सुगमता से माना जा सकता है। तीन चार शतांब्दियों की इस सुदीर्घ अवधि में दोनों भाषाओं का साहित्य सुसंमृद्ध हो चला है। हिंदी में "रासो" काव्य की परंपरा और तेलुगु में "भारत" का अनुवाद इस काल की विशेष देन है। हिंदी में चंदबरदाई के अतिरिक्त नरपति नाल्ह, भट्टकेदार, जगनिक और रणमल आलोच्य काल के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं। तेलुगु में "भारत" के अनुवादक कवित्रय के अतिरिक्त गोनबुद्धा रेड्डि, भास्कर, सोमना आदि भी प्रसिद्ध हुए थे। ये तीनों रामायण काव्य के सफल प्रणेता थे। तिक्कन्ना ने भी रामायण की रचना की थी। यहां ध्यान देने की बात यह है कि आंध्र साहित्य के आदिकाल में ही दो तीन प्रसिद्ध रामायण काव्यों की रचना हुई थी जब कि हिंदी साहित्य में "रघुनाथगाथा" के "स्वांतस्सुखाभिलाषी" गायक अभी उदित होने को था।

आलोच्य युग में आंध्र साहित्य की सब से विलक्षण विभूति उसका शैव साहित्य है जिससे हिन्दी साहित्य एकदम वंचित रह गया। आंध्र साहित्य की मूल प्रेरणा शैव-धर्म में ही पाई जाती है। इस शाखा के तीन कवि आदि काल में प्रसिद्ध हुए--नन्नेचोड, पंडिताराध्य और सोमनाथुडु। ये तीनों शैव सिद्धांतों के अन्वेषक, आराधक और अनुगायक थे। लोकप्रिय छंदों में सुबोध शैली को अपनाकर उन्होंने कई धार्मिक रचनाएं की थीं जिनमें से उल्लेखनीय हैं--पंडिताराध्य का "शिवतत्त्वसारमु" और सोमनाथ का "बसवपुराणमु", । "शिवतत्त्वपुराणमु" धार्मिक सिद्धांतों का संग्रहनाम है; काव्य तत्व से शून्य है। पर सोमनाथ की रचना में धार्मिक सिद्धांतों का कलात्मक प्रतिपादन है जो साधारण अर्द्ध-शिक्षित जनता के लिए भी सुगम-सा लगता है। यही कारण है कि उन को "वीरशैव शाखा का मस्तिष्क" कहा जाता है। भावुकता की अधिकता के कारण उन की कविता अधिक चित्ताकर्षक लगती है। साधारण जनता में सुप्रसिद्ध और सुश्राव्य "द्विपद" छंद को अपना कर उन्होंने उसे काव्य-गौरव से प्रतिष्ठित किया है। इस प्रकार के साहित्य का उदाहरण हिंदी में भी हो तो आंध्र के इस वीर-शैव-साहित्य को आत्मसात् करके "राष्ट्रवाणी" अपना श्रेय लाभ ही कर सकेगी।

स्पष्ट है कि दोनों भाषाओं के आदि काल का साहित्य वीररस प्रधान ही रहा। आंध्र का धार्मिक साहित्य वीरशैव से संबंधित था। अतः आदिकाल दोनों भाषाओं में सर्वात्मना वीरगाथा काल ही कहा जा सकता है।

आदिकाल के पश्चात् संवत् 1375 से लेकर संवत् 1700 तक दोनों भाषाओं में पूर्वमध्यकाल चलता है। हिंदी की भांति तेलुगु में भी इस युग में भक्ति साहित्य की प्रधानता रही। पर तुलनात्मक दृष्टि से हिंदी में भक्ति साहित्य की रचनाएं अधिक मिलती हैं। सूर, तुलसी, कबीर और जायसी ने भक्तिमार्ग को भिन्न-भिन्न शाखाओं का प्रतिनिधित्व जिस रूप में किया है उसका सादृश्य तेलुगु में बहुत कम मिलता है। निस्संदेह भक्तकवि पोतन्ना, संत त्यागराज और स्पष्टवाक् वेमन्ना क्रमशः सूर, तुलसी और कबीर की समता कर सकते हैं। पर जायसी जैसे प्रेममार्गी का आंध्र साहित्य में नितांत अभाव है।

कृष्णधारा के कवियों में सूरदास और पोतन्ना एक दूसरे से साम्य रखते हैं। दोनों भक्त पहले हैं और कवि बाद में। लीलामय श्रीकृष्ण की रहस्यमयी क्रीड़ाओं में दोनों का भावुक चित्त एक समान रम गया था। दोनों का हृदय भावुकता और तन्मयता से ओतप्रोत है। पर पोतन्ना में प्रबंध रचना की पटुता अवश्य मनोहारिणी है। सूरदास निश्चय भक्ति के एकांत गायक थे। इन दोनों में एक और अंतर भी है। सूरदास ने केवल कृष्ण संबंधी रचनाएं की हैं जबकि पोतन्ना के 'भागवत' में कई प्रकार की कथाएं वर्णित हैं। बालकृष्ण की मधुर क्रीड़ाओं के वर्णन में दोनों की कल्पना पनानांतर रूप में चलती है।

कुछ लोग पोतन्ना की तुलना तुलसीदास से करते हैं, सूरदास से नहीं। ये दोनों प्रबंध कवि हैं। दोनों को काव्य रचना स्वांतःसुखाय ही हुई है। राजाश्रय को दोनों तुच्छ समझते हैं। दोनों श्रीराम के अनन्य भक्त हैं। अंतर केवल इतना ही है कि तुलसी की रामभक्ति ने काव्य का रूप धारण किया था जबकि पोतन्ना की रामभक्ति हृदय के अंतस्तल ही में निहित रही। भागवत में प्रारंभ में पोतन्ना कहते हैं कि मुझे भागवत लिखना है; पर लिखने की प्रेरणा देनेवाले श्रीरामचंद्र हैं। इससे स्पष्ट होता है कि श्रीरामचन्द्र जी से मूल प्रेरणा प्राप्त करके ही पोतन्ना भागवत की रचना करते हैं। अतः पोतन्ना को रामभक्त मानने में किसी प्रकार का संदेह या संकोच नहीं हो सकता।

प्रेरणा और प्रवृत्ति में तुलसी जहां पोतन्ना से अधिक साम्य रखते हैं वहां भावना और आराधना में वे त्यागराज के निकट आते हैं। संत त्यागराज और गोस्वामी तुलसीदास की वाणी में भाव-साम्य बहुत है। विशेषतः तुलसी की 'विनय पत्रिका' में त्यागराज के कई गीतों के भाव दिखाई देते हैं। दोनों की भक्तिभावना में अपने आलंबन के महत्त्व और अपने दैन्य का पूरा और सच्चा अनुभव मिलता है। कभी ये श्रीराम के महत्त्व की ओर देखकर आशान्वित हो जाते हैं, और दूसरे ही क्षण में अपनी दीन दशा का अवलोकन करके निराशा के गर्त में गिर जाते हैं। इस आशा-निराशा की मधुमय डोलिका में सोते हुए अपने इष्टदेव के शील, शक्ति तथा सौंदर्य की मंगलमय त्रिवेणी के स्वप्नदर्शन में दोनों महात्मा आत्मविभोर हो जाते हैं।

सारांश यह कि दोनों की हृदयस्थली में रामभक्ति की विमल मंदाकिनी प्रवाहित हो चली थी। पुण्य भूमि भारतवर्ष की सार्वभौमिक सांस्कृतिक चेतना के मधुर पाश में बद्ध होने के कारण इन दोनों महात्माओं की विचार धारा में सर्वत्र समानता ही मिलती है। दोनों की भक्ति भावना एक ही केन्द्र को लेकर चलती सी दिखायी देती है। दोनों की जन्म-भूमि पृथक होते हुए भी भावभूमि एक ही है।

इसी प्रकार महात्मा कबीर की अटपटी वाणी के अनुरूप ही वेमन्ना की "आट वेलदि"? (नर्तकी नाच उठती है। - दोनों संसार से विरक्त एकांत जीवन व्यतीत करने वाले महा-पुरुष थे। दोनों की वाणी में सत्य का स्पष्ट प्रतिपादन मिलता है। कबीर का दोहा भी वेमन्ना की "आटवेलदि" (छंद) से बहुत कुछ मिलता है।

इस युग ने हिंदी साहित्य में आठ प्रसिद्ध कवियों को जन्म दिया है जो "अष्टछाप" के नाम से प्रसिद्ध हैं। इसी समय पर आंध्र साहित्य में भी आठ प्रसिद्ध कवि हुए जो "अष्टदिग्गज" के नाम से प्रसिद्ध हैं।

इस युग की साहित्यिक संपन्नता को देखकर कहा जा सकता है कि यह दोनों साहित्यों का स्वर्ण-युग है।

इसके पश्चात् हिंदी साहित्य में भक्ति का शृंगार में पर्यावसान होता है और संवत् 1700 से रीतिकाल शुरू होता है। कामिनी की कमनीय काम-कला की क्रीड़ाओं के वर्णनों से सारा साहित्य भरने लगा था। इधर तेलुगु की भी यही दशा थी। कवि की चिरसंयत कामवासना बंधन-मुक्त होकर राधाकृष्ण की आड़ में व्यक्त होने लगती है। यह प्रवृत्ति संवत् 1900 तक दोनों साहित्यों में परिलक्षित होती है। इसके पश्चात् आधुनिक काल का आरंभ होता है।

आधुनिक काल एक प्रकार से दोनों साहित्यों का गद्य काल कहा जा सकता है। गद्य की आवश्यकता का अनुभव होने लगा और उसके सफल प्रवर्तक भी दोनों भाषाओं में उत्पन्न हुए। हिंदी में भारतेंदु ने जिस प्रकार आधुनिक हिंदी साहित्य का नया रूप सुस्थिर बना दिया, उसी प्रकार तेलुगु में कंदुकूरि वीरेशलिंगम तेलुगु साहित्य के युग-प्रवर्तक रहे। कहानी, निबंध, उपन्यास, नाटक, प्रहसन आदि सभी क्षेत्रों में वीरेशलिंगम ने अपना ही हाथ आजमाया और उनके परवर्ती लेखक उन्हीं के पदचिह्नों पर चलने लगे।

ऐसे लेखकों के अतिरिक्त जय शंकर प्रसाद जैसे स्वतंत्र युगनिर्माता लेखक जिस प्रकार हिंदी में निकले उसी प्रकार आंध्र में विश्वनाथ सत्यनारायण जैसे यशस्वी लेखकों का आविर्भाव हुआ। आजकल काव्यक्षेत्र म आधुनिक प्रवृत्तियों का प्रचलन दोनों भाषाओं में हो रहा है। हिंदी की छायावादी या रहस्यवादी कविता तेलुगु में "भावकविता" के नाम से प्रसिद्ध है। इसकी लोकप्रियता भी दिन ब दिन बढ़ रही है। हिंदी की प्रगतिवादी कविता तेलुगु में 'अभ्युदय कविता' के नाम से अभिहित है। नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध आदि सभी क्षेत्रों में होनेवाली वर्तमान प्रगति को देखकर आशा की जा सकती है कि दोनों भाषाओं के सम्मुख उज्ज्वल भविष्य ही उपस्थित है।

"हिंदी को राज्य की सरकारी भाषा का दर्जा देने से तमिल को कोई खतरा नहीं, किन्तु उसका असर अंग्रेजी पर पड़ेगा"

—के० कामराज

अनुवाद के आईने में सांस्कृतिक प्रतिबिंब

☐ डॉ० अमर सिंह वधान*

अनुवाद के अर्थ, प्रकार, महत्त्व एवं स्वरूप-विश्लेषण के आलोक में तो हज़ारों पृष्ठ लिखे जा चुके हैं, लेकिन अनुवाद का काल-निर्धारण एवं काल के प्रवाह के साथ-साथ दो भिन्न संस्कृतियों को जोड़ने में अनुवाद की सक्रिय भूमिका पर कम लिखा जाता है। यों तो अनुवाद का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मानवीय सभ्यता का इतिहास है। पर सुदूर इतिहास के एक पन्ने से पता चलता है कि ईसा पूर्व 3000 में मिस्र के प्राचीन राज्य से संबंधित एलिफेंटीन द्वीप पर दो भाषाओं में शिलालेख प्राप्त हुए थे। तब से लेकर जैसे-तैसे सभ्यता का विकास होता गया वैसे-वैसे अनुवाद झुकता गया, इसका कालंजयी महत्त्व बढ़ता गया। यही वजह है कि आज साहित्यिक उत्पाद की दुनिया में ही नहीं, अपितु दैनंदिनी कामकाज में अनुवाद ने एक विशिष्टि प्रासंगिकता एवं अतिसार्थक स्थिति प्राप्त कर ली है। दुनिया के सिकुड़ने के साथ-साथ अनुवाद की बढ़ती-पसरती आवश्यकता को महसूसते हुए पॉल एंज़िल ने 1965 में भविष्यवाणी दाग दी थी कि 21वीं सदी में प्रत्येक देश में दो साहित्य उपलब्ध हो सकेंगे—पहला, उसके अपने लेखकों द्वारा रचा गया साहित्य, एवं दूसरा, विश्व भाषाओं अनुदित साहित्य। दूसरे प्रकार का साहित्य लक्ष्य भाषा के लेखकों पर प्रत्यक्ष एवं ऊर्जस्वी प्रभाव छोड़कर ही दम लेगा।

यह उल्लेखनीय है कि अनुवाद और संस्कृति का बहुत घनिष्ठ संबंध रहा है। अनुवाद के सांस्कृतिक सरोकारों के माध्यम से संस्कृति विशेष के संचारण, अन्यान्य समुदायों व भाषा समूहों को एकता के सूत्र में बांधने एवं मूलभाषा की सांस्कृतिक विशिष्टिताओं के प्रत्यवस्थापन में स्वस्थ नतीजे सामने आए ।

इस शुरुआती स्थल पर अनुवाद के संदर्भ में संस्कृति का अर्थ समझ लेना प्रासंगिक होगा। मोटे तौरपर संस्कृति जीवन का एक तरीका है और यह तरीका जमा होकर उस उस समाज में छाया रहता है, जिसमें हम जन्म लेते हैं। संस्कृति वर्तमान अनुभूतियों एवं पुरातन अनुभूतियों के संस्कारों से निर्मित किसी समुदाय के दृष्टिकोण में निहित रहती है। यह व्यक्तिगत न होकर सामूहिक है, जिसका विकास निश्चित रूप से संस्कारों से होता है। इसका संबंध मनुष्य के सामाजिक राजनीतिक, धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक, कला आदि जीवन के विभिन्न पहलुओं से रहता है। संश्लिष्ट अनुभवों के संचयन के रूप में यह हमारे जीवन को अनुकूलित करती हैं। कहना न होगा कि इतिहास, सामाजिक ढांचा, धर्म, पारंपरिक दस्तूर, लोकाचार, सामाजिक वर्गों-जातियों एवं धार्मिक समूहों के अंतरसंबंध जैसे सांस्कृतिक अवयवों को साहित्य में प्रतिबिंबित किया जाता है।

इसी संदर्भ में अनुवादक के लिए कोई भी विशिष्टि महाकाव्य इसलिए महत्त्वपूर्ण नहीं होता कि उसकी वर्णनात्मक तकनीक बेजोड़ है, बल्कि उससे उद्घाटित होने वाले सांस्कृतिक भाव के कारण। इस दृष्टि से ग्रीक महाकाव्यों का सांस्कृतिक महत्त्व इस बात में है कि यूनानी लोग प्रधानतः सांसारिक जीवन की पराकाष्ठता को ज्यादा महत्त्व देते हैं। अतः उनकी संस्कृति में मानववाद के तत्त्व की व्याप्ति है। दूसरी तरफ भारतीय लोगों की सोच ईश्वर (मोक्ष) एवं मृत्यु के बाद शाश्वत जीवन पर केन्द्रित रहती है। कहना पड़ेगा कि भारतीय जीवन-दृष्टिकोण ग्रीक जीवन-दृष्टिकोण से पूर्णतः भिन्न है ।

साहित्य को जीवन का दर्पण कहा जाता है, क्योंकि यह सामाजिक यथार्थ के कतिपय पहलुओं को चित्रित करता है। जाहिर है कि यह एक सामाजिक संस्था है जो भाषा को एक माध्यम के रूप में इस्तेमाल करता है। एक दूसरा सच यह भी है कि भाषा साहित्य की सामग्री उसी माने में है जैसे पत्थर अथवा कांसा प्रतिमा के लिए, रंगलेप चित्र के लिए एवं ध्वनि संगीत के लिए। लेकिन अन्य सामग्रियों की तरह भाषा मात्र अकर्मण्य सामग्री नहीं है। यह तो स्वयं में मानव जाति की रचना है और भाषाई समूहों की सांस्कृतिक परंपरा द्वारा अवबोधित होती है। इतिहास गवाह है कि इस तरह के सैकड़ों समूह आज भी विश्व में अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं और अनुवाद के माध्यम से विचारों का बखूबी आदान-प्रदान करते हैं।

सुजीत मुखर्जी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "अनुवाद एवं खोज" में अनुवाद को "मिथ्या शपथ", "देशभक्ति", "प्रमाण" "नई रचना" एवं "खोज" तक संज्ञाप्ति किया है । लेकिन अनुवाद तो इससे और आगे बढ़कर एक "व्याख्या", "संप्रेषण" "ऐतिहासिक स्त्रोत" एवं "सांस्कृतिक प्रतिबिंब" भी है । भारतीय ऐतिहासिक परंपरा में अनुवाद को "सांस्कृतिक गवाक्ष" भी स्वीकार किया गया है । मेगस्थनीज की "इंडिक" मौर्यकालीन झरोखा है, जिसमें चन्द्रगुप्त मौर्य की यूनानी पत्नी भारतीय साड़ी पहने हुए है । अलबेरूनी लिखता है कि भारतीय अभिमानी, आत्मकेन्द्रित एवं दम्भी प्रकृति के हैं । वे सोचते हैं कि उनका देश, उनके पहाड़, उनके पुष्प, उनकी नदियां एवं उनकी महिलाएं संसार में सर्वोत्तम हैं । वह आगे लिखता है कि भारतीयों की पूर्ववर्ती पीढ़ियां बड़ी उदार एवं सहिष्णु प्रवृत्ति की थीं ।

इसमें कोई संदेह नहीं कि बाइबिल विश्व में सबसे अधिक अनूदित पुस्तक है, लेकिन फिर भी इसके नए एवं ताजे अनुवादों की प्रतीक्षा है । अकेली उर्दू भाषा में ही

*मुख्य अधिकारी (राजभाषा अनुभाग) सिंडिकेट बैंक, मंडल कार्यालय, भोपाल

श्रीमद्भगवद् गीता के 20 रूपान्तर उपलब्ध हैं । शेक्सपियर का भी भारत की कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है । उर्दू में हैमलेट अवध का नवाबजादा अथवा अनारकली का शहजादा सलीम लगता है । पंजाब में किंगलियर का मंगलमय विरेचन हुआ है । तमिल में पोर्शिया दक्षिण भारतीय महिला वकील लगती है । मराठी में जूलियस सीजर घासीराम कोतवाल से बहुत मिलता-जुलता है । नतीजतन जहां एक ओर एलिजाबेथ का इंग्लैंड भारतीय अनुवाद में प्रतिबिंबित होता है, वहां दूसरी ओर भारतीय सांस्कृतिक चित्र भी बराबर व्याप्त होता चला जाता है । यदि शेक्सपियर के विदूषक एवं भोले-भाले लोग व्यक्तियों का मनोरंजन करते हैं, तो भारतीय विदूषक अक्लमंद लोगों के मूर्खतापूर्ण कार्यों पर विवेकपूर्ण टिप्पणी करते हैं । दारा शिकोह के उपनिषदों के अनुवाद ने समस्त यूरोप में एक नए चिंतन एवं दर्शन के आन्दोलन का सूत्रपात किया । मानना पड़ेगा कि आज का तुलनात्मक दर्शनविज्ञान उसी का प्रतिफल है । क्या इसके लिए भी कोई सबूत तलाशने की जरूरत है कि एडवर्ड फिट्जजेराल्ड ने उमर खय्याम की 75 रुबैयतों का अनुवाद करके पूर्व एवं पश्चिम को एक दूसरे के गले मिलाया । 1369 में इन रुबैयतों की संख्या बढ़ाकर 110 कर दी गई, लेकिन 1978 में यह संख्या कम करके 101 तक रखी गई जो इनकी वर्तमान सही संख्या मानी जाती है । यह स्वीकार करना होगा कि अनुवाद विभिन्न प्रदेशों, देशों एवं संस्कृतियों के मध्य एक सेतु का निर्माण करता है । इस संदर्भ में अनुवाद निश्चित रूप से विश्व संस्कृति का बहुमूर्तिदर्शी है ।

किसी देश की संस्कृति को लक्ष्य भाषा उंडेलना इतना सरल कार्य नहीं है । यह तो ठीक है कि अनुवाद में शब्दों का बहुत महत्त्व होता है । पर अकेले शब्द से ही अनुवाद को संस्थापित नहीं करते हैं । अनुवाद में शैली को अपनी अलग अहमियत है । फ्रांसीसी कहावत है कि अनुवाद एक महिला की तरह है । यदि वह सुन्दर है तो वफादार नहीं है और यदि वह वफादार है तो सुन्दर नहीं है । विलियम काउपर तो यहां तक कह देते हैं कि अनुवाद में पूर्ण ईमान-दारी भी बेईमानी है । इतना नहीं कि मूल पाठ के प्रति ज्यादा स्वतंत्र हो जाना भी गैरअनुवादात्मक है । इन्हीं सीमाओं की वजह से किसी प्रदेश या देश की संस्कृति को लक्ष्य भाषा में हू-ब-हू उतारते समय अनुवादक को कई समस्याओं, कठि-नाइयों एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है ।

अनुवाद में संस्कृति को नाभिकेन्द्र मानते हुए अनुवादक को शब्द प्रयोग के संदर्भ के प्रति विशेष रूप से सचेत रहना पड़ता है । अमेरिकन अंग्रेजी में "यस" बनाम "या" अलग-अलग संस्कृतिक संदर्भों में प्रयोग किये जाते हैं । अनुवादक को होशियार रहना पड़ेगा कि मूल भाषा के सांस्कृतिक शब्द को लक्ष्य भाषा के सांस्कृतिक माहौल में किस प्रकार से जोड़ा जाना चाहिए । जरूरी नहीं है कि सांस्कृतिक घटक सदैव अभिज्ञेय ही हो । प्रायः यह भाषा की बनावट में जटिलता से इस कदर सन्निविष्ट रहता है कि केवल संवेदनशील अनुवादक ही इसे समझ सकते हैं ।

कभी-कभी भाषा एवं संस्कृति का संदिग्ध संबंध अनुवादक के लिए कुछ उलझनें पैदा करता है । तभी तो डेली टाइम्ज को ताज्जुब हुआ था कि भाषा अपनी सहयोगी संस्कृति को किस तरह अभिसूचक हो सकती है । पर वे भूल जाते हैं कि भाषा में सभी प्रकार की सांस्कृतिक अमानतें अवश्य निहित रहती हैं । इस मायने में भाषा को संस्कृति का अविच्छिन्न अंग मानने में किसी आपत्ति के लिए गुंजाइश नहीं है । वर्षों पहले यूजेन ए. निडा भी घोषणा कर चुके हैं कि भाषा के बिना संस्कृति का कोई महत्त्व नहीं रह जाता है । अधिकांश सांस्कृतिक शब्दों की पहचान तो आसानी से हो जाती है लेकिन उनका अनुवाद करना बड़ा कठिन कार्य होता है, शब्दानुवाद से तो बिल्कुल काम चल ही नहीं सकता है ।

राजेन्द्र सिंह बेदी के उपन्यास "इक चादर मैली सी" । में पंजाबी लाड़-प्यार की अभिव्यक्ति "मेरा चन, मेरा पुत्तर" सूक्ति के रूप हुई है । इसका अंग्रेजी अनुवाद "माई मून, माई सन" न केवल सांस्कृतिक संदर्भ से कट जाएगा, बल्कि बेतुका और भोंडा लगेगा । इसी प्रकार "चल, केहड़ा ऐथे मामा खलोता है" का अंग्रेजी अनुवाद "लेट अस गो, अंकल इज नाट स्टैंडिंग हिअर" पंजाबी सांस्कृतिक संदर्भ से कोसों दूर चला जाएगा । कारण यह है कि चलती पंजाबी में "मामा" शब्द "सिपाही" के लिए प्रयुक्त होता है । इसी सांस्कृतिक संदर्भ में "किकली कलीर दी" "खूहां टोबियां ते मिलणो रह गए औंतरे लवाए नल", "घुंड दा भालिए कम की गिट्ठे विच" आदि पंजाबी लोक नृत्य की अभि-व्यक्तियों का अनुवाद करते समय अनुवादक को बड़ा सावधान रहना पड़ता है ।

सामान्यतः पश्चिमी ढंग में पति अपनी पत्नी को "डार्लिंग" "स्वीट-हार्ट" "हनी" आदि सम्बोधनों से बुलाता है । लेकिन यह अवधारणा भारतीय संस्कृति के मिजाज के अनुसार नहीं है । यदि इन शब्दों का अनुवाद जबरन कर भी लिया जाए तो वह कृत्रिम एवं हास्यास्पद अवश्य लगेगा । विलियम वर्डस्वर्थ ने "टिन्टर्न एबै" कविता की 115वीं पंक्ति में अपनी बहन डारोथी वर्डस्वर्थ को "दाऊ माई डियरेस्ट फ्रैंड" माई डियर, डियर फ्रेंड" शब्दों से संबोधित किया है । भारतीय संदर्भ में बहन के प्रति भाई के स्नेह की आभा निश्चित रूप से भिन्न किस्म की है । अतः ऐसे सांस्कृतिक संदर्भों में भी अनुवादक को सधे विवेक से काम लेना पड़ेगा ।

विषम भौगोलिक विशिष्टताएं एवं एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र के परिस्थिति विज्ञान परिवर्तन की पराकाष्ठा भी अनुवादक के लिए समानार्थी शब्दों के चयन में काफी

शेष पृष्ठ 16 पर

सूचना एवं प्रसारण संबंधी कार्यों में हिन्दी

□हरि बाबू कंसल*

सरकार के विभिन्न मंत्रालयों की गतिविधियों एवं समय-समय पर लिए गए निर्णयों के विषय में पत्र सूचना कार्यालय द्वारा प्रैस रिलीज जारी किए जाते हैं। उन्हें अधिकांशतः मूल रूप में अंग्रेजी में तैयार किया जाता है और बाद में उनका हिन्दी अनुवाद होता है। कुछ वर्ष पूर्व अंग्रेजी के प्रैस नोट काफी पहले जारी हो जाते थे और हिन्दी अनुवाद काफी देर बाद जारी होता था। उससे प्रतीत होता था कि सरकार हिन्दी को महत्त्व नहीं दे रही है। प्रैस नोट अंग्रेजी में पहले जारी होने से हिन्दी समाचार-पत्रों को भी उसका हिन्दी रूपान्तर स्वयं तैयार करना होता था और इस प्रकार पत्र सूचना कार्यालय द्वारा बाद में जारी किए गए हिन्दी रूपान्तर का इतना लाभ नहीं होता था। कई बार यह बात उठाई गई कि पत्र सूचना कार्यालय में ऐसे अनेक अधिकारी हैं जिन्होंने बी. ए. अथवा उससे उच्च स्तर पर हिन्दी पढ़ी है। इस पर सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय में यह निर्णय भी ले लिया गया कि जो सूचना अधिकारी हिन्दी भली भांति जानते हैं वे अपने प्रैस नोट मूलतः हिन्दी में तैयार करें। किन्तु सूचना अधिकारियों के मन में यह बात बैठी हुई थी कि यदि वे अपने प्रैस नोटों का प्रारूप मूल रूप से हिन्दी में तैयार करेंगे तो उनके उच्च अधिकारी यह समझेंगे कि वे कुशल तथा सक्षम व्यक्ति नहीं हैं। स्थिति ऐसी विचित्र थी कि जिन बैठकों में काफी चर्चा हिन्दी में होती या कहीं कोई मंत्री अपना भाषण हिन्दी में देते तो उससे संबंधित प्रैस नोट भी मूलतः अंग्रेजी में तैयार किए जाते और फिर उसका हिन्दी अनुवाद किया जाता था। एक बार केन्द्रीय हिन्दी समिति की बैठक थी। उसमें भी उपर्युक्त बातों की चर्चा हुई। बैठक की समाप्ति के बाद समिति में हुई चर्चा तथा उसमें लिए गए निर्णय के संबंध में प्रैस नोट तैयार होने लगा तो वह भी मूलतः अंग्रेजी में तैयार हुआ। संबंधित सूचना अधिकारी ने अपनी मजबूरी व्यक्त करते हुए बताया कि उसे हिन्दी में प्रैस नोट तैयार करने का अभ्यास नहीं है। इस प्रकार केन्द्रीय हिन्दी समिति में हुई हिन्दी की चर्चा का भी प्रैस नोट अंग्रेजी में तैयार होकर वह हिन्दी अनुवाद के साथ प्रचारित किया गया। परन्तु सभी अधिकारी ऐसे नहीं थे। कई सूचना अधिकारी प्रैस नोट मूल रूप से हिन्दी में तैयार करना चाहते थे और प्रोत्साहन मिलने पर ऐसा करने भी लगे।

आकाशवाणी के समाचार विभाग में भी ऐसी स्थिति रही है। उस विभाग में समाचारों का संकलन मुख्यतः अंग्रेजी में किया जाता रहा है। बाद में उन्हें हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया जाता है। इसी प्रक्रिया का परिणाम है कि हिन्दी के समाचार उतने सशक्त और प्रभावशाली नहीं होते जितने अंग्रेजी के होते हैं। अनुवाद के कारण बुलेटिन की भाषा अस्वाभाविक मालूम होती है। यह बात कई बार विभिन्न बैठकों में उठाई गई कि यदि किसी स्थान पर भारत सरकार का कोई मंत्री हिन्दी में भाषण करे और आकाशवाणी का संवाददाता हिन्दी जानने वाला हो तब भी वह उसका समाचार अंग्रेजी में भेजता है और फिर उसका हिन्दी अनुवाद किया जाता है। नतीजा यह होता है कि मंत्री के भाषण में बात कुछ और कही जाती है और दो बार अनुवाद होने के फलस्वरूप हिन्दी के समाचारों में वही बात किसी दूसरे रूप में रखी जाती है। विभिन्न समितियों में चर्चा होने के उपरान्त यह निर्णय हुआ कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों से जो समाचार आकाशवाणी के संवाददाता भेजें उन्हें वे समाचार मूलतः हिन्दी में भेजने चाहिए। उनके आधार पर जो मूल कापी तैयार की जाए, उसके अनुवाद से अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के बुलेटिन तैयार किए जा सकते हैं। कुछ संवाददाता इस प्रकार करने लगे। किन्तु अनेक संवाददाता उसी भय से ग्रस्त रहे कि उनके उच्च अधिकारी इस तरीके को पसन्द नहीं करेंगे।

फिल्म प्रभाग द्वारा तैयार किए जाने वाले वृत्त चित्रों के बारे में भी विचित्र स्थिति रही है। देश भर में जितने वृत्त चित्र दिखाए जाते हैं उनमें सबसे अधिक संख्या हिन्दी की होती है। अंग्रेजी के वृत्त चित्रों की मांग बहुत कम होती है। फिर भी इन वृत्त चित्रों की कमेन्ट्री मूल रूप से अंग्रेजी में तैयार की जाती है। मांग को देखते हुए यह महसूस किया गया कि इन वृत्त चित्रों की कमेन्ट्री मूल रूप में हिन्दी में तैयार की जाए। यह भी माना गया कि गुजराती, मराठी, बंगला, पंजाबी आदि भाषाओं का रूपान्तर हिन्दी पाठ के आधार पर बहुत सरलतापूर्वक और स्वाभाविक रूप से हो सकेगा। इससे संबंधित निर्णय का भी कार्यान्वयन बहुत संतोषजनक रूप में नहीं हुआ।

आकाशवाणी पर जो नाटक प्रसारित होते हैं उनमें जो नाटक अखिल भारतीय स्तर के समझे जाते हैं उनका आनन्द देश के सभी भागों के लोग उठा सकें, इस दृष्टि से यह व्यवस्था रही है कि किसी एक भाषा के नाटक का रूपांतर देश की अन्य भाषाओं में भी कराया जाए। भाषान्तर के लिए अंग्रेजी माध्यम का सहारा नहीं लिया जाता था। किसी भी भाषा के नाटक का अनुवाद पहले हिंदी में किया जाता और बाद में किसी अन्य भारतीय भाषा में। यह प्रथा आकाशवाणी में वर्षों से रही है। इसका अनुकरण यदि सरकार के दूसरे विभागों में भी किया जाए तो उससे सभी को सुविधा हो सकती है।

[शेष पृष्ठ 14 पर]

*ई–9/23 वसंत विहार, नई दिल्ली।

बारहवीं सदी से राज-काज में हिंदी

□डा. राम बाबू शर्मा*

राजभाषा हिंदी का जन्म भारत की मूल भाषा संस्कृत से हुआ है। प्राचीन भारत में संपूर्ण राजकाज संस्कृत भाषा के माध्यम से होता था। इस काल को साहित्य में राज्य, राष्ट्र और राजनीति का महत्त्वपूर्ण विवरण मिलता है। जिन प्राचीन ग्रंथों में राज्य व्यवस्था अथवा सरकार का अभिलेख पाया जाता है, उन्हें राजनीति शास्त्र, नीति शास्त्र, अर्थ शास्त्र, श्रुति, स्मृति दंडनीति शास्त्र की संज्ञा दी गई है। ऐसे बहुत से अभिलेख देखने में आए हैं, जिनसे यह ज्ञात होता है कि गुप्त साम्राज्य का अधिकांश राजकाज संस्कृत भाषा के माध्यम से ही होता था। संस्कृत के पश्चात् पाली, प्राकृत और अपभ्रंश आदि भाषा राजभाषा के रूप में स्वीकार की गई। अशोक के शिलालेखों में पाली भाषा का ही प्रयोग पाया जाता है। इस संदर्भ में यह कह देना अत्यावश्यक होगा कि एक ही आशय के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित शिलालेखों में भाषा की स्थानीय बोलियों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। वास्तव में पूर्व काल जैसे मध्य देश की भाषा संपर्क भाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार की गई है। इसी श्रृंखला में शौरसेनी अपभ्रंश से उत्पन्न हिंदी सदियों से देश की राष्ट्रभाषा रही है और स्वतंत्रता के पश्चात् हमारे संविधान में इसे देश की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है।

राजभाषा के रूप में हिंदी की परंपरा है और उसका व्यवहार आठ सौ वर्षों से इस देश के विभिन्न प्रशासनों में पाया जाता है। महाराजा पृथ्वीराज चौहान और रावल समर सिंह के पत्र इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं।

महमूद गजनवी और मौहम्मद गौरी के काल के ऐसे बहुत से सिक्के उपलब्ध हुए हैं जिन पर देवनागरी लिपि में हिंदी भाषा का प्रयोग मिलता है। श्रीनाथ सम्वत् और नन्दी की मूर्ति अंकित की गई। शेरशाहसूरी के राजकाल में भी हिंदी का प्रयोग होता था। उसने अपने रुपये के चित्त भाग पर कलमा और टकसाल का नाम अंकित कराया है। पट्टभाग पर बादशाह का नाम ऊपरी फारसी लिपि में लिखा है और नीचे देवनागरी लिपि में "श्री शीरशाह" (श्रीनाथ सम्वत्) लिखा है। शेरशाह के अन्य सिक्कों पर "स्वस्तिक" का चिह्न अंकित है तथा "ओम" शब्द भी अंकित है। ये सिक्के दिल्ली संग्रहालय और भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग में सुरक्षित हैं।

जब भारत पर मुगलों का शासन स्थापित हुआ तो उनके सामने इस प्रकार के बहुत से प्रश्न थे, जिनका समाधान खोजने में और अपने प्रशासन को सफल बनाने में काफी सूझबूझ उदारता, कल्पना और समन्वय नीति की आवश्यकता थी। ऐसी स्थिति में उन्होंने हिंदू जनता, हिंदू राजाओं, हिंदू धर्म तथा हिंदी भाषा के प्रति उदारता की नीति बरतना ही उचित समझा। राजभाषा के स्वरूप में हिंदी का प्रयोग अकबर ने ही प्रारम्भ किया। और इस परंपरा को परवर्ती सभी मुगल बादशाहों ने आगे बढ़ाया। इन बादशाहों के बहुत से नियम, उपनियम फरमान आदि हिंदी में लिखे जाते थे। और सामान्य जनता के साथ की जाने वाली सभी कार्रवाईयों में हिंदी भाषा का ही प्रयोग होता था। मुगलकालीन शासन के हिंदी भाषा तथा देवनागरी लिपि में लिखे हुए अमल दस्तूर, आवर्जा, खतूत अहलकारान, बही ताकीत, अड्सट्टा, सींगा, मुतफर्रिकात, हस्वत महावारी, याददास्त, खाते नक्शा, मिसिलमुकदमा, इतलानामा, नक्शा बाकियात, पाना महावारी, रसीद, सनदि, दस्तूर कौमवार खतूत महाराजान डोल, उत्सव का प्रसाद पत्र, बही हकीकत, फर्द, खरीता परवाना, तौजी, स्याहदस्तूर, हुक्म डोलंकरार, नक्शा वसूली, कागदवही, हौदा बही, निरख, रोजनाम प्रशस्ति आदि महत्त्वपूर्ण दस्तावेज हैं जो प्रशासन संबंधी विभिन्न कार्यों के लिए प्रयोग में लाए जाते थे तथा एक दस्तावेज के बहुत से प्रकार होते थे। यद्यपि इनके शीर्षक फारसी भाषा में होते थे तथापि इनके विषय लोक प्रचलित हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि में लिखे जाते थे। इन दस्तावेजों में हिंदी की ब्रज, अवधि, राजस्थानी और खड़ी बोलियों का व्यवहार पाया जाता है। तत्सम और तद्भव शब्दों के साथ फारसी शब्दों को भी प्रयोग किया जाता था तत्कालीन देशी राजाओं के राजकाज में भी इसी प्रकार के हिंदी पत्रों का प्रयोग होता था कुछ प्रलेखों में हिंदी की अवधि बुंदेली, बांगरू और राजस्थानी की विभिन्न स्थानीय उप बोलियों के प्रयोग भी किए गए हैं।

बादशाह अकबर का अमल दस्तूर राजभाषा हिंदी का ज्वलन्त प्रमाण है। यह सम्राट अकबर के आदेश से हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि में लिखा गया था। यह दस्तावेज 14 पृष्ठों का है जो राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर में सुरक्षित है। अमल दस्तूर में अधिकारियों और कर्मचारियों को सम्राट ने कुछ आदेश दिए हैं ताकि वे प्रजा और प्रशासन में सुख एवं शांति स्थापित कर सकें। यह फरमान बादशाह अकबर के उच्च स्तर के सलाहकारों से तैयार कराया गया था। यह राष्ट्रभाषा हिंदी में बनी प्राचीन आचार संहिता है जिसके अनुसार अधिकारियों एवं कर्मचारियों को शहर अथवा

*सी-2/136, श्री राम निकेतन, जनकपुरी, नई दिल्ली-5

गांव की उन्नति तथा समृद्धि के लिए, प्रजा के सुख एवं समृद्धि तथा सेवा एवं परमार्थ के लिए प्रसन्नतापूर्वक अकबर के दरबार में राजकीय अधीनता स्वीकार करते हुए तथा अपने राज्य को अर्पण करते हुए शपथ ग्रहण करनी पड़ती थी। इस दस्तावेज में तत्कालीन अधिकारियों एवं कर्मचारियों के दैनिक प्रशासन में उत्पन्न होने वाली समस्याओं तथा उनका समाधान और नीतियों के कार्यान्वयन का सजीव वर्णन है। यह दस्तावेज अकबर प्रशासन के विधान, कार्यपालिका तथा न्याय पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालती है।

इस दस्तावेज की भाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है। इसमें हिंदी की राजस्थानी व्रज, खड़ी बोली और यंत्र-तंत्र अन्य बोलियों का भी प्रयोग किया गया है। अरबी और फारसी के विदेशी शब्द भी घुल मिल गए हैं। यत्र-तत्र संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों का प्रयोग भी पाया जाता है। व्याकरण और वर्तनी संबंधी बहुत सी कमियां दिखाई पड़ती हैं। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय यह हिंदी गद्य का मानक स्वरूप होगा। उदाहरणार्थ :—

"जैसा आदमी होई तिसकी तैसी सजा करे"
कोण बारीक चूक ढांकणे की है कोण जोम को कहणे की है"

इस दस्तावेज के संबंध में विशेष जानकारी के लिए लेखक द्वारा रचित "12वीं सदी से राजकाज में हिंदी" (प्रकाशक केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा) तथा "राजभाषा हिंदी की कहानी" का अवलोकन किया जा सकता है।

मुगल बादशाहों की ओर से विभिन्न देशी राजाओं को जो पत्र लिखे जाते थे वे हिंदी भाषा में ही होते थे। इन पत्रों को हिंदी वकील रिपोर्ट नाम से अभिहित किया गया है। राजस्थान के बीकानेर स्थित राज्य अभिलेखागार में मुगल बादशाह औरंगजेब और उसके उत्तराधिकारी बहादुर शाह के तत्कालीन जयपुर नरेश महाराज जयसिंह को भेजे गए हिंदी भाषी देवनागरी लिपि में लिखे गये सैकड़ों पत्र सुरक्षित हैं। कहीं-कहीं इन्हें अरजदास्त के नाम से भी कहा गया है। ये अर्जदास्त भारतीय परम्परा के अनुसार मांगलिक शब्द "श्री राम जी" से प्रारम्भ की जाती थी"। इस प्रकार के मुगल-कालीन सैकड़ों दस्तावेज राज्य अभिलेखागार बीकानेर में सुरक्षित इनके अध्ययन से हिंदी पत्रों की लेखन-पद्धति, पारिभाषिक शब्दावली, भाषात्मक अध्ययन और राजभाषा की परम्परा का बोध होता है।

मुगलकालीन में उदयपुर, जोधपुर, जयपुर, कोटा, बूंदी आदि सभी रजवाड़ों के राजकाज में हिंदी का प्रयोग होता था और इस प्रकार की सामग्री राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर में सुरक्षित है। इस संदर्भ में महाराणा प्रताप द्वारा दिया हुआ पट्टा विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

18वीं सदी के पूर्वार्द्ध में मुगल साम्राज्य के पतन के साथ-साथ जब मराठों ने अपना आधिपत्य स्थापित किया, बुंदेलखंड के शासन में हिस्सा प्राप्त किया, पंजाब और राजस्थान में आधिपत्य स्थापित करने के लिए प्रयत्न प्रारम्भ किए और उत्तर भारत में हरिद्वार, प्रयाग, काशी, गया आदि तीर्थों पर अपना प्रभाव और शासन स्थापित कर लिया तब उनका संपर्क अधिकारियों, व्यापारियों और किसानों के साथ स्थापित हुआ। ऐसी स्थिति में मराठा राजाओं, पेशवाओं और सरदारों के प्रशासन की व्यापकता के साथ-साथ हिंदी को अपने राजकाज की भाषा स्वीकार करना पड़ा। मराठा शासक अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी का प्रयोग करते थे। मराठा शासकों, सरदारों और पेशवाओं की ओर से राजपूत नरेशों और उनके कर्मचारियों को जो भी पत्र लिखे जाते थे, वे हिंदी भाषा में होते थे। इसी प्रकार राजपूत, नरेशों, मुगल बादशाहों एवं राजकीय कर्मचारियों की ओर से जो भी पत्र मराठा शासकों को लिखे जाते थे, उनकी भाषा हिंदी ही होती थी। मराठों के राजकाज में सनंद का आज्ञापत्र, कबज, याददास्त, अर्जदास्ती, जमा वासिल, कबुलियात, रसीद आदि हिंदी पत्रों का प्रयोग होता था। इन पत्रों में हिंदी के सहस्रों पारिभाषिक शब्द पाए जाते हैं जो हमारे जन-जीवन में घुल मिल गये हैं और जिनका प्रयोग करने से हमारी वर्तमान राजभाषा हिंदी को बल प्राप्त होता है। इन शब्दों में अदालत, दीवानी नालीश, हुक्म, मालगुजारी, तबदीली, सलाह, बढ़ोबस्त, समाचार, राजभूमि, सेवा, सरहद, आबकारी, तहसीलदार, जनरल आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन पत्रों की भाषा खड़ी बोली है। इनमें व्रज, मराठी, अरबी, फारसी के शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। यंत्र-तंत्र संस्कृत भाषा के प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग दिखाई पड़ता है। भाषा में व्याकरण शिथिलता तथा वर्तनी संबंधी अनियमितताएं पाई जाती हैं। मराठा कालीन बहुत सी मोहरें भी प्राप्त हुई हैं जो हिंदी में हैं। मराठों के राजकाज से संबंद्ध भूमि, कर, सेना तथा युद्ध, अर्थ विभाग, राजनीति, धर्म शास्त्र, राजनीति संबंध, सामाजिक तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति, स्वतंत्रता, दानपत्र, ज्योतिष मराठा महिलाओं की प्रशासनिक क्षमता और मराठी से हिंदी में अनुवाद संबंधी सैकड़ों ही वाक्य, उपवाक्य और शब्द, पारिभाषिक शब्द भी प्राप्त होते हैं।

यद्यपि अंग्रेज यहां व्यापारी बनकर आए थे और उन्होंने व्यापार के क्षेत्र में सफलता भी प्राप्त की तथापि वे शनैःशनैः यहां की राजनीतिक तथा प्रशासनिक परिस्थितियों से लाभ उठाकर यहां के प्रशासक बन बैठे। ऐसी स्थिति में उनके सामने प्रशासन की भाषा का एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न था, जिसके माध्यम से वे जनता के साथ संपर्क स्थापित कर सकें और लोकप्रिय बन सकें। इसलिए प्रारम्भ में कंपनी सरकार और बाद में ब्रिटिश सरकार दोनों ने ही अपने राजकाज की भाषा में हिंदी को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों के देशी राजाओं, जागीरदारों और जमींदारों को जो पत्र लिखे उनकी भाषा देवनागरी लिपि में हिंदी थी। उन्होंने प्रारम्भ में कचहरियों में हिंदी भाषा का प्रयोग किया और

शेष पृष्ठ 12 पर

हिन्दी में मेरे काम के अनुभव

□आई. पी. हिंगोराणी*

सन् 1970 की बात है वाराणसी के रेलवे स्टेशन पर अपने भाई साहब के साथ मैं रेल की प्रतीक्षा कर रहा था। इस बात ने सभी का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया कि रेलवे स्टेशन पर सभी नामपट्ट आदि हिंदी लिखे हुए थे। इसे देखकर भाई साहब ने प्रश्न किया कि, 'यहां पर तो काफी संख्या में विदेशी पर्यटकों का आवागमन होता रहता है—इस प्रकार नामपट्टों के हिंदी होने पर क्या उनको कठिनाई नहीं होती होगी' उत्तर सीधा सादा था—"यदि आप जापान, चीन, रूस आदि देशों में जाएंगे तो क्या आपको वहां नामपट्ट हिंदी में मिलेंगे।"

इस घटना ने मेरे मन मस्तिष्क पर ऐसी छाप छोड़ी कि मैंने निश्चय किया कि, यदि मुझे कभी मौका मिला तो मैं राजभाषा हिंदी के व्यवहार को बढ़ाने में अवश्य प्रयास करूंगा।...और ईश्वर ने सन् 1982 में मुझे यह सौभाग्य भी दे दिया। मुझे क्षेत्रीय प्रबंधक के रूप में पदोन्नत करके हिमाचल प्रदेश भेजा गया। वहां जाकर पाया कि वहां हिंदी में 27% से अधिक कार्य नहीं हो रहा था। इसे देखते हुए मैंने वहां कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। साथ ही निर्णय किया कि आनेवाली तिमाही में हर महीने के तीसरे शनिवार को क्षेत्रीय कार्यालय से भेजे जानेवाले पत्र केवल हिंदी में भेजे जाएंगे तथा हर आगामी तिमाही में इन शनिवारों की संख्या एक-एक करके बढ़ा दी जाएंगी। इसका परिणाम यह हुआ कि, क्षेत्र में चल रही अंग्रेजी पत्रों की कड़ी टूटने लगी और अंग्रेजी पत्रों का स्थान हिंदी पत्र लेने लगे। मुझे इस बात का संतोष है कि जब मैंने क्षेत्र छोड़ा तो क्षेत्र में हिंदी में कार्य का प्रतिशत 27 से बढ़कर 90 तक पहुंच चुका था।

इसके बाद सन् 1987 में रायपुर (म.प्र.) में मैंने आंचलिक प्रबंधक के रूप में कार्यभार संभाला। वहां पहुंचते ही मैं इस दिशा में सक्रिय हो गया।

रायपुर में कर्मचारियों के सामने आदर्श स्थापित करने के लिये मैंने न केवल स्वयं हिंदी में पत्र लिखने आरंभ किये बल्कि समारोहों/बैठकों आदि में वक्तव्य आदि भी हिंदी में ही दिए। यहां तक कि, केन्द्रीय कार्यालय से आने वाले वरिष्ठ कार्यपालकों को भी हिंदी में बोलने के लिये बाध्य किया।

अब गुजरात में (जो कि आपके भोपाल के उप-निदेशक श्री पणिकर महोदय के शब्दों में कम हिन्दी भाषी प्रान्त है) आकर मैंने पाया कि वहां राजभाषा के व्यवहार एवं प्रयोग की काफी संभावनाएं है। अतः हिंदी तथा गुजराती के बीच सेतु का कार्य करने के लिये मैंने स्वयं गुजराती भाषा सीखी।

राज्य स्तरीय बैंकर्स राजभाषा समिति की एक बैठक में मैंने अनुभव किया कि बैंक के वरिष्ठ अधिकारियों के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि, वे स्वयं भी जाने कि सरकार की राजभाषा नीति क्या है तथा उसके व्यवहार में उनको क्या भूमिका अदा करनी है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमने अपने बैंक में अहमदाबाद के सभी बैंकों के वरिष्ठ कार्यपालकों के लिए एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया।

कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि जागृत करने के लिये हमने न केवल अपने बैंक में विभिन्न अन्तर बैंक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया बल्कि अन्य सभी बैंकों द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं के लिये भी समन्वयक की भूमिका अदा की। विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिये गठित उपसमिति की अध्यक्षता का भार ही सौंपा गया।

इस उपसमिति के तत्वाधान में हमने अपने बैंक की तरफ से एक विशेष पुरस्कार की घोषणा की। यह पुरस्कार उस महिला कर्मचारी को दिया जायेगा जो वर्ष में हिंदी की प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक भाग लेगी/पुरस्कार जीतेंगी। हिंदी ही नहीं सामान्य बैंकिंग के अन्य कार्यों के लिये भी स्वयं मैं अपने हाथ से हिंदी में शाखाओं को पत्र लिखता हूं। इसका परिणाम यह हुआ कि शाखाओं से भी इन पत्रों के उत्तर हिंदी मे आते हैं। इससे हिन्दी पत्राचार को प्रोत्साहन मिलता है।

एक रोचक प्रसंग—इसी वर्ष 14 सितम्बर को बैंक परिसर में आयोजित हिंदी दिवस समारोह में हमारे एक हास्य कवि ने व्यंग्य किया "कि श्राद्ध पक्ष में समारोह कैसे?" मुझे उत्तर देना पड़ा—"क्या इस पखवाड़े में ईश्वर किसी को जन्म नहीं देता? यदि कोई बच्चा इस पखवाड़े में पैदा होता है, तो क्या हम उसका जन्मदिन नहीं मनाते? हां, यदि आप श्राद्ध करना ही चाहते हैं तो अंग्रेजी भाषी का मनाइए।" कवि महोदय निरुत्तर हो गया।

पिछले एक वर्ष के दौरान मैंने राजभाषा के प्रयोग की दिशा में जो प्रगति देखी है मुझे स्वयं उसकी आशा नहीं थी। मेरा विश्वास है कि यदि राजभाषा हिंदी के व्यवहार में अन्य लोग भी ऐसी ही भावना से कार्य करें तो वह दिन दूर नहीं जब हमारी राजभाषा को वह स्थान मिल पाएगा जिसकी वह हकदार है। □

*आंचलिक प्रबंधक, सैन्ट्रल बैंक आफ इंडिया, अहमदाबाद-370001

स्वतंत्र भारत में शिक्षा

□विश्वंभर प्रसाद 'गुप्त बन्धु' एफ.आई.ई.*

मेकाले की शिक्षा-नीति अपनाकर अंग्रेजों ने एक संस्कृति-अपहारक विदेशी भाषा भारत पर थोपी और अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए आधुनिकता और नौकरी का प्रलोभन देते हुए भारतीय युवा-वर्ग को पथ-भ्रष्ट किया। दुर्भाग्य से स्वतंत्रता के बाद भी भारत में वही शिक्षा-नीति अपनाई जाती रही। फल-स्वरूप बहुत सी समस्याएं खड़ी हो गई हैं। अब विद्वान यह मानने लगे हैं कि स्वतंत्र भारत के लिए भारतीय शिक्षा ही सर्वाधिक उपयुक्त है। इसी परिप्रेक्ष्य में वर्तमान परिस्थिति का विश्लेषण यहां किया गया है और भारतीय शिक्षा में समस्याओं का हल खोजा गया है।

श्रम की महत्ता और काम का अधिकार

आज बेकारी की समस्या मुंह बाए खड़ी है। सभी यह मानते हैं कि काम करने के अधिकार से वंचित कोई भी न रहना चाहिए। हमारे वैदिक ऋषियों ने (यजुर्वेद 40/2 में) "कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छंत समाः" (अर्थात् मनुष्य कर्म करते हुए ही सौ वर्ष जीने की इच्छा करे) कहकर काम करना मानव जीवन के लिए अनिवार्य कर दिया है; यानी काम करने का अधिकार तो सबको है ही वास्तव में जरूरी तो यह है कि मनुष्य में काम करने की प्रवृत्ति नष्ट न होने पाए--काम करना हेय न समझा जाए।

हमें याद है गांव की स्कूली शिक्षा के वे आरंभिक वर्ष, जब महीने में एक दिन सभी बालक मिलकर स्कूल के (कच्चे) फर्श की गोबर से लिपाई किया करते थे। कुछ बच्चे गोबर एकत्र करते थे, कुछ अपनी-अपनी श्यामपट्टियों पर (लकड़ी की काली तख्तियों पर जो लिखने के लिए इस्तेमाल होती थीं) उसे ढो-ढोकर कक्षा में लाते थे, और कुछ पास के तालाब से पानी लाते थे। फिर प्रत्येक कक्षा के बालक मिलकर अपनी-अपनी कक्षा लीपते थे। इस प्रकार शब्दों से नहीं, व्यवहार से, क्रियात्मक रूप से श्रम की प्रतिष्ठा, ऊंच-नीच का समत्व-बोध और सहकारिता का महत्त्व बच्चों को हृदयंगम कराया जाता था। टाट-पट्टियों और दरियों पर बैठाया जाता था। शारीरिक श्रम हेय नहीं समझा जाता था; और बच्चे एक साथ रहते और काम करते हुए कृष्ण-सुदामा की परिपाटी जीवित रखते थे।

किंतु अंग्रेजी की पढ़ाई शुरू हुई तो मेज-कुर्सी बैठने को मिली। आजकल तो नर्सरी से ही गले में टाई पड़ जाती है। हाथ से काम करना गंवारपन समझा जाता है। एक घटना याद आती है। अपने गांव के स्कूल के लिए जब लेखक नवीं कक्षा की मान्यता लेने के लिए संबंधित जिला-विद्यालय-निरीक्षक से मिला, तब 'आवश्यक फर्नीचर' की कमी बताई गई। लेखक ने निवेदन किया कि "गांव के बच्चों को पढ़-लिखकर भी गांव में ही अपने व्यवसायों--खेती-किसानी, लोहारी-बढ़ई गिरी आदि में लगना है, अतः उन्हें मेज-कुर्सी पर बिठा कर अस्वस्थ अकर्मा और श्रम-भीरु 'बाबू' बनाना हमें अभिप्रेत नहीं है। हां, दरी पर पालथी मारकर बैठने और चौकी पर किताब-कापी रखकर पढ़ने-लिखने की व्यवस्था अवश्य की जाएगी ताकि छात्र कमर सीधी रखते हुए स्वास्थ्यप्रद आसन जमाकर पढ़-लिख सकें।" निरीक्षक निरुत्तर तो हो गए; किन्तु मान्यता तब तक न मिली जब तक मेज-कुर्सी की महंगी व्यवस्था नहीं हो गई।

आज हालत यह हो गई है कि हमारे विद्यालयों में कृषि-पढ़े कृषक-पुत्र भी अपने निजी खेतों में नहीं, शहरों में काम खोजते फिरते हैं। पढ़-लिखकर हमारे बच्चे अपने घर में झाड़ू लगाना तक पसंद नहीं करते। मुण्डको पनिषद् के ऋषि ने "क्रियावानेष ब्रह्मविदां वरिष्ठः (अर्थात् कर्म-निष्ठ व्यक्ति ब्रह्मज्ञानियों से श्रेष्ठ है) कहकर शारीरिक श्रम की प्रतिष्ठा की थी जिसके फलस्वरूप भगवान कृष्ण ने 'गोपाल' और उनके बड़े भाई बलराम ने 'हलधर' बनना पसंद किया था। भारतीयों के एकादशी व्रत की व्याख्या करते हुए सन्त विनोबा ने अहिंसा, सत्य, अस्तेय आदि के साथ शरीर-श्रम, समता-भाव और अस्पृश्यता-निषेध को भी ग्यारह आवश्यक गुणों में गिना है। किंतु इन सबकी घोर उपेक्षा करते हुए हमने अंग्रेजी शिक्षा देकर एक ऐसा वर्ग तैयार किया है जो हाथ से काम करने से कतराता है; श्रम-निष्ठ गुरुजनों का, यहां तक कि अपने माता-पिता का भी उचित आदर सम्मान करने में शरमाता है। आज-कल के पढ़े-लिखे बेकार लोग भारत के वही होनहार नौनिहाल हैं जिन्हें अंग्रेजी शिक्षा देकर हमने बाबू या बेकार निकम्मा) बना डाला है।

राष्ट्रीय एकता:

किसी देश के जन-मानस की एकात्मता वहां की संस्कृति और विचारधारा से अभिव्यक्त होती है जिसका वाहन होता है, साहित्य। सारा मौलिक भारतीय साहित्य संस्कृत में या भारतीय भाषाओं में ही है, जिनमें आश्चर्यजनक समरसता, विलक्षण एकरूपता और अद्भुत पारस्परिक सामंजस्य हैं क्योंकि वे सब या तो संस्कृत से निकली हैं या उससे अत्यंत प्रभावित हैं। वास्तव में भारत की राष्ट्रीय एकता भारतीय भाषाओं के कारण ही है जो दुर्गम नद-नदी, वन-कान्तार

*बी-154, लोक विहार, पीतमपुरा, दिल्ली-110034

लांघती हुई सगी बहिनों की भांति एक-दूसरी के हाथ में हाथ डाले आसेतु-हिमाचल एवं आसिंधु--प्रसम एक ही उदात्त संस्कृति से प्रभावित और अपराजेय राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत हैं । सब की भाव-भूमि और भाव-धारा एक ही है; सब की आत्मा एक है; और राष्ट्रीय एकता के लिए इनकी देन पर तो पोथे लिखे जा सकते हैं ।

अनादिकाल से हरिद्वार प्रयाग, उज्जैन, और नासिक में कुम्भ मेले लगते हैं जहां सभी प्रदेशों के करोड़ों लोग एकत्रित होते हैं और परस्पर मिलते-जुलते तथा विचारों का आदान-प्रदान करते हैं । इसी प्रकार अजमेर, निजामुद्दीन पिरान कलियार और देववंद में उर्स भरते हैं जिनमें कश्मीर से केरल तक के और सौराष्ट्र से असम तक के श्रद्धालु पहुंचते हैं । इन सब के बीच सम्पर्क भारतीय भाषाओं और मुख्यतया हिन्दी के माध्यम से ही होता है किंतु अथर्ववेद (12/1/45) में वर्णित "(जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानधर्माणं पृथिवी यथौकसम्" (अर्थात् तरह-तरह, के विविध वाणियां बोलने वालों और अनेक-धर्मों का पालन करने वालों को एक साथ घर में रहने वालों की तरह धारण करती हुई भूमि (भारत) और ब्रह्मदेव, श्रीलंका आदि सहित वृहत्तर भारत) के क्रमिक विभाजन और मनमानी शोषण के दोषी अंग्रेजों ने, जिनकी नजरों में यह राष्ट्रीय एकता सदा खटकती रही है, हमें अपने अतीत से, अपने साहित्य और संस्कृति से दूर रख-कर अंग्रेजी की वह घुट्टी पिलाई कि अपनी परंपराओं की डोर से कटी पतंग की भांति दिग्भ्रमित हमारा युवा-वर्ग उन्हीं के छल-भरे विचार दोहराने लगा, उन्हीं का गुण-गान, प्रचार-प्रसार करने लगा और उनकी 'फूट डालो, राज करो' वाली नीति सफल होती गई; अंग्रेजी शिक्षालयों की ऊंची दुकानें फैलती गई, और उनसे निकले फीके पकवानों के मस्तिष्क सिकुड़ते गए ।

सच तो यह है कि दो-चार प्रतिशत अंग्रेजी-परस्त लोग ही स्वयं को देश से ऊपर समझते हुए, पश्चिमी सभ्यता के मिशनरी बने हुए, देश की 96 प्रतिशत जनता पर शासन करने और उन्हें अपनी बीमार मानसिकता का गुलाम बनाए रखने का दवामी पट्टा लिए फिरते हैं ।

जब तक व्यक्ति अपने समाज, अपनी मान्यताओं, परंपराओं और यहां तक कि अपने अंतर्विरोधों के साथ सरोकार नहीं अनुभव करता तब तक वह अपने आपको उस पूरे भूखंड से नहीं जोड़ पाता जिसे देश या राष्ट्र कहा जा सकता है । यह सरोकार या लगाव भाषा के माध्यम से ही होता है । इसलिए जब तक अंग्रेजी शिक्षा का बोलबाला रहेगा, भारतीय शिक्षा और भारतीय भाषाएं उपेक्षित रहेंगी, तब तक भारतीय राष्ट्र की एकता सुरक्षित नहीं कही जा सकती ।

मानवता का लोप

मनुष्य एक द्विपाद पशु है । उसमें यदि कुछ विशेषता है तो केवल उसका धर्म (धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः) । यह धर्म से तात्पर्य किसी पंथ, मत-मतांतर मजहब या सम्प्रदाय से नहीं, बल्कि व्यापक मानव-धर्म या मानवता से है । सामाजिक मंगल के लिए जो सहज प्रवृत्ति होती है उसी का नाम धर्म है । भारतीय समाज की 80 प्रतिशत रचना प्राचीन भारतीय संस्कृति और परंपरा के उन सूत्रों से हुई है जिनमें भारतीय दर्शन का रंग चढ़ा हुआ है । किंतु भारतीय संस्कृति को विदेशी भाषा के राहु ने ग्रस लिया है और उसके ग्रस्तास्त होने की आशंका से भारतीय संविधान की 'भारतीय' आत्मा चार दशाब्दियों से सिसक रही है । देश का चरित्र गिर रहा है विदेशी शिक्षा के गर्त में और राष्ट्र का दम घुट रहा है उसके गले में पड़े अंग्रेजी के फंदे से ।

बोली (या भाषा) भी जीव मात्र में केवल मनुष्य की ही विशेषता है । इसलिए मानव-धर्म भी भाषा या साहित्य के माध्यम से ही जाना जाता है । भारतीय (मानव) धर्म के मूल सिद्धान्तों में सबसे बड़ी बात यही रही है कि दैनिक जीवन में नैतिक आचरण सबसे ऊपर रखा गया है--'आचारः परमो धर्मः' । मानव-धर्म या मानवता कुछ तो जन्म-जात होती है, और बहुत-कुछ सीखी जाती है । किंतु आज स्थिति यह है कि झूठी, विद्वेष-प्रचारिणी और विषैली बातों का प्रचार तेजी से हो रहा है (या किया जा रहा है) और कल्याणकारिणी वाणियों की निर्दयतापूर्वक अवहेलना की जा रही है, नैतिकता का मखौल उड़ाया जा रहा है ।

बचपन से ही हम पर अंग्रेजी शिक्षा लाद दी जाती है जो दूसरों का शोषण और अपना स्वार्थ-साधन करने में ही अपनी चरम सार्थकता समझी जाती है । एच. जी. वेल्स कहते हैं :

> "इतिहास हमेशा शिक्षा और महाविपत्ति के दो विकल्प हमारे सामने रखता है । ऐसी शिक्षा के लिए जो महाविपत्ति से बचाती है, कोई भी पाठ्यक्रम पर्याप्त नहीं होता, उसके लिए प्रवृत्ति भी जागृत होनी (या करनी) चाहिए । केवल वृत्ति-परक शिक्षा से काम नहीं चलता । बिकाऊ कौशल सिखाने की तो बात ही आत्मघाती है । शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य तो इंसान को सच्चा इंसान बनाना है ।"

वेद की भी शिक्षा का सार यही है कि 'मनुर्भव' अर्थात् मनुष्य बनो । प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने आधुनिक शिक्षा पर कटाक्ष करते हुए कहा था कि "हमें पक्षी की भांति आकाश में उड़ना सिखाया जाता है; मछली की भांति पानी पर तैरना सिखाया जाता है; किंतु मनुष्य की भांति पृथ्वी पर कैसे रहना चाहिए, यह नहीं सिखाया जाता ——मनुष्य को मनुष्य बनाने वाले मूल तत्व भारतीय शिक्षा में ही हैं ।" पाश्चात्य (अंग्रेजी) शिक्षा वृत्ति-परक, स्वार्थ-प्रधान और अहंजनिका है, जबकि भारतीय शिक्षा अहिंसा, सत्य, अस्तेय, दया, दाक्षिण्य आदि मानवता के उत्कृष्टतम गुणों का आधार है ।

मेकाले की अंग्रेजी-शिक्षा-नीति का विरोध उसी के जमाने में हागसन ने भी किया था। उसने कहा था कि,

"भारतीयों की समाजिक व्यवस्था में दो बात स्पष्ट रूप से प्रमुख हैं : एक तो यह कि आध्यात्मिक साहित्य से इसका अटूट संबन्ध है; और दूसरी यह कि भारतीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ईश्वरीय प्रेरणा का प्रभाव है और मनुष्य के कर्म-क्षेत्र का कोई भी कोना इससे अछूता नहीं है। इसलिए भारतीयों को ऐसी शिक्षा देना, जिसका धर्म से बिल्कुल संबंध न हो, और जिसका संकीर्ण उद्देश्य केवल सरकारी काम के लिए उपयुक्त व्यक्ति तैयार करना हो, उनकी सांस्कृतिक हत्या करने जैसा है।"

स्वामी विवेकानन्द ने भी इस लूली और संकीर्ण मनोवृत्ति वाली शिक्षा की भर्त्सना उसी जमाने में की थी जब अंग्रेजी का बीज बोया जा रहा था। उन्होंने कहा था"—— (शिक्षित) वर्ग शारीरिक और नैतिक दृष्टि से मर चुका है"। इसीलिए आजादी मिलते ही 21-9-1947 के 'हरिजन' में गांधी जी ने लिखा था; "एक संस्कृति—अपहारक के रूप में अंग्रेजी को भी हमें उसी तरह निकाल फेंकना चाहिए जिस तरह हमने अंग्रेजों के राजनीतिक शासन को सफलतापूर्वक उखाड़ फैंका। "बापू ने तो यहां तक कहा था कि "यदि मेरे पास किसी निरंकुश शासक की शक्ति होती तो मैं विदेशी भाषा से अपने बच्चों की शिक्षा आज ही बंद करा देता। यह एक ऐसी बुराई है जिसका तत्काल उपचार होना ही चाहिए।"

शिक्षा का उपहास

सच तो यह है कि भारतीय संविधान में शिक्षा को जितना अधिक महत्त्व दिया गया है, हमने उसका उतना ही अधिक उपहास किया है। हमारी शिक्षा राष्ट्र-पराङ्मुख है। आध्यात्मिक विकास तो दूर, हम भौतिक विकास के पीछे दौड़ कर उसे भी छू नहीं पाए। भारत की जटिल समस्याएं जटिलतर इसीलिए होती जा रही हैं कि उन पर विचार करने वालों में मानसिक और बौद्धिक वैराग्य का अभाव है। उदाहरणार्थ भारतीय संसद के दोनों सदनों में 1967 से सर्वसम्मति से पारित और 1968 में राजपत्रित संकल्प के अनुसार सरकार की सभी सेवाओं में भरती के लिए प्रतिप्रतियोगिता परीक्षाओं का माध्यम सभी भारतीय भाषाएं होनी चाहिएं।

अफसोस तो यह है कि सर्वतोमुखी पतन की मूल अंग्रेजी की अनावश्यक अनिवार्यता दूर करने का अब भी कोई विश्वसनीय संकेत नहीं दिखता। स्पष्ट है कि देश को वाणी देने के लिए आज तक जो भी कदम उठे, सब अनमने, सब दिखावटी, अंदरूनी कोशिश यही रही कि कैसे अंग्रेजी की जड़ मजबूत हो। इसलिए यदि कोई क्रान्तिकारी और प्रभावी कदम उठ सकेगा तो वह महत्त्वपूर्ण राष्ट्र-सेवा होगी, जिसके लिए सारा राष्ट्र कृतज्ञ होगा। □

पृष्ठ 8 का शेष

देशी रियायसतों में स्थित, पोलिटिकल एजेंट, गर्वनर जनरल, पोलिटिकल सुपरिंटेंडेंट तथा रैजीडेंट के कार्यालयों में हिंदी अनुवाद और हिंदी भाषा के व्यवहार की पूर्ण व्यवस्था की। इतना ही नहीं केवल सेवाओं के अधिकारियों के लिए हिंदी भाषा में प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की और होम डिपार्टमेंट के अंतर्गत तरजूमा मकहमा की स्थापना भी की। अग्रेंज शासकों ने मराठों और मुगलों के राजकाज में प्रयोग होने वाले सभी प्रकार के पत्रों का प्रयोग किया और लोकप्रचलित हिंदी अथवा हिंदुस्तानी का प्रयोग किया। उनके प्रशासन से संबंद्ध ऐसे दस्तावेज प्राप्त होते हैं जिनमें विभिन्न प्रकार के वाक्य, उपवाक्य, और शब्दावली तथा उपबोलियों का प्रयोग किया है। वास्तव में इनके प्रशासन की भाषा खड़ी बोली हिंदी ही थी। उदाहरणार्थ :——

1. मगर हम हजूर को षोफू रखते हैं।
2. ईस फैसले के ऊपर दूसरी जादती उसने की है।
3. अब मैं तुम कु ईतला देने से खुस हूं।
4. यूरोपियन आफीसर ईस तनाजे के फैसले के वास्ते मुकरर फरमाया जावेगा। (पृष्ठ सं. 84, 85, राजभाषा हिन्दी की कहानी)।

अंग्रेजों के शासन से सम्बद्ध बहुत सी मोहरें प्राप्त हुई हैं, जिसमें अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं का ही प्रयोग किया है। इन मोहरों में कुछ मोहरें ऐसी भी हैं जो केवल हिन्दी में ही हैं। इन मोहरों पर देवनागरी लिपि में सम्बद्ध अधिकारी का पदनाम, विभाग अंग्रेजी तिथि, तथा सन् अंकित किये जाते थे। यह भी देखने में आया है कि पोलिटिकल एजेन्ट की मोहर देवनागरी तथा अंग्रेजी दोनों लिपियों में होती थी। एजेंट गवर्नर जनरल के कार्यालय से राजाओं को जाने वाले पत्रों का अनुवाद हिन्दी भाषा किया जाता था। इसी प्रकार राजाओं के द्वारा गवर्नर जनरल को भेजे गये पत्रों का अनुवाद भी अंग्रेजी भाषा में किया जाता था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रारंभ में अंग्रेजों ने अपने राजकाज में हिन्दी भाषा का प्रयोग किया था। अंग्रेजी का प्रयोग तो उन्होंने बहुत बाद में किया था।

स्वतंत्रता के पश्चात् हमारे नेताओं के सामने सरकार बनाने का प्रश्न था। इसके साथ ही यह भी एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न था कि सरकार को चलाने और सारे देश में उसकी नीतियों, निर्देशों और आदेशों को अपनाने के लिए किस भाषा का प्रयोग किया जाए। अतः संविधान के निर्माताओं ने यह सर्वसम्मत निर्णय लिया कि प्रजातांत्रिक परिस्थितियों और सभी आवश्यक कारणों से हिन्दी इस देश की राजभाषा हो सकती है।

राजभाषा-हिंदी और भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय अंक

□डॉ रमेश चन्द्र शुक्ल *

एक उत्तम तथा जानकारी से भरपूर लेख —संपादक

भाषा भावाभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। अतः सरकार और जनता के बीच जो महत्त्वपूर्ण कड़ी भी है। सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों को जनता तक पहुंचाने का भाषा ही एक सर्वोत्कृष्ट माध्यम है। आज के इस प्रजातांत्रिक युग में तो भाषा का महत्त्व और भी बढ़ गया है। अतः साधारण जनता और प्रशासन के कार्य के प्रति आस्था जागृत करने के लिए आवश्यक है कि प्रशासन का सारा काम एक ऐसी भाषा में हो जो जनता की भाषा हो। हमारा देश एक बड़ा देश है जिसमें अनेक भाषाओं, जातियों एवं वेशभूषाओं का समावेश है। बोलचाल की अनेक भाषाओं के बावजूद संविधान में 15 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। परन्तु राजकाज चलाने तथा केन्द्र एवं राज्यों के बीच संपर्क स्थापित करने का उत्तरदायित्व हिन्दी को सौंपा गया है क्योंकि यह देश के एक बहुत बड़े क्षेत्र में प्रयुक्त होती है। भारतीय संविधान के भाग-17 में अनुच्छेद 343 से 351 तक हिन्दी विषयक विविध अनुच्छेदों का समावेश किया गया है। हमारे संविधान का अनुच्छेद 343(1) सीधे सरल शब्दों में यह घोषणा करता है कि "संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के प्रयोजन के लिए प्रयोग होने वाले अंक का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा"।

भारतीय अंकों के अन्तर्राष्ट्रीय रूप के बारे में लोगों में बड़ा भ्रम है। आज संसार के अनेक देशों में जिन अंक संकेतों का प्रयोग होता है, वे ये हैं—1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 0 कई लोग इन्हें भ्रमवश 'अंग्रेजी अंक' कहते हैं। वास्तव में 'अंग्रेजी अंक' या 'अंग्रेजी लिपि' नाम की कोई चीज़ नहीं है। जिस लिपि में अंग्रेजी भाषा लिखी जाती है, वह रोमन लिपि है और रोमन अंक पद्धति के सात मूल अंक समेत हैं—

I	V	X	L	C	D	M
1	5	10	50	100	500	10000

इनमें प्रारम्भ के तीन अंक संकेतों से 1 से 10 तक की संख्याएं लिखी जाती है, जैसे :

I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10

रोमन लिपि में '0' (शून्य) नहीं है। शून्य तो भारतीय मनीषा की एक बहुत महत्त्वपूर्ण खोज है। वेदों में 'शून्य' शब्द नहीं है। कालान्तर में जब यह शब्द मिलता है तो इसका अर्थ है—'रिक्त' या 'खाली स्थान'। अमरकोश में शून्य का यही अर्थ है। आचार्य पिंगल ने 'छन्दसूत्र' नामक ग्रंथ के आठवें अध्याय में 'शून्य' शब्द का मात्राओं की गणना के संदर्भ में प्रयोग किया है। प्रख्यात ज्योतिषी वराहमिहिर ने सन् 505 ई. में अपने ग्रंथ 'पंचसिद्धान्तिका' में शून्य के बारे में विस्तृत प्रकाश डाला है। इस प्रकार हम देखते हैं कि यह अंक पद्धति वास्तव में, भारतीय देन है।

यूरोप की भाषाओं में 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 0 जैसे जिन अंक संकेतों का प्रयोग होता है, उन्हें यूरोप के लोग सामान्यतया 'अरबी-अंक' कहते हैं। कभी-कभी इन्हें 'इण्डो-अरैबिक' अंक भी कहते हैं। परन्तु इतना अवश्य है कि ये अरबी अंक संकेत नहीं है। क्योंकि अरबी अंक-संकेत दूसरे हैं। प्राचीन अरबी गणितज्ञों ने इन अंक संकेतों को 'हिन्दिसा', अल-अरकम्-अल-हिन्द (हिन्द के अंक) या 'गुबार-अंक' कहा है। अतः निश्चय ही ये भारतीय अंक संकेत है।

आज संसार के अनेक देशों में जिन अंक-संकेतों—1, 2, 3, 4, 5 6, 7, 8, 9, 0 का प्रयोग होता है; वे भारतीय उत्पत्ति के अंक-संकेत हैं। ये अंक चिन्ह भारत के हैं। इन अंक-चिन्हों का मूल भारत के प्राचीन ब्राह्मी अंक संकेतों में है। इन अन्तर्राष्ट्रीय अंक-संकेतों का धीरे-धीरे विकास हुआ है। जिस प्रकार हमारे आज के देवनागरी अंक संकेतों का विकास पुरानी ब्राह्मी अंक संकेतों से हुआ है, उसी प्रकार 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 0 अंक संकेतों का विकास भी पुरानी ब्राह्मी अंक संकेतों से ही हुआ है।

भारतीय अंक पद्धति के साथ पहले से अंक-संकेत पश्चिमी एशिया के देशों में पहुंचे। अरबों ने इन्हीं अंक-संकेतों को 'हिन्दिसा' या 'गुलार अंक' कहा है। भारतीय अंक पद्धति संसार की किसी भी अन्य पद्धति से श्रेष्ठ थी और इससे गणित की क्रियाओं में आसानी होती थी। इसलिए अरबों ने इसे अपनाया और इसकी प्रशंसा की। इब्न बहशिया (855 ई.) को तीन प्रकार के भारतीय अंक संकेतों की जानकारी थी। अरबी निबन्धकार जाहिज (9वीं सदी) ने भारतीय अंकों को 'हिन्द के स्वरूप' कहा है। अधिकांश अरबी विद्वानों ने इन अंक संकेतों का 'हिन्दिसा' (हिन्द के अंक) कहा है।

प्रसिद्ध विद्वान अलबेरुनी (सन् 973–1048 ई.) ने भी भारतीय अंकों के बारे में जानकारी दी है। अपने भारत संबंधी ग्रंथ 'किताब अल हिन्द' में उन्होंने लिखा है––"जिस प्रकार हम अंकों के लिए अरबी अक्षरों का प्रयोग करते हैं, उसी प्रकार भारत के लोग अपनी वर्णमाला का अंकों के लिए प्रयोग नहीं करते। भारत के विभिन्न भागों में जिस प्रकार वर्णमाला के अक्षरों के आकार भिन्न भिन्न है, उसी प्रकार उनके अंक संकेतों के आकार भी भिन्न भिन्न हैं। हम जिन अंक संकेतों का प्रयोग करते हैं, वे भारत के सर्वोत्तम अंक-संकेतों से व्युत्पन्न है"।

पश्चिमी एशिया के देशों से ये अंक संकेत स्पेन पहुंचे। यूरोप के देशों ने जब भारतीय अंक पद्धति को अपनाया तो साथ में इन अंक चिन्हों को भी अपना लिया। ये अंक संकेत उन्हें अरबों से मिले इसलिए वे अब भी इन्हें 'अरबी अंक' कहते हैं। जबकि वास्तव में ये भारतीय अंक हैं। यूरोप के सभी देशों में इन्हीं अंक संकेतों का प्रयोग होता है। यूरोप के साम्राज्यवादी देशों ने अमरिका, अफ्रीका, एशिया तथा आस्ट्रेलिया में अपने उपनिवेश स्थापित किए तो ये अंक संकेत भी उन देशों में पहुंचे। अंग्रेजों के साथ ये अंक संकेत भारत पहुंचे। इन अंक संकेतों को अंग्रेजी भाषा की लिपि के साथ प्रयुक्त होते देखकर भारतवासियों ने इन्हें अंग्रेजी अंक-संकेत समझा जबकि ये भारतीय अंक संकेत ही है।

आज विश्व के अधिकतर देशों में इन्हीं अंक संकेतों का प्रयोग होता है। हमारे देश के शासन ने भी अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप प्राप्त इन अंक संकेतों को सम्पूर्ण भारत के लिए पुनः अपना लिया है। इसीलिए हम इन्हें 'भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप कहते हैं। भारत सरकार के सभी केन्द्रीय कार्यालयों में इन अंकों का प्रयोग अनिवार्य है। अब हिन्दी के नए प्रकाशनों में भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय अंकों का प्रयोग प्रारम्भ हो गया है। बंगला उड़िया, असमिया, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि भाषाओं के प्रकाशनों में भी इन्हीं अन्तर्राष्ट्रीय अंकों का प्रयोग होना चाहिए। जब सारे देश के प्रकाशनों में इन अन्तर्राष्ट्रीय अंकों को अपना लिया जाएगा तो हम बड़े गर्व से कह सकेंगे कि ये अंक-संकेत मूलतः भारतीय हैं

पृष्ठ 6 का शेष

आज के युग में विज्ञापनों का विशेष महत्त्व है। केन्द्रीय सरकार के ही नहीं राज्य सरकारों के तथा सरकार से संबद्ध अनेक उपक्रमों, स्वायत्त निकायों आदि के भी विज्ञापनों टेंडर नोटिस एवं अन्य सूचनाएं समय समय पर प्रकाशित होती हैं। अनेक वर्ष पूर्व ये सभी विज्ञापन अंग्रेजी में छपा करते थे। अंग्रेजी समाचार-पत्रों में ही नहीं हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के पत्रों में भी/हिंदी भाषी राज्यों ने अपने विज्ञापन हिंदी में प्रकाशित कराने आरम्भ कर दिए थे। किन्तु केन्द्रीय सरकार के विज्ञापन अंग्रेजी में ही छपते रहे थे। बाद में यह निर्णय किया गया कि केन्द्रीय सरकार के जो विज्ञापन अखिल भारतीय महत्त्व के अथवा हिंदी भाषी राज्यों की जनता के लिए हों वे हिंदी में भी प्रकाशित किए जाने चाहिएं और हिंदी समाचार-पत्रों को वे विज्ञापन हिंदी में ही भेजे जाने चाहिए।

अप्रैल 1971 में गृह मंत्रालय ने सरकारी विज्ञापनों के संबंध में जो आदेश जारी किए उनमें कहा गया था कि विज्ञापनों की सामग्री का प्रारूप मंत्रालयों/विभागों तथा केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व अथवा नियंत्रण वाले कार्यालयों, कंपनियों तथा निगमों द्वारा द्विभाषिक रूप में भेजा जाना चाहिए। उस आदेश का अनुपालन आंशिक रूप में होने लगा था। उसे जनवरी, 1987 में पुनः दोहराने की आवश्यकता पड़ी। कुछ मंत्रालय दृश्य एवं प्रचार निदेशालय को विज्ञापन सामग्री केवल अंग्रेजी में भेजते थे। उन्हें कहा गया कि वे विज्ञापन सामग्री हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार करके उक्त निदेशालय को भेजें। केन्द्रीय सरकार के उपक्रमों को विशेष रूप से कहा गया कि वे अपने विज्ञापन दोनों भाषाओं, अर्थात् हिंदी और अंग्रेजी, में साथ-साथ तैयार करके जारी करवायें।

अभी भी अनेक सरकारी विभाग/कार्यालय अपने विज्ञापन उक्त निदेशालय को अंग्रेजी में ही भेजते हैं तथा निदेशालय उनका हिंदी अनुवाद तैयार करके अथवा करवा कर उन्हें हिंदी तथा अंग्रेजी समाचार-पत्रों में संबंधित भाषाओं में छपवाता है। यह अनुवाद कार्य निदेशालय के अपने स्टाफ के द्वारा ही नहीं कराया जाता, अनुवाद का काफी कार्य बाहर के अनुवादकों से भी कराया जाता है। वे कई बार प्राधिकृत शब्दावली का प्रयोग नहीं करते।

कुछ सरकारी विभागों/उपक्रमों के विज्ञापन हिंदी समाचार पत्रों में अभी भी अंग्रेजी में छपते रहते हैं जब इन विभागों/कार्यालयों का ध्यान सरकार की नीति के उल्लंघन के विषय में आकर्षित किया जाता है तो बहुधा उत्तर मिलता है कि उन्होंने विज्ञापन भेजकर संबंधित समाचार पत्र को कहा था कि उसका हिंदी अनुवाद करके अपने पत्र में छापें तथा उस समाचार पत्र की उपेक्षा के कारण विज्ञापन अंग्रेजी में छप गया है। अंग्रेजी विज्ञापन का हिंदी रूपांतर तैयार करने की जिम्मेदारी समाचारपत्र पर डालना किसी भांति उचित नहीं है। यदि एक विज्ञापन कई समाचार-पत्रों में छपना है, जैसा कि आमतौर से होता है, तो अलग-अलग अनुवादकों के माध्यम से अनुवाद होने से एक ही विज्ञापन विभिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न रूप में छपा दिखाई पड़ेगा। उसमें श्रम और शक्ति भी कई गुणा लगती है।

कुल मिलाकर देखा जाए तो हिंदी समाचार-पत्रों में अब केन्द्रीय सरकार के अधिकांश विज्ञापन हिंदी में छपते हैं। जो विज्ञापन अंग्रेजी में छप जाते हैं उनके विषय में संबंधित मंत्रालय से लिखा पढ़ी होने पर वे खेद प्रकट करके आश्वासन देते हैं कि भविष्य में इस बात का पूरा ध्यान रखा जाएगा कि हिंदी समाचार-पत्र में उनका विज्ञापन हिंदी में ही छपे।

□

आठवीं पंचवर्षीय योजना में हिन्दी के विकास के लिए अपेक्षा

□डा. वीरेन्द्र कुमार दुबे, डी० लिट*

भारत के स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी की भूमिका और महत्त्व को स्वीकार करते हुए पाश्चात्य विद्वान डिलीयान ने बहुत पहले विचार व्यक्त किए "विश्व में सबसे अधिक प्रयोग की जाने वाली भाषाओं में हिन्दी का स्थान तीसरा है" । भारत में राष्ट्रीय भाषा की दृष्टि से हिन्दी का स्थान सर्वोपरि हैं । 10 से अधिक देशों में विद्वान विभिन्न समुदाय के लोग हिन्दी का उपयोग करते हैं। इसका साहित्यादर्शन, कविता, कला तथा विज्ञान का बहुल है । निश्चित् ही भविष्य में हिन्दी भारत में व्यापक जनभाषा बन सकेगी । विश्व भाषा के रूप में ज्ञान एवं संस्कृतिक के आदान-प्रदान से इसका विकास हो सकेगा ।

सोवियत संघ ने लाल बहादुर शास्त्री पाठशाला में 1000 हजार से अधिक हिन्दी माध्यम से अध्ययन कर रहे हैं । दो करोड़ की आबादी वाले नेपाल जोकि हिंन्दी भाषी देश है यहां पर देखा जाए, तो आबादी के हिसाब से हिन्दी जानने वालों की दृष्टि से यह पहला देश है। हिन्दी के संबंध में विश्व साहित्य संस्कृतिक संस्थान ने अपनी गरिमा और स्तर के द्वारा "अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी संगोष्ठी" का आयोजन किया । जिसमें सोवियत संघ, हालैण्ड, चीन, ब्रिटेन, फिजी मारीशस, ट्रिनिडाड, कनाडा, गयाना, और सूरी नाम के प्रतिनिधि थे यह सम्मेलन अक्तूबर 87 में लंदन और अक्टूबर 88 में हेग (हालैण्ड) में आयोजित किया । अंतराष्ट्रीय स्तर पर कम्प्यूटरों के उपयोग में हिन्दी का योगदान हैं ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हमारे देश में राष्ट्रीय संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को देश की राजभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार किया । संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 में केन्द्र सरकार की राजभाषा बनाने का प्रावधान किया गया । जिसके परिणाम स्वरूप मंत्रालयों/विभागों तथा उपक्रमों में हिन्दी का प्रयोग क्रमशः बढ़ रहा है ।

भारत और भारत की संस्कृति को समझने के लिये, हिन्दी भाषा और साहित्य के अध्ययन हेतु विश्व के शताधिक वि. वि. में हिन्दी का अध्ययन हो रहा है। केन्द्रीय हिन्दी समिति की बैठक दिनांक 12 अक्टूबर, 87 को हुई। इस बैठक की अध्यक्षता श्री पी. वी. नरसिंहराव ने की, जिसमें उपस्थित सदस्यों ने संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में हिन्दी में भाषण देने से हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है। जिससे यह हुआ कि राष्ट्र की भाषा को विश्व मंच पर प्रस्तुत करने का सराहनीय कदम हैं । नागरिकों का यह दायित्व है कि राजभाषा हिन्दी को व्यवहार में लाये ।

आठवीं पंचवर्षीय योजना के विकास का कार्य प्रस्तावित हैं । इस संबंध में सरकार से यह अपेक्षा है कि हिन्दी के विकास के लिए विचार आमंत्रित किए जाए, और इसे लागू करने के लिये ठोस कदम उठाए जाएं । सरकार के द्वारा हिन्दी दिवस का आयोजन सितंबर माह में मुख्य रूप से किया जाता है। जिसमें हिन्दी के विकास की दृष्टि से विभिन्न प्रकार के आयोजन जो भाषण, श्रुतलेख, कवितापाठ, गीत, कहानीलेखन, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, टंकण, टिप्पणी, प्रारूप आलेखन, निबंध, आशुलिपि वाद और हिन्दी व्यवहार, प्रतियोगिताओं को किये जाने की आवश्यकता हैं । हिन्दी सेवी संस्थाओं के द्वारा इन कार्यक्रमों में सहयोग की अपेक्षा है ताकि हिन्दी के तकनीकी और गैर तकनीकी विषयों पर संगोष्ठी तथा परिचर्चा में विचार मंथन हो सकेगा ।

भारत सरकार के राजभाषा विभाग के द्वारा लगातार वार्षिक कार्यक्रम को लागू करने के लिये मंत्रालयों पर जोर दिया जाता हैं और यह देखा गया है कि हिन्दी सलाहकार समिति की बैठकों में विभागों, उपक्रमों, में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से प्रोत्साहन दिया जाता हैं । देश में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, राजभाषा सम्मेलन तथा संगोष्ठी एवं हिन्दी कार्यशालाएं भी हिन्दी के प्रयोग को बढ़ा सकती हैं। सरकारी कार्यालयों, मंत्रालयों, विभागों तथा उपक्रमों में भी जो बजट बनाए जाते हैं उसे तैयार करते समय इस बात का मानक मानदंड के अनुसार हिन्दी प्रयोग संबंधी पदों के सृजन का प्रावधान तथा रिक्त पदों को भरने के लिये पहल की आवश्यकता प्रतीत होती हैं। हिन्दी के टंकण यंत्रों की खरीद, तथा आशुलिपिकों की भरती के लक्ष्य बढ़ाने तथा हिन्दी पुस्तकों के लिये अधिक खर्च रखने की आवश्यकता है । हिन्दी से संबंधी सहायक पुस्तक, कोष, शब्दावलियां, वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों के साथ विभिन्न मंत्रालयों तथा विभागों द्वारा चलाई जा रही है मौलिक पुस्तक लेखन परियोजनाओं के अंतर्गत पुरस्कृत और प्रकाशित पुस्तक खरीदने के कार्य को प्रोत्साहन देना होगा । केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय तथा वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के द्वारा भी हिन्दी

*प्राध्यापक, कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय एवं विजिटिंग प्रोफेसर ओपन वि. वि., जबलपुर

भाषा तथा हिन्दी में शब्दों के पर्याय तथा परिभाषा के कार्य में पहल में तेजी लानी होगी ।

आठवीं पंचवर्षीय योजना में हिन्दी के विकास और तेजी से बढ़े इसलिये आवश्यक है कि मंत्रालयों, विभागों तथा कार्यकलापों/उपक्रमों आदि के लिये राशि का प्रावधान बढ़ाए जाने की आवश्यकता है । देश के दक्षिण राज्यों के विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिन्दी के अध्यापन, अनुसंधान तथा पी-एच डी, कार्य के लिये अधिक मात्रा में साधन उपलब्ध कराया जाना चाहिये ताकि हिन्दी के बारे में नए-नए विचार और खोज सामने आ सकें ।

हिन्दी में खोज हो और अनुसंधान कार्य बढ़े, इस दृष्टि से राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी वि. वि. समूचे देश में शोध कार्य, अनुसंधान कार्य कराएं इस दृष्टि से इसकी स्थापना आठवी पंचवर्षीय योजना में की जाए ताकि यह कार्य तेजी से हो । इससे हिन्दी के इतिहास, उपलब्धि एवं विकास के नए-नए तथ्य सामने आएंगे और हिन्दी के लिए नए नए साहित्यकार लेखक के विचार जानने को मिलेंगे । आठवीं पंचवर्षीय योजना में केन्द्र सरकार राष्ट्रीय हिन्दी वि. वि. की स्थापना के लिये व्यवस्था करें और योजना आयोग इस दशा में पहल करे ताकि आठवीं योजना में हिन्दी का विकास तीव्रगति से हो सकें । □

पृष्ठ 5 का शेष

कठिनाई पैदा करती हैं । बाईबिल के कतिपय अनुच्छेदों में अंजीर वृक्ष, नई पत्तियां, वर्षा, रेगिस्तान, नदी आदि ऐसे संदर्भगत शब्दों का प्रयोग हुआ है जिनके समानार्थी शब्दों को भारतीय सांस्कृतिक संदर्भ में ढूंढ पाना आसान कार्य नहीं है । इसी संदर्भ में अफ्रीका के एक औसत दर्जे के व्यक्ति के लिए हिम (अत्यंत सफेद, चमकीली व शीत) शब्द से तुरंत संबद्धता कायम कर पाना इतना सरल नहीं है । यह एकदम साफ है कि जब किसी क्षेत्र विशेष में स्थलाकृतिक विशिष्टताओं का पूर्णतया अभाव रहता है तो इस संदर्भ को ऐसे क्षेत्र की विशिष्टताओं के माध्यम से संप्रेषित कर पाना असंभव हो जाता है, जहां ये विशिष्टताएं भरपूर मात्रा में होती हैं ।

भोजन राष्ट्रीय संस्कृति की एक अत्यंत संवेदनशील एवं महत्त्वपूर्ण अभिव्यक्ति है । फ्रांस के "चार्लेट आँ फ्रूट", "चार्लेट रसे" एवं भारत के "गुलाब जामुन", "फिरनी, खीर", "दहीवड़ा", आदि पकवानों के स्वाद एवं पाक-विधि में बहुत अंतर है । अंग्रेज लोग लगभग सायं 6.00 बजे "हाई टी" को प्रारंभिक रात्रि-भोज के रूप में लेते हैं । लेकिन यह चाय बिल्कुल नहीं होती । फ्रांस में स्कूल जाने वाला बच्चा "ली गोटर" (दोपहर का भोजन) साथ लेकर जाता है । फ्रांसीसी इसी शब्द का प्रयोग शाम की चाय के लिए भी करते हैं । भारतीय "गुलाब जामुन" में न तो गुलाब है और न ही जामुन । इसी तरह "दालचीनी" में भी न दाल है और न ही चीनी । कहना न होगा कि ऐसी स्थिति में अनुवादक को बहुत चौकस रहने की जरूरत है । "कप्तान', "किमोनी', "सारोंग" (दक्षिण समुद्र), "एनार्क" (अफ्रीका), "धोती", "साड़ी" (भारतीय) आदि शब्दों की अनुवाद की दृष्टि से व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि ये शब्द स्पष्टतया राष्ट्रीय संस्कृति से जुड़े हुए हैं । यही बात "बंगला", "पंडाल" और "झुग्गी" शब्दों पर भी लागू होती है ।

अनुवादक को "द पीपल", "द कामन पीपल", "द मासेज", "द वर्किंग क्लास" आदि शब्दों के मूल में सामाजिक संस्कृति के आशय को समझते हुए बड़ी सावधानी से इनका अनुवाद करना चाहिए। पर "क्रिकेट", "हाकी", "टेबिल टेनिस", "चौपड़" आदि खेल-कूद संबंधी शब्दों को इसी रूप मे लिया जाना चाहिए। "प्रेज़ीडेंट", "प्राइम मिनिस्टर", "किंग" आदि शब्दों को तो अनूदित किया जा सकता है, लेकिन "व्हाइट हाऊस", "राष्ट्रपति भवन", "मैक्समूलर भवन", "पैंटागन" आदि शब्दों का अनुवाद करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि इन संस्थागत शब्दों में देश का राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन प्रतिबिंबित होता है। "कर्म", "धर्म" एवं "मोक्ष" जैसे धार्मिक शब्दों को सर्वत्र मान्यता प्राप्त है। अतः इन शब्दों को इसी रूप में व्याख्यात्मक टिप्पणी के साथ प्रयोग किया जा सकता है।

फिर भी कह देना जरूरी है कि अनुवादक को स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा दोनों का पूर्ण ज्ञान हो और उसमें इनका अर्थ, लहज़ा तथा दोनों संबद्ध संस्कृतियों की सिहरन महसूसने की कलात्मक क्षमता हो। अनुवादक को सांस्कृतिक विषय को सावधानी से हाथ में लेकर तथ्यों को सुचारू रूप से एकत्रित करके प्रत्यवस्थापन की ओर लौटना चाहिए। यदि अनुवादक लक्ष्य भाषा के पाठकों के लिए सजीव संस्कृति को बखूबी उंडेल दें और मूल लेखक एवं विदेशी पाठक वर्ग के मध्य घनिष्ठता कायम कर दें तो उससे और क्या अपेक्षा की जा सकती है । ○

साहित्यिकी

उर्दू : साहित्य भाषा और राजभाषा

□प्रदीप कुमार बक्शी*

"उर्दू" शब्द की व्युत्पत्ति के बारे में विद्वानों ने अनेक दृष्टियों से विचार किया है। भाषा शास्त्रियों के एक दल ने "उर्दू" शब्द को तुर्की भाषा से गृहीत बतलाते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि उर्दू "शाही शिविर" या "खेमा" आदि अर्थों का द्योतक रहा है। डा. भोलानाथ तिवारी ने उक्त मतों का खण्डन करते हुए लिखा है कि उर्दू शब्द न तो तुर्की भाषा का है और न इसका मूल अर्थ "खेमा" ही है[1]। उनके विचार से "यह शब्द चीनी भाषा का है। तुर्क, मंगोल तथा तातार, जिनमें यह शब्द विभिन्न रूपों तथा अर्थों में मिलता है, मूलतः हूणों के वंशज हैं। हूणों का मूल स्थान उत्तरी चीन में कहीं था। "हूण" शब्द भी मूलतः चीनी भाषा का "शान-यू" है। ····· "शान-यू" शब्द ही बिगड़कर "हूण" "हूड" "ह्यूड. या हूण" हो गया। यह शब्द पहली सदी के आस पास चीनी में "ह्यूङ-नू" के रूप में मिलता है। इन हूणों का एक कबीला ह्वांगहो नदी के किनारे था जिसे चीनी "ओर्दू" कहा करते थे। इन्हीं के आधार पर ह्वांगहो नदी के किनारे का वह स्थान आज भी चीन में "ओर्दूस" कहलाता है। "ओर्दू" का मूल अर्थ चीनी में घुमक्कड़ या यायावर था। इन लोगों की घुमक्कड़ी प्रवृत्ति के कारण ही चीनी इन्हें "ओर्दू" कहा करते थे। पहली सदी ई. से कुछ पूर्व ही चीनी लोगों ने इन सभी लोगों को वहां से खदेड़ा और हूणों के साथ ये मध्य एशिया में चले आए। ये लोग खेमों में रहा करते थे, अतः धीरे-धीरे इस कबीले का नाम "ओर्दू" (इन लोगों के खेमों के लिए) प्रयुक्त होने लगा[2]। डा. तिवारी ने आगे उदाहरण देते हुए स्पष्ट किया है कि यूरोप की भी कई भाषाओं में "ओर्दू" से निकलने वाले शब्दों का अब भी मूल अर्थ (अर्थात घुमक्कड़ जाति) होता है। उदाहरणार्थ अंग्रेजी "होर्ड" का पोलिश के "होर्ड", जर्मन "होर्डे", फांसीसी "होर्द" तथा रूसी "ओर्द" आदि। डा. तिवारी के अनुसार इन भाषाओं से इसके तुर्की के अतिरिक्त मंगोली भाषा से भी आने की संभावना है। ताशकंद, खोकंद में "ओर्दू" "किले" के अर्थ तथा पश्तो में लश्करी पड़ाव के अर्थ में चलता है। तुर्कों का भारत से संबंध होने पर यह शब्द भारत आया।[3] डा. तिवारी के मतानुसार इस शब्द ने विश्व के कई देशों की यात्रा की है और यह चीन से चलकर मंगोलिया और तुर्की होते हुए तुर्कों के साथ भारत आया।[4] डा. तिवारी ने हॉब्सन जाब्सन के इस मत का खंडन किया है कि उर्दू शब्द भारत में बाबर के समय में आया ; उनके विचार से यह बाबर के पूर्व ही तुर्कों के साथ भारत आ चुका था। उस समय इसका अर्थ खेमा, तंबू, फौजी पड़ाव आदि था तथा उसका रूप "ओर्दू" से उर्दू" हो चुका था।[5] डा. सरला शुक्ला ने उर्दू को शौरसेनी, अपभ्रंश से विकसित मानने का प्रयत्न किया है।[6] इस संबंध में निवेदन है कि भाषा शास्त्रियों ने इस बात की पुष्टि नहीं की है। इनसाइक्लोपीडिया अमेरिकाना में उल्लेख है कि उर्दू भाषा भारत में तेरहवीं सदी में मुसलमानों के प्रभाव के कारण आई जो फारसी (और प्रकारान्तर से अरबी) शब्द की बहुतायत लेकर आई और अरबी फारसी लिपि में लिखी जाती है।[7] हिन्दी विश्वकोश (इनसाइक्लोपीडिया इंडिका) में भी उर्दू भाषा का परिचय "फारसी और अरबी मिली हुई हिन्दुस्तानी जबान"[8] के रूप में प्रस्तुत करते हुए उल्लेख है कि "तुर्की भाषा में इस शब्द का प्रकृत अर्थ शिविर है" .... संकेत डा. तिवारी की ओर है कि तुर्की भाषा से ही यह शब्द कई देशों और कालों की सीमा पार करता हुआ भारत आया।

विद्वानों का विचार है कि मुगल बादशाहों के फौजी पड़ावों के लिए "उर्दू" शब्द का व्यवहार हुआ करता था। मुगल बादशाहों के सिक्के भी कभी-कभी फौजी पड़ाओं में ढालने पड़ते थे इसलिए सिक्कों पर टकसान का नाम "उर्दू" लिखा मिलता है।[9] बाबर के कुछ सिक्कों पर "उर्दू" लिखा है तथा अकबर के भी कुछ सिक्कों पर "उर्दू-ए-जफ़र करीन" (अर्थात "विजयश्री से युक्त उर्दू" अर्थात "विजयी शाही पड़ाव") लिखा होता था। जहांगीर का उदाहरण देते हुए डा. तिवारी ने लिखा है कि अपने दक्षिण यात्रा

*भारत रिफैक्ट्रीज लि०, रांची रोड, डाकघर--मरार, जिला हजारी बाग (बिहार)

के समय उसने रास्ते में अपने शाही पड़ाव में सिक्के ढलवाये थे। उसका एक सिक्का ऐसा मिला है जिसपर टकसाल का का नाम "उर्दू दर राहे दक्कन" (अर्थात दक्षिण की राह में पड़ाव) लिखा है। [11] शाहजहां ने भी अपने एक टकसाल का नाम "उर्दू-ए-ज़फ़र-करीन" रख लिया था। [12] डा. तिवारी ने यह स्थापित किया है कि बाबर से लेकर शाहजहां तक "उर्दू" शब्द शाही पड़ाव या शाही फौजी पड़ाव आदि के अर्थ में प्रयुक्त हो रहा था। [13] अपनी उपर्युक्त मीमांसा को स्पष्ट करते हुए डा. तिवारी ने एक अन्य उदाहरण देते हुए लिखा है कि जब शाहजहां अपनी राजधानी आगरा से दिल्ली ले गया तो अपने नाम पर स्थापित "शाहजहांनाबाद" आबाद किया और वहां लाल किला बनवाया। यह किला भी एक प्रकार से फौजी पड़ाव था, अतः "उर्दू" था; किन्तु इसके स्थायित्व, भव्यता एवं वास्तुकला के सौन्दर्य से सम्पन्न होने की वजह से इसे मात्र उर्दू न कहकर उसने इसे "उर्दू-ए-मुअल्ला" कहा। मुअल्ला का अरबी अर्थ "श्रेष्ठ" है, अर्थात यह उसका श्रेष्ठ शाही पड़ाव था। [14]

स्पष्ट है कि शाहजहां के समय तक शाही पड़ाव की भाषा अपना निश्चित स्वरूप ग्रहण कर ली थी इसीलिए उस युग में इस भाषा को "जबान-ए-उर्दू-ए-मुअल्ला" (श्रेष्ठ शाही पड़ाव की भाषा) कहा गया। [15] डा. तिवारी ने उर्दू भाषा का संबंध शाहजहां और उसके शाहजहानाबाद से माना है, इसीलिए उर्दू भाषा को "शाहजहांनी उर्दू" भी कहते हैं। [16]

अपनी उपर्युक्त परिस्थितियों में विकसित हुई उर्दू जुबान की विशेषताएं अपने उद्भव की परिस्थितियों के अनुरूप ही स्पष्ट हुई दिल्ली की लोकभाषा खड़ी बोली, निकटवर्ती भाषा हरियाणवी तथा पूर्वी पंजाब की भाषा की छौंक उर्दू पर पड़ती रही। पुनः मुगलों के काल में राजधानी दिल्ली से आगरा चली गई थी। जिसकी वजह से इस शाही पड़ाव की भाषा का सम्पर्क ब्रजभाषा से भी हो गया। ऐसी परिस्थिति में "मुगल बादशाहों के साथ रहने वालों की भाषा में जो अरबी, फारसी, तुर्की के शब्द थे उनके ऊपर इन देशी भाषाओं का रंग चढ़ने की वजह से उर्दू भाषा अपना विशिष्ट परिचय और शब्द संपदा के साथ विकसित होने लग गई"।

भाषा के अर्थ में "उर्दू" शब्द के प्रचलन के विषय पर भी विद्वानों के अध्ययनों में एकरूपता का अभाव है, किन्तु इतना स्पष्ट है कि सन् 1700 ई. के आसपास शाही पड़ाओं की भाषा के रूप में "जबाने-उर्दू-ए-मुअल्ला" का प्रयोग हो रहा था और, जैसा कि डा. तिवारी का मत है, 1740 तक यह घिसते-घिसते जबाने-ए-उर्दू-ए-मुअल्ला से "जबाने-ए-उर्दू" तथा इससे आगे "उर्दू" हो गया। [17] उर्दू भाषा के निर्माण के प्रसंग में दरिया-ए-लताफ़त में इंशा अल्ला खां की उक्ति को देखा जा सकता है, जहां उन्होंने लिखा है कि "यहां (शाहजहांनाबाद) के खुशबयानों (मृदुभाषियों) ने मुतफ़िक होकर मुताद्दिक (परिगणित) जुबानों से अच्छे-अच्छे लफ्ज निकाले और बाजी इबारतों (वाक्यों) और अल्फाज (शब्दों) में तुसर्रूफ (परिवर्तन) करके और जबानों से अलग एक नई जबान पैदा की जिसका नाम उर्दू रहा। [18] उर्दू के निर्माण के बारे में इंशा अल्ला खां द्वारा प्रस्तुत उपर्युक्त स्थिति की भाषा वैज्ञानिकों ने तर्क की कसौटी पर खरा नहीं पाया है लेकिन इतना स्पष्ट है कि उर्दू का विकास भाषा के अर्थ में सन 1700 ई. के आसपास हो चुका था।

जहां तक उर्दू में साहित्य के निर्माण का प्रश्न है, विचारकों ने इसे पीछे खींचते हुए अमीर खुसरों तक पहुंचा दिया है लेकिन डा. तिवारी के विचारानुसार "उर्दू हिन्दी की एक शैली है, अतः उर्दू उतनी ही पुरानी है जितनी हिन्दी है। [19]

डा. सरला शुक्ला ने दक्षिण भारत में 1590–1737 ई. के दौरान उर्दू साहित्य के विकास को निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित किया है:

(1) गोलकुण्डा राज्यान्तर्गत उर्दू (सन 1590–1677)

(2) बीजापुर राज्यान्तर्गत उर्दू (1590 – 1686)

(3) दक्षिन में औरंगजेब के राज्यत्वकाल में लिखित साहित्य (1687 – 1730) [20]

उपर्युक्त कालखण्डों के विभाजन का सुस्पष्ट आधार तो ज्ञात नहीं है किन्तु डा. शुक्ला ने गोलकुण्डा के प्रमुख कवियों में मुहम्मद कुली कुतुबशाह (1850– 1611), वजरी (1670–1740), गवासी (सन 1639) इब्न निशाती (सन् 1655) तबई (सन् 1670) का नामोल्लेख किया है। इसी तरह बीजापुर राज्य के प्रमुख कवियों मे कवि रुस्ताम (सन् 1649), नुसरती (सन् 1650–1670), मिर्जा (सन 1660) हैं। औरंगाबाद के प्रमुख कवियों में वली और सिराज का उल्लेख आया है। [21]

उत्तर भारत के उर्दू साहित्य का अध्ययन विविध भौगोलिक आधारों पर, यथा; दिल्ली में उर्दू साहित्य, लखनऊ और उर्दू कविता आदि रूपों में किया जाता रहा है। उर्दू साहित्य के विकास के अन्य केन्द्रों में कलकत्ते का मटियाबुर्ज, रामपुर, हैदराबाद, फर्रूखाबाद, पटना, मुर्शिदाबाद भोपाल, टोंक एवं आगरा का नाम विशेष आदर से लिया जाता है। [22]

उर्दू बज्म साहित्य की एक लम्बी परम्परा का उल्लेख उर्दू साहित्य के इतिहासकारों ने किया है जिसके अन्तर्गत अमीर खुसरों से लेकर आज तक के हजारों शायरों की कृतियों का परिचय उपलब्ध है। इससे उर्दू साहित्य की सम्पन्नता का परिचय मिलता है। "उर्दू के हिन्दू सेवक और उर्दू इतिहास" नामक पुस्तक में सैयद कासिम अली साहित्यालंकार ने उर्दू भाषा में लिखने वाले लगभग साढ़े पांच सौ हिन्दू कवियों का विवरण प्रस्तुत किया है। [23] जिसमें उर्दू भाषा में लिखने वाली चालीस हिन्दू कवयित्रियों का विवरण शामिल नहीं है। [24] उर्दू में लिखने वाले मुसलमान कवियों की भी एक लम्बी परम्परा है जिससे उर्दू भाषा की वर्तमान संपन्नता का अंदाज़ लगाया जा सकता है।

इनसाइक्लोपीडिया अमेरिकाना के अनुसार उर्दू साहित्य के विकास के संदर्भ में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के संस्थापक सर सैयद अहमद खान (1817 – 1894) का महत्त्वपूर्ण योगदान है। उर्दू के अन्य बड़े लोगों में असदअल्ला खान (मिर्जा गालिब – 1796 – 1869), मुहम्मद हुसैन आजाद (1832 – 1910), अलताफ हुसैन हाली (1837– –1914) और मुहम्मद इकबाल 1876 – 1938) का नाम विशेष आदर से लिया जाता है।[25] हिन्दी के प्रसिद्ध कहानीकार और उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने भी उर्दू कहानियों को नई गति दी तथा "मैदान-ए-अमल" लिखकर आधुनिक उर्दू उपन्यासों की परम्परा का श्रीगणेश किया।[26] वस्तुतः प्रेमचन्द ने ही उर्दू साहित्य में आम आदमी की जिन्दगी को रूपायित करने का प्रयत्न किया है। उर्दू की उनकी रचनाओं में "सोजे–वतन"; "प्रेम–पचीसी", "प्रेम–बत्तीसी", "प्रेम–चालीसी", "वारदात", "जादेराह", "खाबो ख्याल", "खाके परवाना", "आखिरी तोहफा", "देहात के अफसाने", और "दूध की कीमत" आदि बहुत ही प्रसिद्ध हुई।[27] डा. एहतेशाक हुसैन के शब्दों में "प्रेमचन्द ने उर्दू साहित्य में साधारण जनजीवन के चित्रण की जो परम्परा चलाई थी, वह थोड़े ही समय में बड़ी लोकप्रिय सिद्ध हुई और वे सभी लेखक जो ग्राम्य-जीवन से परिचित थे, उसी आधार पर चलने लगे। सुदर्शन, आजम करकेवी, अली अब्बास हुसैनी, उपेन्द्र नाथ "अश्क" इत्यादि पर उनका स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। इनमें से हर एक ने अपने लिये अलग अलग, मार्ग बना लिए परन्तु इनको प्रेरणा प्रेमचन्द ही से मिली।"[28]

श्री रघुपति सहायक फिराक (जो फिराक गोरखपुरी के नाम से विश्वविख्यात हुए) ने अपनी "उर्दू भाषा और साहित्य" नामक पुस्तक को उर्दू साहित्येतिहास की विविध साहित्यिक-विधाओं के विकास के साथ साथ संघटित करके प्रस्तुत किया है। इन्होंने एक ओर उर्दू गद्य में हास्यरस[29] की परम्परा दिखलाई है, वहीं आलोचना और गद्य के विकास[30], सामाजिक चेतना और नई कविता की चिंताधारा[31], गजल[32], आधुनिक उर्दू गद्य[33], प्रगतिवादी युग[34], उर्दू नाटक[35] के अतिरिक्त उर्दू में प्रयुक्त काव्यशास्त्र[36] से संबंधित अध्ययन प्रस्तुत करके उर्दू भाषा और साहित्य के विविध आयामों को प्रस्तुत किया है। इससे यह ज्ञात होता है कि उर्दू साहित्य ने अपने विकास के कुछ ही सौ वर्षों में साहित्य की विविध विधाओं में अपने स्वर लहरा रहा है।

उर्दू साहित्य के नये काव्य के शायरों में इकबाल तथा जोश से आगे चलकर पंडित ब्रहमनारायण "चकबस्त", शेख आशिक हुसैन सीमाब "अकरावादी", अख्तर शीरानी, साहिर लुधियानवी, जाकिर हुसैन साकिब, मौलाना फजुलुल्हसन "हसरत" शौकत अली खां "फानी" सिकन्दर अली जिगर "मुरादाबादी", रघुपति सहाय फिराक "गोरखपुरी" आदि का नाम आता है जिन्होंने उर्दू काव्य को नई जीवंतता दी है।[37] इसी तरह डा. टंडन ने उर्दू गद्य लेखकों में प्रेमचन्द, कृष्ण-चन्दर, सुदर्शन, ख्वाजा अहमद अब्बास, राजेन्द्र सिंह बेदी, उपेन्द्र नाथ अश्क, कन्हैया लाल कपूर, मोहन राकेश, डा. एहतिशाम हुसैन आदि जानी मानी हस्तियों के साथ-साथ गद्य की एक लम्बी परम्परा बतलाई है।[38]

राजभाषायी स्थिति

राजभाषा के अध्ययन के प्रसंग में "उर्दू राजभाषा" जैसा प्रयोग नया है। जब हिन्दी को भारत की राजभाषा बनाए जाने की बात जोर पकड़ी तो उर्दू की कहानी हिन्दुस्तानी के रूप में राजभाषा के प्रसंग में गहरी होती चली गई। इस युग के पूर्व भी "राजभाषा" के सही अर्थ में तो नहीं किन्तु राजभाषा के समग्र स्वरूप में से एक अंश के रूप में उर्दू "दरबारी भाषा" के रूप में मुसलमानों के शासन काल में चल चुकी थी और शाही फरमान और फतवे उर्दू में जारी किए जाते थे। डा. कैलाश चन्द्र भाटिया के अनुसार "फारसी" के अपदस्थ हो पर जाने हिन्दी का फारसी युक्त रूप — जबाने-उर्दू-ए-मुअल्ला— शाही खेमे या दरबार की भाषा — एक प्रकार की बादशाही भाषा बनी, जिसका अठारहवीं सदी में मुगल साम्राज्य के शासन में प्रयोग होता था।[39] डा. कमल नारायण टंडन के अनुसार "कचहरियों में उर्दू भाषा 1837 ई. के बाद पहुंची। इससे उर्दू भाषा को यह लाभ हुआ कि इसका शब्द कोश बढ़ता चला गया और काफी लोगों के सम्पर्क में आने के कारण, अर्थात विस्तृत और निरन्तर प्रयोग के फलस्वरूप, विविध विषयों के प्रतिपादन की शक्ति भी बढ़ती गई।[40]

स्पष्ट है कि राजभाषा के रूप में उर्दू भाषा का इतिहास शालीन है। डा. कमल नारायण टंडन के विचारों के अनुसार उर्दू भाषा सैकड़ों वर्षों तक उत्तर भारत के राज्यों में स्थित विविध दफ्तरों, कचहरियों एवं अदालतों की लोकप्रिय भाषा रही है।[41] डा. कैलाश चन्द्र भाटिया के अनुसार अंग्रेजी राज्य में भी उर्दू भाषा को अदालतों में स्थान मिला रहा साथ ही देशी रियासतों, जैसे – उत्तर भारत में रामपुर तथा दक्षिण भारत के हैदराबाद में यह प्रशासन की भाषा के रूप में चलती रही। इस प्रकार राजभाषा के रूप में उर्दू एक समर्थ भाषा रही है।[42]

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारत की राजभाषा के प्रश्न को लेकर जो समस्या खड़ी हुई थी उसमें सर्वाधिक संघर्ष हिन्दी और हिन्दुस्तानी को राजभाषा बनाने के प्रश्न पर था। निस्संदेह हिन्दुस्तानी की वकालत पर महात्मा गांधी ने हिन्दू-मुस्लिम-एकता के प्रश्न को विशेष महत्त्व दिया। यहां भी हिन्दुस्तानी का जो स्वरूप स्पष्ट किया गया, वह उर्दू भाषा की प्रकृति के निकट था।[43] स्वतंत्रता के पश्चात भी भारत की भाषायी नीतियों के निर्माण में उर्दू का महत्त्व और रुतबा हिन्दुस्तानी जुबान के रूप में प्राप्त हुआ। श्री राम मनोहर लोहिया के विचारानुसार जब तक हिन्दी और उर्दू एक नहीं हो जाती तब तक अरबी हरुफ लिखी उर्दू को सरकारी तौर

पर इलाकाई जुबान का स्थान प्राप्य है।[44] भारत के संविधान की अष्टम अनुसूची में उर्दू भाषा को शामिल किया गया। दूसरी ओर विभाजन के पश्चात निर्मित स्वतंत्र राष्ट्र पाकिस्तान की राजभाषा उर्दू घोषित हुई। भारत क्षेत्र में जम्मू और कश्मीर तथा आन्ध्र प्रदेश में यह भाषा क्रमशः प्रथम तथा द्वितीय राजभाषा के रूप में स्वीकृत हुई। उर्दू के विकास के लिए कई राज्यों में अकादमियाँ स्थापित हैं और केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत तरक्की-ए-उर्दू बोर्ड की स्थापना हुई है।[45] उर्दू भाषा में अध्ययन-अध्यापन तथा कामकाजी साहित्य का निर्माण हो रहा है।

संदर्भ :

1. भाषा विज्ञान कोश, डा. भोलानाथ तिवारी, पृ.सं. 115–16
2. –वही– पृ.सं. 116
3. –वही–
4. –वही–
5. –वही–
6. उर्दू साहित्य का इतिहास, डा. सरला शुक्ला, पृ.सं. 4
7. इनसाइक्लोपीडिया अमेरिकाना, खंड 21, उर्दू लिट्रेचर
8. हिन्दी विश्वकोश, सं. डा. नगेन्द्रनाथ बसु, भाग-3, बी.आर. पब्लिशिंग कारपोरेशन, दिल्ली, 1986
9. हिन्दी विश्वकोश, सं. डा. नागेन्द्रनाथ बसु, भाग-3, बी.आर. पब्लिशिंग कारपोरेशन, दिल्ली, 1986, पृष्ठ. 386
10. भाषा विज्ञान कोश, डा. भोलानाथ तिवारी, पृ.सं. 116
11. –वही–, पृ. सं. 117
12. –वही–
13. –वही–
14. –वही–, विशेष संदर्भ हेतु द्रष्टव्य : डा. नगेन्द्र द्वारा संपादित "हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ.सं. 27
15. हिन्दी साहित्य का इतिहास, संपादक डा. नगेन्द्र, सह संपादक डा. सुरेश चन्द्र गुप्त, पृ.सं. 27
16. भाषा विज्ञान कोश, डा. भोलानाथ तिवारी, पृ.. 117
17. –वही–
18. भाषाशास्त्र, तथा हिन्दी भाषा की रूपरेखा, डा. देवेन्द्र कुमार शास्त्री, प्रथम संस्करण 1973, पृ.सं. 297
19. भाषा विज्ञान कोश, डा. भोलानाथ तिवारी, पृ.सं. 117
20. उर्दू साहित्य का इतिहास, डा. सरला शुक्ला, पृ.सं. 18
21. –वही–
22. –वही– ; पृ.सं. 65–69
23. उर्दू के हिन्दी सेवक और उर्दू साहित्य का इतिहास, सैयद कासिम अली साहित्यालंकार, प्रकाशक अनवर अहमदी प्रेस, इलाहाबाद, 1940, पृ.सं. 204 से 594
24. –वही–, पृ.सं. 595 से 642
25. इनसाइक्लोपीडिया अमेरिकाना, इंटरनेशन इडीशंस, वोलुम 14, पृ.सं. 920
26. –वही–
27. उर्दू का आलोचनात्मक इतिहास, डा. एहतेशाम हुसैन लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1969, पृ.सं. 303
28. –वही–
29. उर्दू भाषा और साहित्य, श्री रघुपति सहाय "फिराक गोरखपुरी", हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, 1962, पृ.सं. 307–312.
30. –वही–, पृ.सं. 182–194
31. –वही–, पृ.सं. 213–269
32. –वही–, पृ.सं. 270–294
33. –वही–, पृ.सं. 293–306
34. –वही–, पृ.सं. 313–336
35. –वही–, पृ.सं. 237–344
36. –वही–, पृ.सं. 345–361
37. उर्दू साहित्य का सुबोध इतिहास, सं. डा. कमल नारायण टंडन, प्रकाशक–तेजनारायणण टंडन, विद्या मंदिर, बैंगलूर-3, संस्करण 1972, पृ.सं. 98–110
38. –वही–, पृ.सं. 111–113।
39. भारतीय भाषाएं—(उर्दू), डा. कैलाशचन्द्र भाटिया, पृ.सं. 26
40. उर्दू साहित्य का सुबोध इतिहास, डा. कमल नारायण टंडन, पृ.सं. 116
41. –वही–
42. भारतीय भाषाएं—(उर्दू), डा. कैलाशचन्द्र भाटिया, पृ.सं. 30
43. राष्ट्रभारती हिन्दी का मिशन, काका साहब कालेकर कृष्णा ब्रदर्स अजमेर 1967 पृ.सं. 67।
44. भाषा–उर्दू जबान राममनोहर लोहिया नवहिंद हैदराबाद, 1965 पृ.सं. 6
45. भारतीय भाषाएं—(उर्दू), डा. कैलाशचन्द्र भाटिया, पृ.सं. 30

□

समाजवादी यूरोप में हिंदी

इस वर्ग के देशों में हिंदी के अध्यापन कार्यक्रम सामान्यतया भारत सरकार तथा संबंधित सरकारों के बीच किए गए सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत चलाये जाते हैं। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के तत्वावधान में रुमानिया, बुलगारिया, पूर्वी जर्मनी और क्यूबा में कुछ हिन्दी प्रोफेसर हिन्दी पढ़ा रहे हैं। अन्य समाजवादी देशों में हिन्दी अध्यापन का कार्य वहीं के अध्यापकों द्वारा किया जा रहा है। इस वर्ग के देशों में—(यूरोप में) सोवियत संघ, चेकोस्लोवाकिया, पूर्वी जर्मनी, पोलैण्ड, युगोस्लाविया, हंगरी, रोमानिया, बुलगारिया तथा (अमेरिका महाद्वीप में) क्यूबा आते हैं। इन देशों में, चूंकि सारा कामकाज सरकार के हाथ में है, वहां भारतीय मूल के लोग लगभग नहीं है। दूतावास में काम करने वाले या उच्च अध्ययन करने वाले भारतीयों के अतिरिक्त हिन्दी जानने बोलने वाले नहीं है। सभी समाजवादी देशों में हिन्दी का अध्यापन कार्य संबंधित देश की सरकार की प्राथमिकताओं एवं आवश्यकताओं के अनुसार चलता है, यहां हिन्दी को, विश्वविद्यालयीन स्नातक पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाया जाता है। पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद सरकार ही छात्रों को विभिन्न सरकारी प्रतिष्ठानों में कार्य प्रदान करती है।

क्यूबा को छोड़कर अन्य समाजवादी देशों में हिन्दी अध्यापन का कार्य काफी अरसे से चल रहा है—जैसे सोवियत संघ में 1918 से, चेकोस्लोवाकिया में 1925 से, रोमानिया में 1965 से, पूर्वी जर्मनी में 1955 से, बुलगारिया में 1971 से, क्यूबा में 1979 से पहली बार हिंदी का चतुर्वर्षीय (पंचवर्षीय) पाठ्यक्रम प्रारंभ हुआ। सभी समाजवादी राष्ट्रों में हिन्दी का अध्यापन ऐच्छिक विषय के रूप में होता है। कई स्थानों पर विश्वविद्यालय से संबद्ध न होते हुए भी इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लिया जा सकता है। यूरोपीय समाजवादी देशों में भारतीय फिल्म काफी लोकप्रिय हैं।

रूस

समाजवादी देशों में विशेषकर रूस में हिन्दी प्रचार-प्रसार के ठोस कार्य किए गए हैं। आज रूस में हिन्दी लेखकों के रूसी अनुवाद, हिन्दी भाषा-व्याकरण तथा साहित्य पर उच्च स्तरीय शोधपरक कार्य हो रहा है। रूस में हिन्दी अध्ययन का उच्चत स्तर तक प्रबंध है। गुणात्मक दृष्टि से उनके कार्य का मूल्यांकन "आदर्श" की कोटि में आएगा। मार्क्सवादी लेनिनवादी साहित्यिक दृष्टिकोण से वहां हिन्दी रचनाओं की रचना प्रक्रिया, यथार्थवादी प्रवृत्तियां, रूपों, तथा प्रकृति, आधुनिक हिन्दी साहित्य की आधुनिकतावादी प्रवृत्तियों का निरूपण आदि क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण कार्य किया गया है। इधर भारतीय जनता के राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष तथा उसके नये जीवन के निर्माण में भारतीय साहित्य की भूमिका को परिमार्जित करने की समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। सोवियत संघ में कबीर तुलसीदास, मीराबाई, प्रेमचन्द, यशपाल, जैनेन्द्र कुमार, उपेन्द्र नाथ "अश्क", इलाचन्द्र जोशी, फणीश्वर नाथ "रेणु", अमृत लाल नागर, विष्णु प्रभाकर, भीष्म साहनी, जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला", सुमित्रानन्दन पंत, नागार्जुन, महादेवी वर्मा, हरिवंश राय बच्चन, रामधारी सिंह 'दिनकर" आदि सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार रूसी में अनुदित हो चुके हैं। मुझे एक रूसी मित्र ने बताया कि उनके देश में भारतीय साहित्य, संस्कृति तथा दर्शन को जानने-समझने की बहुत इच्छा है। इन पर छपी पुस्तकें हजारों की संख्या में तुरन्त बिक जाती हैं।

चेकोस्लोवाकिया

रूस के बाद हिन्दी अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में चेकोस्लोवाकिया का विशिष्ट स्थान है। पोरिजका, स्मैकल, मिल्तनेर, डगमर अंसारी आदि हिन्दी विद्वानों के हिन्दी संरचना, व्याकरण भाषा-शिक्षण आदि क्षेत्रों में किए गए कार्य सर्वविदित है वहां के पंचवर्षीय विश्वविद्यालयों हिन्दी स्नातक पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थी को हिन्दी भाषा, साहित्य तथा भारतीय अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्रदान कराना है। यहां भाषा का सामान्य पाठ्यक्रम भी चलता है जिसमें भारत के प्रति जिज्ञासा रखने वाले विद्यार्थी अल्पकालिक पाठ्यक्रम के रूप में हिन्दी सीखते हैं।

चेकोस्लोवाकिया में चार्ल्स विश्वविद्यालय 'प्राहा' में सन् 1949 से हिन्दी पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं। प्राहा में ही विदेशी भाषा संस्थान में भी हिन्दी शिक्षण कार्य चलता है जहां द्विवर्षीय वैकल्पिक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत "सामान्य हिन्दी" का कार्यक्रम चलाया जाता है।

पोलैंड

पोलैंड के वारसा विश्वविद्यालय में हिन्दी शिक्षण बहुत पहले से हो रहा है। अब वहां हिन्दी का अध्यापन कार्य वहीं के पोलिश अध्यापक करते हैं। पोलैंड के क्राकोव में येगेलोनियन विश्वविद्यालय में भी हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था है। पोलैंड से कई विद्यार्थी भारत सरकार की छात्रवृत्ति पर केन्द्रीय हिन्दी संस्थान दिल्ली में हिन्दी के उच्च अध्ययन के लिए आते हैं।

हंगरी

यहां दो विश्वविद्यालयों—बुडापेस्त तथा जेदेद—में हिन्दी का प्रारम्भिक पाठ्यक्रम चलाया जाता है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा प्रेमचन्द की कुछ रचनाओं के हंगेरियन में अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। हंगरी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों की रचनाओं के हंगेरियन अनुवाद प्रकाशित हुए है। सन् 1976 में हिन्दी-हंगेरियन कोश भी प्रकाशित हो चुका है।

युगोस्लाविया

'जाग्रेब तथा बेल्ग्रेड' दो विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षण का कार्य हो रहा है। सन् 1971 में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद दिल्ली ने भारत-युगोस्लाविया सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत जाग्रेब विश्वविद्यालय में हिन्दी का अध्यापन प्रारंभ हुआ था। अब वहां संभवतः स्थानीय अध्यापकों के द्वारा हिन्दी शिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। भारत सरकार की छात्रवृत्ति पर कुछ युगोस्लाव छात्र केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, दिल्ली में हिन्दी अध्ययन के लिए आते है।

रोमानिया

रोमानिया में हिन्दी अध्यापन का प्रारम्भ सन् 1965 में भारत-रोमानिया सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रारम्भ हुआ। सन् 1971 से नियमित रूप से बुखारेस्त विश्वविद्यालय में हिन्दी का चतुर्वर्षीय पाठ्यक्रम शुरू किया गया। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के तत्वावधान में रोमानिया में हिन्दी प्रोफेसर भेजे जाते रहे हैं। इन्ही प्रयत्नों के फलस्वरूप आज वहां हिन्दी जानने वालों तथा कुशल कार्यकर्ताओं का एक समूह तैयार हो गया है। डा. विद्या सागर दयाल ने हिन्दी रोमानिया तथा रोमानियन हिन्दी कोश भी तैयार किया है। भारतीय तथा रोमानियन अध्यापकों के सत्प्रयासों से वहां हिन्दी भाषा शिक्षण सामग्री का निर्माण हो चुका है और सोवियत संघ तथा चेकोस्लोवाकिया की तरह हिन्दी शिक्षण के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन चुका है।

बुल्गारिया

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की विदेशों में हिन्दी प्रचार योजना के अन्तर्गत सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अधीन बुल्गारिया में हिन्दी अध्यापन की व्यवस्था 1971 में की गई। तब से यहां हिन्दी वैकल्पिक विषय के रूप में द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के अंतर्गत सोफिया विश्वविद्यालय में पढ़ाई जा रही है। डा. विमलेश कांति वर्मा के प्रारंभिक श्रम साध्य प्रयासों के फलस्वरूप हिन्दी बुल्गारियन कोश भी प्रकाशित हुआ है।

अमेरिका महाद्वीप में हिंदी

(क) उत्तरी अमेरिकी उपमहाद्वीप

संयुक्त राज्य अमेरिका में भारतीय अध्ययन की परम्परा यैल विश्वविद्यालय में सन् 1815 में संस्कृत के अध्ययन से प्रारंभ हो गयी थी, लेकिन हिंदी अध्ययन की प्रवृत्ति द्वितीय विश्व महायुद्ध के बाद ही दृष्टिगोचर होती है। वैसे सन् 1875 में कैलाग ने हिंदी भाषा का व्याकरण तैयार किया था जो आज तक उपयोगी है। द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद बहुत सी अमेरिकी सेनाएं भारत तथा दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में सक्रिय हुईं। अमेरिकी सरकार के विभिन्न विभागों को ऐसे कर्मचारियों की आवश्यकता प्रतीत हुई जो भारतीय भाषाओं, संस्कृति, राजनीतिक चिंतन आदि की प्रामाणिक जानकारी रखते हों।

भारत के स्वतंत्र होने के बाद तथा आहिस्ता-आहिस्ता विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में स्थापित होने के फलस्वरूप भारतीय भाषाओं, संस्कृति तथा राजनैतिक चिंतन के प्रति अमेरिका में हिंदी के प्रति दिलचस्पी बढ़ना शुरू हुई। सबसे पहले पेंसलवानिया में 1947 में हिंदी के अध्यापन की व्यवस्था की गई। धीरे-धीरे अन्य विश्वविद्यालयों में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की पढ़ाई की व्यवस्था की जाने लगी। आज 27 विश्वविद्यालयों में हिंदी की विभिन्न स्तरों पर पढ़ाई होती है।

भाषा वैज्ञानिक (संरचनात्मक) पद्धति से हिंदी भाषा शिक्षण तथा पाठ्य पुस्तकों के निर्माण के क्षेत्र में यहां के भाषा वैज्ञानिक ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। विभिन्न भारतीय शोध छात्रों के सहयोग से अमेरिकी भाषा वैज्ञानिकों ने पिछले तीस वर्षों में कई पाठ्यपुस्तकें तैयार की हैं। वर्जीनिया तथा एरिजोना विश्वविद्यालयों में हिंदी विद्यार्थियों को भाषाई परिवेश उपलब्ध कराने की दृष्टि से भाषा संस्कृति प्रयोगशालाओं द्वारा हिंदी तथा भारतीय संस्कृति का गहन अध्ययन कराया जाता है। आज कई भारतीय अध्यापक अमेरिकी विश्वविद्यालयों में पढ़ा रहे हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रायः दो वर्ष के हिंदी अध्ययन के बाद छात्र भारत में उच्च अध्ययन के लिए भेजे जाते हैं ।

अमेरिकी विद्यार्थियों की हिंदी भाषा में रूचि एक माध्यम के रूप में है। वे दर्शन, संस्कृति समाजविज्ञान, आदि विषय विशेष के अध्ययन में शोध करने के लिए हिंदी भाषा को माध्यम बनाते हैं ।

कनाडा

वहां भारतीय काफी संख्या में हैं । भारतीय विद्या संस्थान हिंदू सनातन धर्म (कनाडा) शांति निकेतन कल्चर कौंसल, आर्य समाज (कनाडा) वैदिक सभा आदि संस्थाएं भारतीय संस्कृति तथा हिंदी के संरक्षण में सक्रिय हैं । इधर त्रिनिदाद से अनेक भारतीय मूल के लोक कनाडा में आ बसे हैं—"टोरंटो, वैनकूवर, विंडसर तथा मैकगिल" विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था है । बैन कूवर तथा विंडसर विश्वविद्यालयों में मध्यकालीन तथा आधुनिक हिंदी साहित्य के पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं । मैकगिल विश्व-विद्यालय में उर्दू तथा हिन्दी का मिला-जुला पाठ्यक्रम चलता है ।

"विश्वभारती" (पाक्षिक) हिंदी का एक स्तरीय प्रकाशन है जो हिंदी पत्रकारिता के माध्यम से भारत की राष्ट्रभाषा तथा संस्कृति के प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं ।

(ख) लातीनी अमेरिका में हिंदी

केंद्रीय अमेरिका तथा दक्षिणी अमेरिका के स्पेनिश भाषी निम्नलिखित देश लातीनी अमेरिका के अंतर्गत आते हैं:

मैक्सिको, ग्वातेमाला, हाड्रास, एल साल्वादोर, निकारागुआ, क्यूबा, पनामा, कोस्ता रीका, कोलंबिया, पुएर्तो रीको, पेरू, वेनेजुएला, चीले, उरूगुई, परागुई, एक्वादोर, बोलीविया, अर्जनतीना आदि ।

लातीनी अमेरिका में हिंदी अध्ययन-अध्यापन की ओर वहां की सरकारों की ओर से समुचित ध्यान नहीं दिया गया है ।

केवल मैक्सिको और क्यूबा के अलावा अन्य कहीं भी हिंदी शिक्षण का व्यवस्थित रूप से प्रबंध नहीं है ।

मैक्सिको

मैक्सिको में सन् 1965 में पूर्व की भाषाओं को पढ़ाने की व्यवस्था "एल कोलेहियो दे मेज़िको" में की गई । यह हिंदी भाषा का अध्यापन कार्य तत्कालीन भारतीय राजदूत श्री पी. एल. रत्नम् की पत्नी श्रीमती कमला रत्नम के सत्प्रयासों से प्रारंभ हुआ । सन् 1969 के बाद समय-समय पर आवश्यकतानुसार वहीं के एक नागरिक श्री मोहनलाल मोरजाटिया को बुलाकर हिंदी का शिक्षण दिया जाता रहा। सन् 1973 में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की ओर से डा. कैलाश वाजपेयी प्रतिनियुक्त हुए । हिंदी के प्रति विशेष रूचि रखने वाली महिला "ग्रासिएला देला लामा" के सहयोग से इन्होंने वहां कुछ काव्यानुवाद तथा हिंदी कहानियों का एक संकलन भी प्रकाशित कराया। 'कोलेहियो' में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था समाप्तप्राय है । इधर भारतीय दूतावास में इच्छुक व्यक्तियों के लिए हिंदी कक्षाओं का प्रबंध किया गया है । भारत सरकार की छात्रवृत्ति पर प्रतिवर्ष कुछ विद्यार्थी भारत में केन्द्रीय हिंदी संस्थान में हिंदी के अध्ययन के लिए आ रहे हैं ।

क्यूबा

क्यूबा में हिंदी का अध्ययन पहली बार सन् 1979 में चतुर्वर्षीय विश्वविद्यालयीन हिंदी स्नातक पाठ्यक्रम अनुवाद-अनुवाचन (Translation Interpretation) की मुख्य विशेषज्ञता को लेकर प्रारंभ हुआ। पाठ्य विषयों में "हिंदी का गहन संरचनात्मक अध्ययन, हिंदी ध्वनि विज्ञान, हिंदी व्याकरण, हिंदी कोश तथा अर्थ विज्ञान, हिंदी भाषी राष्ट्रों का सामाजिक, सांस्कृतिक-आर्थिक-राजनैतिक अध्ययन, हिंदी साहित्य, हिंदी तथा स्पेनिश का व्यातेरेकी अध्ययन शैलीविज्ञान, अनुवाद तथा अनुवाचन (स्पेनिश से हिंदी तथा हिंदी से स्पेनिश) आदि विषय निर्धारित किए गए । इन विषयों के साथ-साथ विद्यार्थियों को स्पेनिश ध्वनिविज्ञान, भाषाविज्ञान, शैली विज्ञान कूबाई तथा लातीनी अमेरिकी साहित्य, मार्क्सवाद-लेनिनवाद, अनुवाद सिद्धांत आदि विषयों का अध्ययन भी करना होता है । तीसरे-चौथे वर्ष में विभिन्न संस्थाओं में व्यवहारिक अनुवाद-अनुवाचन कार्य का प्रशिक्षण भी प्राप्त करना अपेक्षित है ।

अन्य समाजवादी देशों की तरह क्यूबा में भी हिंदी प्रयोग के अवसर नगण्य ही कहे जाएंगे । वर्ष 1981-82 में हिंदी पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों ने महात्मा गांधी के 113वें जन्मदिवस के अवसर पर "गांधी प्रदर्शनी" का आयोजन किया था जिसकी सरकारी तथा गैर सरकारी स्तरों पर सराहना की गई । क्यूबा में "विदेशी भाषाओं के उच्च संस्थान" में जहां हिंदी भाषा का अध्यापन कार्य हो रहा है; भारतीय राष्ट्रीय पर्वों, गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस आदि को सम्मानपूर्वक मनाया जाता रहा है ।

स्पेनिश भाषी (विशेषकर क्यूबा की) पृष्ठभूमि पर आधारित हिंदी शिक्षण पाठ्यक्रम की सामग्री का विकास किया गया जिसे आवश्यक परिवर्तन के साथ अन्य स्पेनिश भाषी देशों में भी इस्तेमाल किया जा सकता है । स्पेनिश हिन्दी तथा हिंदी-स्पेनिश कोश अभी तक अनुपलब्ध है ।

क्यूबा में भारत तथा हिंदी के प्रति काफी उत्साह पाया गया । यदि वहां प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत हिंदी का अंशकालिक पाठ्यक्रम प्रारंभ किया जाए तो इसे लोकप्रियता

शेष पृष्ठ 27 पर

पाकिस्तान की हिन्दी प्रचारक डा० शाहिदा हबीब

'पाकिस्तान को मजबूत बनाना है तो हिंदी पढ़ना होगा

[डा. शाहिदा हबीब लाहौर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की अध्यक्ष हैं उन्होंने लाहौर में हिन्दी लिटरेरी सोसायटी की स्थापना की है ।]

—संपादक

आइए आपकी भेंट एक ऐसी महिला से करवाएं जो पाकिस्तान में हिन्दी का प्रचार कर रही हैं । वह केवल विश्वविद्यालय स्तर पर हिन्दी पढ़ने और पढ़ाने में दिलचस्पी नहीं रखती बल्कि उसका कहना है कि पाकिस्तान को मजबूत और फौलादी पाकिस्तान बनाना है तो हिन्दी सबको पढ़ना होगी, और हिन्दी का प्रचार-प्रसार हर स्तर पर करना होगा। इस हिन्दी प्रेमी महिला का नाम है —डाक्टर शाहिदा हबीब।

डा. शाहीदा हबीब मूलतः मेरठ की हैं। उनका जन्म सन् 1933 में कानपुर में हुआ । उन्होंने कानपुर में दस साल तक विद्यार्थियों को हिन्दी माध्यम से भूगोल पढ़ाया । पाकिस्तान जाने के बाद उन्होंने फारसी एवं अरबी में एम. ए. किया। इसके पश्चात अरबी में ही उन्होंने पी. एच. डी. की । 1985 में उन्हें लाहौर विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग का अध्यक्ष बना दिया गया ।

शाहिदा हबीब ने एक भेंट में बतलाया कि विभाजन से पूर्व पंजाब विश्वविद्यालय में हिंदी और संस्कृत के विभाग मौजूद थे । पाकिस्तान बनने के बाद ये दोनों विभाग समाप्त हो गए । सरकार की यह सबसे बड़ी गलती थी । मगर सरकार भी मजबूर थी, क्योंकि जब कोई विश्वविद्यालय में पढ़ने और पढ़ाने वाला ही नहीं मिलेगा तो विश्वविद्यालय का उक्त विभाग किस प्रकार से काम करेगा? विभाजन के फलस्वरूप भारत में जिस प्रकार उर्दू मुसलमानों की भाषा कही जाने लगी, उसी प्रकार पाकिस्तान में हिन्दी और संस्कृत हिन्दुओं की भाषा हो गई।

शाहिदा हबीब जैसी प्राध्यापिका एवं अन्य साहित्यकारों की सहायता से लाहौर विश्वविद्यालय में हिन्दी का पठन, पाठन, पुनः प्रारम्भ हो गया है । जब हिन्दी विभाग प्रारम्भ हुआ तो केवल 16 विद्यार्थी ही मिले, किन्तु अब प्रतिवर्ष उनकी संख्या बढ़ती जा रही है; निकट भविष्य में प्रतिवर्ष सौ विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी विषय लिए जाने की सम्भावना है। हिन्दी प्रचार के लिए वहां डिप्लोमा कोर्स एवं सर्टीफिकेट कक्षाएं भी प्रारम्भ की गई है । पिछले वर्ष 51 विद्यार्थी इसमें शामिल हुए ।

शाहिदा हबीब चूंकि लाहौर की है और उन्हें हिन्दी से प्यार है, इसलिए वे इस दौड़-धूप में रहती है कि पाकिस्तान में कुल कितनी हिन्दी की पुस्तकें हैं । उन्होंने निजी रूप से लाहौर की समस्त लाइब्रेरियों की छानबीन की । अपने पास उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर वे कह सकती हैं कि लाहौर के भिन्न-भिन्न ग्रंथालयों में 14 हजार से अधिक हिन्दी की पुस्तकें हैं । लाहौर के सार्वजनिक वाचनालय में अनेक हिन्दी पुस्तकें थीं । उनको उठाकर तलघर में पटक दिया गया है । कुछ को दीमक खा गई, और कुछ लापरवाही के कारण नष्ट हो गई । उक्त पुस्तकालय में संस्कृत का भी बड़ा खजाना था । वेदों से लगाकर कालिदास तक के ग्रंथ वहां मौजूद थे । शुरू शुरू में लोगों ने इसलिए हिन्दी की पुस्तकें जला दी कि उन्हें कोई भारतीय एजेंट न समझ बैठे । शाहिदा हबीब का कहना था कि हिन्दी की पुस्तकों के साथ एक और भी कठिनाई है । वह यह कि कोई ऐसे ग्रंथपाल नहीं मिलते, जो हिन्दी जानते हों, इसलिए इसे व्यर्थ का कूड़ा-कचरा समझकर लोग फेंक देते हैं । हिन्दी पुस्तकों की देखभाल के लिए हिन्दी जानने वाले लाइब्रेरियन की सख्त आवश्यकता है ।

शाहिदा हबीब ने पंजाब विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की बदहाली का भी मार्मिक विवरण प्रस्तुत किया है। उनका कहना है कि उक्त विभाग के पास कोश नाम की कोई वस्तु नहीं है । जब धन ही नहीं होगा तो उस पर काम कैसे किया जा सकेगा ? हालत तो यह है कि हिन्दी पढ़ाने के लिए पूर्णकालिक स्टाफ भी नहीं । वे स्वयं पार्ट टाईम काम करती हैं, उन्हें छुट्टियों के दिनों का वेतन नहीं मिलता ।

जहां पैसा न हो और लोग पढ़ने के लिए तैयार न हों वहां तो काम करना बहुत ही कठिन है । इसके लिए शाहिदा हबीब ने लाहौर में "हिन्दी लिटरेरी सोसायटी" की स्थापना की है । इसके माध्यम हैं वे हिन्दी-प्रेमियों से अपील करते हैं कि उनका कामकाज सुचारु रूप से चले, इसलिए लोग उन्हें चंदा दें । इस प्रकार पैसे एकत्रित कर वे हिन्दी को जीवित रखने और उसका प्रचार-प्रसार करने के लिए

शेष पृष्ठ 27 पर

12 भारतीय विद्याविद्

रूसी अध्येता इवान मिनाएव

उदयनारायण सिंह

सुप्रसिद्ध रूसी यात्री, बौद्ध साहित्य के ज्ञाता, भारतीय विद्याविद् तथा सेंट पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर इवान मिनाएव उन भाग्यशाली लोगों में थे जिन्हें तीन हजार भारत-यात्रा का सुअवसर प्राप्त हुआ था। मिनाएव ने भारत, श्रीलंका, बर्मा तथा नेपाल की यात्रा कर इन देशों के संबंध में बहुमूल्य सामग्री का संकलन किया है। एशिया की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता का अध्ययन करने के साथ ही उन्होंने अर्थतंत्र, राजनीति तथा संस्कृति सहित आधुनिक जनजीवन के समस्त पहलुओं के अनुसंधान पर जोर दिया था। वे रूस के उन अग्रणी भारतीय विद्याविदों में थे, जिन्होंने एशियाई देशों के बारे में रूसी अध्ययन-अनुसंधान का आधार निर्मित किया और इस क्षेत्र में गहन शोध-कार्यों को आगे बढ़ाने की सशक्त प्रेरणा प्रदान की। उनकी अनूठी कृतियों में जिनमें 130 से अधिक प्रकाशित ग्रंथ और अनेक अप्रकाशित हैं, बौद्ध धर्म, इतिहास, भूगोल, नृवंश शास्त्र, साहित्य, भाषा विज्ञान, संस्कृति अध्ययन, पालि, नेवारी भाषाओं के इतिहास, लोककथा, पुरातत्व विज्ञान आदि के क्षेत्र में गंभीर अध्ययन सम्मिलित हैं।

अध्ययन यात्रा

मिनाएव का जन्म 22 अक्तूबर 1840 को रूस के एक सामान्य कर्मी के घर हुआ था। ताम्बोव हाई स्कूल में अपनी प्रारंभिक शिक्षा लेने के बाद उन्होंने सेंट पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय के प्राच्य भाषा संकाय के चीनी-मंचूरियायी विभाग में उन्होंने सन् 1858 से 1862 तक अध्ययन किया। उन्होंने बौद्ध धर्म और संस्कृत भाषा के अध्ययन में विशेष रुचि ली। सन् 1874 तक मिनाएव ने भारत विद्या के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त कर ली थी, जिस समय वे भारत की प्रथम यात्रा पर रवाना हुए। मिनाएव ने तीन बार भारत की यात्रा की। उन्होंने 1874-75 में भारत, नेपाल तथा श्रीलंका की, 1880 में पुनः भारत की 1885-86 में भारत तथा बर्मा की यात्रा की। अपनी भारत-यात्राओं में मिनाएव ने हिन्दुस्तानी, मराठी और पहाड़ी बोलियों से लोककथाओं के जो अनुवाद किए हैं, वे उनकी समृद्ध बौद्धिक प्रतिभा के प्रमाण हैं। जिन भारतीयों से मिनाएव अपनी यात्राओं के दौरान मिले उनमें अनेक राजनीतिक, सार्वजनिक नेता, इतिहासज्ञ, भाषा वैज्ञानिक और नृवंशवेत्ता थे। महाराष्ट्र में मिनाएव ने इतिहासकार आर.जी. भंडारकर, पुरातत्ववेत्ता भगवान लाल इन्द्रजी, बंगाल में इतिहासकार हरप्रसाद शास्त्री, भाषा वैज्ञानिक हरिदास शास्त्री, संस्कृत विद्वान महेशचन्द्र न्यायरत्न और जीवानंद विद्यासागर से भेंट की।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और उपन्यासकार बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय से भी वे मिले थे। मिनाएव पहले रूसी भारत-विद्याविद् थे, जिन्होंने संस्कृत भाषा और प्राचीन भारतीय संस्कृति के अध्ययन को प्रोत्साहन दिया। उन्होंने सन् 1884 में लिखा : "किसी भी रूसी प्राच्यविद् के लिए भारत में वैज्ञानिक रुचि अतीत तक ही निःशेष नहीं हो जाती, वह विश्व-इतिहास के लिए चाहे कितनी भी महत्वपूर्ण क्यों न हो ? हमें न केवल प्राचीन भारत का बल्कि सम-सामयिक भारत का भी अध्ययन करना चाहिये...। प्राचीन भारत के अध्ययन को सम-सामयिक भारत के घटनाक्रम के वैज्ञानिक और व्यावहारिक महत्व को ढंक नहीं लेना चाहिए।" उनकी रुचि भारत से संबंधित सभी चीजों में थी, चाहे वह धर्म हो, इतिहास, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, सामयिक राजनीतिक एवं सैनिक समस्यायें, मुक्ति-आंदोलन हो अथवा सामाजिक-राजनीतिक विकास की संभावनायें। उनके कृतित्व की तीसरी विशेषता उनका ऐतिहासिक स्वरूप है। उन्होंने भारत, श्रीलंका, बर्मा, नेपाल के महान साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं अध्यात्मिक कोशों का अन्वेषण कर उनके उद्भव की ऐतिहासिक

शेष पृष्ठ 109 पर

हरिवंश राय बच्चन : हिंदी के व्यवहार को बढ़ाने के प्रबल समर्थक

विश्वम्भर प्रसाद "गुप्त बन्धु" एफ आई ई *
सेवा निवृत्त अधीक्षक अभियन्ता

[बच्चन जी को दिनांक 9 मार्च 1992 को महामहिम उप राष्ट्रपति जी ने सरस्वती सम्मान प्रदान किया है]

—संपादक

जब श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित भारत की राजदूत बन कर रूस गईं तो उनका परिचय-पत्र वहां से दो बार अस्वीकृत होकर वापस आया : एक बार इसलिए कि वह अंग्रेजी में था जो न भारत की अपनी भाषा थी न रूस की और फिर दूसरी बार परिचय-पत्र हिंदी में गया तो उसमें उन्होंने भाषा संबंधी कोई त्रुटि निकाली जो भारत में सरकारी विद्वानों के ध्यान में न आई थी। इससे प्रधानमंत्री नेहरू को बड़ी ग्लानि हुई और सरकार में राष्ट्रभाषा जानने वाले अधिकारियों की आवश्यकता उन्हें प्रतीत हुई। तभी विदेश मंत्रालय में उन्होंने हरिवंशराय बच्चन जी को विशेषाधिकारी (हिन्दी) नियुक्त कर लिया। दिल्ली में साउथ ब्लाक के पास बनी बैरकों में उनका दफ्तर बना।

लेखक भी एक सरकारी अधिकारी था जिसका दफ्तर नॉर्थ ब्लाक के पास बनी बैरकों में था। पास ही नॉर्थ एवेन्यू के फ्लैट नं. 6 में पूज्य दद्दा मैथिलीशरण जी गुप्त रहते थे। वे उस समय राज्य सभा के सदस्य थे। लेखक मध्यान्ह के अवकाश में कभी दद्दा जी के यहां पहुंच जाता था, कभी बच्चन जी के पास। दोनों ही जगहें एक जैसी दूर (या पास) थीं, और दोनों ही जगह साहित्यिक सत्संग का अलौकिक सुख मिला करता था। छात्रावास में तो इनकी कविताएं कंठाग्र करने और सुनने का आनन्द बहुत उठाया था, विशेषकर दद्दा जी की भारत-भारती और बच्चन जी की मधुशाला जिन को सुनने और सुनाने वाले सभी झूम उठते थे। अब उनका सान्निध्य पाकर कृतार्थ हो रहा था।

एक बार लेखक ने अपने खण्ड-काव्य 'भागीरथी' की पाण्डुलिपि बच्चन जी को दिखाई। उन्होंने रचना की क्लिष्टता पर आपत्ति करते हुए कहा "तुलसी ने लिखा है "कीरति भनिति भूति भलि सोई, सुरसरि सम सब कहं हित होई'। इसलिए मैं तो लिखता ही 'सब' के लिए हूं; जनता ही मेरी पाठक है, मेरा लक्ष्य है जन सामान्य ही मेरा आराध्य है और उसे जो ग्राह्य हो वही मैं अर्पित करता हूं। मैं पाण्डित्य दिखाकर, पण्डित बनकर, जनता से दूर नहीं जाना चाहता।" कहना न होगा कि बच्चन जी के इंगित के अनुसार ही लेखक ने अपनी पाण्डुलिपि में अनेक संशोधन किए तब कहीं वह प्रेस भेजी गई।

बच्चन जी का मध्यान्ह अवकाश का दरबार सबके लिए खुला होता था। कोई भी बिना पूछे वहां पहुंच सकता था। एक बार देहरादून (या शायद मंसूरी) के एक सज्जन वहां पहुंचे। दरवाजा खोलकर भीतर झांकते हुए उन्होंने पूछा, "क्या मैं अन्दर आ सकता हूं?"

"सहर्ष"! बच्चन जी ने उत्तर दिया और वे आकर बैठ गए।

स्वाभाविक था कि नवागंतुक होने से उनकी ओर बच्चन जी विशेष ध्यान देते। इसलिए बोले, 'कहिए'।

एक रिटायर्ड प्रिंसिपल के रूप में अपना परिचय देते हुए और कुछ टाइप किए हुए कागज देते हुए उन्होंने कहा, "मैंने लॉर्ड बुद्धा पर कुछ सॉनेट लिखे हैं। उन्हें देखकर आप कुछ अमेंडमेंट सुझाइए तो आइल बी ग्रेटफुल। यू नो, लार्ड बुद्धा वाज़ दि लाइट ऑफ एशिया।"

कागज हाथ में लिए बिना ही बच्चन जी बोले, ?"आपने अंग्रेजी में लिखा है तो अच्छा ही लिखा होगा। मैं तो इतनी अंग्रेजी जानता भी नहीं कि कुछ लिख सकूं। मैंने अंग्रेजी में पी.एच.डी. ज़रूर की है, किंतु मेरा विश्वास है कि हम लोग ऐसी अंग्रेजी भी नहीं जानते जै इंग्लैंड के चपरासी और खानसामा लोग बोलते हैं। मैं तो हिन्दी में ही लिखता हूं क्योंकि वही मेरी भाषा है, मेरे देश की भाषा है। मेरी तो आपको भी यही सलाह है कि आप भी अपनी भाषा में लिखें। अंग्रेजी में आप दिमाग से लिखते हैं, वह आपकी दिमाग की भाषा है; अपनी भाषा में आप दिल से लिखेंगे क्योंकि वह आपकी दिल की भाषा है। श्रीमती सरोजिनी नायडू को हम लोग 'भारत-कोकिला' कहते हैं, पं. जवाहर लाल नेहरू की 'डिस्कवरी ऑफ़ इण्डिया' का अनेक भाषायों में अनुवाद हो चुका है; किन्तु इन्हें क्या अंग्रेजी साहित्य में कोई स्थान मिल सका है? साहित्यकारों के रूप में इन्हें कोई नहीं जानता।"

एक ही सांस में इतना सब कुछ सुनकर हम लोग दंग रह गए और हिंदी के लिए समर्पित उस महान व्यक्ति को मन ही मन प्रणाम किया। वे सज्जन भी कृतकृत्य हुए और इस सलाह के लिए धन्यवाद देते हुए उस दिन के साहित्यिक सत्संग के अंत तक बैठे रहे।

ऐसे महामनीषी को अपने बीच पाकर हम धन्य और उनके शतायु होने की कामना करते हुए ईश्वर से उन्हें स्वस्थ रखने की प्रार्थना करते हैं। □

*बी-154, लोक विहार, प्रीतम पुरा, दिल्ली-34

चित्र समाचार

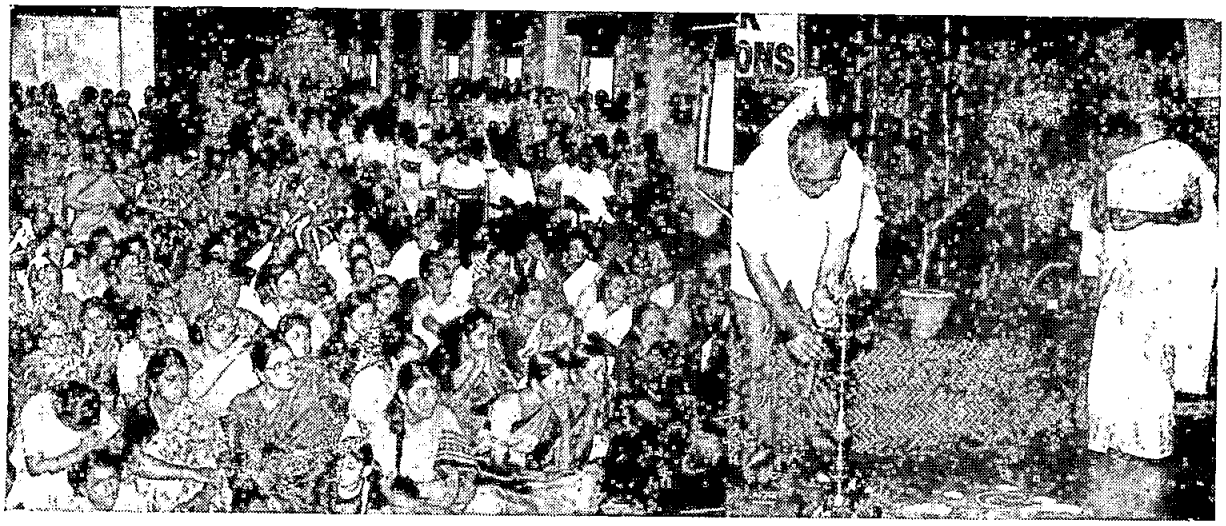

प्रधान कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक) तमिलनाडु, मद्रास में हिंदी सप्ताह समारोह का उद्घाटन दीप जलाकर श्री रा.श्री.अ. राव, आई.ए. एस. एवं प्रधान महालेखाकार (ले०ह.) कर रहे हैं।

राष्ट्रीय पुनर्वास प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान कटक, उड़ीसा में हिंदी दिवस सप्ताह का उद्घाटन भाषण करते हुए निदेशक विंग कमा. एस. एन. महान्ति।

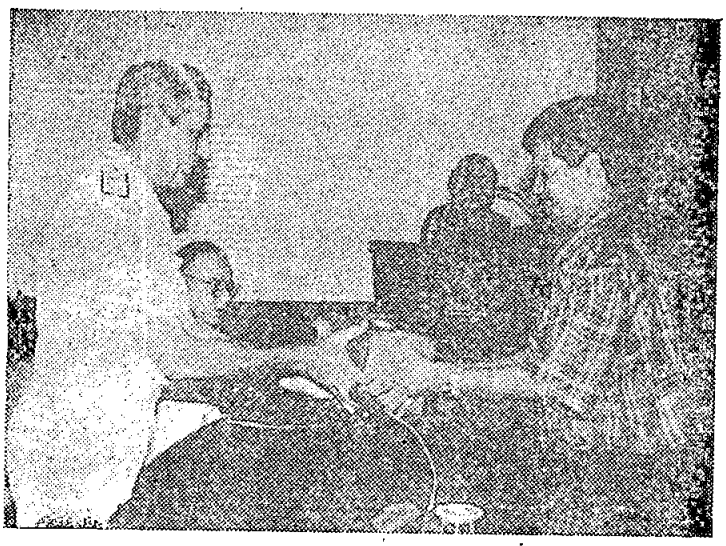

मुख्यालय पश्चिम नौसेना कमान, बंबई में हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता के प्रथम विजेता कार्मिक को पुरस्कार देते हुए कमान-इन-चीफ वाइस एडमिरल एच० जॉनसन।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक) तिरूअनंतपुरम (संयोजक केनरा बैंक) में हिंदी सप्ताह के दौरान मुख्य अतिथि प्रो. एस. पदमकुमारी दर्शकों को संबोधित करते हुए ।

विजया बैंक, अंचल कार्यालय, बंबई में हिंदी दिवस समारोह में भाषण देते हुए 'जनसत्ता' हिंदी दैनिक के सम्पादक 'श्री राहुल देव' तथा उप महाप्रबंधक श्री के. दिवाकर शेट्टी ।

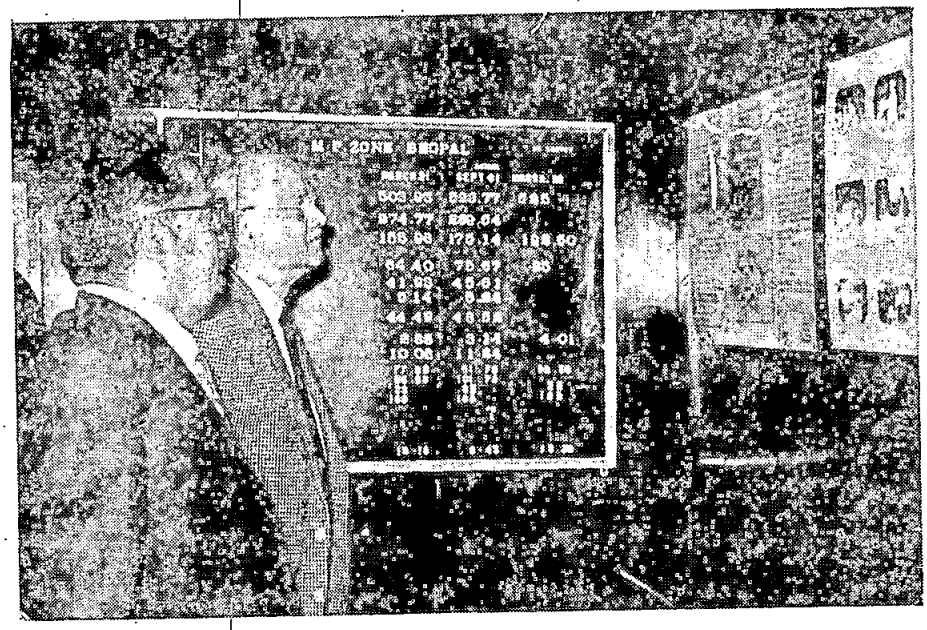

पंजाब नेशनल बैंक, अंचल कार्यालय, भोपाल में श्री जितेन्द्रनाथ कौल, सचिव (राजभाषा) एवं श्री के. एस. शेखर, अंचल प्रबन्धक अंचल कार्यालय में लगाई गई राजभाषा प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए।

सिलचर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तीसरी बैठक के अवसर पर भाषण करते हुए मुख्य अतिथि डा.के.के. झा, सहायक आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, सिलचर ।

नेशनल इन्श्योरेन्स कम्पनी लि., अहमदाबाद में हिंदी दिवस समारोह में भाषण प्रतियोगिता ।

ओरिएण्टल इंश्योरेंस क. लि. की केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद द्वारा 18 सितम्बर 1991 को हिमाचल भवन में पुस्तक प्रदर्शनी में डा. रत्नाकर पाण्डेय, संसद सदस्य पुस्तकों का अवलोकन करते हुए।

बैंक आफ इंडिया, भागलपुर क्षेत्र की एक अन्तर-बैंक हिंदी प्रश्न पहेली प्रतियोगिता का दृश्य ।

इंडियन बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूर द्वारा प्रकाशित प्रथम प्रकाशन 'प्रशिक्षण मार्गदर्शिका' नामक पुस्तक का विमोचन कर रहे है श्री एच.डी. नागेश महासचिव

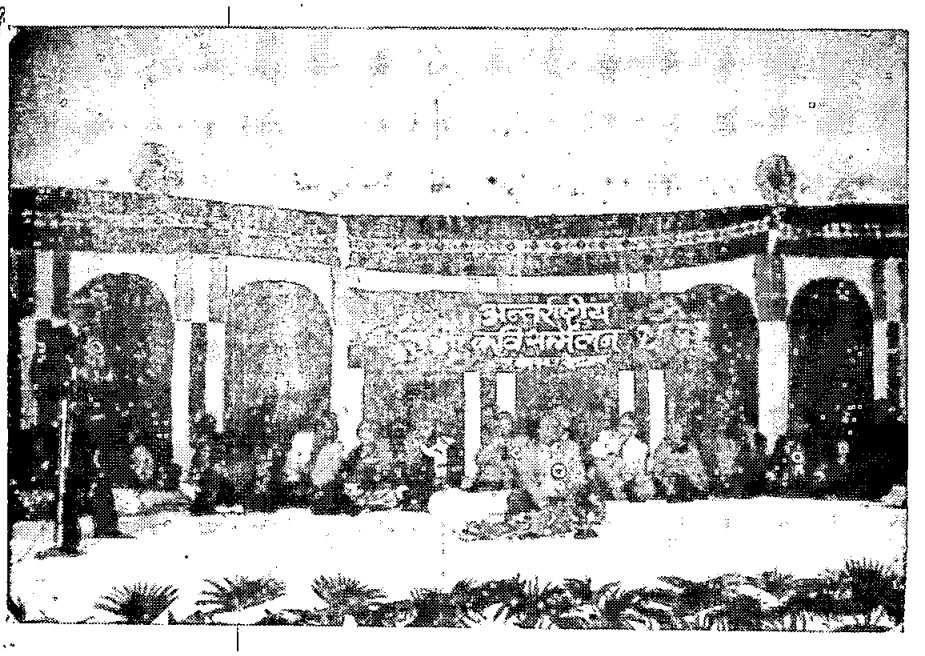

अन्तर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन, उत्तर प्रदेश समाज, नोएडा शाखा का एक दृश्य

भारत निर्वाचन आयोग नई दिल्ली के हिंदी दिवस समारोह में बांए से श्री डी. एस. बग्गा उप निर्वाचन आयुक्त तथा सुश्री हरिन्दर हीरा प्रधान सचिव

केन्द्रीय सरकार अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान नगड़ी रांची में संस्थान के निदेशक डा. क. तंगावेलु हिन्दी सप्ताह के उद्घाटन अवसर पर अध्यक्षीय के भाषण देते हुए

आकाशवाणी सिलचर में हिंदी दिवस समारोह में बाएं से बैठे हुए मुख्य अतिथि श्री एस.पी. वासगुप्त वरिष्ठ महाप्रबंधक कछाड़ पेपर मिल। बीच में खड़े हैं श्री बासुदेव, हिंदी अधिकारी एवं भाषण दे रहे हैं केन्द्र निदेशक श्री सुब्रत बनर्जी ।

भारतीय औद्योगिक पुनर्निर्माण बैंक कलकत्ता के श्री पी. श्री साईराम, महा प्रबन्धक, हिंदी दिवस समारोह में बोलते हुए ।

हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन लि. विशाखापट्टणम में हिंदी दिवस समारोह का दृश्य

केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण, राम कृष्ण पुरम्, नई दिल्ली में हिंदी कार्यशाला में प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए श्री डी.पी. सिन्हा मुख्य अभियंता एवं अध्यक्ष, राजभाषा का० समिति ।

इंडियन ओवरसीज बैंक मदुरे में हिंदी सप्ताह समारोह में श्री ए.डी. राम कृष्णन्, अंचल प्रबंधक, सहायक महा प्रबंधक बोलते हुए ।

महान् स्वतंत्रता सेनानी और हिंदी सेवी राजर्षि टण्डन

हिन्दी भाषा-साहित्य को वर्तमान स्वरूप दिलाने वाले विद्वानों में श्री भारतेन्दु, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, पंडित देवीदत्त शुक्ल जैसे साहित्यकारों का स्थान आज भी सर्वोच्च है। हिन्दी के प्रांजल-प्राकृत रूप का प्रचार-प्रसार किया—राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन महान् हिन्दी सेवी ने। हिन्दी साहित्याकाश के नक्षत्रों की चर्चा हो और उसमें प्रयोग और हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की चर्चा न हो तो वह चर्चा पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकती। हिन्दी के प्रति राजर्षि टंडन की महान् सेवाओं से ही उन्हें हिन्दी का पर्याय कहा जाने लगा।

राजर्षि का हिन्दी और प्रयाग से गहरा लगाव रहा, वे कहीं भी रहते प्रयाग और हिन्दी के विषय में बहुत ही चिन्तित रहते थे। हिन्दी के प्रति उनकी सेवाओं पर यदि शोधकार्य हो, तो शायद निष्कर्ष यही निकलेगा 'राजर्षि टंडन' जिए तो हिन्दी के लिए और मरे भी हिन्दी के लिए। सच्चे अर्थों में जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में "राजर्षि टंडन दृढ़ता और सादगीपूर्ण जीवन की प्रतिमूर्ति थे।"

(हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की पत्रिका 'राष्ट्र भाषा संदेश' अंक 9 से साभार)

महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय को श्रद्धांजलियां

इलाहाबाद नगर में अनेक स्वयं सेवी संगठनों, शिक्षण संस्थाओं एवं समितियों के तत्वाधान में महान स्वतंत्रता सेनानी शिक्षाविद एवं बहु-आयामी प्रतिभा के धनी महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय की 130 वी जयंती मनाई गई। इस अवसर पर वक्ताओं ने महामना के व्यक्तित्व और कृतित्व का पुण्य स्मरण करते हुए महामना के आदर्शों का अनुसरण करने और उनके सिद्धान्तों से प्रेरणा लेने का आग्रह किया।

25 दिसम्बर को उत्तर प्रदेश विधान सभाध्यक्ष पण्डित केशरीनाथ त्रिपाठी ने कहा कि महामना मालवीय जी एक महान देशभक्त, ब्रह्मपुरुष और शिक्षाविद् थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि यदि लगन से कोई काम किया जाय तो गरीबी आड़े नहीं आती।

(हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की पत्रिका 'राष्ट्र भाषा संदेश' अंक 9 से साभार)

पृष्ठ 23 का शेष

मिल सकती है। इस कार्य के लिए भारतीय दूतावास तथा क्यूबा सरकार के शिक्षा मंत्रालय के द्वारा समन्वित योजना-बद्ध कार्यक्रम की आवश्यकता होगी।

अन्य देश

कारकस (वेनेजुएला) में अनौपचारिक रूप से हिंदी का शिक्षण चल रहा है। कोलंबिया में "तुन्हा" विश्वविद्यालय के एशियाई अध्ययन विभाग में निकट भविष्य में हिंदी की व्यवस्था की जाने की संभावना है। कोलंबिया में भारतीय दूतावास भी इस दिशा में स्तुत्य प्रयास कर रहा है। कोलंबिया के कुछ विद्यार्थी केंद्रीय हिंदी संस्थान में हिंदी का अध्ययन कर चुके हैं। इनकी सहायता से इन देशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार की व्यवस्था की जा सकती है।

पेरू, चीले आदि लातीनी अमेरिकी देशों से कई विद्यार्थी केंद्रीय हिन्दी संस्थान में हिंदी का अध्ययन कर चुके हैं।

कुल मिलाकर स्पेन तथा लातीनी अमेरिका के देशों में हिंदी प्रचार-प्रसार का कार्य बहुत ही कम हुआ है।

(बैंक आफ बड़ौदा त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'उत्कर्ष' अंक 9-10 से साभार)। □

पृष्ठ 24 का शेष

खूब मेहनत करती है। लाहौर में ही नहीं, बल्कि पूरे पाकिस्तान में हिन्दी की पुस्तकें छपाने का कोई सामान उपलब्ध नहीं है। एक भी ऐसा प्रेस नहीं, जो हिन्दी में काम करता हो। अतएव हिन्दी हाथ से लिखवाकर उसकी फोटोकापी की जाती है जो बहुत महंगी पड़ती है। यदि दुगुनी रकम खर्च करके भी वे यह न करें तो फिर हिन्दी की छपाई की व्यवस्था किस प्रकार हो ?

हमारे सांस्कृतिक और साहित्यिक सरोकारों के आधार पर पाकिस्तान से उर्दू साहित्यकार भारत आते हैं, और भारत के उर्दू साहित्यकार मुशायरों से लेकर अन्य साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेते है। क्या हिन्दी के साहित्यकार पाकिस्तान नहीं जा सकते ?

सौजन्य से—
श्री चन्द्र शेखर नायर निर्माता फिल्म प्रभाग
24-डा गोपालराव देशमुख मार्ग बंबई 400026

समिति समाचार

(क) केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नई दिल्ली

केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 21वीं बैठक दिनांक 13 दिसम्बर, 1991 को हुई ।

बैठक को प्रारम्भ करते हुए, सचिव (राजभाषा) एवम् अध्यक्ष, केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ने उपस्थित सदस्यों का स्वागत किया ।

उन्होंने संसदीय राजभाषा समिति के प्रतिवेदन के चारों खण्डों पर की गई कार्रवाई सिफारिशों की सूचना सदस्यों को दी तथा अनुरोध किया कि इस सम्बन्ध में जारी किए गए संकल्पों/आदेशों के अनुसार अनुवर्ती कार्रवाई करें । साथ ही यह भी अनुरोध किया कि संसदीय राजभाषा समिति को निरीक्षण के दौरान दिए गए प्रावधानों को यदि पूरा न किया गया हो तो उन्हें तत्काल पूरा करने की कार्रवाई की जाए ।

उन्होंने कहा कि केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में सामान्यता राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में आने वाली कठिनाईयां एवं उनके समाधान आदि के सम्बन्ध में चर्चा की जाती रही है । परन्तु इस बैठक में प्रथम बार सभी मंत्रालयों /विभागों में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति की समीक्षा की जा रही है । जिन मंत्रालयों/विभागों में अपेक्षाकृत स्थिति अच्छी नहीं है, वे, उन मंत्रालयों, विभागों से जहां स्थिति अच्छी है, प्रेरणा लेकर, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करें ।

तत्पश्चात कार्यसूची की मदों पर चर्चा आरम्भ हुई ।

20वीं बैठक जो दिनांक 4 जनवरी, 1991 को हुई थी के कार्यावृत्त की पुष्टि तथा उसमें लिए गए निर्णयों पर अनुवर्ती कार्यवाई की रिपोर्ट

समिति को दिनांक 4-1-1991 को हुई 20वीं बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि की गई और उस में लिए गए निर्णयों पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई पर चर्चा हुई तथा निम्नलिखित निर्णय लिए गए :–

(क) राजभाषा हिन्दी में काम करने वाले/न करने वाले कर्मचारियों /अधिकारियों की सेवा पंजी में अनुकूल/प्रतिकूल प्रविष्टि किए जाने के सन्दर्भ में सदस्यों को जानकारी दी गई कि संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन के खण्ड-4 में भी इस सम्बन्ध में सिफारिश की है, जिस पर विचार हो रहा है । इस बारे में कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग तथा विधि एवं न्याय मंत्रालय से परामर्श करने के पश्चात ही निर्णय लिया जा सकेगा ।

(ख) राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों/कर्मचारियों के ज्ञानवर्धन के लिए पाठ्यक्रम आरम्भ किए जाने के सन्दर्भ में यह जानकारी दी गई कि राजभाषा विभाग द्वारा अप्रैल, 1991 से अब तक कम्प्यूटर में प्रशिक्षण के 5 पाठ्यक्रम आयोजित किए जा चुके है जिनमें 25 अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया है ।

विभिन्न मंत्रालयों/विभागों तथा सचिवालय प्रशिक्षण तथा प्रबन्ध संस्थान द्वारा दिए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों को भी नामित किया जाए जिससे कि उनका दृष्टिकोण विस्तृत हो सके और वे हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने में कारगर भूमिका निभा सकें । इस सन्दर्भ में सभी मंत्रालयों/विभागों से अनुरोध करते हुए एक ज्ञापन राजभाषा विभाग द्वारा जारी किया जाए ।

(ग) अनुभागों/कर्मचारियों को हिन्दी में काम करने के लिए प्रेरित करने वाले अधिकारियों को प्रोत्साहित करने की योजना पर चर्चा के उपरान्त यह निर्णय लिया गया कि टिप्पण/आलेखन के लिए प्रेरित करने वाले अधिकारियों को प्रोत्साहित करने की एक योजना बनाई जाए जिसमें अनुभाग अधिकारी स्तर तक ही पात्रता रखी जाए । राजभाषा विभाग इस सम्बन्ध में एक पुरस्कार योजना प्रारम्भ करने पर विचार करे ।

(घ) विदेश स्थित भारत सरकार के कार्यालयों में वार्षिक कार्यक्रम लागू करना इस सम्बन्ध में पर्यटन मंत्रालय से कुछ सूचना मांगी गई थी जो कि प्राप्त हो

गई है। उस पर विचार करके यथा संभव, आवश्यक कार्रवाई की जाए ।

(च) सीधी भर्ती से लिए जाने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को परिवीक्षा काल में ही हिन्दी का प्रशिक्षण दिए जाने के सन्दर्भ में चर्चा करते हुए सदस्यों को बताया गया कि संसदीय राजभाषा समिति ने अपनी रिपोर्ट के तीसरे खण्ड में भी यह सिफारिश की है, जिसे मान लिया गया है । इसे कार्यरूप देने पर विचार किया जाए ।

मन्त्रालयों/विभागों से प्राप्त हिन्दी के प्रभागी प्रयोग से सम्बन्धित तिमाही प्रगति रिपोर्ट का वर्ष 1990-91 का समीक्षात्मक विवेचन

मंत्रालयों/विभागों से प्राप्त वर्ष 1990-91 की, हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से सम्बन्धित, तिमाही प्रगति रिपोर्टों का समीक्षात्मक विवेचन किया गया जिससे निम्नलिखित तथ्य सामने आए :–

(क) **धारा 3(3) की स्थिति** : 64 मंत्रालयों/विभागों में से 14 में राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) के अन्तर्गत आने वाले कुछ कागजात केवल अंग्रेजी में जारी किए गए । मन्त्रालयों/विभागों से अनुरोध किया गया कि वे इस वैधानिक बाध्यता का पूर्णतया अनुपालन करें ।

(ख) **हिन्दी पत्राचार की स्थिति** : हिन्दी में प्राप्त सभी पत्रों के, जिनके उत्तर दिए जाने अपेक्षित हों, हिन्दी में ही उत्तर दिए जाने चाहिएं । 64 में से 15 मंत्रालयों/विभागों द्वारा हिन्दी में प्राप्त कुछ पत्रों के उत्तर अंग्रेजी में दिए गए । इन मंत्रालयों/विभागों से अनुरोध किया गया कि ऐसी वैधानिक बाध्यताओं का अनुपालन सुनिश्चित करें ।

(ग) **कुल पत्राचार की स्थिति** : वर्ष 1990-91 में मंत्रालयों /विभागों द्वारा किए गए कुल पत्राचार की स्थिति का विवेचन किया गया । "क" तथा "ख" क्षेत्र की राज्य सरकारों/संघ सरकारों या गैर सरकारी व्यक्तियों आदि को भेजे जाने वाले सभी पत्र (100%) हिन्दी में भेजे जाने का लक्ष्य है तथा इन क्षेत्रों में स्थिति केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों को भेजे जाने वाले कुल पत्रों का 90% पत्र हिन्दी में भेजे जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है – इसके समक्ष 8 मंत्रालयों/विभागों ने कुल पत्राचार का 82% से 99% पत्राचार हिंदी में किया । बाईस मंत्रालय/विभाग ऐसे हैं जिनमें पत्राचार केवल 3.4% से 22.9% तक ही हुआ । पत्राचार की स्थिति में सुधार लाने के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा हुई । यह बात ध्यान में लाई गई कि अधिसूचित कार्यालयों में जिन अनुभागों को राजभाषा नियम 1976 के नियम 8 (4) के अन्तर्गत विनिर्दिष्ट कर दिया जाता है वहां हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर्मचारियों से यह "अपेक्षा" की जाती है कि वे अपना सारा काम हिन्दी में करें । "अपेक्षा" के स्थान पर इसे "आवश्यक" कर दिया जाना चाहिए । विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया कि इस मामले में आगे विचार करके राजभाषा विभाग द्वारा एक ज्ञापन जारी किया जाए ।

पत्राचार की स्थिति में सुधार लाने के लिए यह भी सुझाव दिया गया कि मानक मसौदों के जरिए तथा कार्यशालाओं में कर्मचारियों को प्रशिक्षण एवं प्रेरणा देकर हिन्दी पत्राचार में वृद्धि की जा सकती है ।

(घ) **टाइपराइटरों, टाइपिस्टों/आशुलिपिकों की स्थिति** : वर्ष 1990-91 में मंत्रालयों/विभागों में हिन्दी टाईपराइटरों, टाईपिस्टों/आशुलिपिकों की उपलब्धता की स्थिति पर चर्चा करते हुए यह तथ्य सामने आया कि केवल 2 मंत्रालय/विभाग ही ऐसे हैं जिन्होंने हिन्दी टाइपराइटरों का निर्धारित लक्ष्य प्राप्त कर लिया है । जबकि टाइपिस्टों/आशुलिपिकों के सम्बन्ध में 11 मंत्रालयों/विभागों ने लक्ष्य पूरा किया है ।

सदस्यों को बताया गया कि संसद के दोनों सदनों में पारित संकल्प 1968 के पैरा (1) के अनुसार वार्षिक कार्यक्रम एवं उसके लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं । यह देखने में आया है कि कुछ कार्यालयों द्वारा हिन्दी के आशुलिपिकों/टाइपिस्टों का लक्ष्य पूरा न होने पर भी अंग्रेजी के आशुलिपिक/टाइपिस्ट भर्ती किए जा रहे हैं ।

मंत्रालयों/विभागों से अनुरोध किया गया कि इस उल्लंघन को रोका जाए ।

(च) अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी के कार्यसाधक ज्ञान पर चर्चा के दौरान यह तथ्य सामने आया कि अभी तक युवा कार्यक्रम एवं खेल विभाग तथा संस्कृति विभाग ने इस सम्बन्ध में लक्ष्य प्राप्त नहीं किया है । इनसे अनुरोध किया गया कि प्रशिक्षण द्वारा अपने अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान दिलवाने की व्यवस्था करके लक्ष्य की प्राप्ति सुनिश्चित करें ।

(छ) मंत्रालयों/विभागों में प्रयोग होने वाले सभी कोड, मैनुअल, फार्म आदि द्विभाषी होने अपेक्षित हैं । 20 मंत्रालय/विभाग ऐसे है जिनमें प्रयुक्त होने वाले कुछ कोड, मैनुअल, फार्म आदि अभी तक द्विभाषी नहीं कराए गए हैं। इस सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा हुई । मंत्रालयों/विभागों से अनुरोध

किया गया कि वे अपने कोड, मैनुअल फार्म आदि को यथाशीघ्र द्विभाषी कराने की कार्रवाई करें। चर्चा के दौरान यह तथ्य सामने आया कि केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरों द्वारा अनुवाद की दरों में जो वृद्धि की गई है वह अन्य मंत्रालयों/विभागों पर भी लागू हो इसके लिए राजभाषा विभाग आवश्यक कार्रवाई करे। राजभाषा विभाग द्वारा इस सम्बन्ध में विचार किया जाए।

(ज) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें एवं राजभाषा विभाग को, मंत्रालयों/विभागों द्वारा भेजी जाने वाली तिमाही प्रगति रिपोर्टों की प्राप्ति की स्थिति के सम्बन्ध में विवेचना करने पर पाया गया कि 12 मंत्रालयों/विभागों ने सितम्बर 1991 को समाप्त होने वाली तिमाही की बैठक आयोजित नहीं की, जबकि 31 दिसम्बर, 1991 को समाप्त होने वाली तिमाही के केवल कुछ ही दिन शेष रह जाने पर भी केवल 15 मंत्रालयों, विभागों ने बैठकों का आयोजन किया। मंत्रालयों/विभागों से यह अनुरोध किया गया कि वे अपनी राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकों का आयोजन नियमित रूप से एवम् कारगर ढंग से प्रत्येक तिमाही में करें।

तिमाही प्रगति रिपोर्टों की प्राप्ति पर चर्चा के दौरान पाया गया कि सितम्बर 1991 को समाप्त होने वाली तिमाही के सम्बन्ध में प्रगति रिपोर्ट 64 में से केवल 20 विभागों से ही प्राप्त हुई है जबकि डाक विभाग, विदेश मंत्रालय, मंत्रालयों/एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय तथा विद्युत विभाग, से तो अभी तक जून 1991 को समाप्त होने वाली तिमाही की प्रगति रिपोर्ट भी प्राप्त नहीं हुई है। मंत्रालयों/विभागों से अनुरोध किया गया कि वे हिन्दी के प्रगामी प्रयोग सम्बन्धित अपनी तिमाही प्रगति रिपोर्ट नियमित रूप से, तिमाही की समाप्ति के एक माह के अन्दर-अन्दर राजभाषा विभाग को भिजवाएं।

कम्प्यूटर के कुंजी पटल पर हिन्दी का कार्य सीखने वाले कर्मचारियों को हिन्दी टंकण सीखने वाले कर्मचारियों की भांति वेतन वृद्धि प्रोत्साहन आदि दिया जाना

इस पद पर चर्चा के दौरान सदस्यों को बताया गया कि संसदीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने भी अपने प्रतिवेदन खण्ड-2 में यह सिफारिश की है और इस सिफारिश पर सरकार के निर्णय के आधार पर राजभाषा विभाग एक योजना बनाने पर विचार कर रहा है जिसका प्रारूप भी वित्त मंत्रालय की स्वीकृति हेतु भेजा जा चुका है।

हिन्दी या अंग्रेजी टाइपिस्टों के चयन में दूसरी भाषा का टंकण ज्ञान रखने वाले अभ्यार्थियों को वरीयता देना

इस मद पर चर्चा के पश्चात यह पाया गया कि ऐसा किया जाना नियमानुकूल नहीं होगा।

वैज्ञानिक विभागों और उनकी अनुसन्धान शालाओं आदि में वैज्ञानिकों को हिन्दी में लेखन का अभ्यास कराने के लिए कार्यशालाओं का आयोजन एवं विशिष्ट प्रकृति के कार्य हेतु प्रोत्साहन योजना

सम्बन्धित मंत्रालयों/विभागों से अनुरोध किया गया कि वे वैज्ञानिकों को हिन्दी में लेखन का अभ्यास कराने के लिए कार्यशालाओं आदि का आयोजन एवं विशिष्ट प्रकृति के कार्यों हेतु पुरस्कार योजना, राजभाषा विभाग के दिनांक 20-11-1984 के का.ज्ञा.सख्यां 2/20015/35/84-रा.भा. (क-2) के अनुसार चलाए।

अध्यक्ष की अनुमति से अन्य विषय

अध्यक्ष की अनुमति से सभी मंत्रालयों/विभागों को निम्नलिखित सूचना दी गई/अनुरोध किया गया :-

(1) वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट (वर्ष 1990-91) के लिए सामग्री, जिन्होंने अभी तक न भेजी हो, वे उसे यथाशीघ्र राजभाषा विभाग को भेज दें।

(2) पुस्तक चयन समिति द्वारा अनुमोदित पुस्तकों की सूची अपने सभी सम्बद्ध अधीनस्थ कार्यालयों/उपक्रमों/निगमों आदि को भेज दें।

(3) राजभाषा हिन्दी सम्बन्धी फिल्मों के कैसेट्स फिल्म प्रभाग से खरीदे जाएं तथा इस सम्बंध में सभी सम्बद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों/उपक्रमों आदि को भी आवश्यक निदेश जारी करें।

(4) सभी मंत्रालय/विभाग तिमाही प्रगति रिपोर्ट के लिए राजभाषा विभाग के का.ज्ञा.सख्यां 20014/1/89-रा.भा. (ख-2) दिनांक 16 जनवरी, 1990 के अन्तर्गत जारी किए गए प्रोफार्मा का ही प्रयोग करें। यह बात भी सदस्यों के ध्यान में लाई गई कि प्रोफार्मा के कॉलम 3 (कुल पत्राचार) में सूचना देते समय "कुल पत्राचार" के आंकड़ें दें न कि "मूलपत्राचार" के तथा कुल पत्राचार में मंत्रालय/विभाग द्वारा भेजी गई अन्तर्विभागीय टिप्पणियां तथा अनौपचारिक टिप्पणियां भी शामिल करें।

(5) राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को सुनिश्चित करने के लिए जांच बिन्दुओं को और अधिक कारगर बनाएं।

(6) केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान का हिन्दी टंकण/हिन्दी आशुलिपि तथा हिन्दी प्रशिक्षण का केन्द्र पुनः 2-ए पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली में स्थानान्तरित कर दिया गया है।

(शेष पृष्ठ 44 पर)

(ख) हिंदी सलाहकार समिति

रक्षा विभाग

रक्षा विभाग हिन्दी सलाहकार समिति की 26 नवम्बर, 1991 को रक्षा मंत्री की अध्यक्षता में बाहत्तवीं बैठक हुई।

उपस्थित

1. श्री शरद पवार, रक्षा मंत्री	अध्यक्ष
2. श्री रामसिंह रावत, संसद सदस्य	—सदस्य
3. डा. वी. एन. फिलिप	सदस्य
4. डा. आंजनेय शर्मा	सदस्य
5. कु. आराधना चौधरी	सदस्य
6. श्री एन.एन. वोहरा, रक्षा सचिव	सदस्य
7. श्री बद्री नारायण अडवी, अपर सचिव एवं वित्त सलाहकार	सदस्य
8. श्री के.ए. नाम्बियार, अपर सचिव (एन)	सदस्य
9. श्री अब्राहम प्रतिपाती अपर सचिव (ए)	—सदस्य
10. श्री एम एस सोखण्डा, संयुक्त सचिव (स्थापना)	सदस्य-सचिव
11. श्री सुरेश चन्द्र, संयुक्त सचिव (प्रशा) एवं मुख्य प्रशासन अधिकारी	—सदस्य
12. लैफ्टि. जनरल रवि शर्मा, उप सेनाध्यक्ष	—सदस्य
13. वाइस एडमिरल वी. एल. कोप्पिकर, कार्मिक प्रमुख नौसेना मुख्यालय	—सदस्य
14. एयर मार्शल नरेश कुमार, कार्मिक प्रभारी, वायु अफसर	—सदस्य
15. श्री वी. लाखकर, महानिदेशक, तटरक्षक संगठन	—सदस्य
16. लेफ्टि जनरल जे.के. अरोड़ा, महानिदेशक, सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवाएं	—सदस्य
17. लेफ्टि. जनरल एम. के. लाहिड़ी, महानिदेशक राष्ट्रीय कैडेट कोर	—सदस्य
18. श्री पी.के. कुमारन, महानिदेशक, रक्षा सम्पदा	—सदस्य
19. मेजर जनरल आर. पी. लिमये महानिदेशक पुनर्वास	—सदस्य
20. श्री जगदीश चन्द्र डंगवाल, प्रतिनिधि, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद	—सदस्य

रक्षा मंत्री ने सदस्यों का स्वागत किया और रक्षा विभाग तथा इसके सम्बद्ध व अधीनस्थ कार्यालयों में पिछली बैठक के बाद हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में हुई प्रगति को संक्षेप में जानकारी दी।

अफसर रैंक से नीचे के सेना कार्मिकों को प्रशिक्षण सामान्यतः हिन्दी में या हिन्दी और अंग्रेजी की मिली-जुली भाषा में दिया गया और जहां सम्भव हो सका, प्रशिक्षण सामग्री भी हिन्दी में उपलब्ध कराई गई।

सभी कार्यालयों में हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की जाएं और इनमें भाग लेने वाले अहिन्दी भाषी कर्मचारियों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिए जाएं

डा. वी.एन. फिलिप ने यह सुझाव रखा था। उन्होंने इस पर चर्चा के दौरान यह बताया कि उनका आशय यह था कि हिन्दी कार्यशाला में भाग लेने के बाद अहिन्दी भाषी अधिकारियों और कर्मचारियों के बीच एक प्रतियोगिता रखी जाए और उसमें सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वालों को नकद पुरस्कार दिये जाएं। मंत्रालय की ओर से बताया गया कि इस सुझाव पर विचार किया जायेगा।

पहचान पत्र द्विभाषी जारी किए जाने चाहिएं

पहचान पत्रों पर नाम और पदनाम भी हिन्दी और अंग्रेजी में लिखे जाने के बारे में सदस्यों ने मंत्रालय के निर्णय की सराहना की। फिर भी उनका आग्रह था कि इस निर्णय के कार्यान्वयन की रिपोर्ट अगली बैठक में प्रस्तुत की जाए।

वर्ष 1990-91 में प्रकाशित सर्वोत्तम गृह पत्रिकाओं के लिए नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति-पत्र

(1) रक्षा इलैक्ट्रानिकी प्रयोज्यता प्रयोगशाला, देहरादून द्वारा प्रकाशित "रजत जयन्ती समारिका" के लिये प्रयोगशाला के निदेशक श्री वेद प्रकाश सांडलास को 5000/- रुपये का नकद पुरस्कार और प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

(2) वायुसेना स्टेशन ताम्बरम द्वारा प्रकाशित "दीप किरण" के लिये स्टेशन कमांडर, ताम्बरम की ओर से एयर कमांडोर नागपाल ने 3000/- रुपये और प्रशस्ति-पत्र प्राप्त किया।

(3) वायुसेना स्टेशन जालहिल्ल द्वारा प्रकाशित "संचारिका" के लिये ग्रुप कैप्टन जे. मर्यादास को नकद पुरस्कार के रूप में 7000/- रुपये और प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

(4) डैसीडाक द्वारा प्रकाशित "डीआरडीओ समाचार" के लिये निदेशक श्री एस. एस. मूर्ति को नकद पुरस्कार के रूप में 1000/- रुपये और प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

(5) फील्ड गन फैक्ट्री, कानपुर द्वारा प्रकाशित "रचना" के लिये फैक्टरी के महाप्रबन्धक श्री वी.आर. शिवकुमार को 1000/- रुपये नकद और प्रशस्तिपत्र प्रदान किया गया।

(6) वायुसेना स्टेशन, कानपुर द्वारा प्रकाशित "पारिजात" पत्रिका के लिये स्टेशन कमांडर एयर कमांडोर अमरजीत सिंह सोढी को 1000/- रुपये का नकद पुरस्कार और प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

इसके अतिरिक्त रक्षा मंत्रालय के कार्यालय अधिकारियों एवं कर्मचारियों को 1991 में हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर नकद पुरस्कार और प्रमाण-पत्र प्रदान किये गए।

(ग) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियां

1. अल्प संख्यक आयोग

अल्प संख्यक आयोग की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 26-9-91 को संयुक्त सचिव, श्री अशोक पाहवा की अध्यक्षता में, सम्पन्न हुई।

समिति की पिछली बैठक दिनांक 26-6-91 में लिए गए निर्णयों पर की गई कार्रवाई की चर्चा करते हुए अध्यक्ष महोदय द्वारा इस बात पर पुनः बल दिया गया कि हिन्दी में आए पत्रों का उत्तर एवं "क" और "ख" क्षेत्रों को अनिवार्यतः 100% पत्रादि हिन्दी में भेजे जाएं।

अध्यक्ष महोदय ने आयोग के अनुभागों, अध्यक्ष/सदस्य महोदयों के कार्यालय से भेजे गए हिन्दी पत्रों की जांच कर यह आदेश दिया कि हिन्दी पत्रों का प्रतिशतः बहुत ही कम है, अतः इस मुद्दे पर अधिक प्रयास करना नितान्त आवश्यक है। बैठक में उपस्थिति प्रभागाध्यक्षों द्वारा समिति को सूचित किया गया कि इस संबंध में आवश्यक कार्रवाई की जा रही है।

कल्याण मंत्रालय को हिन्दी टाइपिस्ट (अवर श्रेणी लिपिक) के पद के सर्जन हेतु समय-समय पर अर्धसरकारी पत्र लिखे जाने के संदर्भ में, अध्यक्ष महोदय ने आदेश दिया कि कल्याण मंत्रालय को पुनः अर्धसरकारी अनुस्मारक भेजा जाए।

अध्यक्ष महोदय ने राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का पूर्णरूपेण अनुपालन करने का निर्देश दिया, साथ ही उन्होंने जिन फाइल कवरों पर विषयों का द्विभाषीकरण शेष है, उनका तत्काल द्विभाषीकरण करने का आदेश दिया।

अध्यक्ष महोदय ने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से पुनः अनुरोध करने का निर्देश दिया कि वे हाजिरी और वेतन/भत्ता रजिस्टर में हिन्दी में आधक्षर करें।

आयोग के सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति

तिमाही प्रगति रिपोर्ट के संदर्भ में यह निदेश दिया गया कि हिन्दी में आए पत्रों एवं "क" और "ख" क्षेत्रों को अनिवार्यतः 100% पत्रादि हिन्दी में भेजे जाएं।

आयोग में हिन्दी टाइपिस्ट के पद का सर्जन

हिन्दी टाइपिस्ट (अवर श्रेणी लिपिक) के पद के सर्जन हेतु कल्याण मंत्रालय को अनुस्मारक भेजा जाए।

हिन्दी पुस्तकों की खरीद

हिन्दी पुस्तकों की खरीद के संबंध में अध्यक्ष महोदय ने आदेश दिया, कि जो सूची हिन्दी एकक द्वारा पुस्तकालय अध्यक्ष को उपलब्ध कराई गई है, उस पर शीघ्र खरीद सुनिश्चित की जाए।

मूल रूप में टिप्पण/प्रारूपण

अध्यक्ष महोदय ने मूल रूप में हिन्दी टिप्पण/प्रारूपण लिखने के लिए कर्मचारियों को प्रेरित करने पर जोर दिया।

हिन्दी पत्राचार

सभी अधिकारियों को पुनः निदेश दिया गया कि वे हिन्दी में आए पत्रों का उत्तर अनिवार्यतः हिन्दी में दें। ऐसा आवतियों पर जिनपर कोई कार्रवाई अपेक्षित न भी हो, उनकी पावती "क" एवं "ख" क्षेत्रों को हिन्दी में जारी की जाए।

सेवा पंजियों में प्रविष्टियां

सेवा पंजियों में छुट्टी, सेवा सत्यापन आदि को हिन्दी में तथा साथ ही सत्यापित अधिकारी को द्विभाषी मोहर प्रयोग करने का निदेश दिया गया।

हिन्दी कार्यशाला

हिन्दी कार्यशाला के लिए सुविधानुसार आयोजन करने का निदेश दिया गया।

2. खान मंत्रालय

सर्वप्रथम समिति की 3-7-1991 की बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि की गई। पिछली बैठक के निर्णयों पर कार्यवाही की स्थिति पर चर्चा के दौरान समिति ने इस बात से संतोष व्यक्त किया कि मंत्रालय द्वारा विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन की समुचित निगरानी की जा रही है। तदनंतर 30 जून, 1991 को समाप्त तिमाही के दौरान विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति पर चर्चा हुई और निम्नलिखित निर्णय हुए :—

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण व भारतीय खान ब्यूरो में राभाषा कार्यान्वयन का अनुपालन

भारतीय खान ब्यूरो में प्रगति की गति ठीक पायी गयी किन्तु भूसर्वे के बारे में नहीं, अतः निम्नलिखित निर्णय किये गये :

(क) भारतीय भूसर्वेक्षण विशेषता उत्तर, मध्य, दक्षिण और पूर्वी क्षेत्र मुख्यालयों में हिन्दी पत्राचार और राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का पालन वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार नहीं है और इस बारे में उनका यह स्पष्टीकरण समिति को मान्य नहीं है कि "भूवैज्ञानिक विषयों पर हिन्दी में पत्र-व्यवहार नहीं किया जा सकता"। इन कार्यालयों को चाहिये कि वे 7 मार्च, 1991 को महानिदेशक की अध्यक्षता में फरीदाबाद में आयोजित

प्रतिनिधि सम्मेलन के निर्णयों का अनुपालन सुनिश्चित करें। वहां के हिन्दी/राजभाषा अधिकारी को इस बारे में विशेष पहल करनी चाहिये।

(ख) भूसर्वे प्रशिक्षण संस्थान की प्रशिक्षण सामग्री दोनों भाषाओं में सुलभ कराने के लिए तय हुआ कि इस बाबत संस्थान के उपमहानिदेशक द्वारा राजभाषा विभाग के 11-11-87 के आदेश संख्या 13034/50/87-रा.भा. (ग) का अनुपालन किया जाए और पाठ्य सामग्री का शीघ्र अनुवाद कराया जाए।

(ग) संगठन में उपनिदेशक (रा०भा०) पद की भर्ती के बारे में बताया गया कि भर्ती नियमों को अंतिम रूप देने के लिए विधि मंत्रालय और संघ लोक सेवा आयोग के परामर्श से कार्यवाही की जा रही है।

(घ) भारतीय भूसर्वे के विभिन्न कार्यालयों में करीब 4200 से अधिक कर्मचारी हिन्दी भाषा शिक्षण के लिए तथा करीब 220 स्टेनोग्राफर हिन्दी आशुलिपि और 500 क्लर्क हिन्दी टाइपिंग प्रशिक्षण के लिए शेष हैं। इन्हें हिन्दी शिक्षण योजना के निकटस्थ केन्द्रों में भेजकर उपर्युक्त प्रशिक्षण 1994-95 तक अवश्य पूरे करा लिए जाएं।

(ङ) भूसर्वे के मध्य क्षेत्र कार्यालय में कुल स्टाफ और हिन्दी ज्ञाता स्टाफ के बारे में तिमाही रिपोर्ट के कालम 10 और 11 में दिये गये आंकड़ों में भिन्नता है। हिन्दी अधिकारी द्वारा सही संख्या से मंत्रालय को शीघ्र अवगत कराया जाए।

(च) भारतीय भूसर्वे में हिन्दी सेवा संवर्ग (काडर) बनाने के राजभाषा विभाग के निदेशक डा महेश गुप्त के सुझाव पर, समिति का अभिमत था कि संगठन में लगभग 40 हिन्दी पद हैं, जो काडर हेतु तर्कसंगत संख्या (Reasonable Strength) नहीं है। तथापि, यह नोट किया गया कि भूसर्वे में अनुवादक के ऊपर के सभी पद पदोन्नति द्वारा भरे जा रहे हैं।

(छ) भारतीय भूसर्वे में अनुवादकों के खाली पदों के लिए कर्मचारी चयन आयोग द्वारा लगातार उम्मीदवार सुलभ न कराये जाने के प्रसंग में, राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि ने बताया कि ऐसी स्थिति में आयोग से अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन ओ सी) लेकर जी एस आई द्वारा इन पदों को स्वयं सीधे भरने की कार्यवाही की जा सकती है।

सरकारी उपक्रमों में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति

(क) विभिन्न उपक्रमों से प्राप्त तिमाही रिपोर्टों की समीक्षा के आधार पर यह पाया गया कि हिन्दुस्तान जिंक लि. की दरीबा माइंस और टुण्डू यूनिटों में तथा हिन्दुस्तान कापर लि. के दिल्ली कार्यालय में राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का पूर्ण अनुपालन नहीं है। हिन्दुस्तान जिंक के प्रधान कार्यालय, टुण्डू यूनिट, हिन्दुस्तान कापर के आई सी सी और मलाजखंड प्रोजेक्ट में हिन्दी पत्राचार की स्थिति अत्यन्त असंतोषप्रद है और उसमें सुधार के लिए संबंधित अधिकारियों (हिन्दी अधिकारी सहित) द्वारा तत्काल प्रभावी उपाय किये जाने की आवश्यकता है।

(ख) सरकारी उपक्रमों में हिन्दी शिक्षण/प्रशिक्षण

प्राप्त जानकारी के हिन्दी शिक्षण हेतु संगठनवार निम्नलिखित कार्मिक शेष पाये गये हैं :—

उपक्रम	हिन्दी शिक्षण हेतु	हिन्दी आशु-लिपि हेतु	हिन्दी टंकण हेतु
1. बाल्को	917	97	157
2. नाल्को	3911	90	204
3. हिंद जिंक	807	94	322
4. हिंद कापर	5888	130	137
5. खनिज गवेषण निगम	—	13	11
6. भारत गोल्ड माइंस	303	26	120

जानकारी से यह भी जाहिर हुआ है कि कुछ उपक्रम ने अपने प्रोजेक्ट स्थलों पर हिन्दी भाषा और हिन्दी टाइपिंग प्रशिक्षण की तो व्यवस्था की है, किन्तु हिन्दी आशुलिपि प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं की है। चूंकि ये प्रशिक्षण 1994-95 तक पूरा होना है, अतः सभी उपक्रमों द्वारा इस बारे में शीघ्र प्रभावी प्रबंध किये जाएं।

(ग) राजभाषा नियम 8(4) के अन्तर्गत प्रत्येक उपक्रम कार्यालय में 1—2 अनुभागों को विनिर्दिष्ट करना

राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि डा. महेश चन्द्र गुप्त ने कहा कि सरकार के पूर्व आदेशों के अनुसार, जो कार्यालय राजभाषा नियम 10(4) में अधिसूचित हैं, उनमें कार्यालय प्रमुख द्वारा नियम 8(4) के अन्तर्गत 1—2 अनुभागों को भी हिन्दी में काम करने के लिये विनिर्दिष्ट करते हुए शीघ्र आदेश जारी कर देने चाहिए। इस प्रसंग में मंत्रालय के कुछ अनुभागों को भी विनिर्दिष्ट करने हेतु जांच की जाए।

देवनागरी द्विभाषी इलेक्ट्रानिक टाइप मशीनों की खरीद

यह नोट किया गया कि सभी कार्यालयों में 1994-95 तक 90% टाइप मशीनें हिन्दी में या द्विभाषी सुलभ होनी हैं; अतः सभी कार्यालयों/उपक्रमों द्वारा इस बारे में कार्यवाही बराबर जारी रखनी है। सदस्यों का सुझाव था कि इलैक्ट्रानिक यंत्र अधिक कीमत के होते हैं अतः उनके लिये बजट का अलग प्रावधान होना चाहिये।

एक फोटोस्टेट मशीन (केवल हिन्दी काम हेतु)

मंत्रालय में बढ़े हुए हिन्दी काम की प्रतियां तत्काल उपलब्ध कराने के लिये हिन्दी अनुभाग में फोटोस्टेट मशीन लगायी जाए।

हिन्दी में मौलिक वैज्ञानिक आलेखन प्रोत्साहन योजना

राजभाषा विभाग के निदेशक श्री गुप्त ने कहा कि भूवैज्ञानिकों आदि को हिन्दी में काम करने के लिये उन्हें आकर्षित करने हेतु एक अलग नकद पुरस्कार योजना लागू की जाए। उन्हें बताया गया कि इस बारे में पहले से ही कार्यवाही चल रही है। डा. गुप्त ने कहा कि सी. एस. आई. आर. और आई. सी.ए.आर. में इस तरह की योजना लागू है और वे (डा. गुप्त) उसकी एक प्रतिलिपि खान मंत्रालय को सुलभ कराएंगे।

3. वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद

मुख्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 1991 की दूसरी बैठक दिनांक 27-8-91 को श्री दिलीप-कुमार संयुक्त सचिव (प्रशासन) की अध्यक्षता में हुई।

समिति ने कनिष्ठ फैलोशिप (जे. आर. एफ.) की आगामी परीक्षा दिसंबर, 91 में प्रश्न-पत्रों को अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में मुद्रित कराए जाने, वैज्ञानिक कार्यों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए प्रतियोगात्मक पुरस्कार योजना तथा मौलिक वैज्ञानिक लेखन योजना के लागू किए जाने तथा भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए तैयार किए वर्ष 1991-92 के वार्षिक कार्यक्रम की विभिन्न मदों के कार्यान्वयन के लिए गठित उप समिति द्वारा की गई कार्रवाई पर संतोष तथा खुशी जाहिर की।

पीआइडी द्वारा प्रकाशित की जाने वाली वैज्ञानिक तथा तकनीकी पुस्तकों की निदेशिका (डायरेक्टरी) के बारे में पीआईडी के उप निदेशक श्री एस. एस. सक्सैना ने बताया कि सर्वेक्षण के प्रारंभिक कार्य के रूप में वर्ष 1980—90 के बीच हिंदी में प्रकाशित हुई वैज्ञानिक एवं तकनीकी पुस्तकों की उनके लेखकों तथा प्रकाशकों आदि से जानकारी प्राप्त करने के लिए सीएसआइआर के प्रकाशनों में विज्ञापन दिए जा रहे हैं, साथ ही उन्होंने इस दिशा में प्रकाशकों, विश्व-विद्यालयों आदि से प्रभावी पत्रव्यवहार किए जाने का भी आश्वासन दिया। समिति इस विषय में समय सीमा का स्पष्ट उल्लेख चाहती थी कि कब तक यह निर्देशिका प्रकाशित कर दी जाएगी। इस पर श्री सक्सैना ने कहा कि वे अगली बैठक में यह जानकारी प्रस्तुत कर सकेंगे।

पीआइडी द्वारा जून 1991 से हिंदी में निकाली जाने वाली अनुसंधान पत्रों की नई प्रस्तावित पत्रिका के बारे में श्री सक्सैना ने बताया कि इस संबंध में केवल तीन अनुसंधान पत्र प्राप्त हुए और वे भी प्रकाशनार्थ स्वीकार नहीं किए गए, अतः समुचित संख्या में और मानव अनुसंधान पत्र मिलने पर इस पत्रिका का प्रकाशन किया जाएगा। हिंदी में मौलिक अनुसंधान पत्र के लेखक को अपने लेख का अंग्रेजी रूपांतर भेजने के लिए बाध्य नहीं किए जाने का निर्णय लिया गया। अध्यक्ष महोदय ने अपना लेखक निर्णय दिया कि यदि पीआइडी हिंदी में प्राप्त अनुसंधान पत्रों का अंग्रेजी के निर्णायकों से निर्णय कराना चाहता है तो उस स्वयं अंग्रेजी अनुवाद की व्यवस्था करनी चाहिए। सदस्यों का यह भी विचार था कि हिंदी में अनुसंधान पत्रों का सत्यापन हिंदी जानने वाले निर्णायकों से ही कराए जाने के संबंध में हिंदी भाषा राज्यों के विश्वविद्यालयों आदि के विज्ञान विषय के विभागों तथा पीआइडी की अन्य अनुसंधान पत्रिकाओं के निर्णायकों को इस आशय के पत्र लिखकर कि यदि उन्हें हिंदी के मौलिक अनुसंधान पत्र भेजे जाएं तो क्या ये अपना निर्णय भेज सकेंगे, निर्णायकों की सूची तैयार की जानी चाहिए।

सीएसआइआर क्लब लाइब्रेरी को हिंदी अधिकारी को सौंपे जाने तथा क्लब लाइब्रेरी को पुनः जीवित किए जाने के संबंध में अध्यक्ष ने श्री एस. के. वर्मा वरिष्ठ उपसचिव से इस मामले को अलग से निपटाए जाने के लिए कहा। साथ ही अध्यक्ष महोदय का विचार था कि पुस्तकालय बजट में से कुछ धनराशि हिंदी पुस्तकों की खरीद के लिए भी निर्धारित की जानी चाहिए।

दीवार समाचार पत्र "अन्वेषण संदेश" के बारे में श्री रणकिशोर सहाय, सूचना अधिकारी (हिंदी) ने बताया कि पिछले तीन महीने से इस पत्र का नियमित प्रकाशन किया जा रहा है। अगस्त, 1991 से इसकी एक हजार प्रतियां छपवायी जा रही हैं जिन्हें सीएसआइआर की सभी प्रयोगशालाओं/संस्थाओं, पीटीसीज तथा दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों के 10 चयनित स्कूलों को भेजी जा रही हैं। साथ ही उन्होंने बताया कि दिल्ली में मदर डेयरी, सुपर बाजार के महाप्रबंधकों तथा विश्वविद्यालयों से उनके यहां इस समाचार पत्र को प्रदर्शित किए जाने के संबंध में संपर्क कर रहे हैं। आगे इसकी दो हजार प्रतियां छपवाए जाने का विचार भी व्यक्त किया गया। भारत स्थित विदेशी दूतावासों तथा केन्द्रीय विद्यालयों व नवोदय विद्यालयों को भी यह पत्र भेजने की बात कही गई।

हिंदी मे कामकाज कराने से संबंधित पदों का सृजन करने/संवर्ग बनाने व प्रोन्नति के अवसर उपलब्ध कराए जाने के संबंध में वरिष्ठ उप सचिव (राजभाषा) ने अगली बैठक से पूर्व इस संबंध में संयुक्त सचिव (प्रशासन) को फ़ाइल प्रस्तुत करने का आश्वासन दिया।

इस संबंध में निदेशक, राजभाषा विभाग ने उल्लेख किया कि प्रधानमंत्री जी की अध्यक्षता वाली सर्वोच्च केन्द्रीय हिन्दी समिति में भी यह मामला बार-बार उठा है और उक्त समिति के निदेश पर राजभाषा विभाग द्वारा अप्रैल, 1991 में आदेश दिए गए हैं कि हिन्दी पदों का संवर्ग शीघ्र बनाने के बारे में तत्परता पूर्वक कार्रवाई की जाए।

हिंदी में पत्राचार बढ़ाने तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को गति प्रदान करने के लिए अनुभाग स्तर पर ही टेबल कार्यशाला के आयोजन तथा अनुभागों के निरीक्षण के संबंध में निर्णय लिया गया कि कार्यशालाओं के आयोजन तथा अनुभागों के निरीक्षण का क्रम तेज किया जाना चाहिए।

सीएसआइआर मुख्यालय के अनुभागों की हिंदी प्रगति संबंधी तिमाही रिपोर्ट को समिति के समक्ष प्रस्तुत किए जाने का निर्णय लिया गया ताकि राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को गति प्रदान की जा सके।

प्रयोगशालाओं/संस्थानों के राजभाषा विषयक निरीक्षण के बारे में बताया गया कि चालू संसद सत्र के बाद यह निरीक्षण कार्यक्रम शुरू किया जा रहा है। इस पर अध्यक्ष महोदय ने कहा कि हर माह कम से कम दो प्रयोगशालाओं/संस्थानों का निरीक्षण किया जाना चाहिए।

प्रयोगशालाओं/संस्थानों की हिंदी संबंधी तिमाही प्रगति रिपोर्ट/राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों आदि के बारे में चर्चा हुई। इस संबंध में डा. महेश चन्द्र गुप्त ने "क" क्षेत्र में स्थित प्रयोगशालाओं/संस्थानों में पत्राचार निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप न किए जाने की ओर समिति का ध्यान आकृष्ट किया। इस पर वरिष्ठ उप सचिव (राभा) ने बताया कि वे इस संबंध में लगातार प्रयोगशालाओं/संस्थानों के निदेशक को पत्र लिख रहे हैं तथापि इसे और भी प्रभावी बनाया जाएगा।

भारत सरकार के आदेशानुसार हिंदी संबंधी फिल्मों के कैसेटों को खरीदें जाने के संबंध में निर्णय लिया गया कि इन्हें विलम्ब खरीदा जाए तथा उन्हें अधिकाधिक कर्मचारियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा विशेष अवसरों यथा हिंदी दिवस आदि के अवसर पर प्रदर्शित किया जाए।

राजभाषा विभाग के निदेशक डॉ. महेश चन्द्र गुप्त ने सीएसआइआर की प्रयोगशालाओं/संस्थानों में हिंदी दिवस/सप्ताह मनाए जाने के संबंध में प्रयोगशालाओं, संस्थानों को पत्र लिखे जाने की बात कही।

डॉ. महेश चन्द्र गुप्त ने यह भी अनुरोध किया कि सीएसआइआर के महानिदेशक, संयुक्त सचिव (प्रशासन) आदि द्वारा वरिष्ठ अधिकारियों की बैठकों में भारत सरकार की राजभाषा नीति के बारे में चर्चा की जानी चहिए।

4. दिल्ली प्रशासन को राजभाषा कार्यान्वयन समिति

दिल्ली प्रशासन तथा इसके निकायों, दिल्ली नगर निगम, नई दिल्ली नगर पालिका में हिंदी को बढ़ावा देने की दृष्टि से आयुक्त एवं सचिव (शिक्षा/भाषा) की अध्यक्षता में दिनांक 25-2-92 को दिल्ली प्रशासन की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दूसरी बैठक हुई। बैठक में सबसे पहले दिनांक 21-8-91 को मुख्य सचिव की अध्यक्षता में हुई बैठक में लिए गए निर्णयों पर विभागों द्वारा की गई अनुवर्ती कार्यवाही की समीक्षा की गई। उसके उपरांत निम्नलिखित निर्णय लिए गए :—

(1) जिन विभागों में राजभाषा समितियां गठित नहीं की गई हैं उन विभागों में तुरन्त राजभाषा समितियां गठित की जाएं और नियमित रूप से उनकी तीन महीने में एक बार बैठक अवश्य की जाए। राजभाषा कार्यान्वयन समिति का अध्यक्ष संबंधित विभागाध्यक्ष ही बनाए जाएं। नई दिल्ली नगर पालिका तथा डेसू के मुख्य अभियन्ता, अधीक्षक अभियन्ता के कार्यालयों में भी इसी प्रकार की राजभाषा कार्यान्वयन समितियां गठित की जायें।

(2) सचिव (भाषा) ने यह भी निर्देश दिए की समस्त मोहरें, नामपट, कार्यालयों में प्रयोग किए जाने वाले फार्म इत्यादि निश्चित रूप से हिंदी और अंग्रेजी में ही तैयार किए जाएं और इसकी सूचना भाषा विभाग को भिजवाई जाए।

(3) वित्तीय आयुक्त ने विचार विमर्श के दौरान ये सुझाव दिया कि केवल तकनीकी किस्म के प्रलेखों का अनुवाद हिंदी में करवाने के लिए भाषा विभाग को भेजें, शेष रोजमर्रा का कार्य संबंधित विभागों द्वारा अपने विभाग में ही कार्यरत हिंदी प्रवीण कर्मचारियों से करवाया जाए।

(4) सभी विभाग हिंदी की प्रगति को तिमाही रिपोर्ट नियमित रूप से भाषा विभाग को भेजें, जिससे यह पता करने में आसानी रहेगी कि किस-किस विभाग में कितना कार्य हिंदी में हो रहा है।

(5) बैठक में उपस्थित सदस्यों में से कुछ सदस्यों ने ये सुझाव दिया कि हिंदी में नोटिंग ड्राफ्टिंग करने के लिए हिंदी की सहायक पुस्तकें समस्त विभागाध्यक्षों को भेजी जाए जिससे हिंदी में कार्य करने में मदद मिलेगी।

(6) आयुक्त एवं सचिव (भाषा/शिक्षा) तथा वित्तीय आयुक्त महोदय ने सुझाव दिया कि यदि कोई कर्मचारी अपना कार्य हिंदी में करता है तो उन्हें उस कर्मचारी तथा अधिकारी को और अधिक हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे अन्य कर्मचारियों/अधिकारियों को भी हिन्दी में काम करने के लिए प्रेरणा मिलेगी।

शेष पृष्ठ 63 पर

(घ) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां

1. ईटा नगर

दिनांक 28-11-91 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ईटानगर की वर्ष 1991 की दूसरी अर्द्धवार्षिक बैठक की गई। बैठक की अध्यक्षता नराकास अध्यक्ष एवं निदेशक भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण श्री विष्णु दत्त ममगांई ने की। सभा का संचालन निरीक्षण उपसमिति के संयोजक डा. वी. के. सिंह ने की।

अध्यक्ष श्री विष्णु दत्त ममगांई ने नराकास के उद्देश्यों एवं कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि हमारी समिति को राजभाषा विभाग द्वारा यह जिम्मेदारी दी गई है कि इस नगर में केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिन्दी के प्रगति की समीक्षा करे तथा राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम का अनुपालन सुनिश्चित कराए। इसके अतिरिक्त समिति को ऐसे उपायों पर विचार करना है जिससे हिन्दी का विकास निर्बाध रूप से हो सके। इस कार्य हेतु हिन्दी टाइप, एवं हिन्दी प्रशिक्षण की व्यवस्था का कार्य भी समिति को दिया गया है। उन्होंने सभी सदस्यों से अनुरोध किया कि वे इस कार्य में अपना बहुमूल्य सहयोग दें ताकि राजभाषा का उत्तरोत्तर विकास संभव हो।

अध्यक्ष के संदेश के बाद सचिव ने कार्यसूचि पर विचार विमर्श हेतु अनुमति मांगी तथा क्रमवार कार्यसूची पर विचार विमर्श हुआ।

गत बैठक में लिए निर्णयों पर की गई कार्यवाही:—

सदस्य सचिव ने गत बैठक के निर्णयों पर की गई कार्यवाही का ब्यौरा देते हुए बताया कि हिन्दी शिक्षण योजना का जुलाई–नवम्बर की सत्र की कक्षाएं आयोजित की गई जिसमें क्रमशः प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ में 12, 20, एवं 5 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया। हिन्दी टाइपलेखन प्रशिक्षण केन्द्र खोलने के संबंध में बताया कि इस कार्य हेतु उप निदेशक (हिन्दी टाइपलेखन) राजभाषा विभाग को पत्र लिखा गया था तथा वहां से उत्तर प्राप्त हुआ था किन्तु इस संबंध में सदस्य कार्यालयों के आंकड़ों की अनुपलब्धता के कारण उस पत्र का उत्तर नहीं दिया जा सका। इसी बीच 49 बटालियन सी.आर.पी.एफ. का स्थानान्तरण हो गया। परिणाम स्वरूप हिन्दी टाइपराइटरों की समस्या उत्पन्न हो गई अतः यह कार्य संभव नहीं हो सका। गत बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट का छोटा प्रोफार्मा तैयार करके वितरित कर दिया गया है। हिन्दी दिवस/सप्ताह समारोह के संबंध में बताते हुए सचिव ने कहा कि नराकास ने इस अवसर पर भव्य सांस्कृति कार्यक्रम एवं अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया।

सदस्य कार्यालयों के संबंध में उपलब्ध जानकारी के अनुसार भारतीय औद्योगिक विकास बैंक एक मात्र कार्यालय है जहां पर इस उपलक्ष्य में "राष्ट्रीय जीवन में हिन्दी के महत्त्व" पर एक विचार गोष्ठी और अन्य कार्यक्रम आयोजित किए गए।

हिन्दी टाइपलेखन प्रशिक्षण:—

इस संबंध में चर्चा को आगे बढ़ाते हुए श्री ए. के. शर्मा दूरदर्शन केन्द्र ईटानगर ने बताया कि उनके कार्यालय में हिन्दी का एक भी टाइपराइटर नहीं है, उन्होंने सुझाव दिया कि जिन कार्यालयों के पास हिन्दी टाइपराईटर हैं यदि उनको किसी एक स्थान पर उपलब्ध करवाया जाये तो अन्य कार्यालय भी इसका उपयोग कर सकेंगे, अध्यक्ष ने स्थान विशेष की समस्याओं का हवाला देते हुए बताया कि यह यहां संभव नहीं है किन्तु यदि कोई सदस्य कार्यालय आवश्यक कार्यों हेतु हिन्दी टाइपराइटर का प्रयोग करना चाहे तो नराकास सचिवालय/भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण परिसर में यह व्यवस्था की जा सकती है। इस संबंध में सचिव ने सुझाव दिया कि जब तक इस नगर में हिन्दी टाइपलेखन/प्रशिक्षण का केन्द्र नहीं खुल जाता तब तक पत्राचार पाठ्यक्रम से प्रशिक्षण जारी रखा जाये। इस से संबंधित आवेदन पत्र एवं अन्य जानकारी उपलब्ध है।

विभिन्न कार्यालयों के आकड़ों की समीक्षा

सदस्य सचिव ने अनुरोध किया कि मासिक प्रगति रिपोर्ट का प्रोफार्मा पूर्णरूप से भरकर यथाशीघ्र नराकास सचिवालय को भेजने की व्यवस्था करें ताकि उस पर आवश्यक कार्यवाही संभव हो।

राजभाषा विभाग के प्रतिनिधियों की अनुपस्थिति:—

इस विषय पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए सदस्यों ने कहा कि जहां एक तरफ समिति सदस्य कार्यालयों की उपस्थिति बढ़ाने का भरपूर प्रयास कर रही है वहीं बारबार अनुरोध के बा जूद राजभाषा विभाग के प्रतिनिधियों की अनुपस्थिति से इन प्रयासों को गहरा धक्का पहुंचता है। इस विषय पर सदस्यों ने सर्वसम्मति से निम्नलिखित संकल्प पास किया तथा सचिव से अनुरोध किया कि इस संकल्प को उपनिदेशक (कार्य) राजभाषा विभाग पूर्वोत्तर क्षेत्र गुवाहाटी के पास आवश्यक सूचना एवं कार्यवाही हेतु प्रेषित करें।

> "पिछली कई बैठकों में राजभाषा विभाग के प्रतिनिधियों की लगातार अनुपस्थिति से सदस्य कार्यालयों की उपस्थिति एवं मनोबल में कमी हो रही है"

सदस्य कार्यालयों की अनुपस्थिति

सदस्य सचिव ने सूचित किया कि परामर्श समिति के सक्रिय प्रयासों के परिणामस्वरूप सदस्य कार्यालयों की उपस्थिति में धीरे—धीरे वृद्धि हो रही है किन्तु अभी और अधिक

प्रयास करने की आवश्यकता है, उन्होंने यह भी बताया कि पिछली बैठक में लिए गये निर्णय के अनुसार अध्यक्ष सभी सदस्य कार्यालयों को राजभाषा विभाग के कार्यालय ज्ञापन सं. 12027/4/87-राभा(ख) 2 दिनांक 22-9-87 का हवाला देते हुए अर्धशासकीय पत्र लिखेंगे तथा उनसे अनुरोध करेंगे कि वे आगामी बैठकों में भाग लें तथा समिति के कार्यों में अपना बहुमूल्य सहयोग दें।

डा. एस. डी. पाठक ने कहा कि आज सभी कार्यालय अध्यक्ष यह निश्चित कर लें कि वे अपने कार्यालय से प्रत्येक कक्षा हेतु एक-एक कर्मचारी नामित करेंगे तो पूरा विश्वास है कि प्रत्येक कक्षा में 20 से भी अधिक प्रशिक्षणार्थी हो जाएंगे तथा एक आदमी के आ जाने से कार्यालय के कार्यों में भी कोई खास कमी नहीं होगी। उन्होंने आगे कहा कि यदि हम सभी कार्यालयाध्यक्ष हिन्दी में काम करने की पहल करें तो अधीनस्थ कर्मचारी उसका अनुसरण करने में पीछे नहीं रहेंगे। अतः आवश्यकता है इच्छा शक्ति को जागृत करने की तथा इस दिशा में पहल करने की।

> हिन्दी समस्त आर्यावर्त (भारत) की भाषा है यद्यपि में बंगाली हूं तथा मेरे दफ्तर की भाषा हिन्दी है। इस वृद्धावस्था में मेरे लिए वह गौरव का दिन होगा जिस दिन मैं हिन्दी स्वछन्दता से बोलने लगूंगा। उसी दिन मेरा जीवन सफल होगा जिस दिन मैं सारे भारत-वासियों के साथ-साथ हिन्दी में वार्तालाप करूंगा।
>
> —जस्टिस शारदा चरण मिश्र

2 भुवनेश्वर

भुवनेश्वर के स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 17वीं बैठक समिति के अध्यक्ष श्री जी.सी. श्रीवास्तव, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की अध्यक्षता में दिनांक 6-9-1991 को महालेखाकार (लेखा एव हकदारी) के कार्यालय में हुई।

सचिव का स्वागत भाषण

सचिव श्री ए. के. पटनायक, ने राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए विभिन्न कार्यालयों द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की तथा भविष्य में इससे ज्यादा प्रयास करने को कहा।

इसके बाद बैठक में उपस्थित कुछ सदस्यों ने अध्यक्ष की अनुमति से सुझाव एवं प्रशिक्षण कार्य में आने वाली कठिनाइयों का जिक्र किया एवं इनका प्रति उत्तर सविस्तार रूप में मुख्य अतिथि महोदय श्री सिद्धनाथ झा, उपनिदेशक द्वारा अपने संभाषण के दौरान दिया गया जो निम्नवत है।

उपनिदेशक ने कहा कि बैठक बहुत ही शांत वातावरण में शुरू हुई एवं जब तक हर मुद्दे पर जोर नहीं दिया जाएगा तब तक उसका कार्य पूरा नहीं हो पाएगा। जिन कार्यालयों में हिन्दी अधिकारी हैं उन सबसे अनुरोध करते हुए उन्होंने कहा कि यह समिति किसी एक कार्यालय की नहीं है इसलिए हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए सब मिलकर जब तक सहयोग प्रदान नहीं करेंगे तब तक निश्चित उद्देश्य की ओर पहुंचना मुश्किल हो सकता है।

तिमाही प्रगति रिपोर्ट के संबंध में विभिन्न कार्यालयाध्यक्षों से अनुरोध किया गया कि वे अपने कार्यालय की तिमाही प्रगति रिपोर्ट अध्यक्ष, न.रा.का.स. भुवनेश्वर को निर्धारित प्रपत्र में उचित समय पर भेजने का प्रयास कर इस कठिनाई को दूर करने में सहयोग प्रदान करें। तिमाही प्रगति रिपोर्ट उचित समय पर भेजने के लिए भारत सरकार/गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, का आदेश है।

उन्होंने कहा कि हिन्दी में कार्य को बढ़ाने के लिए अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करके निर्धारित लक्ष्य को पूरा करने के लिए अपने व्यक्तिगत प्रयासों को और सुदृढ़ बनाएं जिससे कि निश्चित लक्ष्य को पूरा किया जा सके।

3. तिरुअनंतपुरम्

पिछले वर्षों की भांति ही 1991 में भी संयुक्त हिंदी दिवस समारोह किया गया। बैंकों के कर्मचारियों के लिए हिंदी में पांच प्रतियोगिताएं की गई। कुल 27 कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

मुख्य समारोह 16 अक्तूबर, 1991 को स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर में किया गया। प्रो. एस. पद्मकुमारी, अध्यक्ष (हिंदी विभाग, सरकारी महिला महाविद्यालय, तिरुअनंतपुरम) समारोह में मुख्य अतिथि थीं।

समारोह के अवसर पर "टोलिक राजभाषा रोलिंग शील्ड" योजना के अंतर्गत वर्ष 1990 के लिए निम्नलिखित सदस्यों को ट्राफियों/प्रमाणपत्र प्रदान करके सम्मानित किया गया।

योजना क

प्रथम पुरस्कार : भारतीय स्टेट बैंक, आंचलिक कार्यालय
द्वितीय ,, : विजया बैंक, प्रभागीय कार्यालय
तृतीय ,, : स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर, आं. का.

योजना ख

प्रथम पुरस्कार : बैंक ऑफ महाराष्ट्र
द्वितीय पुरस्कार : ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स
तृतीय पुरस्कार : इलाहाबाद बैंक

राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय से प्राप्त अनुदेश

संदर्भ	विषय	कार्रवाई
1. सं. 12015/42/90-रा भा. (त.क.) दि. 12-8-91	कंप्यूटरों के द्विलिपीय प्रयोग के लिए प्रशिक्षण की सुविधा	28-9-91 के पत्रांक तिराक/निराकास/1684-1709/सी द्वारा सभी सदस्यों को प्रेषित
2. सं. 19016/44/91 के हिप्रस/हिटापपा दि. 23-10-91	पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा हिंदी टाइप-लेखन प्रशिक्षण तीसरा सत्र	21-11-91 के पत्र सं. तिराक/निराकास/2283/सी द्वारा सदस्यों को प्रेषित

बैंक कार्यपालकों/वरिष्ठ अधिकारियों के लिए 20 सितम्बर 91 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला की गई जिसमें 50 कार्यकालपों/अधिकारियों राजभाषा अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में सभी बैंकों का प्रतिनिधित्व हुआ। संकाय सहायता श्री राजेश्वर गंगवार, उप मुख्य अधिकारी भारतीय रिज़र्व बैंक, बंबई तथा श्री आर एस एल प्रभु, मंडल प्रबंधक (केनरा बैंक, प्रधान कार्यालय, बंगलूर) ने प्रदान की।

उप निदेशक (राजभाषा विभाग, क्षे.का. कार्यालय, कोचिन) ने सुझाव दिया कि उक्त कार्यशाला में प्रशिक्षित अधिकारियों के लिए ही अप्रैल/मई 92 तक एक और कार्यशाला आयोजित की जाए जिसमें उन्हें हिंदी में टिप्पण, प्रारूपण जैसी प्रयोजनमूलक हिंदी का प्रशिक्षण दिया जाए।

बैंकों में अतिरिक्त हिंदी स्टाफ की भर्ती संबंधी मामला सचिव, वित्त मंत्रालय को भेजने का निर्णय लिया गया था। तदनुसार मामला सचिव महोदय को भेजा गया था। इस संबंध में वित्त मंत्रालय, बैंकिंग प्रभाग से उत्तर मिल चुका है जिसके अनुसार :

> "भर्ती पर लगी वर्तमान रोक केवल राजभाषा पदों के लिए ही नहीं अपितु एक निर्धारित सीमा के बाद सभी पदों के लिए सामान रूप से लागू है। बैंक अपनी आवश्यकतानुसार इस सीमा के अंतर्गत बाकी पदों के साथ-साथ राजभाषा संबंधी पदों को भी भर सकते हैं और इस पर किसी प्रकार की रोक नहीं है, इसके साथ-साथ यह भी स्पष्ट किया जाता है कि राजभाषा अधिकारियों की भर्ती का आई.आर. अनुभाग के दिनांक 4 जून 1987 के पत्र सं. 5/1/5/87–आई-आर में निहित मार्ग निर्देशों के अनुसार बैंक के अर्हता प्राप्त कर्मचारियों से भी किए जाने का प्रावधान है।"

[संदर्भ : सं. 11015/1/91–हिंदी दिनांक 20 सितंबर 1991]

द्विभाषी प्रपत्रों की स्थिति स्पष्ट करते हुए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली से प्राप्त पत्र की प्रति सदस्य बैंकों को भेजी जा चुकी है।

[संदर्भ : तिराक/निराकास/1246–70/सी दि. 29-7-91]

टोलिक की बैठकों में नाबार्ड की भूमिका पर वित्त मंत्रालय तथा भारतीय रिज़र्व बैंक से स्थिति स्पष्ट करने का अनुरोध किया जाए, ऐसा निर्णय लिया गया था। तदनुसार कार्रवाई की गई तथा उक्त दोनों संस्थाओं ने स्पष्ट किया है कि राजभाषा अधिनियम 1963 तथा नियम 1976 भा.औ.वि.बैं./नाबार्ड जैसी वित्तीय संस्थाओं पर भी लागू हैं। अतः इनसे अपेक्षा की जाती है कि संयोजक को अपनी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करें तथा सदस्य के रूप में बैठकों में भाग लें।

4 सिलचर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सिलचर की तीसरी बैठक हिन्दुस्तान पेपर कारपोरेशन लि. की इकाई कछाड़ पेपर मिल के वरिष्ठ महाप्रबंधक-सह-मुख्य अधिशासी, श्री श्यामा प्रसाद की अध्यक्षता में 10 अप्रैल, 1991 को हुई। बैठक में कछाड़ पेपर मिल के वरिष्ठ अधिकारियों सहित स्थानीय समाचार पत्रों तथा आकाशवाणी, सिलचर के प्रतिनिधि भी मौजूद थे। वर्तमान बैठक में सिलचर क्षेत्र में स्थित विभिन्न सरकारी कार्यालयों/प्रतिष्ठानों, राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि के प्रतिनिधियों की उपस्थिति भी आशातीत रही।

स्वागत करते हुए कछाड़ पेपर मिल के उप-महाप्रबंधक (अभियंत्रण) श्री बी.एन. सहाय ने कछाड़ पेपर मिल के सहयोजकत्व में गठित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को हिन्दी के प्रचार-प्रसार में राजभाषा विभाग का एक महत्त्वपूर्ण कदम माना और बताया कि हिन्दी अब हमारे दैनिक जीवन एवं व्यवहार में इस तरह से घुल मिल गई है कि हमें महसूस ही नहीं होता कि हम कहीं भी इससे असंबद्ध हैं।

मुख्य अतिथि डा. के.के. झा., सहायक आयुक्त केन्द्रीय विद्यालय संगठन, सिलचर ने राजभाषा हिन्दी की उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि भारत में जितनी भी भाषाएं हैं उन सबके बीच कड़ी का काम हिन्दी ही करती है। उनका सुझाव था कि सभी कार्यालय यह सुनिश्चित करें कि राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित राजभाषा हिन्दी की प्रगति संबंधी लक्ष्यों को अधिक से अधिक प्राप्त किया जाए। अध्यक्ष ने बताया कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन मात्र ही अंतिम लक्ष्य नहीं है बल्कि अंतिम लक्ष्य है राजभाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रसार एवं सरकारी कार्यालयों में इसका अधिक से अधिक उपयोग; कार्यालयों में कर्मचारियों में रुचि जगाने के लिए विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं चलाने, पुस्तकें खरीदने, हिन्दी टाइपराइटर की संख्या बढ़ाने, विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित कराने की बातें सोची जा सकती हैं।

श्री दासगुप्ता ने अपनी तथा कछाड़ पेपर मिल की ओर से कछाड़ तथा सिलचर क्षेत्र में हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

सचिव ने "ग" क्षेत्र में स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों, सरकारी प्रतिष्ठानों एवं उपक्रमों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों के

लिए राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 91–92 हेतु निर्धारित हिन्दी की लक्ष्यों को बताया और इन्हें समय से कार्यान्वित करने के लिए अनुरोध किया। श्री गुप्त ने अपने सम्बोधन में उन सदस्य कार्यालयों का जिक्र भी किया जिन्होंने राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित प्रपत्र को भेजा है तथा उपस्थित प्रतिनिधियों से अनुरोध किया कि वे भविष्य में प्रपत्र को समय से नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति के अध्यक्ष के पास भिजवा दें।

कछाड़ पेपर मिल के महाप्रबंधक (कार्य) श्री आर. एस. डी. पाण्डेय ने सुझाव दिया कि अहिंदी भाषी प्रदेशों में प्रोत्साहन दी जाने वाली रकम को बढ़ाया जाए एवं साथ ही उनके प्रशिक्षण की पूर्ण व्यवस्था की जाए।

केन्द्रीय विद्यालय, सिलचर के प्राचार्य श्री सिकरवाल का सुझाव था कि प्रायः देखा जाता है कि कार्यालयों में जो परंपरा ऊपर से अधिकारी शुरू करते हैं उसे नीचे का कर्मचारी सहज ही अनुगमन करने लगता है। अतः यदि अधिकारी वर्ग स्वयं इसमें रुचि लें तो हिन्दी की प्रगति सुगम हो सकती है।

श्रमिक विद्यापीठ, सिलचर के निदेशक श्री अरविन्द सेन का सुझाव था कि सबसे पहले कर्मचारियों में हिन्दी सीखने के लिए प्रेरणा लानी होगी। इसके लिए जरूरी है कि प्रचार माध्यमों की मदद से एवं सरकार द्वारा चलाए जा रहे प्रोत्साहनों द्वारा पहले उनमें हिन्दी सीखने हेतु अभिरूचि पैदा की जाए।

जी.सी. कालेज, सिलचर के प्राचार्य का सुझाव था कि हिन्दी एवं बंगला के तथा हिन्दी साहित्य के सरल एवं छोटे-छोटे रूचिकर साहित्य प्रचुर मात्रा में कालेजों, विद्यालयों, एवं सार्वजनिक पुस्तकालयों में सरकार द्वारा उपलब्ध कराया जाए ताकि लोग उनका नियमित रूप से इस्तेमाल कर सकें।

श्रीमती अश्लेषा झा के सुझावों में कार्यालयों में नियमित रूप से कार्यशालाओं का आयोजन कराना, सप्ताह में एक दिन केवल हिन्दी में ही कार्य करने का प्रयास करना, सरल सुबोध हिन्दी साहित्य को उपलब्ध कराना, हिन्दी वर्णमाला के चार्टों का कार्यालयों में जगह-जगह प्रदर्शन कराना आदि शामिल है।

जीवन बीमा निगम के विपणन प्रबन्धक श्री दामोदर सिंह का सुझाव था कि अधिकारी वर्ग खुद छोटे-छोटे शब्दों व वाक्यों के इस्तेमाल द्वारा कार्यालयों में हिन्दी का प्रारंभ कर सकते हैं एवं दूसरों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन सकते हैं।

जीवन बीमा निगम के हिन्दी अधिकारी ने उल्लेख किया कि राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित सभी सम्मेलनों एवं गोष्ठियों में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी कठिनाइयों की चर्चा की जाती है एवं उनके बड़े अधिकारियों से इनमे विभागीय कार्रवाई करने का अनुरोध किया जाता है लेकिन सम्मेलनोपरान्त कुछ भी कार्रवाई नहीं हो पाती है। अतः राजभाषा विभाग इन खामियों को सुधारें और प्रशिक्षण की तुरन्त व्यवस्था सुनिश्चित करें।

भारतीय सर्वेक्षण के सर्वेक्षण अधिकारी श्री अमूल्य शंकर का सुझाव था कि सिलचर में ही कर्मचारियों के हिन्दी प्रशिक्षण के लिए कम से कम सप्ताह में एक बार कक्षाएं शुरू की जाएं और इसके लिए राजभाषा विभाग तुरन्त प्रयास करें।

इन्डियन एयर लाइन्स के केन्द्र प्रबन्धक श्री एन.आर. लस्कर का सुझाव था कि कार्यालयों में हिन्दी के लिए जो भी प्रशिक्षण संबंधी व्यवस्था हो वह प्रारंभिक नियुक्ति के समय ही हो क्योंकि उम्र बढ़ने के साथ एक तो जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं अतः हिन्दी कक्षाओं के लिए समय निकालना मुश्किल हो जाता है दूसरे 60 के उम्र के लगभग ग्रहण शक्ति भी क्षीण हो जाती है।

मासिमपुर के प्राचार्य श्री राय का विचार था कि राजभाषा विभाग द्वारा हिन्दी प्रगति के लिए जो भी व्यवस्थाएं की गई हैं उन्हें सही-सही रूप में एवं पूरी लगन से यदि लागू की जाए तो राजभाषा हिन्दी का स्वतः विकास हो सकता है।

पेपर मिल में पिछले वर्ष आयोजित हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार दिए गए।

कछाड़ पेपर मिल के वरिष्ठ प्रबन्धक, कार्मिक एवं प्रशासन, श्री विनोद बिहारी ने धन्यवाद देते हुए समिति की कार्यवाही को एक महत्त्वपूर्ण कदम बताया और यह भी आश्वासन दिया कि कार्यकारी सत्र के दौरान जो भी समस्याएं या सुझाव सामने आए हैं उन्हें हम अपने स्तर पर राजभाषा विभाग से उठाएंगे और उनके जो भी मार्ग दर्शन हमें वहां से मिलेंगे उससे हम आप सबों को समय से सूचित कराएंगे।

5. बंबई (उपक्रम)

बम्बई स्थित सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति की 12वीं बैठक का आयोजन श्री पी. रामकृष्णन अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एच.पी.सी.एल तथा अध्यक्ष (बम्बई नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति) की अध्यक्षता में 28 अगस्त 1991 को हुआ।

बैठक में श्री निशिकांत महाजन, संयुक्त सचिव (राजभाषा विभाग, नई दिल्ली) मुख्य अतिथि थे।

श्री पी. रामकृष्णन ने स्वागत करते हुए कहा "नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति द्वारा वाक एवं निबंध प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक आयोजन सभी उपक्रमों के सहयोग से ही हो पाया है। नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति की बैठक हम सभी को ऐसा मंच प्रदान करती है जहां राजभाषा कार्यान्वयन आने वाली समस्याओं पर सामूहिक रूप से चर्चा होती है तथा सचिव महोदय का अमूल्य मार्गदर्शन भी प्राप्त होता है।

इस अवसर पर उन्होंने इस वर्ष से तीसरी चल वैजयंती दिए जाने की घोषणा की जो कि आई.टी.पी. कंपनी के सौजन्य

से प्राप्त हुई है। बैठक में हिन्दी के नियमों/अधिनियमों, नीति का अनुपालन, द्विभाषी उपकरण हिन्दी पत्राचार का लेखा जोखा रखते हैं और तिमाही प्रगति की रिपोर्ट के प्रोफार्म को उपक्रमों के हिसाब से संशोधन करने आदि विषयों पर गहन चर्चा की गई तथा उपक्रमों की कार्यपद्धति को ध्यान में रखते हुए तिमाही प्रगति रिपोर्ट में प्रपत्र में संशोधन के लिए उपसमिति बनाने का निर्णय लिया गया। मुख्य अतिथि श्री महाजन ने कहा कि नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति ने विभिन्न प्रतियोगिताएं करके प्रशसंनीय कार्य किया है।" उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि विभागाध्यक्षों को अपने संगठन में हिन्दी में काम को प्रगति के लिए पहल करनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि "भविष्य में इन बैठकों को और सार्थक बनाने के लिए यह ज़रूरी है कि सभी उपक्रमों के उच्चतम अधिकारियों को इस बैठक में उपस्थित रहना चाहिए। मुख्य अतिथि ने हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कारपोरेशन द्वारा तैयार किए गए पुरस्कार विजेता निबंधों के संकलन का विमोचन किया। हिन्दी का उत्कृष्ट कार्य करने पर भारतीय कपास निगम (प्रथम) राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम (द्वितीय) तथा भारतीय निर्यात ऋण गारंटी निगम (तृतीय) को चल वैजयंतियां तथा भारतीय नौवहन निगम इंडियन टेअरअर्चस लि. नेशनल टेक्सटाईल कारपोरेशन लि. और भारतीय जीवन बीमा निगम को प्रशस्ति पत्र दिए इसी अवसर पर वाक् तथा निबंध प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी पुरस्कार दिए गए।

श्री अशोक सूरी, सचिव नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति तथा वरिष्ठ निगम संपर्क प्रबंधक, ने आभार व्यक्त किया।

6. नागपुर (बैंक)

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति नागपुर की बैठक, दिनांक 7 सितम्बर, 1991 को हुई। इस बैठक में निम्नलिखित बैंक के प्रतिनिधि अनुपस्थित रहें :—

1. स्टेट बैंक आफ त्रावणकोर
2. इंडियन ओवरसिज बैंक
3. कारपोरेशन बैंक
4. स्टेट बैंक आफ हैदराबाद
5. स्टेट बैंक आफ मैसूर

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति के अध्यक्ष एवं बैंक आफ इंडिया के आंचलिक प्रबंधक श्री जयशील यो. दीवानजी ने गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उप निदेशक श्री कृष्ण ना. मेहता एवं अन्य बैंकों के उच्चाधिकारियों तथा समस्त सदस्यों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि यह बैठक बहुत ही महत्त्वपूर्ण है जिससे राजभाषा कार्यान्वियन में अब तक की प्रगति और कमियों के बारे में विस्तार से चर्चा की जाएगी।

बैंकिंग उन्मुख हिन्दी परीक्षा पाठ्यक्रम : सदस्य-सचिव ने समिति को सूचित किया कि बैंकिंग उन्मुख हिन्दी परीक्षा पाठ्यक्रम हेतु एक दिवसीय प्रशिक्षण लगातार आयोजित किया जा रहा है तथा यह परम्परा आगे भी जारी रखने का प्रस्ताव है।

छठवीं बैठक

हिन्दी की तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा – सदस्य-सचिव ने खेद व्यक्त करते हुए कहा कि कुछ सदस्य बैंक इस महत्त्वपूर्ण रिपोर्ट को समय पर नहीं भेजते हैं जिससे उनके यहां हो रहे राजभाषा कार्यान्वियन की समीक्षा नहीं हो पाती। इसके साथ ही उन्होंने श्री मेहता से आग्रह किया कि वे विभिन्न बैंकों की तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा आरम्भ करें।

श्री कृष्ण ना. मेहता – समिति को सम्बोधित करते हुए श्री कृष्ण ना. मेहता ने कहा कि राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि का इस बैठक में उपस्थित होना जरूरी केवल इसलिए होता है कि समिति के विचार-विमर्श में यदि कोई कठिनाई आती है तो विभाग आपको किस तरह क्या मदद कर सकता है, क्या रास्ता निकाला जा सकता है, यह समझा जा सके। राजभाषा संबंधी सरकार की जितनी भी अपेक्षाएं है वह कार्यपालकों को पूरी करनी है और यह समिति सहयोगी मंच के रूप में गठित की गई है। उन्होंने कहा कि राजभाषा विभाग केवल आपको दिशानिर्देश दे सकता है। केवल राजभाषा कार्यान्वियन राजभाषा संबंधी लक्ष्यों को किस प्रकार प्राप्त करता है इसलिए सदैव मेरा यह प्रयत्न रहता है कि इस उच्च अधिकार प्राप्त नगर की समिति में हमेशा बैंक के उच्च कार्यपालक या बैंक के उच्च प्रबंधक यहां मौजूद रहें तथा बैंकों द्वारा राजभाषा के संबध में, कार्यान्वियन के संदर्भ में आने वाली कठिनाईयों पर सार्थक रूप से चर्चा की जा सके। मुझे प्राप्त सूचना के अनुसार इंडियन बैंक को छोड़कर बाकी किसी भी बैंक ने हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर अंग्रेजी में नहीं दिया है। हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर अंग्रेजी में देना इस बात की घोषणा करता है कि आप इस बैंक में जो भी निर्णय लेते हैं उस पर नकारात्मक कार्यवाही करते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि आप वरिष्ट कार्यपालक है, क्या आपने राजभाषा विषयक कोई कार्य योजना बनाई है, यह मुख्य बात है कि लक्ष्य कैसे प्राप्त करना है या उसे आगे कैसे बढ़ाना है। हम आपसे राजभाषा कार्यान्वियन के प्रगति के बारे में सुनने हेतु अधीर रहते हैं, इसलिए हम बैठक में आते हैं।

यूनियन बैंक आफ इंडिया, पंजाब नेशनल बैंक, सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया, इलाहाबाद बैंक तथा बैंक आफ इंडिया ने अपनी अपनी कार्ययोजनाओं के बारे में समिति को सूचित किया। श्री मेहता जी ने कहा कि प्राप्त तिमाही रिपोर्ट को

मानदंड के रूप में माना जाएगा तो नागपुर में हिन्दी पत्राचार पिछली तिमाही को तुलना में बड़ा है इसलिए आप सब बधाई के पात्र है।

द्विभाषिक टैलेक्स :— सदस्य सचिव ने समिति का ध्यान द्विभाषिक टैलेक्स की ओर आकर्षित करते हुए सूचित किया कि विभिन्न सदस्य बैंक के प्रयासों के बावजूद भी द्विभाषिक टैलेक्स प्राप्त नहीं हो पा रहा है। श्री मेहता जी ने कहा कि जिन बैंकों के पास टैलेक्स है और उन्हें द्विभाषिक रूप में परिवर्तित करना है, उनसे निवेदन है कि वे अपने जिले के दूरसंचार विभाग से संपर्क करें और अपनी आवश्यकताओं से उन्हें अवगत कराएं और प्रतीक्षा सूची में अपना नाम लिखें और अपना प्रतीक्षा क्रमांक प्राप्त करें। प्राप्त संकेतों के अनुसार लम्बी मांगों को पूरा करने के लिए दूरसंचार विभाग को एक वर्ष और लगेगा। कई संभागों, कई जिलों में जहां केन्द्रीय कार्यालय या बैंकों/उपक्रमों की संख्या कम है वहां प्रतीक्षा सूची नागपुर से छोटी होगी।

सैन्ट्रल बैंक आफ इंडिया – आंचलिक कार्यालय में द्विभाषिक टैलेक्स 6 माह से है। दूरसंचार विभाग को व्यक्तिगत सम्पर्क किया गया है। अभी तक लाईन प्राप्त नहीं हुई है अतएव टैलेक्स बेकार पड़ा हुआ है।

श्री मेहता जी ने कहा कि आपसे अनुरोध है कि एक पत्र दूरसंचार विभाग को लिखें और प्रतिलिपि राजभाषा विभाग पृष्ठांकित कर दें ताकि हम आपको कुछ सहायता कर सकें।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया – तीन वर्ष पहले टैलेक्स बुक किया है। दूरसंचार विभाग से प्रतीक्षा सूची के बारे में जानना चाहा तो उन्होंने कहा कि हमारे यहां कोई प्रतीक्षा सूची नहीं है। इस बारे में अनुस्मारक भी दिया गया है।

श्री मेहता ने अनुस्मारक के प्रति की मांग की।

3. भारतीय बैंकर्स संस्थान द्वारा आयोजित सी ए आई आई बी परीक्षा पाठ्यक्रम का हिन्दी में संचालन :— सदस्य-सचिव ने समिति को सूचित किया कि जबसे परीक्षा आरम्भ की गई है तबसे हिन्दी माध्यम से परीक्षा देने वाले स्टाफ सदस्यों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है। पिछले वर्ष से यह दबाव बढ़ रहा है कि इस पाठ्यक्रम को हिन्दी माध्यम द्वारा संचालित किया जाए। उन्होंने कहा कि चूंकि इस आयोजन की जिम्मेदारी सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया के पास है अतएव इस संबंध में समिति आवश्यक जानकारी चाहती है।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया – हिन्दी माध्यम से परीक्षा पाठ्यक्रम को संचालित करना मुश्किल बात नहीं है। समस्या यहां संकाय सदस्यों की उपलब्धता की है। उन्होंने कहा कि हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण में अपना योगदान दे सकते। ऐसे सभी बैंकों से सूचना मिल जाये तो क्या वे इसमें योगदान दे सकेंगे। इस बारे में सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया ने कहा कि धीरे-धीरे प्रयास किया जा सकता है तथा आहिस्ते-आहिस्ते इस पाठ्यक्रम का आयोजन हिन्दी में किया जा सकता है।

अध्यक्ष श्री जयशील यो. दीवानजी ने कहा कि श्री मेहता ने जैसा कहा कि हिन्दी कार्यान्वयन का आरंभ नागपुर स्थित सभी बैंकों में हो गया है और इस साल में जो प्रगति हुई है जिसका श्रेय यहां बैठे सभी वरिष्ठ अधिकारियों को जरू है। जहां तक हम लोगों का सवाल है बैंकिंग उद्योग की ओर से आश्वासन जरूर देना चाहूंगा कि बैंकों को जो भी काम सौंपा गया है राष्ट्रीयकरण के बाद से वह कार्य बहुत अच्छी तरह से पूरा किया गया है। संकट के समय सेना और बैंक देश के लिए काम करते हैं। सरकार की नीति और अपेक्षाओं के अनुरूप हिन्दी के बारे में हम पीछे नहीं मुड़ेंगे, उसके अनुसार अमल, कार्रवाई करेंगे।

धन्यवाद ज्ञापन – बैंक आफ इंडिया के उप आंचलिक प्रबंधक तथा बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन उप समिति के अध्यक्ष श्री एससी सान्याल ने कहा कि कुछ दिन पहले नागपुर के एक अखबार में पढ़ा कि जापान में हिन्दी बहुत जनप्रिय हो रही है। जब जापान में हिन्दी पहुंची हो वहां हिन्दी पर ध्यान दिया जा रहा है, नागरिकों को मौका दिया जा रहा है तो मैं आशा करता हूं कि नागपुर में हिन्दी को हम बढ़ पाएगें।

7. गुवाहाटी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति गुवाहाटी के वर्ष 1991 की दूसरी बैठक पू. सी. रेलवे के मुख्य कार्मिक अधिकारी श्री एम. सी. शर्मा की अध्यक्षता में दिनांक 8-10-91 को आयोजित हुई। बैठक के प्रारम्भ में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिव एवं वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी श्री रामकिशोर सिन्हा ने अध्यक्ष एवं उपस्थित सदस्यों का स्वागत किया और उपस्थित सभी सदस्यों का अध्यक्ष से परिचय कराया।

अध्यक्ष ने इस बात की ओर ध्यान दिलाया कि बैठक में गुवाहाटी नगर स्थित केन्द्रीय सरकार के अधिकांश कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों के प्रधान उपस्थित नहीं हो पाए हैं। यदि वे स्वंय आए होते तो बहुत अच्छा होता। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भविष्य में बैठक के सभी कार्यालयों के प्रधान उपस्थित होंगे ताकि राजभाषा के कार्यान्वयन में अधिक गति आए। उन्होंने कहा कि राजभाषा के प्रयोग प्रसार में अब तक जो प्रगति हुई है और भविष्य में जिसे अंजाम देना अपेक्षित है उसकी झलक सचिव की रिपोर्ट में देखने को मिलेगी।

हिन्दी भाषा टंकण और आशुलिपि

बैठक में विचार विमर्श के दौरान हिन्दी भाषा, टंकण और आशुलिपि प्रशिक्षण संबंधी सुविधाओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए भारतीय औद्योगिक विकास बैंक, गुवाहाटी के हिन्दी अधिकारी श्री नरेश कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि

हिन्दी शिक्षण योजना, मालीगांव द्वारा उपलब्ध सुविधाएं कम और अप्राप्त है। उन्होंने सुझाव पेश किया कि –

हिन्दी टंकण और आशुलिपि की कक्षाएं केवल मालीगांव में ही उपलब्ध है। अतः गुवाहाटी में किसी केन्द्रीय स्थान पर भी इन कक्षाओं को चलाया जाय।

समिति द्वारा समय-समय पर राजभाषा संबंधी प्रतियोगिताओं/अंतर कार्यालयीन कार्यक्रमों आदि का आयोजन किया जाए। इससे राजभाषा के प्रयोग-प्रसार को अधिक गति मिलेगी।

हिन्दी शिक्षण योजना, मालीगांव के सहायक निदेशक श्री रामानुज पाण्डेय ने गुवाहाटी में टंकण/आशुलिपि कक्षाओं के चलाए जाने के संबंध में स्पष्ट किया कि इस संबंध में विचार किया गया है, और फर्नीचर आदि उपलब्ध हो जाने पर मशीनों आदि की भी व्यवस्था करने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

हिन्दी टंकण और आलुलिपि प्रशिक्षण के संबंध में भारतीय रिजर्व बैंक के राजभाषा अधिकारी श्री राज चावण ने सुझाव दिया कि अब जब कम्प्यूटरीकरण की प्रक्रिया जारी है, कर्मचारियों को प्रशिक्षण दृश्य-श्रव्य उपकरणों के माध्यम से दिया जाए। साथ ही गुवाहाटी में केन्द्र खोलने की उपयोगिता पर भी उन्होंने विशेष बल दिया क्योंकि मालीगांव में प्रशिक्षण ले रहे कर्मचारियों का अधिकांश समय आवागमन में यों ही व्यतीत हो जाता है। ऐसी हालत में कम से कम एक अंशकालिक प्रशिक्षण केन्द्र की व्यवस्था तो हो ही सकती है

यूनियन बैंक के राजभाषा अधिकारी श्री पवन कुमार साहनी ने भी बल देते हुए कहा कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में यदि विभागाध्यक्ष स्वयं उपस्थित हो तो बैठक में लिए गए निर्णयों के क्रियान्वयन में असुविधाएं कम होंगी : अतः अच्छा हो कि सभी विभागाध्यक्ष इन बैठकों में उपस्थित हों।

श्री साहनी ने सुझाव दिया कि नराकास की बैठकों को कारगर बनाया जाए। उन्होंने इस ओर सदस्यों का ध्यान आकर्षित किया कि नाराकास की बैठकों के स्तर पर प्रोत्साहन योजना लागू की जाए। इस संबंध में उन्होंने बताया कि दूर संचार विभाग से द्विभाषी टैलेक्स मशीन के बारे में पत्राचार किया गया था किन्तु अभी तक मशीन प्राप्त नहीं हो पायी है। अतः उन्होंने यह सुझाव दिया कि नराकास के मंच से पत्राचार द्वारा इस प्रकार के नीति विषयक मामलों को निपटाया जाए।

भारतीय तेल निगम के राजभाषा अधिकारी श्री एस. के. त्रिपाठी ने सुझाव दिया कि —

अंतरकार्यालयीन प्रतियोगिताएं नगर में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों तथा उपक्रमों के बीच सौहार्द सहयोग तथा राजभाषा नीति को सशक्त माध्यम प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगी अतः एक राजभाषा शील्ड चलायी जाए जो उस कार्यालय को प्रदान की जाए जिसने राजभाषा के प्रयोग प्रसार के क्षेत्र में सबसे अधिक कार्य किया हो।

इस संबंध में उन्होंने आश्वासन दिया कि भारतीय तेल निगम राजभाषा शील्ड और नकद 1000.00 (एक हजार) रुपये तक का आनुषंगिक खर्च वहन करेगा।

सदस्य-सचिव ने कहा कि नराकास की बैठकों का आयोजन हिन्दी में कामकाज की प्रगति के लिए किया जाता है। बैठक में सदस्यों द्वारा उठाए गए विभिन्न मुद्दों पर अपना अभिमत व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि –

(1) हिन्दी भाषा, हिन्दी टंकण और आशुलिपि के प्रशिक्षण का कार्य यथाशीघ्र पूरा कर लेने के उद्देश्य से प्रशिक्षण केन्द्रों में गृह मंत्रालय द्वारा उपलब्ध सुविधाओं का पूरा लाभ उठाया जाए।

(2) प्रशिक्षण सुविधाओं की कमी को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रारंभ किये गये पत्राचार पाठ्यक्रम सुविधा का लाभ उठाकर पूरा किया जाए। गुवाहाटी में हिन्दी टंकण/आशुलिपि के अंशकालिक प्रशिक्षण केन्द्र की व्यवस्था भी फिलहाल एक लाभप्रद कदम सिद्ध होगी।

(3) इसके अतिरिक्त गहन प्रशिक्षण के अंतर्गत 20–25 दिन की अवधि के पूर्णकालिक प्रशिक्षण केन्द्र गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा चलाए जा रहे हैं। ऐसा ही एक केन्द्र गुवाहाटी में भी चलाने की योजना है और आशा है कि इससे प्रशिक्षण समस्या का कुछ हद तक निदान हो जाएगा।

(4) हिन्दी टंकण के लिए भी चलाए जा रहे पत्राचार पाठ्यक्रम योजना से लाभ उठाया जाए।

(5) अनुवाद कार्य में प्रगति लाने की दिशा में सुविधा के लिए मानदेय के आधार पर अनुवाद सुविधा का लाभ उठाया जाए।

(6) रोमन में उपलब्ध पर्सनल कंप्यूटरों को जिस्ट कार्य की मदद से द्विभाषिक रूप में कार्य करने के लिए सक्षम बनाया जाए और इस बात को ध्यान में रखा जाए कि भविष्य में कंप्यूटर आदि इलैक्ट्रोनिक उपकरण द्विभाषिक ही खरीदे जाएं ताकि इस दिशा में भी राजभाषा नीति का सही अनुपालन हो।

8. वाराणसी

छःमाही बैठक समिति के अध्यक्ष एवं आयकर उपायुक्त श्री उमाकान्त शुक्ला की अध्यक्षता में हुई जिसमें राजभाषा विभाग, भारत सरकार के उत्तर क्षेत्रीय उप निदेशक श्री नाहर सिंह वर्मा उपस्थित थे। बैठक में उपस्थित कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों/वरिष्ठतम अधिकारियों/प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए आयकर आयुक्त उपायुक्त एवं अध्यक्ष श्री शुक्ला ने कहा कि हिन्दी के प्रयोग की स्थिति में काफी सुधार हो रहा है और कई कार्यालय तेजी के साथ आग बढ़ रहे हैं। अब कई कार्यालयों में कार्यालय के मूल

कार्य, जैसे टिप्पणी आदेश, रजिस्टर तथा रसीदी आदि में हिन्दी का काफी प्रयोग किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि रिपोर्ट के अनुसार लगभग 15 कार्यालय 80% से 100% तक लगभग 20 कार्यालय 60% से 80% तक लगभग 25 कार्यालय 40% से 60% तक तथा लगभग 39 कार्यालय मूल रूप में 20% से 40% तक हिन्दी का प्रयोग कर रहे हैं। शेष 25 कार्यालय 20% से कम हिन्दी का प्रयोग करते हैं। उन्होंने यह कहा कि पहले से यह स्थिति काफी बेहतर है किन्तु वाराणसी जैसे नगर के लिए उत्साहवर्धक नहीं कही जा सकती है। किन्तु आप लोगों में जो उत्साह लगा है, उस पर मुझे बड़ा भरोसा है।

श्री शुक्ला ने कहा कि भारत सरकार द्वारा जारी राजभाषा हिन्दी के प्रयोग का वर्ष 1991–92 का कार्यक्रम आप लोगों के कार्यालयों में पहुंच गया होगा।

अपने उद्‌बोधन में श्री शुक्ला ने कहा कि आज की बैठक में उपस्थित अनेक उच्चाधिकारी भी है, जिनकी उपस्थिति हमारे लिए सम्मान की बात है।

विभिन्न कार्यालयों के विभागाध्यक्षों/प्रतिनिधियों द्वारा प्रस्तुत रिपोर्टें/सुझाव

काशी हिन्दी विश्वविद्यालय

5 से 10 प्रतिशत काम हिन्दी में होता है। हिन्दी अनुवादक/टाइपिस्ट नहीं हैं।

भारतीय जीवन बीमा निगम (वरिष्ठ मण्डल प्रबन्धक)

सुझाव हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए हम अपनी मानसिकता को ठीक करें तथा इसका प्रयोग निरन्तर बढ़ाने का प्रयास करें। हिन्दी को दूसरी श्रेणी की भाषा न समझें।

मण्डल कार्यालय यूको बैंक

लगभग 80 प्रतिशत से अधिक काम हिन्दी में हो रहा है। हमने सभी अनुभागों को निर्देश दे दिया है कि समस्त पत्राचार हिन्दी में करने का प्रयास करें।

भारतीय जीवन बीमा निगम मण्डल वाराणसी :—

हिन्दी में कार्य गौरव पूर्ण है। कड़े जांच बिन्दु हैं। उससे भी लक्ष्य प्राप्ति में बहुत मदद मिलती है।

कार्यालय का आंतरिक कामकाज 90% हिन्दी में होता है।

क्षेत्रीय प्रबन्धक बैंक ऑफ इण्डिया

हर दूसरे महीने हिन्दी के लक्ष्य की प्राप्ति के संबंध में एक बैठक करते हैं। इससे हम लोगों ने यह पाया कि सभी विभागों में हिन्दी का कामकाज बढ़ता जा रहा है।

केनरा बैंक

हिन्दी में अधिक से अधिक काम करने के लिए प्रयास करते हैं।

सैन्ट्रल बैंक (मुख्य शाखा)

हिन्दी में अधिक से अधिक काम करने का प्रयास जारी है। परन्तु एक भी टाइपिस्ट हिन्दी का न होने के कारण कठिनाई होती है।

बैंक ऑफ इण्डिया मुख्य शाखा

राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए निरन्तर प्रयासरत है।

बैंक ऑफ बड़ौदा मुख्य शाखा

भारतीय मूल के वे कर्मचारी जो विदेशों में रहते हैं उनसे भी पत्राचार हिन्दी में ही करते हैं। अगर किसी अवसर पर उन विदेशों में काम करने वालों को हिन्दी में पत्र भेजा तो उसका उत्तर भी उन लोगों ने हिन्दी में ही भेजा है। एक श्यामपट भी रखा हुआ है, जिसमें हम लोग प्रतिदिन एक तकनीकी शब्द लिखते हैं, जो अंग्रेजी का होता है और उसकी हिन्दी भी लिख देते हैं।

ओरिएण्टल बैंक ऑफ कामर्स

शाखाओं को जारी होने वाले सभी पत्र हिन्दी में ही जारी किए जाते हैं।

बैंक ऑफ महाराष्ट्र

सभी प्रकार के पत्राचार हिन्दी में ही करते है।

देना बैंक

लगभग सभी कार्य हिन्दी में ही हो रहे हैं।

केन्द्र निदेशक बुनकर सेवा केन्द्र

कुछ कठिनाइयों के कारण हम शत् प्रतिशत् का लक्ष्य नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं। आडिट पार्टी आई थी। उनकी रिपोर्ट अंग्रेजी में प्राप्त हुई। जिस पर हम लोगों ने उनसे निवेदन किया कि कृपया हिन्दी में ही रिपोर्ट दिया करें। 80% से अधिक कार्यालयीन कार्य हिन्दी में ही करते हैं।

पत्र सूचना कार्यालय भारत सरकार

शत् प्रतिशत् काम हिन्दी में ही हो रहे हैं।

हथकरघा प्रौद्योगिकी संस्थान

कुछ कठिनाइयों के कारण लगभग 40 प्रतिशत कार्य हिन्दी में हो रहे हैं। परन्तु प्रयास जारी है कि इसमें सुधार किया जा सके।

नेशनल इंश्योरेंस कं. मंडल कार्यालय

राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वे संगठन :— शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में ही हो रहा है। मुख्यालयों से हिंदी में पत्राचार कम होता है।

आकाशवाणी वाराणसी:—लगभग 96 प्रतिशत काम हिंदी में होता है।

दूरदर्शन, वाराणसी :—तकनीकी विभाग होने के कारण अंग्रेजी में कुछ काम होते हैं। कुछ ही कार्यों को छोड़कर शत्-प्रतिशत् काम हिंदी में ही कर रहे हैं।

केन्द्रीय जल आयोग :—सारा का सारा काम तकनीकी है, फिर भी हिन्दी में ही शत्-प्रतिशत् काम करते हैं।

यूनाइटेड इण्डिया इंश्योरेंस कं. :—लगभग 82 प्रतिशत काम हिन्दी में होता है। जांच बिन्दु भी बना हुआ है। हिन्दी में काम करने वाले को रु. 500/- का पुरस्कार भी दिया गया है।

उप मुख्य वाणिज्य अधीक्षक उत्तर रेलवे:—देश के किसी भी भाग से पत्र आए उनके उत्तर हिंदी में ही दिए जाएं।

उत्तर रेलवे, स्टेशन अधीक्षक:—अधिकांश कार्य हिंदी में ही होता है।

पूर्वोत्तर रेलवे मण्डल प्रबन्धक कार्यालय :—यह प्रयास करते हैं कि शत्-प्रतिशत् डिक्टेशन हिन्दी में ही दें। पत्राचार हिन्दी में ही करते हैं। अधिकारी लोग भी निरीक्षण की रिपोर्ट अधिकतर हिन्दी में ही देते हैं।

डी. रे. का. वाराणसी:—जो पत्र किसी कठिनाई के कारण हिन्दी में न जाकर अंग्रेजी में जाते थे, उसका समाधान निकाल लिया है। वह यह कि ऐसे पत्रों को अनुवादक द्वारा क्षेत्रानुसार अनुवाद करा कर हिंदी में भेजते हैं, जिससे कोई पत्र अंग्रेजी में न जा सके। हमने कम्प्यूटर में हिन्दी प्रयोग के लिए भी कुछ कार्य किया है। पुस्तकालय की पुस्तकों को भी कम्प्यूटर में इस ढंग से व्यवस्था की है कि हिन्दी प्रयोग को बढ़ावा मिले। निरीक्षण के लिए जाने वाले अधिकारियों को ऐसे प्रेरित करते हैं कि उनकी रिपोर्ट भी हिन्दी में ही प्राप्त हो सके।

यूनियन बैंक क्षेत्रीय कार्यालय:—कुछ काम अभी भी अंग्रेजी में हो जाता है। सभी बैठकों में हिंदी के प्रयोग की समीक्षा भी करते हैं।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग:—कुछ उल्लेखनीय नहीं बताया।

मण्डल कार्यालय-मुगलसराय (पूर्व रेलवे):—प्रायः कार्यालय से जाने वाले पत्रों को न चाहते हुए भी अंग्रेजी में भेजते हैं, क्योंकि मुख्यालय कलकत्ता में है। पत्राचार व धारा 3(3) के अन्तर्गत कागजों को शत-प्रतिशत हिन्दी में करने का प्रयास करते हैं। परन्तु कुछ कमी रह गई है।

डा कैलाश नाथ पाठक:—जो कर्मचारी या अधिकारी हिन्दी में प्रशिक्षण हेतु शेष रह गए हैं; उन्हें प्रशिक्षण प्राप्त कर लेना चाहिए।

उपनिदेशक (राजभाषा) श्री वर्मा :—जैसे-जैसे दण्ड की व्यवस्था अपराध रोकने के लिए होती जा रही है, वैसे ही अपराध भी बढ़ते जा रहे हैं। यद्यपि राजभाषा कार्यान्वयन में दण्ड नहीं दिया जाता है फिर भी प्रगति काफी अच्छी है। हमें खुशी है कि कुछ कार्यालय लक्ष्य के बहुत नजदीक पहुंच चुके हैं और कुछ पहुंच भी चुके हैं। सम्पर्क एवं सर्वेक्षण दल के सदस्यों को प्रशस्ति पत्र दिए गए।

सचिव श्री जगदीश नारायण राय ने बैठक संचालन में सदस्यों के सहयोग के लिए आधार व्यक्त किया और धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने सूचित किया कि आज की बैठक में 65-70 कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख प्रतिनिधियों सहित लगभग 130 लोगों ने भाग लिया।

□

पृष्ठ 30 का शेष

(7) केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा आयोजित की जाने वाली कार्यशालाओं में अधिक से अधिक संख्या में कर्मचारियों को हिन्दी प्रशिक्षण हेतु नामित करें।

(8) केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान के पाठ्यक्रमों का पुनरीक्षण किया जा रहा है। इसके लिए सुझाव यदि कोई हो तो, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान पर्यावरण भवन, सी.जी.ओ. काम्प्लेक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली को भेज सकते हैं।

(9) हिन्दी प्रशिक्षण के सम्बन्ध में आंकड़ों का ठीक-ठीक रिकार्ड रखा जाए और प्रशिक्षण के लिए शेष अधिकारियों/कर्मचारियों के सम्बन्ध में सही-सही जानकारी निर्धारित प्रोफार्मा में समय पर राजभाषा विभाग को भेजी जाए।

(10) केवल उन्हीं कर्मचारियों को प्रशिक्षण के लिए नामित किया जाए जो अनिवार्य रूप से प्रशिक्षण की कक्षाओं में भाग लें और प्रशिक्षण बीच में न छोड़ें।

(ङ) अन्य राजभाषा कार्यान्वयन समिति

1. क्षेत्रीय तसर अनुसंधान केन्द्र, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, इम्फाल (मणिपुर)

राजभाषा की 15वीं बैठक केन्द्र के संयुक्त निदेशक श्री एम. के. आर. नोमानी की अध्यक्षता में दिनांक 24-9-91 को की गई।

त्रैमासिक प्रगति की समीक्षा

संयोजक सदस्य ने पिछले त्रैमासिक में किए गए कार्य का विवरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि उक्त अवधि के दौरान हिन्दी में 152 पत्र प्राप्त हुए थे जिनमें से 112 पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया गया। शेष 40 पत्रों का उत्तर देना अपेक्षित नहीं था। इस अवधि के दौरान हिन्दी में जारी किए गए पत्रों की संख्या 259 थी।

पिछली बैठक में लिए गए निर्णय के संबंध में हुई प्रगति की समीक्षा :-

(क) ओक तसर बीजागार

गत अवधि के दौरान जारी 63 पत्रों में से 51 पत्र (80%) हिन्दी में जारी किए गए।

(ख) प्रजनन व आनुवंशिकी

गत अवधि के दौरान जारी 32 में से 12 पत्र (37.5%) हिन्दी में जारी किए गए।

(ग) जीव रसायन प्रयोगशाला

गत अवधि के दौरान 18 पत्रों में से 12 पत्र (66%) हिन्दी में भेजे गए।

(घ) शरीर क्रिया विज्ञान

गत अवधि के दौरान 25 पत्रों में से 12 पत्र (48%) हिन्दी में जारी किए गए।

(ङ) कीट व रोगनिदान

गत अवधि के दौरान 23 पत्रों में से 8 पत्र (34%) हिन्दी में जारी किए गए।

(क) धागाकरण व कताई

गत अवधि के दौरान 37 पत्रों में से 12 पत्र (32.4%) हिन्दी में जारी किए गए।

(छ) परपोषी पादप

गत अवधि के दौरान जारी 66 पत्रों में से 34 (51%) हिन्दी में भेजे गए।

वार्षिक कार्यक्रम का परिप्रेक्ष्य

वार्षिक कार्यक्रम के परिप्रेक्ष्य में व उनके विभिन्न/पहलुओं की समीक्षा की तथा अध्यक्ष ने "ग" क्षेत्र में सभी पत्रों को द्विभाषी रूप में भेजने का आग्रह किया। अधिकतर साधारण पत्र एवं परिपत्र को द्विभाषी रूप में भेजने का सुझाव दिया। श्री पी. एन. मिश्रा, व. प्र. अ. ने कहा कि भविष्य-निधि अन्तिम राशि के प्रावरण पत्रों को भी द्विभाषी रूप में भेजने के लिए सुझाव दिया। अध्यक्ष ने सभी अनुभाग अधिकारी, सहायक अधीक्षक एवं आशुलिपिक को सलाह दिया कि भविष्य में सभी पत्र द्विभाषी रूप में जारी करने हेतु हिन्दी अनुवादक के पास भेजे जाएं।

हिन्दी टंकण आशुलिपिक प्रशिक्षण :—

इस प्रशिक्षण के अन्तर्गत तीन कर्मचारी प्राज्ञ प्रशिक्षण पा रहे हैं। कार्यालय में अधिक कार्य एवं नि. श्रे. लि. स्टाफ की कमी होने के कारण इस सत्र में हिन्दी टंकण के लिए किसी कर्मचारी को नामांकित नहीं किया गया।

हिन्दी कार्यशाला

अध्यक्ष ने कहा कि हिन्दी कार्यशाला का आयोजन दिसम्बर के पूर्व करना चाहिए।

कार्यान्वयन में आने वाली कठिनाइयों की समीक्षा

हिन्दी अनुवादक ने कहा कि केन्द्र में हिन्दी के कार्यान्वयन में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

1. आशुलिपिक द्वारा जारी किए पत्रों को द्विभाषी रूप में अग्रेषित करने हेतु हिन्दी विभाग को भेजा जाए।
2. प्रेषण लिपिक द्वारा पत्र भेजने के पूर्व बिन्दु जांच बनाना चाहिए। ताकि अधिक से अधिक पत्र द्विभाषी रूप से जारी किए जा सकें।
3. सभी अनुभागों में 50% कार्य हिन्दी में होना चाहिए। "क" "ख" क्षेत्रों को भेजने वाले सारे पत्रादि हिन्दी अनुभाग द्वारा अग्रेषित कराना चाहिए।
4. हर रोज हिन्दी का एक शब्द सीखने का कार्यक्रम शुरू करना चाहिए ताकि अहिन्दी कर्मचारियों को हिन्दी शब्दावली का ज्ञान बढ़ सके।
5. लेखा खजांची अनुभाग के पत्रों को छोड़कर प्रशासनिक अनुभाग को जारी किए जाने के प्रावरण पत्र द्विभाषी रूप में भेजना चाहिए।

2. केन्द्रीय उत्पाद शुल्क समाहर्तालय नागपुर सिविल लाइन्स नागपुर-440001

तीसरी बैठक दिनांक 24-9-1991 को श्री कृष्णचन्द्र ममगांई समाहर्ता (केन्द्रीय उत्पाद शुल्क नागपुर) की अध्यक्षता में हुई। उन्होंने बैठक में सदस्यों की उपस्थिति के बारे में निदेश दिया कि अगली बैठक से मुख्यालय के सभी अनुभाग प्रभारी, सभी सहायक समाहर्ता एवं सभी उप समाहर्ता बैठक में भाग लेंगे। प्रभागीय कार्यालयों के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि नागपुर प्रभाग-I एवं II के सहायक समाहर्ता एवं प्रशासनिक अधिकारी दोनों भाग लेंगे। प्रशासनिक अधिकारी के छुट्टी आदि पर होने पर उनका चार्ज देखने वाला अधिकारी उनकी तरफ से बैठक में भाग लेगा। प्रभाग अमरावती एवं

चन्द्रपुर के बारे में उन्होंने निदेश दिया कि इन प्रभागों से सहायक समाहर्ता बैठक में भाग लेंगे और सहायक समाहर्ता के छुट्टी आदि पर होने पर उनके प्रशासनिक अधिकारी बैठक में भाग लेंगे ।

देवनागरी टाइपराइटरों के बारे में

समाहर्तालय में हिन्दी टाइपराइटरों की स्थिति निम्न रूप में हो गयी है, यथा:—

क्र.सं.	कार्यालय का नाम	टाइपराइटरों का विवरण			
		अंग्रेजी	हिन्दी	कुल	हिन्दी टाइपराइटरों का प्रतिशत
1.	मुख्यालय कार्यालय	32	12	44	28%
2.	प्रभाग-I नागपुर	7	5	12	42%
3.	प्रभाग-II नागपुर	6	3	9	33%
4.	प्रभाग अमरावती	7	4	11	36%
5.	प्रभाग चन्द्रपुर	4	2	6	33%
	कुल	56	26	82	32%

टाइपराइटरों के उपयोग पर प्रकाश डालते हुए अध्यक्ष ने निदेश दिया कि वे सभी प्रभाग अधिकारी एवं मुख्यालय के शाखा अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि दिए गए हिन्दी टाइपराइटर का उपयोग अवश्य हों ।

हिन्दी प्रशिक्षण के सम्बन्ध में

मुख्यालय प्रभाग I नागपुर में केवल 11 कर्मचारी प्रशिक्षण हेतु शेष थे जो सभी प्रशिक्षण ले रहे हैं । केवल चन्द्रपुर में 5 कर्मचारी ऐसे हैं जिन्हें प्रशिक्षण लेना है । प्राइवेट रूप से हिन्दी शिक्षण योजना की प्राज्ञ परीक्षा पास करने के लिए इन अधिकारियों को पत्र लिख दिया गया है ।

अध्यक्ष ने निदेश दिया कि यदि ये कर्मचारी प्राइवेट रूप से निर्धारित परीक्षा पास नहीं करते हैं तो उन्हें मुख्यालय में स्थानांतरित करके उनका प्रशिक्षण पूरा किया जाए ।

हिन्दी टाईपिंग प्रशिक्षण

हिन्दी टाईपिंग प्रशिक्षण के सम्बन्ध में सूचना समिति के समक्ष निम्न रूप में रखी गई :—

क्र.सं.	कार्यालय	कर्मचारियों की कुल संख्या	हिन्दी टाईपिंग में प्रशिक्षित	प्रशिक्षण के लिए	प्रशिक्षण के अधीन
1.	मुख्यालय	22	13	9	6
2.	प्रभाग I नागपुर	4	3	1	1
3.	प्रभाग II नागपुर	4	3	1	1
4.	अमरावती	3	—	3	—
5.	चन्द्रपुर	4	—	4	—
	कुल	37	19	18	8

अमरावती तथा चन्द्रपुर में कार्यरत कर्मचारियों के सम्बन्ध में अध्यक्ष ने निदेश दिया कि इन अधिकारियों से कहा जाए कि वे प्राइवेट रूप से प्रशिक्षण लेकर हिन्दी शिक्षण योजना की टाईपिंग परीक्षा पास कर लें ।

दिनांक 30-6-91 को समाप्त तिमाही प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा

हिन्दी पत्राचार

हिन्दी पत्राचार के सम्बन्ध में समाहर्तालय की स्थिति समिति के समक्ष निम्न रूप में रखी गई—

	"क" तथा "ख" क्षेत्र की राज्य सरकारों को भेजे गए पत्र	"क" तथा "ख" क्षेत्र के केन्द्रीय सरकारों को भेजे गए पत्र	"ग" क्षेत्र में स्थित कार्यालयों को भेजे गए पत्र
क. भेजे गए कुल पत्र	311	16642	126
ख. हिन्दी में भेजे गए पत्रों की संख्या	311	11500	61
ग. हिन्दी में पत्राचार का प्रतिशत	100	69	46
घ. निर्धारित लक्ष्य	100	60	30

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का अनुपालन

समाहर्तालय की स्थिति के समक्ष निम्न रूप में रखी गयी—

क. जारी कुल आदेश : 66

ख. द्विभाषी रूप में जारी : 66

ग. द्विभाषी रूप में जारी आदेशों का प्रतिशत : 100

धारा 3(3) के अनुपालन पर समिति ने संतोष व्यक्त किया

तार देवनागरी में

समाहर्तालय द्वारा भेजे गए तारों का विवरण समिति के समक्ष निम्न रूप में रखा गया, यथा:—

क. भेजे गए कुल तार	212
ख. हिन्दी में भेजे गए तारों की संख्या	30
ग. हिन्दी में भेजे गए तारों का प्रतिशत	15
घ. निर्धारित लक्ष्य	35

तारों को देवनागरी में जारी करने के संबंध में समाहर्तालय, की स्थिति पर अध्यक्ष ने असंतोष व्यक्त किया तथा जानना चाहा कि पिछली बैठक में इस संबंध में लिए गए महत्त्वपूर्ण निर्णय कि "तार देवनागरी में ही भेजे जाएंगे" के

अलावा प्रगति आशाजनक नहीं है तो इसका क्या कारण है। अध्यक्ष को बताया गया कि समीक्षा 30 जून 1991 को समाप्त अवधि के लिए है इसी कारण प्रगति इस रिपोर्ट में परिलक्षित नहीं हो पाई है। सितम्बर 91 को समाप्त अवधि की रिपोर्ट के परिणाम अवश्य आशाजनक होंगे। प्रशासनिक अधिकारी (मुख्या) ने बताया कि तार केवल हिन्दी में ही भेजे जा रहे हैं।

हिन्दी कार्यशाला

समिति को सूचित किया गया कि हिन्दी सप्ताह आयोजन आदि के कारण सितम्बर 91 में समाप्त तिमाही में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन नहीं किया जा सका। अध्यक्ष ने निदेश दिया कि मुख्यालय प्रभाग I नागपुर तथा प्रभाग-II नागपुर के सभी शाखा प्रभारियों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन मुख्यालय में किया जाए। कार्यशाला का आयोजन करते समय कृपया यह ध्यान में रखा जाए कि तकनीकी कार्य से सम्बन्धित अधिकारियों को एक कार्यशाला के अन्तर्गत रखा जाए तथा प्रशासनिक कार्य से सम्बन्धित अधिकारियों को दूसरी कार्यशाला में रखा जाए।

राजभाषा हिन्दी के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने वाले वृत्तचित्र

अध्यक्ष ने निदेश दिया कि ये वृत्तचित्र प्राप्त कर लिए जाएं एवं समाहर्तालय में इनको प्रदर्शन किया जाए, और इस तरह आवश्यक फिल्म को खरीद लिया जाए।

कार्यालयों का निरीक्षण

अध्यक्ष ने निदेश दिया कि आवधिक निरीक्षण होना चाहिए। प्रत्येक तिमाही में कम से कम 2 कार्यालयों का निरीक्षण अवश्य किया जाए।

राजभाषा सम्बन्धी आदेशों के कार्यान्वयन हेतु जांच बिन्दु

समिति को सूचित किया गया कि पिछली बैठक में लिये गये निर्णय के अनुसार जांच बिन्दु कार्य कर रहे हैं जहां तक इस सम्बन्ध में एक विस्तृत आदेश की जरूरत है उसे जल्द ही जारी कर दिया जाएगा।

निरीक्षण महानिदेशालय नई दिल्ली के दिनांक 6-9-91 के पत्र फाइल संख्या 4031/26/91 पर चर्चा

समिति को सूचित किया गया कि निरीक्षण महानिदेशालय के उपरोक्त पत्र के अन्तर्गत समाहर्तालय की हिन्दी प्रगामी प्रयोग के सम्बन्धित दिनांक 30-9-91 को समाप्त रिपोर्ट की समीक्षा प्राप्त हुई है। इस समीक्षा में कुछ कमियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो निम्न रूप में है :—

हिन्दी में काम करने के लिये अनुभाग शाखाओं को विनिर्दिष्ट करने सम्बन्ध में

निर्णय किया गया कि मुख्यालय की स्थापना शाखा-I, स्थापना शाखा-II, प्रशासन शाखा एवं सांख्यिकी शाखा को विनिर्दिष्ट करने के सम्बन्ध में आवश्यक कार्रवाई की जाए।

नकद पुरस्कार योजना के सम्बन्ध में :—

इस विषय पर चर्चा करने के बाद अध्यक्ष ने कहा कि वे अपने अधीन कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों को इस योजना में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करें। कम से कम 10 कर्मचारियों को तो इस योजना में भाग लेना ही चाहिए क्योंकि उन सभी को पुरस्कार दिया जा सकता है।

अध्यक्ष की अनुमति से अन्य विषय

इस मद के अन्तर्गत सुझाव प्रस्तुत करते हुए प्रभाग 1 नागपुर के सहायक समाहर्ता श्री भिखूराम ने कहा कि कार्यालयीन स्तर पर भी पुरस्कार की व्यवस्था होनी चाहिए जिसे हिन्दी सप्ताह के आयोजन के अवसर पर दिया जाए। इस प्रस्ताव का स्वागत किया गया तथा यह निर्णय लिया गया कि मुख्यालय और सभी मंडल कार्यालयों के स्तर पर एक पुरस्कार अगले वर्ष से रखा जाए।

भुगतान एवं लेखा अधिकारी के अनुभाग में हिन्दी कार्य बढ़ाने के सम्बन्ध में यह सुझाव दिया गया कि चेकों को हिन्दी में जारी किया जा सकता है। इस सम्बन्ध में आगे चर्चा करते हुए अध्यक्ष ने कहा कि सहायक समाहर्ताओं की बैठक के कार्यवृत्त भी हिन्दी में जारी किये जा सकते हैं तथा नियम 56-बी के अन्तर्गत अनुमति एवं भंडारण से सम्बन्धित पत्र व्यवहार हिन्दी में किए जा सकते हैं। जहां तक न्याय निर्णयन आदेशों की बात है ड्राप किए गए मामलों के न्याय-निर्णयन आदेश हिन्दी में जारी किए जा सकते हैं।

3 निदेशक अनुरक्षण (लेखा) पश्चिम दूरसंचार क्षेत्र केन्द्र तारघर परिसर नागपुर–440001

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की पन्द्रहवीं बैठक दि. 26-11-91 मंगलवार को निदेशक (अनुरक्षण) के कक्ष में हुई। बताया गया कि :—

1. वर्ष 1991-92 हेतु किताबों का चयन हो चुका है तथा अध्यक्ष की सूचनानुसार इसकी जल्द ही खरीद की जाएगी।

2. कार्यालय में करीब 50 प्रतिशत कार्यालयीन कामकाज हिन्दी में हो रहा है तथा अध्यक्ष के निदेशानुसार सभी को सूचित करा कर ज्यादा से ज्यादा कामकाज हिन्दी में ही कराने हेतु सभी को सूचित किया गया।

3. रोजमर्रा काम में आने वाले स्मरण-पत्र/पावती-पत्र आदि का स्टेन्सिल निकाल कर सभी मंडल/सहायक अभियंता को प्रतियां दी जा रही है।

4. हिन्दी अनुवादक/हिन्दी टंकक का औचित्य महाप्रबन्धक कार्यालय द्वारा निदेशालय को प्रेषित किया गया है तथा इसकी मंजूरी मिलने पर हिन्दी में कार्य को बढ़ावा मिलेगा।

6. अध्यक्ष ने निदेश दिया कि जिन्होंने अपना प्राज्ञ का प्रशिक्षण पूरा किया है वे अपना कार्यालयीन कामकाज हिन्दी में ही करें।

7 इस वर्ष भी हिन्दी सप्ताह का आयोजन उत्साहपूर्वक किया गया।

4. इलाहाबाद केन्द्रीय परिमण्डल केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 15वीं बैठक

बैठक का आयोजन श्री आर.पी. भारद्वाज, अधीक्षक इन्जीनियर, की अध्यक्षता में दि० 4-11-91 को किया गया।

सदस्य सचिव ने परिमण्डल/मण्डल एवं अधीनस्थ उप-मण्डलों में हो रहे राजभाषा कार्यों की प्रगति की जानकारी दी जो निम्नवत है :—

क्रमांक	कार्यालय	3/91	6/91	9/91
1.	इलाहाबाद केंद्रीय परिमंडल	91%	91%	91.07%
2.	इलाहाबाद केंद्रीय मंडल	87%	72%	73.48%
3.	लखनऊ केंद्रीय मण्डल	92.30%	89%	90.40%
4.	कानपुर केंद्रीय मण्डल	76%	80.60%	76.30%

(1) सर्वप्रथम परिमंडल कार्यालय के प्रगति की समीक्षा की गई। समिति ने परिमंडल कार्यालय की उक्त प्रगति पर सन्तोष व्यक्त किया। अध्यक्ष ने इस पर व्यवस्था दी कि हमारा यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि हम प्रगति को बनाये रखें तथा हर स्तर पर कोशिश करें कि शीघ्र ही लक्ष्य की प्राप्ति की जा सके। अध्यक्ष महोदय ने बड़ी प्रसन्नचित्त मुद्रा में कहा कि यह हम सभी के प्रयासों का ही प्रतिफल है कि निर्माण महानिदेशक और मुख्य इन्जीनियर ने हमें प्रशस्ति पत्र दिया है, अतः यह हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम अपनी कठोर परिश्रम एवं लगन का परिचय देते हुए उसे सदैव अर्जित करते रहें और ऐसा कीर्तिमान स्थापित करें जिसे अखिल भारतीय स्तर पर सराहा जाता रहे।

(2) सदस्य सचिव ने इलाहाबाद केन्द्रीय मण्डल एवं उसके अधीनस्थ उप-मंडलों की प्रगति का ब्यौरा समिति के सम्मुख रखा। यह पाया गया कि 12/90 में इनकी प्रगति 91% 3/91 में 87% व 6/91 में 72.40% तथा 9/91 में मात्र 73.48% रही जबकि बी.एच.यू. केन्द्रीय उप-मंडल प्रथम एवं द्वितीय 12/90 से 9/91 तक 100% एवं अन्य उप-मंडलों की प्रगति 95% से 99% के बीच रही। इस प्रकार यह बात साफ-साफ जाहिर हुई कि मण्डल की स्वयं की प्रगति असंतोषजनक है। अध्यक्ष ने इसे गम्भीरता से लेते हुए कार्यपालक इन्जीनियर को निर्देश दिया कि वे 12/91 तक इसे हर हालत में 90% तक पहुंचाएं और यदि ऐसा नहीं किया गया तो राजभाषा नियम 1976 की धारा 12 के अन्तर्गत दायित्वों में उदासीनता बरतने के कारण उनके खिलाफ आवश्यक कार्यवाही की जाएगी। अध्यक्ष ने यह भी कहा कि यदि उनका अधीनस्थ कर्मचारी राजभाषा नियमों के प्रति उदासीनता बरतता है तो उन्हें लिखित रूप में अवगत कराएं।

(3) लखनऊ केन्द्रीय मण्डल की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया गया। अध्यक्ष ने कार्यपालक इन्जीनियर को सलाह दी कि वे अपने पूर्व कीर्तिमान को स्थापित करें तथा 12/91 तक अपनी प्रगति 94% तक पहुंचाएं।

(4) सदस्य सचिव ने कानपुर केन्द्रीय मण्डल तथा अधीनस्थ उप-मंडलों की प्रगति से समिति को अवगत कराया। अध्यक्ष ने उप-मंडल-4 को छोड़कर सभी की प्रगति पर अपना असंतोष व्यक्त किया। अध्यक्ष ने इस बात पर दुःख व्यक्त किया कि 9/91 में मण्डल की प्रगति का लक्ष्य 90% निर्धारित गया किया था, जिसके परिणाम-स्वरूप बजाय प्रगति बढ़ाने के 4.30% कम हो गई। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि कार्यपालक इन्जीनियर अपने दायित्वों के प्रति उदासीन हैं और उन्होंने राजभाषा नियम 1976 की धारा 12 का स्पष्ट उल्लंघन किया है।

(6) हिन्दी आशुलिपि एवं टंकण प्रशिक्षण

सदस्य सचिव ने बताया कि विभिन्न मण्डलों में अभी भी बहुत से कर्मचारी हिन्दी आशुलिपि एवं टंकण प्रशिक्षण के लिए शेष बचे हुए हैं, जबकि राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार मार्च "92 तक सभी को प्रशिक्षित करा लेना आवश्यक है। इस पर अध्यक्ष ने व्यवस्था दी कि कार्यपालक इन्जीनियर अपने कार्यालय के बचे कर्मचारियों को शीघ्र प्रशिक्षित कराने की व्यवस्था करें जिससे कि राजभाषा नियमों का समुचित पालन सुनिश्चित किया जा सके।

(7) धारा-3(3) का अनुपालन

सदस्य सचिव ने निर्माण महानिदेशक के नवीनतम आदेश की ओर आकर्षित करते हुए बताया कि अभी भी मण्डलों में कार्यालय आदेश, करार, निविदा आमंत्रण सूचनाएं इत्यादि द्विभाषी रूप में जारी नहीं की जाती हैं, जिससे उक्त धारा का उल्लंघन हो रहा है, जिसे गम्भीरता से परिचालित कराने का आदेश निर्माण महानिदेशक ने दिया है।

5. पंजाब नेशनल बैंक अंचल कार्यालय, भोपाल

अंचल कार्यालय भोपाल की सितम्बर-दिसम्बर, 91 की तिमाही की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 03-12-91 को अंचल कार्यालय में की गई।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के पूर्व विशिष्ट अतिथि श्री जितेन्द्र नाथ कौल सचिव (राजभाषा) को अंचल कार्यालय, भोपाल में लगाई गई राजभाषा प्रदर्शनी का अवलोकन कराया गया। प्रदर्शनी में प्रधान कार्यालय एवं मध्यप्रदेश अंचल द्वारा हिन्दी में तैयार एवं प्रकाशित की गई पुस्तकें पत्रिकाएं एवं अन्य पाठ्यसामग्री के अलावा पीएनबी अवंतिका--प्रारम्भ से आज तक अंचल कार्यालय के विभिन्न अनुभागों में दैनिक प्रयोग में लाई जाने वाली हिन्दी सामग्री के नमूने, मध्यप्रदेश अंचल द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में प्राप्त विभिन्न शील्डें, ट्राफियां, प्रमाण-पत्र, छायाचित्रों के माध्यम से मध्यप्रदेश अंचल में राजभाषा के विभिन्न क्रियाकलापों, अंचल प्रशिक्षण केन्द्र में तैयार की गई विभिन्न प्रकार की हिन्दी सामग्री एवं ट्रांसपरेंसी तथा हिन्दी से सम्बद्ध अन्य कई प्रकार की सामग्री का प्रदर्शन किया गया था। सचिव (राजभाषा) ने प्रदर्शनी के अवलोकन के पश्चात अंचल में राजभाषा की प्रगति की सराहना की।

सचिव महोदय ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि अध्यक्ष तथा मित्र लोगों का मैं आभारी हूं कि आप लोगों के बीच में मुझे राजभाषा सम्बन्धी चर्चा करनी मिल रही है। जहां तक राजभाषा हिन्दी का सवाल है हमारे देश में 2 प्रतिशत लोग ही अंग्रेजी जानते हैं तथा अधिकांश जनता हिन्दी को जानती है। सर्वप्रथम भारत सरकार की यह मान्यता है कि हम अपनी प्रेरणा द्वारा राजभाषा हिन्दी का प्रचार कर सकते हैं तथा हमें ऐसा कोई कदम नहीं उठाना चाहिए जिससे लोगों को यह महसूस हो कि हिन्दी भाषा अच्छी नहीं है। जहां तक मेरा सवाल है मेरा मानना है कि बैंकों में इसकी उपेक्षा नहीं की जा रही है बल्कि हिन्दी में काम को बकों में भी काफी हद तक प्रोत्साहित किया जा रहा है। अगर हम भारत के एक कोने से दूसरे कोने में पहुंचे तो सम्पर्क सूत्र के रूप में हिन्दी हमें बहुत ही सहयोग प्रदान करने वाली भाषा महसूस होगी। मैंने अपने अनुभव में यह पाया है कि कई लोग इसे स्वाभिमान समझते हैं कि विदेशों में यात्रा के दौरान अपनी राजभाषा हिन्दी को प्रयोग न करते हुए अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं। दूसरे लोग समझते हैं कि इनकी अपनी कोई भाषा नहीं है। अगर हम भारत के दक्षिण से उत्तर में जाएं या पूर्व से पश्चिम में जाएं सभी दूर हम हिन्दी का प्रयोग अंग्रेजी के स्थान पर करें तो लोग समझ जाएंगे। इसी कारण देश में मुख्य भाषा हिन्दी को ही मान्यता दी है।

इसके पश्चात् क्षेत्रीय कार्यालयों से प्राप्त हिन्दी प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा करने पर सर्वसम्मति से निम्नलिखित निर्णय लिए गए :--

--हिन्दी में पत्राचार में और अधिक वृद्धि की जाए।
--राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का पूर्णतया अनुपालन सुनिश्चित किया जाए।
--हिन्दी टंकण यंत्रों, टंककों एवं आशुलिपिकों के लिए निर्धारित प्रतिशत को शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त किया जाए।
--हिन्दी कार्यशालाओं के लिए निर्धारित लक्ष्य की फरवरी, 92 से पूर्व प्राप्ति कर ली जाए।
--अंचल कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में कर्मचारियों का सेवा रिकार्ड पूरी तरह से हिन्दी में रखा जाए।
--प्रशासनिक कार्यालयों में प्रयुक्त होने वाले रजिस्टर हिन्दी में भरे जाएं।
--कार्यालयों में प्राप्त होने वाले एवं वहां से भेजे जाने वाले हिन्दी एवं अंग्रेजी पत्रों का रिकार्ड रखा जाए।
--राजभाषा अधिकारियों द्वारा शाखा निरीक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाए।
--घोषित हिन्दी जिलों में स्थित हिन्दी शाखाओं में हिन्दी कार्य में किसी प्रकार की कमी न आने दी जाए।

अन्त में सचिव महोदय के आगामी कार्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए एवं अध्यक्ष की अनुमति लेने के पश्चात् श्री पी.एन.वी. पाई ने सचिव महोदय एवं अन्य अतिथियों के प्रति विशेष रूप से आभार प्रकट करते हुए कहा कि बैंक में आपके आगमन एवं इस बैठक में आपकी उपस्थिति से हमें बहुत अधिक प्रेरणा मिली है। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि मध्यप्रदेश अंचल अपना सम्पूर्ण काम हिन्दी में करने के लिये कृत संकल्प है।

6. केन्द्रीय उत्पाद शुल्क समाहर्तालय कानपुर

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क समाहर्तालय कानपुर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन दिनांक 29-11-91 में श्रीमती निशा मल्होत्रा, "समाहर्ता" की अध्यक्षता में किया गया।

अध्यक्ष ने उप कार्यालय अधीक्षिका (स्था.) को निर्देश दिया कि कानपुर मण्डल में एक हिन्दी टाइपिस्ट नियुक्त करने की कार्रवाई की जाए इसी प्रकार जिस अनुभाग में हिन्दी टाइपिस्ट तैनात नहीं है वहां सामान्य रूप से एक हिन्दी टाइपिस्ट नियुक्त किया जाएं।

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अन्तर्गत जारी पत्रों की समीक्षा:-

अध्यक्ष ने अनुभाग अधिकारियों/मण्डलीय सहा. समाहर्ताओं से राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत जारी किए गए पत्रों के बारे में चर्चा की, कुछ

अनुभागों द्वारा सामान्य आदेश तथा व्यापार सूचनाएं अंग्रेजी में जारी की गई थीं। उन्होंने कहा कि स्थापना अनुभाग तथा सभी मण्डल कार्यालयों से धारा 3 (3) के अन्तर्गत जारी होने वाले पत्र अनिवार्य रूप से हिन्दी अथवा द्विभाषी में जारी किया जाना चाहिएं। उन्होंने इस सम्बन्ध में उपकार्यालय अधीक्षिका (स्था.) को निर्देश दिया कि समान्य आदेश या अन्य दस्तावेज यथासंभव हिन्दी में अथवा द्विभाषी ही जारी किए जाएं। यदि आवश्यक हो तो अंग्रेजी पत्रों का अनुवाद राजभाषा अनुभाग से प्राप्त कर लें। सभी आदेशों की प्रतियां हिन्दी अनुभाग को अग्रता के आधार पर उपलब्ध करायी जाएं। उन्होंने सचिव को यह निर्देश दिया कि अगर अनुभागों तथा मण्डलों से प्राप्त रिपोर्टों के आंकड़ों से राजभाषा नियमों का उल्लंघन सिद्ध होता है तो कड़ी कार्रवाई की जाये और अगली बैठक में सभी अनुभागों/मण्डलों की हिन्दी प्रगति की स्थिति पिछली तीन तिमाहियों से तुलनात्मक रूप से प्रदर्शित की जाए।

समाहर्ता ने सहायक निदेशक राजभाषा को निर्देश दिया कि मण्डल से यदि तिमाही प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा करके उन सभी अधिकारियों को अर्ध शासकीय पत्र लिखे जायें जिनके कार्यालयों में निर्धारित लक्ष्य के अनुसार हिन्दी का कार्य नहीं हो रहा है।

प्रत्येक तिमाहीं में हिन्दी कार्यक्रम किये जाने का निर्णय

समाहर्ता ने यह सुनिश्चित किया कि प्रत्येक तिमाही में हिंदी वरण के लिए हिन्दी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए। उसमें होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताएं बांटकर त्रैमासिक आधार पर की जाएं तथा कर्मचारियों को पुरस्कृत किया जाए।

उन्होंने कहा कि प्रत्येक अनुभाग से हिन्दी में काम करने के इच्छुक कर्मचारियों को पूरा मौका दिया जाए; उनसे अनुभाग का कार्य हिन्दी में करने का विकल्प लिया जाए। तथा जिम्मेदारी निर्धारित कर दी जाए। नवीनतम कर्मचारियों को हिन्दी की प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करने के लिये खास पुरस्कार दिये जाएं। इसी प्रकार मण्डलों में भी कार्यक्रम किए जाएं।

समाहर्ता ने आदेश दिया कि जनवरी 1992 के प्रथम सप्ताह में हिन्दी में अभिभाषण प्रतियोगिता, लेखन प्रतियोगिता तथा लघु काव्य गोष्ठी आदि का आयोजन किया जाए। उन्होंने कहा कि कोई अधिकारी या कर्मचारी अपनी रचना सुनाना चाहता है या कविता लिखता है तो उसे सूचना पटल पर लगाया जा सकता है। इस प्रकार रचनाएं भी एकत्र की जा सकती हैं। सहायक समाहर्ता (प्रशासन) ने सूचना पट्ट का प्रयोग बुलेटिन बोर्ड के रूप में करने की सलाह दी।

समाहर्ता ने हिन्दी न जानने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए अलग से प्रतियोगिता एवं पुरस्कार वितरण करने का आदेश दिया।

7. कार्यालय सहायक समाहर्ता केन्द्रीय उत्पाद शुल्क प्रभाग 1, इन्दौर

राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रभाग 1, इन्दौर, की त्रैमासिक बैठक 30-9-91 को श्री ओमप्रकाश दधीच, सहायक समाहर्ता, की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

बैठक में सर्वप्रथम पिछली बैठक के कार्यवृत्त को पढ़ा गया तथा अध्यक्ष महोदय ने समस्त अधिकारियों से आग्रह किया कि हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को और अधिक बढ़ाया जाए।

तत्पश्चात् 30-6-91 को समाप्त तिमाही अवधि एवं माह जुलाई 1991 व अगस्त 1991, की मासिक जानकारी का अवलोकन किया गया।

	30-6-91	31-7-91	31-8-91
हिन्दी में जारी पत्र	3853	1235	1276
अंग्रेजी में जारी पत्र	401	151	205
हिन्दी पत्रों का प्रतिशत	90.5	89%	86%

तार

30-6-91	31-7-91	31-8-91
13	—	—
—	—	4
100	—	—

अगस्त में हिन्दी के प्रयोग का प्रतिशत कम हो गया है अध्यक्ष महोदय ने प्रतिशत के कम होने पर अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए हिन्दी में कार्य करने पर बल दिया।

प्रभागीय कार्यालय में हिन्दी पुस्तकें एवं सहायक साहित्य खरीदने की आवश्यकता पर विचार-विमर्श किया गया। इस संबंध में आगामी बैठक में विचार करके पुस्तकें खरीदी जाएंगी।

8. आकाशवाणी, जोधपुर

दिनांक 09-10-91 को श्री विनोद कुमार अग्रवाल अधीक्षण अभियन्ता की अध्यक्षता में हुई।

तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा

1. तिमाही रपट के अनुसार "क" और "ख" क्षेत्रों के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र की सरकारों, उनके कार्यालयों या

गैर सरकारी व्यक्तियों को 100% पत्र हिन्दी में भेजे गए।

2. "क" तथा "ख" क्षेत्रों में स्थित केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों के साथ 49% पत्राचार हिन्दी में हुआ।

3. "ग" क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के साथ 62/% पत्राचार हिन्दी में हुआ।

4. केन्द्र से 48% तार हिन्दी में भेजे गए जो लक्ष्य से कहीं अधिक हैं।

5. पत्र सूचना कार्यालय, जोधपुर का इस तिमाही का 100/ पत्राचार हिन्दी में हुआ।

6. गीत एवं नाटक प्रभाग, जोधपुर की रिपोर्ट के अनुसार 100% पत्राचार हिन्दी में हुआ।

7. क्षेत्रीय प्रचार कार्यालय का इस तिमाही का 100% पत्राचार हिन्दी में हुआ।

8. अधीक्षण अभियन्ता श्री विनोद कुमार अग्रवाल ने कहा कि अधिकाधिक तार हिन्दी में ही भेजे जाएं।

9. सभी सदस्यों ने इसके लिए अपनी सहमति प्रकट की कि आकाशवाणी केन्द्र द्वारा हिन्दी सप्ताह के उपलक्ष्य में आयोजित प्रतियोगिताओं सूचना एवं प्रशारण मंत्रालय से संबद्ध अन्य कार्यालयों को भी शामिल किया जाना चाहिए।

10. पत्र सूचना कार्यालय के सूचना सहायक श्री लाल मीणा ने सुझाव दिया कि सांत्वना पुरस्कार के रूप में हिन्दी साहित्य की पुस्तकें ही दी जाएं।

11. सदस्यों ने यह भी सुझाव दिया कि प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले कर्मचारियों एवं अधिकारियों को ज्यादा से ज्यादा काम हिन्दी में ही करना चहिए।

9. केनारा बैंक

राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उत्तर बंबई अंचल कार्यालय

राजभाषा कार्यन्वियन समिति की प्रथम बैठक दिनांक 9-9-91 को उप महा प्रबन्धक श्री बी.ए. प्रभु की अध्यक्षता में क्षेकप्रम बम्बई में की गई।

अध्यक्ष ने पी. वी. सी. स्टिकर के प्रारूप की प्रशंसा की तथा बताया कि अंचल कार्यालय का नया गठन होने के कारण अभी अंचल कार्यालय से पी वी सी स्टिकर जारी किया जाना संभव नहीं है।

इस स्टिकर के प्रारूप को प्रधान कार्यालय को इस अनुरोध के साथ अग्रेषित किया जाए कि इसकी अपेक्षित प्रतियां तैयार कराकर अंचल तथा अन्य अंचलों को भेज दें।

प्रधान कार्यालय के मार्गदर्शियों के अनुरुप राजभाषा कक्ष हेतु अपेक्षित न्यूतम स्टाफ की व्यवस्था

अध्यक्ष महोदय ने सूचित किया कि अंचल कार्यालय का नया गठन होने के कारण अधिकांश अनुभागों में स्टाफ अभाव की समस्या है। भविष्य में स्टाफ की व्यवस्था होने पर विचार किया जायेगा।

अंचल कार्यालय के अनुभागों को हिन्दी टाइपराइटर उपलब्ध कराना

समिति ने निर्णय लिया कि अंचल कार्यालय हेतु एक इलेक्ट्रोनिक नेटवर्क द्विभाषिक टाइपराइटर तथा कृ.वि. एवं प्रा.क्षे. अनुभाग हेतु एक साधारण देवनागरी टाइपराइटर खरीदा जाए जिस पर आ.नि.नि. अनुभाग एवं प्रोगेमन एवं संसाधन अनुभाग भी हिन्दी टंकण कार्य किया जायगा। साथ ही अंचल कार्यालय के विभिन्न अनुभागों में कार्यरत हिन्दी टंकण प्रशिक्षित सभी टाइपिस्ट अपने-अपने अनुभाग का हिन्दी टंकण कार्य कर्मचारी अनुभाग (कार्यकार) तथा कर्मचारी अनुभाग (अधिकारी) में उपलब्ध साधारण देवनागरी टाइपराइटर पर करेंगे।

अध्यक्ष ने सुझाव दिया कि हिन्दी में पत्राचार बढ़ाने की संभावनाएं हेतु राजभाषा अधिकारी सप्ताह में दो बार डाक कक्ष में जाकर साइक्लोस्टाइल्ड फार्मों/पत्रों आदि के प्रारूपों की अवलोकन करके आवश्यकतानुसार उनके हिन्दी अनुवाद की व्यवस्था करें।

कर्मचारी अनुभाग (अधिकारी) के वरिष्ठ प्रबंधक श्री बी. के. भट्ट ने सूचित किया कि उनके अनुभाग से सभी वेतन सूचनाएं/वेतन वृद्धि सूचनाएं/प्रशिक्षण कार्रवाई हिन्दी आदि में ही भेजी जाएंगी।

10. भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, लखनऊ

राजभाषा कार्यान्वियन समिति के सचिव श्री वाजपेयी ने पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों के अनुपालन संबंधी विवरण देते हुए बताया कि हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा स्थानीय 9 शाखाओं में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग सम्बन्धी कार्य का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान पाई गई अनियमितताओं का विवरण उन्होंने समिति के समक्ष रखते हुए बताया :—

1. उपस्थिति पंजिका में नाम तो हिन्दी में लिखे जाते हैं परन्तु अधिकतर कर्मचारी हस्ताक्षर अंग्रेजी में करते हैं।

2. हिन्दी में प्रशिक्षित अथवा अप्रशिक्षित कर्मचारियों का रोस्टर नहीं बनाया गया है।

3. अधिकतर शाखाओं में राजभाषा कार्यान्वियन उप समिति का गठन तो हुआ है परन्तु उसकी नियमित तिमाही बैठकें आयोजित नहीं की जाती हैं। परिणाम-स्वरूप कार्यवृत्त हिन्दी प्रकोष्ठ को प्रेषित नहीं किये जाते हैं।

4. लगभग सभी शाखाओं में अधिकतर चेकें तथा वाउचर अंग्रेजी में तैयार किए जाते हैं।

5. अधिकृत हस्ताक्षरकर्ताओं के हस्ताक्षर अंग्रेजी में हैं।

6. अधिकतर शाखाओं में हिन्दी तथा अंग्रेजी के पत्रों के लिए अलग-अलग आवक-जावक पंजिका नहीं रखी जाती है।

7. मासिक तथा त्रैमासिक प्रतिवेदन नियमित रूप से नहीं भेजे जाते हैं। रिपोर्ट के आंकड़े भी तथ्य-परक प्रतीत नहीं होते हैं।

8. मंडल कार्यालय के निर्देश के बावजूद शाखाओं में हिन्दी के कार्य के लिए किसी को नामित नहीं किया गया है।

अत: श्री बाजपेयी ने यह भी बताया कि मंडल कार्यालय के 6 विभागों की जांच पश्चात् पत्र लिखकर हिन्दी प्रकोष्ठ ने विभागों में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग सम्बन्धी कार्य में व्याप्त अनियमितताओं की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया है। आलोच्य अवधि में श्री माहर सिंह वर्मा, उपनिदेशक (राजभाषा विभाग—उत्तरी क्षेत्र), भारत सरकार ने मंडल में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग सम्बन्धी कामकाज का दि. 20-8-91 को निरीक्षण किया। श्री बाजपेयी ने श्री माहर सिंह वर्मा की आपत्तियों एवं रा.का. सम्बन्धी अनियमितताओं का विवरण तथा 16 व 17 अगस्त को मध्य क्षेत्र के राजभाषा अधिकारियों के कानपुर में हुए सम्मेलन के निर्णयों को भी समिति के समक्ष प्रस्तुत किया। 14 सितम्बर, 1991 को हुए हिन्दी दिवस समारोह की कार्यवाही का विवरण समिति को दिया।

हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को आगे बढ़ाने की दिशा में 1991 के वार्षिक कार्यक्रमानुसार 70 प्रतिशत टंकण मशीनें, टंकक व आशुलिपिक हिन्दी के ही हों इस संबंध में सुझाव देते हुए श्री ए. के. सिन्हा, प्रबन्धक (वेतन एवंत योजना विभाग) ने कहा कि विभागों तथा शाखाओं से अंग्रेजी की सभी टंकण मशीनें वापस ले ली जायं।

अध्यक्ष श्री एस.के. सक्सेना (विपणन प्रबंधक) ने सुझाव दिया कि समस्त शाखाओं से अनुरोध किया जाए कि उन बीमाधारकों के लिए जो अपने प्रस्ताव हिन्दी में भरते हैं उनको पालिसी व पत्र आदि हिन्दी में ही जारी किए जाया करें। सचिव श्री बाजपेयी की इस रिपोर्ट पर कि क्षेत्र.का. द्वारा भेजे गये रजिस्टरों के अनुसार तथ्य-परक आंकड़ों से युक्त मासिक व तिमाही रिपोर्ट शा.का. व विभाग समय से नहीं भेजते हैं न उत्तर ही देते हैं अध्यक्ष महोदय ने कहा कि जो विभाग व शाखा कार्यालय यह न करें उन्हें उनकी ओर से लिखा जाए।

श्री जितेन्द्र स्वरूप भटनागर (उच्च श्रेणी सहायक) ने सूचित किया कि जिला शाखा कार्यालय, लखनऊ में कौश बुक हिन्दी में लिखी जाती है जिसकी सभी सदस्यों ने प्रशंसा की। उन्होंने जानना चाहा कि गत वर्ष यह निर्णय लिया गया था कि प्रत्येक विभाग में कम से कम एक डिक्टेशन प्रतिदिन हिन्दी में आशुलिपि को अवश्य दिया जाए, इस दिशा में क्या प्रगति हुई है। श्री बाजपेयी ने उन्हें बताया कि इस दिशा में कोई विशेष प्रगति नहीं हुई। श्री भटनागर ने सुझाव दिया कि नई टंकण मशीनें खरीदते समय यह ध्यान रखा जाय कि अधिकाधिक मशीनें हिन्दी की ही भविष्य में क्रय की जाएं।

श्री एस.पी. जौहरी, प्रबंधक (दावा विभाग) ने सुझाव दिया कि विभिन्न विभागों द्वारा जो तार भेजे जाते हैं, उनमें जो हिन्दी भाषा में न हों, उन्हें कार्यालय सेवा विभाग सम्बन्धित विभाग को वापस कर दें।

श्री एस.के. सक्सेना ने सचिव श्री बाजपेयी द्वारा उप समितियों हेतु अनुरोध करने पर कहा कि सभी शाखाओं को निर्देश दिए जायं कि राजभाषा कार्यान्वयन उपसमितियों का गठन तुरन्त किया जाए, उपसमितियों की तिमाही नियमित बैठकों को आयोजित किया जाए तथा उनके कार्यवृत्त मंडल कार्यालय के हिन्दी प्रकोष्ठ को शीघ्र ही भेजा जाया करें। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि समिति की बैठक तिमाही के दूसरे माह की बीस तारीख तक अवश्य कर ली जाया करे। श्री सक्सेना ने कहा कि हिन्दी प्रकोष्ठ अन्य शाखाओं का भी निरीक्षण करे। कार्यशाला के आयोजन के संबंध में उन्होंने निर्णय दिया कि शाखाओं में हिन्दी के कार्य को देखने के लिए नामित व्यक्तियों की एक दिन की कार्यशाला आयोजित की जाये तो उचित होगा।

11. इफ्को

इफ्को की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 37वीं बैठक 4 सितम्बर, 1991 को हुई। बैठक की अध्यक्षता महाप्रबंधक (आंवला), श्री एस पी गुप्ता ने की।

31 मार्च और 30 जून, 1991 को समाप्त तिमाहियों में हुई प्रगति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। राजभाषा विभाग के निदेशक ने कहा कि इस तिमाही में काम बढ़ने की बजाय कम ही हुआ है। उन्होंने कहा कि पिछली बार मूल पत्राचार 48 प्रतिशत था जो घटकर 43 प्रतिशत रह गया है। उन्होंने इफ्को द्वारा आशुलिपिकों और टंककों को प्रशिक्षण देने के लिए कोई समयबद्ध कार्यक्रम तैयार न किए जाने पर आपत्ति की। उन्होंने स्पष्ट किया कि राजभाषा विभाग नेहरू प्लेस में इस प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध कराने में असमर्थ है, इसलिए इफ्को को अपने प्रयासों से ही कर्मचारियों को प्रशिक्षण देना होगा। उन्होंने सुझाव दिया कि हमें अपने कार्यालय में या कर्मचारियों को कार्यालय समय से एक घंटा पूर्व जाकर निजी प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त करने की अनुमति देकर यह कार्य शीघ्र पूरा करना चाहिए। इस मद पर काफी देर चर्चा करने के पश्चात् यह निर्णय हुआ कि इफ्को 30 जून, 1942 तक 10 टंककों और 5 आशुलिपिकों को प्रशिक्षण उपलब्ध कराएगी और 10 रोमन टाइपराइटरों को हिन्दी टाइपराइटरों में बदला जाएगा।

हिन्दी में मूल पत्राचार के बारे में चर्चा करते हुए यह पाया गया कि इस तिमाही में शेयर अनुभाग, सहकारिता

संपर्क विभाग व विपणन प्रभाग द्वारा हिन्दी में अपेक्षाकृत कम पत्र जारी किए गए हैं जिसका हिंदी पत्राचार की प्रतिशतता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। यह निर्णय किया गया है कि अगली बैठक में इन विभागों के प्रतिनिधियों को बैठक में बुलाया जाए। तथापि, अगली बैठक तक प्रतीक्षा न करके हिंदी अनुभाग को अथवा समिति द्वारा स्थापित किसी उप-समिति को प्रतिबद्ध विभागों का निरीक्षण करके प्रगति की समीक्षा करनी चाहिए। यह भी सुझाव प्राप्त हुआ कि इन विभागों के प्रतिनिधियों को अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के कमरे में बुलाकर यह पूछा जाए कि उन्हें हिंदी में काम करने में क्या कठिनाइयां हैं और यदि कोई है तो उन्हें दूर किया जाए। निदेशक, (राजभाषा) का कहना था कि निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के उपाय करना हिंदी अनुभाग का मूल दायित्व है। यह निर्णय हुआ कि समय-समय पर विभागीय निरीक्षण किया जाए और जहां कहीं हिंदी में काम नहीं हो रहा हो उसकी सूचना अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति/महाप्रबन्धक (का. व प्र.) को दी जाए।

संयंत्रों में तिमाही प्रगति रिपोर्ट पर चर्चा करते हुए यह देखा गया कि कलोल संयंत्र में हिंदी में काम बहुत कम हो रहा है और फूलपुर संयंत्र में जो हिन्दी में काम में गिरावट आ रही है। फूलपुर संयंत्र द्वारा तिमाही के दौरान जारी समस्त 203 तार केवल अंग्रेजी में जारी किए गए जिन पर निदेशक (राजभाषा) में असंतोष व्यक्त किया। सभी संयंत्रों में हिन्दी आशुलिपिकों की कमी पर विचार किया गया और निर्णय किया गया कि ऐसा हल ढूंढा जाए जिससे यहां कम से कम 1–1 हिंदी जानने वाले आशुलिपिक हों, जो अन्य आशुलिपिकों को प्रशिक्षण दें। उस आशुलिपिक को मानदेय दिया जाए। कांडला संयंत्र द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की गई।

मंडल कार्यालयों में तिमाही प्रगति रिपोर्ट पर चर्चा करते हुए निदेशक (राजभाषा) ने कहा कि मंडल कार्यालय भोपाल और लखनऊ दोनों में हिंदी में प्रयोग की स्थिति अच्छी नहीं है और इस बारे में कड़े कदम उठाने आवश्यक हैं। उन्होंने कहा कि भोपाल में 30 प्रतिशत और लखनऊ में 59 प्रतिशत पत्र व्यवहार हिंदी में हो रहा है जबकि यहां समस्त कार्य हिंदी में ही होना चाहिए। उन्होंने कहा कि दोनों कार्यालयों में टाइपराइटर भी निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप नहीं हैं और आशुलिपिक भी पर्याप्त संख्या में नहीं हैं। इस दिशा में कार्यवाई की जानी चाहिए।

हिंदी सप्ताह 16 से 21 सितम्बर

हिन्दी सप्ताह के कार्यक्रम पर विचार हुआ। निदेशक (राजभाषा) ने सुझाव दिया कि इसमें हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता लागू की जाए और इस सप्ताह के दौरान जिस अनुभाग में सबसे अधिक काम हिंदी में हो उसके विभागाध्यक्ष को सम्मानित किया जाए और पुरस्कृत किया जाए।

करार आदि द्विभाषी रूप में निष्पादित करना। लिविदा दस्तावेज, सभी प्रकार के टेंडर फार्म, द्विभाषी रूप में जारी करना।

इस बारे में हुई प्रगति से समिति को अवगत कराया गया।

कांडला इकाई द्वारा प्रस्तुत हिंदी टाइपिंग सत्ता योजना पर आगे विचार

सदस्य सचिव ने हिंदी टिप्पण-आलेखन योजना और आशुलिपि और टंकण प्रोत्साहन योजना के संबंध में सामने आ रही कठिनाईयां बताई। उन्होंने बताया कि टिप्पण-आलेखन प्रतियोगिता में पिछले कई वर्षों से वही नाम सामने आ रहे हैं और वहीं बार-बार पुरस्कार प्राप्त कर रहे हैं जिससे बाकी लोग हतोत्साहित हो रहे हैं। इसी प्रकार कांडला और फूलपुर इकाई में हिंदी टाइपिंग जानने वालों की संख्या अधिक होने की वजह से भी कठिनाई आ रही है। निदेशक, राजभाषा ने कहा कि राजभाषा विभाग द्वारा परिचालित दोनों योजनाएं मार्गदर्शी योजनाएं हैं और इनको अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप उनमें परिवर्तन करने, नई योजनाएं बनाने के लिए स्वयं सक्षम है। इस विषय पर संयंत्रों के परामर्श से नई योजना पर विचार किया जाए।

कंप्यूटर में हिंदी का प्रयोग

वरिष्ठ प्रबंधक (सिस्टम्स) ने समिति को बताया कि अभी तक आयोजित कम्प्यूटरों में मेन फ्रेम वर्क में हिन्दी के प्रयोग के बारे में अनुसंधान चल रहा है। परन्तु कोई परिणाम सामने नहीं आया है। उन्होंने कहा कि यदि कोई ऐसी प्रणाली विकसित की गई है तो इफको उसे खरीद लेगी। वरिष्ठ प्रबंधक महोदय ने बताया कि उन्होंने सम्बद्ध एजेंसी को आमंत्रित किया हुआ है और उसे कहा है कि यहां आकर अपनी प्रणाली का प्रदर्शन करे। निदेशक (राजभाषा) ने कहा कि इस संबंध में प्रो. ओम विकास, इलैक्ट्रोनिकी विभाग और श्री विजय कुमार मल्होत्रा, निदेशक (राजभाषा) (रेलवे बोर्ड) को भी आमंत्रित किया जा सकता है क्योंकि वे दोनों अधिकारी भी कम्प्यूटर में तकनीकी ज्ञान और कम्प्यूटर में हिन्दी के प्रयोग के बारे में विशेषज्ञ हैं। सुझाव पर सहमति व्यक्त की गई।

1. सदस्य सचिव ने निदेशक (राजभाषा) को दूरसंचार विभाग, चण्डीगढ़ द्वारा भेजे गये पत्र की प्रति देते हुए उनसे आगे उचित कार्रवाई करने का अनुरोध किया।

2. निदेशक (राजभाषा) ने लखनऊ कार्यशाला के दौरान प्राप्त अनुभव का हवाला देते हुए कहा कि उनके अनुसार राज्य कार्यालय, लखनऊ में हिंदी कार्य नहीं हो रहा है। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि हमें अपने "जोनल ऑफिस" को आंचलिक कार्यालय लिखना चाहिए, न कि "मंडल कार्यालय"। महाप्रबन्धक (का. व प्र.) ने कहा कि ऐसा किया जाए और यह परिवर्तन सभी जगह एक साथ किया जाए।

राजभाषा सम्मेलन/संगोष्ठियां

नेशनल मिनरल डेवलपमेन्ट कॉर्पोरेशन लिमिटेड हैदराबाद

एन. एम. डी. सी. में अखिल भारतीय राजभाषा व्यावसायिक सेमिनार

नेशनल मिनरल्स डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड के मुख्यालय, हैदराबाद में दिनांक 21-10-91 को "सरकारी उपक्रमों में प्रबन्धन" विषय पर हिन्दी में अखिल भारतीय राजभाषा व्यावसायिक सेमिनार का उदघाटन करते हुए निगम के अध्यक्ष और प्रबन्ध निदेशक, श्री प्रेमचन्द गुप्ता ने राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखते हुए कार्यालय के रोजमर्रा के काम में हिन्दी के प्रयोग पर बल दिया। उन्होंने उपस्थित समुदाय को प्रशासनिक क्षेत्रों में ही नहीं, तकनीकी एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में भी निगम द्वारा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के प्रयासों की जानकारी दी। उनका विचार था कि कर्मचारी हिन्दी में पत्र लिखने का प्रयास करें और हिन्दी के माध्यम से पत्राचार को बढ़ावा दें। उन्होंने सुझाव दिया कि इस कार्य में राजभाषा विभाग से सहायता ली जाए। वे यह भी चाहते थे कि हिन्दी का प्रसार प्रोत्साहन द्वारा हो, बल द्वारा नहीं।

श्री सालिग्राम सिंह, निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं राजभाषा विभागाध्यक्ष ने उपस्थित समुदाय का स्वागत किया और निगम में हिन्दी के प्रयोग का संक्षिप्त ब्यौरा भी दिया। इस्पात मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति के भूतपूर्व सदस्य, श्री जी. राममूर्ति जी इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। उन्होंने तेलुगू और हिन्दी को बहुत नजदीक बताया। सेमिनार में विशिष्ट अतिथि, श्री चिरंजीव सिंह, अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक स्पंज आयरन इंडिया लिमिटेड, हैदराबाद ने कहा कि उन्हें तो अपनी मातृभाषा से भी अधिक आसान हिन्दी लगती है।

उद्घाटन समारोह के पश्चात् व्यावसायिक व सेमिनार देश के अनेक हिस्सों से उपस्थित अपने संगठन के अतिरिक्त मेकन, रांची; एच.एस.सी. एल., कलकत्ता आदि से पधारे अधिकारियों ने उत्पादन और उत्पादकता; अनुरक्षण, समस्याएं और समाधान; सरकारी उपक्रमों का निष्पादन मूल्यांकन; मानव संसाधन विकास प्रक्रिया, सामग्री प्रबन्धन आदि विषयों पर आलेख पढ़े और उन पर गंभीर चर्चा हुई। आलेखों की लम्बी सूची के कारण इन्हें तीन सत्रों में आयोजित किया गया। सेमिनार में समग्र रूप से समुचित प्रबन्धकीय निपुणता के विकास से कार्य निष्पादन में सुधार लाकर उत्पादन और उत्पादकता में सुधार के उपायों पर विचार किया गया।

इस अवसर पर भव्य राजभाषा प्रदर्शनी लगाई गई। वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, श्री गोवर्धन ठाकुर ने धन्यवाद दिया।

केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, तिरुअनंतपुरम्

दि. 19 सितंबर 1991 को आयोजित राजभाषा विचार-गोष्ठी में अंचल कार्यालय के समस्त कार्यपालकों/वरिष्ठ प्रबंधकों/प्रबंधकों/अधिकारियों ने भाग लिया। श्री आर.एस.एल. प्रभु, मंडल प्रबंधक, राजभाषा अनुभाग, प्र. का., बेंगलूर गोष्ठी के लिए विशेष रूप से आमंत्रित थे।

कार्यक्रम का प्रारंभ सहायक महाप्रबंधक श्री बी. गणपति के स्वागत भाषण से हुआ। श्री गणपति ने राजभाषा के क्षेत्र में श्री आर. एस. एल. प्रभु की सेवाओं और बैंक की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए उनका विचार गोष्ठी में हार्दिक स्वागत किया। श्री बी. आर. प्रभु, उपमहाप्रबंधक सहित अन्य उपस्थित अधिकारीगण का स्वागत करते हुए उन्होंने आशा व्यक्त की कि गोष्ठी से राजभाषा नीति संबंधी महत्त्वपूर्ण पहलुओं की जानकारी मिलेगी, उन्होंने यह भी अनुरोध किया कि राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में आने वाली समस्याओं आदि के निवारण के लिए अधिकारीगण अपने-अपने संदेह प्रकट करें तथा प्रभावी कार्यान्वयन में अपने महत्त्वपूर्ण योगदान दें।

चर्चा प्रारंभ करते हुए श्री आर. एस. एच. प्रभु ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बाद बैंकों में उत्पन्न राजभाषा स्थिति पर प्रकाश डाला। इसी परिप्रेक्ष्य में उन्होंने संक्षेप में केनरा बैंक की उपलब्धियों की भी चर्चा की। राजभाषा अधिनियम 1963 एवं राजभाषा नियम 1976 के विभिन्न महत्त्वपूर्ण कानूनी उपबंधों की जानकारी देते हुए उन्होंने अधिकारियों को उनके दायित्व का बोध कराया।

तिरुअनंतपुरम् अंचल के कार्य-निष्पादन की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि "वर्ष 1990 के लिए "केनरा बैंक राज-

भाषा अक्षय योजना" के अंतर्गत इस अंचल को "ग" क्षेत्र का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार प्राप्त हुआ है। अतः इस कीर्ति को बनाए रखने के लिए आपका दायित्व और बढ़ जाता है" । उन्होंने उन सभी क्षेत्रों का भी ब्यौरा दिया जहां-जहां अंचल को अपने कार्यनिष्पादन में सुधार लाने की आवश्यकता है ।

राजभाषा अधिकारी डॉ सोहन लाल ने आश्वासन दिया कि गोष्ठी से उभरे विभिन्न सुझावों और मार्गदर्शन के आलोक में प्रभावी कार्यान्वयन के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी । उन्होंने उपस्थित अपील की कि वे इस अनुष्ठान में हर संभव सहयोग प्रदान करें ताकि अंचल के साथ-साथ बैंक की कीर्ति में भी श्रीवृद्धि हो ।

प्राप्त फीड बैक के आधार पर अधिकारियों ने कार्यक्रम को अत्यंत उपयोगी बताया और कहा कि शाखा स्तर पर इस दिशा में अधिक जागरूकता लाने के उद्देश्य से समय-समय पर ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन होना चाहिए तथा शाखाओं में कार्यरत अधिकारियों को भी इसमें शामिल किया जाना चाहिए । अधिकारियों के उत्साह और जिज्ञासा ने आयोजन के महत्त्व को अधिक सार्थक बना दिया ।

डा० बालशौरि रेड्डी का आंध्र विश्वविद्यालय में भव्य सम्मान

दक्षिण के सुविख्यात हिन्दी साहित्यकार और भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता के निदेशक डा. बालशौरि रेड्डी के विशिष्ट व्यक्तित्व एवं कृतित्व के लिए दि. 8 नवंबर, 1991 को आंध्र विश्वविद्यालय की ओर से मनोविज्ञान विभाग के सेमीनार हाल में भव्य सम्मान का आयोजन किया गया । सम्मान-समारोह के अध्यक्ष एवं स्थापक हिन्दी विभागाध्यक्ष आचार्य जी. सुंदर रेड्डी ने डा. बालशौरि रेड्डी के सृजनात्मक मूल्यों की व्याख्या करते हुए कहा--- साहित्यकार का हृदय सागर जैसा विशाल एवं गंभीर होना चाहिए, बुद्धि आसमान के समान उन्नत होनी चाहिए, तभी उस रचनाकार की कृतियां सर्वमन रंजित एवं प्रभावित कर सकती हैं । डा. रेड्डी किसी विश्वविद्यालय या संस्था के आश्रय न लेकर विगत 40 वर्षों से हिन्दी में स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य कर रहे हैं। डॉ. रेड्डी के अब तक 60 ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। डा. रेड्डी एक बहुमुख-प्रतिभाशाली लेखक हैं । वे एक साथ सफल उपन्यासकार, पत्रिका के संपादक, अनुवादक और आलोचक भी हैं। आपने 12 हिन्दी उपन्यास लिखे । ध्यान देने की बात यह है कि डा. रेड्डी के 'शबरी', 'जिंदगी की राह', 'भग्न सीमाएं', 'यह बस्ती ये लोग', 'लकुमा' आदि उपन्यास अत्यंत लोकप्रिय हुए हैं । उनकी अनेक रचनाओं को राष्ट्र के विभिन्न राज्य एवं केन्द्र सरकारों की ओर से अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए हैं ।

समारोह में डा. पी. वी. नरसा रेड्डी कृत हिन्दी संकलन 'भविष्य' को, जिसे डा. बालशौरि रेड्डी को समर्पित कियान है, विशाखापट्टणम के नगर प्रमुख श्री गंगि रेड्डी ने विमोचन किया । बाद में श्री गंगि रेड्डी ने डा. बालशौरि रेड्डी को शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया । आंध्र विश्वविद्यालय के कार्यनिर्वाहक सदस्य डा. के. सी. रेड्डी ने डा. बालशौरि रेड्डी को विश्वविद्यालय की तरफ से प्रतीक प्रदान किया । आंध्र विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डा. पी. वी. एस. रामाराव ने डा. रेड्डी को साहित्यिक-सेवाओं की प्रशंसा की ।

डा. बालशौरि रेड्डी ने अपने धन्यवाद वक्तव्य में कहा--- विश्व की भाषाओं में तेलुगु का अपना विशिष्ट स्थान है । तेलुगु साहित्य में ऐसे अनोखे ग्रंथ हैं जिनके बारे में पाश्चात्य विद्वानों ने भी आश्चर्य प्रकट किया है। पालगुम्मि पद्मराजु कृत 'तूफान' कहानी विश्व-कहानी प्रतियोगिता में अत्युत्तम स्थान प्राप्त किया है । चिलकमूर्ति लक्ष्मीनरसिंहम् का पौराणिक नाटक 'गयोपाख्यानम्' इतना जनरंजक हुआ है कि जिसकी हजारों प्रतियां बिक गई हैं। नन्नया, तिक्कना, गोन बुद्धा रेड्डी आदि ऐसे महान कवि पैदा हुए हैं जिनकी प्रतिभा से तेलुगु भाषा और साहित्य का सौरभ दूर-दूर तक व्याप्त हुआ है। अंत में डा. रेड्डी ने जापानवासियों की राष्ट्रीय-भावना की प्रशंसा करते हुए कहा---राष्ट्र-प्रेम, अनुशासन, परिश्रम और भाईचारे की भावना के बिना हम भारतवासी कभी प्रगति प्राप्त नहीं कर सकेंगे ।

इस समारोह का प्रारंभ करते हुए हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डा. लक्ष्मीप्रसाद ने डा. बालशौरि रेड्डी की हिन्दी प्रचार एवं प्रसार संबंधी सेवाओं का परिचय दिया है । अंत में डा. सीतालक्ष्मी ने डा. बालशौरि रेड्डी तथा सभी उपस्थित विद्वानों को धन्यवाद दिया ।

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, भोपाल

10-01-1992 को भोपाल में हुए संघ की राजभाषा के क्षेत्रीय सम्मेलन

संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग के प्रति सकारात्मक कार्य-वातावरण बनाने के उद्देश्य से दिनांक 10-01-1992 को भोपाल स्थित रवीन्द्र भवन में गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) द्वारा एक क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया । मध्य प्रदेश शासन के स्थानीय शासन एवं जनसम्पर्क मंत्री माननीय श्री बाबूलालजी गौर इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे । मुख्य आयकर आयुक्त, मध्य प्रदेश प्रभार, भोपाल एवं पदेन अध्यक्ष, भोपाल नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति श्री एस. आर. वधवा ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। भारत सरकार, राजभाषा विभाग की ओर से श्री भगवान दास पटैरया, उपसचिव (कार्यान्वयन) विशेष रूप से उपस्थित थे । मध्य क्षेत्र अर्थात् राजस्थान एवं मध्यप्रदेश स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, निगमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों, निकायों आदि के लगभग 500 वरिष्ठ अधिकारियों/प्रतिनिधियों ने सम्मेलन में भाग लिया ।

सम्मेलन का शुभारंभ स्वागत एवं अध्यक्षीय सम्बोधन

मुख्य अतिथि ने दीप प्रज्ज्वलित करके सम्मेलन का शुभारंभ किया। राजभाषा विभाग के उप सचिव श्री भगवान दास पटैरया ने सम्मेलन में उपस्थित प्रतिनिधियों का स्वागत किया।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए भोपाल नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री एस. आर. बघवा ने कहा कि केन्द्रीय सरकार की राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रति इस क्षेत्र की जनता का लगाव एवं इस क्षेत्र में कार्य कर रहे केन्द्रीय कर्मियों का सहयोग हम सबको इस बात की प्रेरणा प्रदान करता है कि हम "क" क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने से संबंधित, सरकार द्वारा निर्धारित विभिन्न लक्ष्य प्राप्त करें। उन्होंने यह भी कहा कि भोपाल स्थित केन्द्रीय सरकारी संगठनों में कुल मिलाकर लगभग 90 प्रतिशत कार्य हिन्दी में होने लगा है। श्री बघवा ने सभी वरिष्ठ अधिकारियों से अनुरोध किया कि वे सम्मेलन से प्रेरणा लेकर हिन्दी में स्वयं तो कार्य करें ही साथ ही, अपने अधिकारियों और कर्मचारियों को भी इस दिशा में प्रेरित करें।

पुरस्कार वितरण

मुख्य अतिथि श्री बाबूलालजी गौर ने मध्य प्रदेश एवं राजस्थान में गठित 17 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों में से 4 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को वर्ष 1989-90 के दौरान उत्कृष्ट कार्य-निष्पादन के लिए उन्हें राजभाषा ट्रॉफी देकर पुरस्कृत किया। इसके अलावा उक्त राज्यों के 14 केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों, राष्ट्रीयकृत बैंकों तथा केन्द्रीय सरकारी उपक्रमों को भी ट्रॉफी प्रदान कर पुरस्कृत किया गया। पुरस्कृत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के सदस्य सचिवों की और पुरस्कृत संगठनों के हिन्दी अधिकारियों को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि के उद्गार :

श्री बाबूलालजी गौर, स्थानीय शासन एवं जनसम्पर्क मंत्री (मध्य प्रदेश शासन) ने अपने अनुभवों का जिक्र करते हुए समूची जीवनचर्या हिन्दीमय बनाने का आह्वान किया। उनका मानना था कि उधार का सोच लेकर कोई देश अपना विकास नहीं कर सकता, इसीलिए हर उन्नत देश की अपनी भाषा होती है। मंत्री महोदय ने आगे कहा कि समूची कार्य संस्कृति का सोच और दर्शन जब अपनी जमीन में पलता-बढ़ता है तब ही वास्तविक अर्थों में खुशहाली आती है, इसीलिए यह स्वयं सिद्ध है कि भारत के अधिकांश भू-भाग में बोली समझी जाने वाली हिन्दी के माध्यम से ही हम अपनी समस्याओं को समझ सकते हैं और उनका निराकरण कर पाते हैं।

मंत्री महोदय ने पुरस्कार पाने वाले सभी अधिकारियों को बधाई दी।

आभार प्रदर्शन

सेण्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया के भोपाल स्थित अंचल कार्यालय के उप महाप्रबंधक एवं भोपाल बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री वी. ए. होथा ने मुख्य अतिथि तथा सम्मेलन में पधारे सभी प्रतिनिधियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

समापन

सामूहिक राष्ट्रगान के बाद सम्मेलन समाप्त हुआ।

कार्यकारी सत्र

अपराह्न में कार्यकारी सत्र का शुभारंभ हुआ। सम्मेलन से एक दिन पूर्व अर्थात् दिनांक 09-01-1992 को राजस्थान एवं मध्य प्रदेश स्थित केन्द्रीय सरकारी संगठनों के हिन्दी अधिकारियों की एक संगोष्ठी श्री भगवान दास पटैरया उप सचिव (कार्यान्वयन) भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की अध्यक्षता में तथा श्री वी. ए. होथा, अध्यक्ष, बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की उपस्थिति में हुई थी। उक्त संगोष्ठी में तथा दिनांक 10-01-1992 के सम्मेलन के कार्यकारी सत्र में अनेक अधिकारियों ने अपनी-अपनी समस्याएं तथा सुझाव रखे। उक्त अवसरों पर प्रस्तुत समस्याओं का समाधान उप सचिव (कार्यान्वयन) राजभाषा विभाग ने प्रस्तुत किया।

क्षेत्र राजभाषा सम्मेलन भोपाल में पुरस्कृत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों एवं केन्द्रीय सरकारी संगठनों की सूची

पुरस्कृत नगर समितियां

(1) बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर	प्रथम
(2) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति देवास	द्वितीय
(3) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जबलपुर	तृतीय
(4) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रतलाम	प्रोत्साहन

पुरस्कृत केन्द्रीय सरकारी कार्यालय

(1) कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) प्रथम, ग्वालियर	प्रथम
(2) कार्यालय महालेखागार (लेखा व हकदारी) द्वितीय, ग्वालियर	द्वितीय
(3) कार्यालय मण्डल रेल प्रबंधक, मध्य रेलवे जबलपुर	तृतीय
(4) आकाशवाणी, इन्दौर	प्रोत्साहन

सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम

(1) इस्को उज्जैन पाइप एण्ड फाउन्ड्री लिमिटेड, उज्जैन — प्रथम

(2) नेशनल टैक्सटाईल कॉर्पोरेशन (म.प्र.) लिमिटेड, इन्दौर — द्वितीय

(3) हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, जावर माइन्स, उदयपुर — तृतीय

राष्ट्रीयकृत बैंक

(1) यूनियन बैंक आफ इण्डिया, क्षेत्रीय कार्यालय, रीवा — प्रथम

(2) बैंक आफ इण्डिया, अंचल कार्यालय, भोपाल — द्वितीय

(3) सेण्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर — तृतीय

संविधान अपनाए जाने की स्मृति में आकाशवाणी भोपाल द्वारा आयोजित संगोष्ठी

संविधान और राजभाषा

दुनिया के सबसे बड़े लिखित संविधान "भारतीय संविधान" को 26 नवम्बर 1949 को अपनाया गया था और इसे पूर्ण रूप से 26 जनवरी 1950 से लागू किया गया। 26 नवम्बर 1949 को संविधान की प्रस्तावना में कहा गया कि "हम भारत के लोग भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनाने तथा इसके सब नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार रखने तथा प्रकट करने, विश्वास, धर्म और पूजा की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा व अवसर की समता प्राप्त कराने, तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करने वाली बन्धुता को बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर 1949 को इस संविधान को अपनाते है।"

इसी स्मृति में आकाशवाणी भोपाल राजभाषा समिति द्वारा संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय था "संविधान और राजभाषा"। आकाशवाणी भोपाल राजभाषा समिति के अध्यक्ष व केन्द्र निदेशक श्री एल.डी. मंढलोई ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की। मध्य प्रदेश और राजस्थान प्रान्तों के लिए भारत सरकार के क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन कार्यालय भोपाल में विभागाध्यक्ष एवं उपनिदेशक राजभाषा श्री चन्द्र गोपाल शर्मा विशिष्ट वक्ता थे। संगोष्ठी का संचालन आकाशवाणी भोपाल राजभाषा समिति के सदस्य-सचिव श्री खगेश्वर प्रसाद यादव हिन्दी अधिकारी ने किया। दूरदर्शन के सहायक केन्द्र निदेशक सर्वश्री बलदेव सिंह कलसी तथा गुरुनपति शर्मा, पत्रकार श्री ब्रजेश राजपूत, आकाशवाणी भोपाल के सर्वश्री इकबाल मजीद, हसन खान, सीताक्षी मिश्र डॉ. रमेशचन्द्र शुक्ल, बद्रीनारायण गोस्वामी, जी.के. वीहान, राजीव श्रीवास्तव, डॉ. सुरेश यादव तथा भारतीय भाषा समिति भोपाल के अध्यक्ष श्री प्रियअभिषेक, माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के श्री अवनीश सोमकुवर ने संगोष्ठी में भाग लिया।

परिवहन एवं डीजल संगठन में हिंदी तकनीकी संगोष्ठी

परिवहन एवं डीजल संगठन तथा राजभाषा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 26 एवं 27 नवम्बर, 91 को "स्पेस" नामक तकनीकी सेमिनार का आयोजन हुआ।

उद्घाटन करते हुए मुख्य अधीक्षक श्री एस.के. गुप्ता ने तकनीकी सेमिनारों के महत्व पर प्रकाश डाला। "स्पेस" की व्याख्या करते हुए प्रशिक्षण अभियंता श्री ए.के. गुहा ने कहा कि सुरक्षा के साथ उचित लागत नियंत्रण एवं ऊर्जा प्रबंधन द्वारा हम वार्षिक निष्पादन योजना के अनुरूप उत्पादकता कैसे करें — इस तकनीकी सेमिनार में इसके विभिन्न पहलुओं पर चर्चा होगी।

वार्षिक निष्पादन योजना पर श्री र.कु. प्रसाद, उप प्रबंधक; विभागीय तकनीकी अर्थशास्त्रीय विषय पर श्री एस.एल. पाटीदार, औद्योगिक सुरक्षा पर श्री एस.के. द्विवेदी, प्रबंधक (सुरक्षा); प्रभावी नेतृत्व एवं टीम निर्माण पर श्री एच० के० सरन, प्रबंधक (लोको); ऊर्जा प्रबंधन पर श्री बोस मजूमदार; लागत नियंत्रण एवं अपशिष्ट (वेस्ट) में कटौती पर श्री आर.के. सिंह, मुख्य अधीक्षक (लागत नियंत्रण); व्यवसायजनित बीमारियां एवं स्वास्थ्य को जोखिम विषय पर डा. बेहरा, प्रभारी वरिष्ठ विशेषज्ञ; उत्पादकता संकल्पना एवं संसाधनों का इष्टतम उपयोग पर श्री अमीर अली तथा "प्रभावी संप्रेषण" विषय पर श्री एस.के. गुप्ता, मुख्य अधीक्षक (वैगन एवं लोको) ने संगोष्ठी/सेमिनार में भाग ले रहे समस्त कार्मिकों के साथ गहन विचार-विमर्श करते हुए उनकी विभिन्न शंकाओं का समाधान किया।

समापन एवं फीड बैक सत्र में कार्मिकों ने कहा कि राजभाषा में संपन्न संगोष्ठी से हम बहुत कुछ नया सीखकर जा रहे हैं जिसके द्वारा हमारे कार्य निष्पादन में निश्चित सुखद बदलाव आएगा तथा हम अपने साथी कार्मिकों को भी इन पहलुओं के बारे में जानकारी देते हुए संयंत्र की लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रेरित करेंगे।

राजभाषा विभाग से डॉ. गिरीश जी. सिंबल ने रचनात्मक सक्रिय भाग लिया। श्री ए.के. गुहा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ दो-दिवसीय सेमिनार संपन्न हुआ।

नगर समन्वय समिति, बी० 12/200 गोदौलिया, भलपुरा

केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् वाराणसी की नगर समन्वयन समिति का 11 वां वार्षिक अधिवेशन दिनांक 17-12-91 को मुख्य वाणिज्य अधीक्षक श्री जगतपाल की अध्यक्षता में हुआ ।

इस अवसर पर आयोजित राजभाषा गोष्ठी में निर्धारित विषय "हिन्दी और राज समाज" का विषय प्रवेश कराते हुए मंत्री श्री राय ने कहा कि जहां तक राजसमाज के लोगों पर अंग्रेजी की बैशाखी अनिवार्य है, वहां तक कोई बात नहीं है, किन्तु जहां पर अंग्रेजी अनिवार्य नहीं है वहां पर भी हम राजसमाज के लोग अपने को अपाहिज बना लेते हैं और अनावश्यक रूप से अंग्रेजी (बैशाखी) का प्रयोग करते हैं ।

पूर्वोत्तर रेलवे के जनसम्पर्क अधिकारी श्री ब्रम्हानन्द सिंह ने विचार व्यक्त किया कि हिन्दी को भी जब तक पूरी तरह रोजी रोटी के साथ नहीं जोड़ा जायेगा तब तक उसकी उपेक्षा होती रहेगी । उन्होंने कहा कि हिन्दी जोड़ने का कार्य करती है, तोड़ने का नहीं । उन्होंने बताया कि जब तक हिन्दी को अनुवाद की बैशाखी पर चला जायेगा तब तक उसका स्वरूप नहीं बिखरेगा । उन्होंने स्पष्ट किया कि बातों/समाचारों को मूल रूप से हिन्दी में लिखा जाए ।

मुख्य अतिथि समाजवादी विचारक डा. गौरी शंकर दूबे उपाचार्य (गांधी विद्या संस्थान) ने कहा कि अंग्रेजी, उपभोक्ता वादी संस्कृति एवं वर्गीय स्वार्थ के कारण चलाई जा रही है और अज्ञानतावश शोषण की उस भाषा को हम लोग मजबूत बना रहे हैं । उन्होंने मत व्यक्त किया और यह दावा किया कि कार्यालयों का सम्पूर्ण कार्य हिन्दी में करने में कोई कठिनाई नहीं है ।

परिषद् की नगर समन्वय समिति के संरक्षक श्री सुरेश चन्द्र मिश्र ने विचार व्यक्त किया कि अब हमें अपनी मानसिकता बदलनी चाहिए । उन्होंने कहा कि हिन्दी राजभाषा के रूप में अभी संक्रमण काल में है, इसलिए बहुत सी कमियां कठिनाईयां हैं जिनसे निराश होने की कोई बात नहीं है । उन्होंने कहा कि हमें लिखते समय भाव स्पष्ट रूप से व्यक्त करना चाहिए । अपने पूर्वोत्तर क्षेत्र शिलांग प्रवास के अनेक उदाहरण देते हुए, उन्होंने कहा कि धीरे-धीरे हिन्दी सभी अपनाते जा रहे हैं । अन्त: में अध्यक्ष श्री जगतपाल, उपमुख्य वाणिज्य अधीक्षक उ.रे. ने गोष्ठी में व्यक्त सभी के विचारों को समेकित करते हुए मत व्यक्त किया कि हम सभी का उद्देश्य हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाना है । उन्होंने सुझाव दिया कि सदस्यता शुल्क बढ़ाया जाय तभी इस समिति को आर्थिक कठिनाइयों से मुक्ति मिल पायेगी । अपने कार्यक्रम संचालन में मंत्री श्री राय ने गोष्ठी को सफल बनाने हेतु सभी वक्ताओं को धन्यवाद दिया और कहा कि अंधेरे को कोसने की अपेक्षा दीप से दीप जलाकर अंधेरे में प्रकाश का मार्ग प्रशस्त करें तो अच्छा होगा ।

झांसी नगर में अ० भा० स्तर की राष्ट्रीय संगोष्ठी

झांसी नगर में दिनांक 14 एवं 15 दिसम्बर, 91 को "समकालीन हिन्दी कहानी दिशा और चुनौतियां" पर राष्ट्रीय संगोष्ठी की गई । यह संगोष्ठी श्री शैलेन्द्र सागर (भा.पु.से.) वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक झांसी के विशेष प्रयास से बुंदेलखण्ड हिन्दी परिषद् झांसी द्वारा आयोजित की गई । श्री शैलेन्द्र सागर स्वयं एक कहानी कार हैं तथा इस परिषद् के संस्थापक भी है । सम्मेलन में देश के विभिन्न भागों से लगभग 30,35 कहानिकार सम्मिलित हुए ।

नोएडा में अन्तर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन

उत्तर प्रदेश समाज, दिल्ली की नोएडा शाखा की ओर से 23 जनवरी 1992 को सेक्टर 12 में स्थित कम्यूनिटी सेंटर में एक अन्तर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन नोएडा के अध्यक्ष श्री हेमेन्द्र कुमार ने और समाज की ओर से प्रकाशित स्मारिका का विमोचन ग्रेटर नोएडा के अध्यक्ष श्री योगेन्द्र नारायण ने किया ।

उत्तर प्रदेश समाज नोएडा शाखा के प्रधान श्री राजमणि तिवारी ने अपने स्वागत भाषण में समाज के कार्यकलापों पर चर्चा करते हुए नोएडा की कुछ जन-समस्याओं की ओर उपस्थित अधिकारियों का ध्यान आकर्षित किया ।

इस अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन का शुभारम्भ प्रसिद्ध कवि श्री सोम ठाकुर की कविता "हिन्दी वन्दना" से हुआ ।

"करते हैं" तन मन से वन्दन, जन गण मन की अभिलाषा का,
अभिनन्दन अपनी संस्कृति का, अराधन अपनी भाषा का"

कवि सम्मेलन के अगले मनके के रूप में श्री बेकल उत्साही ने देश की माटी के प्रति अपने उद्गार व्यक्त किए :

"रूप सोने का न चांदी का बदन अच्छा लगा, हम फकीरों को यही माटी का धन अच्छा लगा ।"

युवा रचनाकर नूतन कपूर ने राजनीति और राजनीतिज्ञों पर जोरदार कटाक्ष किया :

"दिल्ली में आकर बस गए जंगल के शिकारी, हम सब हैं भेड़-बकरी संसद मचान है ।"

चेकोस्लोवाकिया निवासी प्रख्यात कवि डा. ओडोलेन स्मैकल ने रचना सुनाई जो भारत की हरी-भरी धरती का चित्र खीचती हैं । अपने बारे में डा. स्मैकल ने कहा कि मेरी मातृ भाषा तो "चेक" है लेकिन मैं जो कुछ भी लिखता हूं हिन्दी में ही लिखता हूं ।

कवि सम्मेलन का संचालन सुप्रसिद्ध हास्य व्यंगकार श्री गोविन्द व्यास ने किया । इस अवसर पर हजारों श्रोता उपस्थित थे तथा कवि सम्मेलन सांय 9 बजे से रात्रि दो बजे तक चलता रहा ।

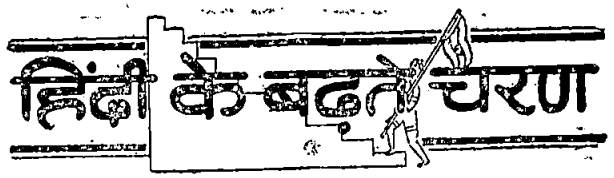

तिरुअनंतपुरम् मंडल (रेलवे)

दक्षिण रेलवे के तिरुअनंतपुरम् मंडल के अधीन कार्यालयों में संघ सरकार की राजभाषा नीति के तहत "ग" क्षेत्र में स्थित कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग संबंधी निर्धारित लक्ष्यों का अनुपालन सुनिश्चित किया जाता है ।

पत्राचार में हिंदी का प्रयोग

"क" तथा "ख' क्षेत्रों में स्थिति केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के साथ पत्राचार में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में प्रशंसनीय प्रगति हुई है। पिछले छः महीनों के दौरान इन क्षेत्रों को भेजे गये 32 पत्रों में से 19 पत्र हिंदी में थे (56%) ।

निर्धारित प्रयोजनों के लिए हिंदी और अंग्रेजी का प्रयोग

मंडल कार्यालय से जारी होने वाले प्रायः सभी कार्यालय आदेश ज्ञापन तथा परिपत्र हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में एक साथ जारी किए जाते हैं, लाइसेंस परमिट टेंडर नोटिस व टेंडर फार्म आदि भी द्विभाषी रूप में जारी किए जाते हैं। 30-9-91 को समाप्त छमाहीं अवधि के दौरान इस मत का 98% अनुपालन हुआ है ।

मंडल कार्यालय तथा इसके अधीन के कार्यालय/स्टेशनों में प्रयुक्त सभी फाइल/रजिस्टर/पत्र शीर्ष आदि पर विवरण हिंदी अंग्रेजी दोनों भाषाओं में मुद्रित है। मैनुअल संहिता और अन्य प्रक्रिया साहित्य भी जिनका कार्यालयों में उपयोग किया जाता है, द्विभाषी रूप में हैं ।

हिंदी सम्बन्धी पदों का सृजन

हिंदी के प्रगामी प्रयोग और सांविधिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मंडल कार्यालय में राजभाषा का गठन किया गया है। जिसमें एक राजभाषा अधिकारी, 4 राजभाषा सहायक और एक हिंदी टंकक कार्य कर रहे हैं ।

देवनागरी टाइपराइटरों की व्यवस्था

मंडल में देवनागरी के 7 टंकण यंत्र जो केन्द्र सरकार द्वारा निर्धारित सही अनुपात में हैं ।

द्विभाषिक इलैक्ट्रानिक उपकरणों की व्यवस्था

मंडल कार्यालय में दो पर्सनल कम्प्यूटर उपलब्ध हैं, उन्हें हिंदी में भी आपरेट करने के लिए आवश्यक साफ्टवेयर पैकेज भी उपलब्ध कराया गया है ।

केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों का हिंदी प्रशिक्षण

कर्मचारियों की कुल संख्या समूह घ को छोड़कर 4511
निर्धारित स्तर तक प्रशिक्षित कर्मचारियों की संख्या 1187

हिंदी न जानने वाले कर्मचारियों को हिन्दी में प्रशिक्षित करने के लिए कदम उठाए जा रहे है। मंडल में हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण केन्द्र चालू है । नागरकोविल जं में विभागीय तौर पर एक अंशकालिक प्रशिक्षण केन्द्र है जिसमें औसत 15 कर्मचारी प्रशिक्षण पा रहे है। स्टेशनों में कार्यरत चालू लाइन कर्मचारियों को, जिन्हे नियमित वर्गों में प्रशिक्षित करना मुश्किल है, पत्राचार पाठ्यक्रम में भर्ती होकर प्रशिक्षण पाने के लिए, प्रेरित किया जाता है।

मंडल के कुल 21 टंककों में से 8 को हिंदी टंकण प्रशिक्षत किया गया है ।

आशुलिपिकों को हिंदी आशुलिपि में प्रशिक्षण देने के लिए कार्रवाई की जा रही है ।

राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की संख्या

मंडल में मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति गठित है। इसके अलावा नागरकोविल जं तिरुअनंतपुरम् सेंट्रल, कोल्लम जं. एरणाकुलम् जं., कोच्चिन हार्बर टर्मिनल और तृश्शूर स्टेशनों में भी राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। इन समितियों की तिमाही बैठकें नियमित रूप से की जाती है जिनमें राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए आवश्यक कदम उठाए जाते हैं ।

सेवाकालीन विभागीय परीक्षाओं में हिंदी में उत्तर देने का विकल्प

सभी विभागीय तथा पदोन्नति परीक्षाओं में हिंदी में उत्तर देने की छूट दी जाती है । आवश्कतानुसार प्रश्न-पत्र अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं में तैयार किए जाते है ।

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार हिंदी में प्रवीणता /कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर्मचारियों के लिए हर साल दो हिंदी कार्यशालाएं की जाती हैं । अभी तक मंडल में 13 कार्यशालाएं की गई हैं जिन में 182 कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया है। इस साल की पहली कार्यशाला गत सितंबर महीने में चलायी गई।

हिंदी दिवस/सप्ताह का आयोजन

सरकारी काम काज में राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रति जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से मंडल में हिंदी दिवस और हिंदी सप्ताह हर साल मनाया जाता है ।

तिरुअनंतपुरम् में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति और केरल प्रचार सभा द्वारा आयोजित समारोहों में भी यह मंडल सक्रिय रूप से भाग लेता आ रहा है ।

कार्यालयों का निरीक्षण

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी और राजभाषा अधिकारी मंडल के अधीन के स्टेशन/कार्यालयों का निरीक्षण करते हैं। संदर्भाधीन अर्धवर्ष के दौरान राजभाषा अधिकारी ने पिरवम रोड़ तथा कलम्मशेरी स्टेशनों का निरीक्षण किया। निरीक्षण संबंधी रिपोर्ट सभी संबंधितों को भेज दी जाती है। निरीक्षणों के दौरान पाई गई कमियों को दूर करने के लिए आवश्यक अनुवर्ती कार्यवाई की जाती है ।

मंडल के अन्य अधिकारियों से भी आग्रह किया गया है कि स्टेशनों/अधीनस्थ कार्यालयों में निरीक्षणों के दौरान राजभाषा के प्रयोग के बारे में भी ध्यान दें।

राजभाषा संबंधी आदेशों के कार्यान्वयन के लिए प्रस्तावित जांच बिंदु

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) में निर्दिष्ट दस्तावेजों का द्विभाषी रूप में जारी करना सुनिश्चित करने के लिए रोनियों अनुभाग को जांच बिंदु बनाया गया है। प्रेषण अनुभाग में भी निगरानी रखी जाती है ।

राजभाषा नियमों के अनुपालन में सभी नाम पट्ट तथा संकेत पट्ट आदि त्रिभाषी/द्विभाषी रूप में तैयार किए गए हैं और प्रयोग में रहने वाली सभी रबड़ मुहरें द्विभाषी रूप में हैं, मंडल कार्यालय सभी कर्मचारियों को सचित्र पहचान (बैंच) द्विभाषी रूप में बनाकर दिए हैं ।

नाम बोर्ड साइन बोर्ड आदि को हिंदी में बनाने के लिए संबंधित पेइंटरों को विशेष अल्पकालावधि प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जिसके वे अक्षरों को सही रूप में लिख सकें ।

यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रख कर स्टेशनों में गाड़ियों के आवगमन की उद्घोषणा भी तीनों भाषा में की जाती है। इसके लिए संबंधित कर्मचारियों को प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है इस के अलावा, यात्रियों से अकसर संपर्क में आने वाले कर्मचारियों के लिए प्रति दिन एक घंटे के हिसाब से 30 दिन के लिए वार्तालाप हिंदी प्रशिक्षण दिया जा रहा प्रमुख स्टेशनों में तैनात 249 कर्मचारियों को अब तक इस तरह का प्रशिक्षण दिया जा चुका है ।

एक दिन एक शब्द

मंडल कार्यालय के पोर्टिको में हर दिन एक हिंदी शब्द अंग्रेजी पर्याय के साथ लिखा जाता है। ताकि कर्मचारी सीख लें या याद करें ।

सहायक साहित्य

स्टेशनों में नेमी तौर पर की जानेवाली उद्घोषणाएं, पदनामों के संक्षिप्त रूप, तथा सामान्य शब्दावली आदि, हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान या प्रवीणता रखने वाले कर्मचारी को वितरित करके और प्रोत्साहन देकर हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित किया जाता है। फिलहाल 35 कर्मचारियों अपना काम अंशत : हिंदी में भी कर कर रहे हैं.

आर्डनैंस फैक्ट्री अम्बाझरी

आर्डनैंस फैक्टरी अम्बाझरी की स्थापना 9 मार्च, 1966 में हुई। वर्ष 1991 रजत जयंती वर्ष है। तब से देश की आयुध आवश्यकता की पूर्ति के लिए सतत कार्यरत है। यह फैक्टरी न सिर्फ आयुध निर्माण में अग्रणी रही है बल्कि इंजीनियरिंग फैक्टरी होते हुए भी सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए इसने सभी-व्यावहारिक प्रयास किये हैं और अन्य आर्डनैंस फैक्टरियों की तुलना में हिंदी के क्षेत्र में भी मार्गदर्शक रही है। आर्डनैंस फैक्टरी अम्बाझरी द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाएं व कार्यक्रम निम्नानुसार हैं :

(क) प्रशिक्षण :

हिंदी का प्रसार-प्रचार करने के लिए प्राथमिक आवश्यकता है कर्मचारियों को हिंदी का ज्ञान हो। इसके लिए आर्डनैंस फैक्टरी अम्बाझरी द्वारा निम्न प्रशिक्षण चलाए जा रहे हैं :

हिन्दी कक्षा :

कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान देने के लिए हिंदी शिक्षण योजना, नागपुर की सहायता से हिंदी प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ की कक्षाएं सन् 1971 से चलाई जा रही हैं। इस योजना के तहत प्रबोध में 18, प्रवीण में 48 व प्राज्ञ में 279 कर्मचारियों ने सफलतापूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

हिन्दीटाइप लेखन :

हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत नागपुर में हिंदी टाइपलेखन सिखाने की व्यवस्था नहीं थी। आर्डनैंस फैक्टरी अम्बाझरी ने विभागीय व्यवस्था के अंतर्गत फरवरी, 1984 में हिंदी टाइपलेखन सिखाने के लिए अंशकालीन प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की। इसकी कक्षाएं प्रतिदिन राजभाषा अनुभाग में, कार्यालय समय पर लगती है। अब तक इस केन्द्र में आर्डनैंस फैक्टरी अम्बाझरी तथा संलग्न स्थापदाओं के 208 कर्मचारियों को हिंदी टाइपलेखन का प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

हिन्दी कार्यशाला :

जिन कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान है अथवा हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है ऐसे कर्मचारियों के लिए 1975 में हिंदी कार्यशालाओं की कक्षा चलाई जा रही है। अब तक 27 बैचों में 396 कर्मचारियों को हिंदी टिप्पण व आलेखन का प्रशिक्षण दिया जा चुका है। इसकी कक्षा में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित 18 पाठ के अलावा स्थानीय रूप से तैयार किये एवं आर्डनैंस फैक्टरी बोर्ड, कलकत्ता से अनुमोदित 12 पाठ पढ़ाये जाते हैं। कर्मचारियों द्वारा कार्यालय में प्रयोग में लाये जाने वाले पत्रों/प्रपत्रों के नमूने बताए जाते हैं। प्रशिक्षण के अंत में परीक्षा ली जाती है और सभी उत्तीर्ण कर्मचारियों को प्रशंसा-पत्र प्रमाण प्रदान किए जाते हैं।

(ख) योजनाएं कार्यक्रम :

हिंदी के समुचित विकास के लिए आर्डनैंस फैक्टरी अम्बाझरी द्वारा निम्नलिखित योजनाएं व कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं:—

नकद पुरस्कार योजना :

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के आदेशानुसार प्रतिवर्ष 10 कर्मचारियों को सबसे अधिक हिंदी में काम करने के लिए क्रमशः 450 रुपये के 2,200 रुपये के 3 व 150-रुपये के 5 नकद पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

हिन्दी प्रोत्साहन भत्ता योजना

अंग्रेजी के अलावा हिंदी में भी टाइप करने वाले कर्मचारियों को "प्रोत्साहन भत्ता योजना" के अंतर्गत प्रति माह 40 रुपये प्रदान किया जा रहा है। यह योजना 1987 से इस फैक्टरी में लागू की गई और 15 कर्मचारी इस योजना का लाभ उठा रहे हैं।

राजभाषा शील्ड योजना :

केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् अम्बाझरी द्वारा प्रदत्त "राजभाषा शील्ड" सन् 1985 से प्रतिवर्ष सबसे अधिक हिंदी में काम करने वाले अनुभाग को प्रदान की जाती है। सन् 1988 में केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् अम्बाझरी से एक और शील्ड प्राप्त की गई और उसी वर्ष से एक शील्ड सबसे अधिक हिंदी में काम करने वाले प्रशासनिक अनुभाग तथा दूसरी शील्ड गैर प्रशासनिक अनुभागों के लिये निर्धारित की गई जो प्रतिवर्ष 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के अवसर पर विशेष समारोह में प्रदान की जाती है।

वार्षिक राजभाषा कार्यक्रम हिन्दी सप्ताह

फैक्टरी द्वारा प्रतिवर्ष हिंदी सप्ताह आयोजित किया जाता है। इसके अंतर्गत हिंदी टाइपलेखन, हिंदी वाक् वाद-विवाद प्रतियोगिता, हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण व-आलेखन प्रतियोगिता व सामान्य ज्ञान प्रश्नावली आदि प्रति योगिताएं आयोजित की जाती हैं। सप्ताह के अंतिम दिन पुरस्कार वितरण एवं लघु काव्य गोष्ठी का आयोजन किया जाता है। लघु काव्य गोष्ठी में कविता-पाठ के लिए बाहर से कवियों को न बुलाकर फैक्टरी तथा संलग्न स्थापनाओं में कार्यरत कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया जाता है। इस दौरान यह पाया जाता है कि हमारे कर्मचारी किसी भी बाहरी कवि से कम प्रतिभा के धनी नहीं। दिनोंदिन इसमें भाग लेने वाले कर्मचारियों की संख्या बढ़ रही है।

सन् 1979, 80 व 81 में इस फैक्टरी द्वारा क्षेत्रीय स्तर की हिंदी प्रतियोगिताएं की गई जिसमें (1) आर्डनैंस फैक्टरी अम्बाझरी (2) आर्डनैंस फैक्टरी भंडारा, (3) आर्डनैंस फैक्टरी चांदा (4) आर्डनैंस फैक्टरी वरणगव व (5) आर्डनैंस फैक्टरी भुसावल के कर्मचारियों ने भाग लिया।

(ग) उपकरण व अन्य सहायक साहित्य

सन् 1975 में जहां फैक्टरी के पास अपना एक भी हिंदी टाइपराइटर नहीं था वहीं आज हिंदी के 36 टाइपराइटर हैं। 1975-76 में जबलपुर स्थित आर्डनैंस फैक्टरी से एक हिंदी टाइपराइटर उधार लिया गया और तत्पश्चात् धीरे-धीरे टाइपराइटरों की संख्या बढ़ाई गई। इस समय फैक्टरी में 36 हिंदी टाइपराइटरों के अलावा 3 द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेजी) इलेक्ट्रोनिक्स टाइपराइटर, एक हिंदी ग्राडमा मशीन व एक द्विभाषी टेलेक्स मशीन है। कंप्यूटर को भी द्विभाषी बनाने के प्रयास जारी हैं।

राजभाषा अनुभाग, तकनीकी पुस्तकालय, केन्द्रीय कार्यालय के प्रशासनिक पुस्तकालय व आर्डनैंस फैक्टरी प्रशिक्षण संस्थान अम्बाझरी में अंग्रेजी-हिंदी के शब्दकोश, किताबों का अच्छा खासा भंडार उपलब्ध है। इनमें दिन प्रतिदिन वृद्धि की जा रही है।

(घ) शब्द सागर

कर्मचारियों का शब्द ज्ञान बढ़ाने के लिए सन् 1984 से फैक्टरी के मुख्य द्वार पर प्रतिदिन एक अंग्रेजी शब्द लिख कर उसका हिंदी अर्थ एवं वाक्यों में प्रयोग कर उस शब्द के हिंदी रूप प्रयोग बताया जाता है। यह तरीका हिंदी प्रयोग में काफी असरदायक रहा है।

(ङ) फार्म प्रोफार्मों का स्थानीय अनुवाद

फैक्टरी के राजभाषा अनुभाग द्वारा 669 फार्म/प्रोफार्मों का स्थानीय रूप से अनुवाद करके प्रयोग किया जा रहा है।

(च) निरीक्षण व दौरे

आर्डनैंस फैक्टरी अम्बाझरी में हिंदी में किए जाने वाले काम का निरीक्षण समय-समय पर गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के अधिकारियों, रक्षा मंत्रालय तथा आर्डनैंस फैक्टरी बोर्ड के अधिकारियों के साथ-साथ सन् 1983 में तथा 1986 में संसदीय राजभाषा समिति ने भी किया है।

(छ) केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्

केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् की अम्बाझरी शाखा सन् 1970 में स्थापित हुई। तब से अब तक यह शाखा हमेशा सक्रिय रही है। इस सहायता से प्रतिवर्ष हिंदी टाइपलेखन, वाक्, वाद-विवाद, निबंध लेखन, राजभाषा शील्ड योजन व स्थानीय एवं अखिल भारतीय स्तर की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। सर्वाधिक सदस्यता के लिए सन् 78, 79 व 80 में अम्बाझरी शाखा को पुरस्कार शील्ड से सम्मानित किया गया।

अम्बाझरी शाखा द्वारा समय-समय पर स्थानीय प्रतियोगिताओं के साथ-साथ अखिल भारतीय स्तर का प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गई। इसमें अखिल भारतीय हिंदी टाइपलेखन प्रतियोगिता 1979 में श्री ए. जी. सोनी एवं 1990 में श्री यू. एम. टाकलीकर को "महाराष्ट्र प्रथम" पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इनके अलावा रमणामूर्ति को निबंध लेखन, श्री डी. एम. कोल्हे को व्यवहार प्रतियोगिता के लिए केन्द्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

परिषद् ने सन् 1979 में हिंदी पुस्तकालय की स्थापना की। इस समय इसके सदस्यों की संख्या 483 है। पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की 1561 हिंदी पुस्तकें उपलब्ध हैं। यहां करीब-करीब सभी स्थानों से निकलने वाली हिंदी पत्रिकाएं आती हैं। परिषद् की शाखा ने स्वयं अपने प्रयास के 2 स्मारिकाएं व एक "चिन्तिका" पुस्तक प्रकाशित की है।

इस तरह आर्डनैंस फैक्टरी अम्बाझरी के कदम प्रगति पथ की ओर सतत बढ़ रहे हैं।

हुडको
(हाउसिंग एंड अर्बन डवलपमेंट कार्पोरेशन)

आवास तथा नगर विकास निगम (हुडको) अपने मुख्यालय, क्षेत्रीय तथा विकास कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा इसके रोजमर्रा के सरकारी कामकाज में अधिकाधिक प्रयोग के लिए निरंतर प्रयत्नशील है वार्षिक कार्यक्रम, हुडको के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा अपने सभी विभागाध्यक्षों, कार्यकारी निदेशकों तथा क्षेत्रीय प्रमुखों को इस निर्देश के साथ भेजा जाता है कि वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को अपने-अपने क्षेत्र में प्राप्त करने के लिए सभी संभव उपाय किये जाएं। इसके साथ ही अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक समय-समय पर प्रबंध परिपत्रों द्वारा सभी उच्च अधिकारियों को अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित करते हैं तथा हिंदी में किए गए कार्यों का विधिवत् रिकार्ड रखने तथा तिमाही प्रगति रिपोर्ट मुख्यालय/मंत्रालय को समय पर भेजने की अपेक्षा करते हैं।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी सभी सामान्य आदेश, संकल्प, नियम, अधिसूचना आदि द्विभाषी रूप में जारी करने के भरसक प्रयास किये जाते हैं।

समय-समय पर हिंदी विभाग द्वारा मुख्यालय के विभिन्न विभागों, क्षेत्रीय कार्यालयों तथा विकास कार्यालयों में हिंदी के काम की प्रगति का निरक्षण किया जाता है। इन निरीक्षणा के दौरान पाई गई कमियों को सुधारने के लिए संबंधित कार्यालयों के उच्च अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करते हुए उचित कार्रवाई के निर्देश लिए जाते हैं।

अधिकारियों तथा कर्मचारियों में हिंदी में काम करने के प्रति झिझक को समाप्त करने हेतु हिंदी कार्यशालाएं, मुख्यालय, यूआईएफ विंग, एचएसएमआई, बंगलौर, अहमदाबाद तथा लखनऊ में की जा चुकी हैं तथा शीघ्र ही भुवनेश्वर में करने का प्रस्ताव है। हिंदी में टिप्पण व आलेखन की पुरस्कार योजना भी लागू है तथा इस योजना के अंतर्गत हर वर्ष हिंदी में अधिक से अधिक काम करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कृत किया जाता है।

अधिकारियों/कर्मचारियों में हिंदी के प्रति जागरुकता उत्पन्न करने के लिए "हिंदी का एक शब्द प्रतिदिन सीखें" योजना लागू है। जिसके अंतर्गत प्रतिदिन हिंदी/अंग्रेजी शब्द की एक छोटी स्लिप सभी अधिकारियों/कर्मचारियों में प्रचालित की जाती है जैसे ही अधिकारी/कर्मचारी कार्यालय आते हैं उनकी मेज पर "आज का शब्द" रखा मिलता है जिसको देखने पढ़ने तथा इस्तेमाल करने से हिंदी के काम में बढ़ोतरी हो रही है। इस योजना से लाभ प्राप्त करने के पश्चात् अब हुडको ने एक और योजना लागू की है। प्रत्येक सप्ताह के सोमवार को "इस सप्ताह ये टिप्पणियां सीखें" योजना के अंतर्गत हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तीन टिप्पणियां सभी को एक स्लिप के माध्यम से दी जाती हैं। आशा है इससे हिंदी के काम में और अधिक सहायता मिलेगी।

हिंदी विभाग ने तकनीकी वित्तीय शब्दों की एक शब्दावली भी तैयार की है।

एक गृह पत्रिका "आवास भारती" के तीन अंक जारी हो चुके हैं तथा चौथा अंक की सामग्री तैयार की जा रही है। हिंदी पुस्तकालय भी है जिसमें लगभग 550 किताबें हैं। इसके अतिरिक्त कुछ रोचक तथा साहित्यिक पत्रिकाएं भी मंगवाई जाती हैं।

16 सितम्बर से 30 सितम्बर, 1991 तक राजभाषा पखवाड़े के दौरान मुख्यालय, एचएसएमआई, यूआईएफ विंग, क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ तथा गुवाहाटी में हिंदी की प्रगति की समीक्षा हेतु निरीक्षण किया गया। इस के साथ-साथ मुख्यालय, यूआएफ वग तथा क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ में हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन भी किया गया। हिंदी नोटिंग ड्राफ्टिंग, हिंदी निबंध प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय में 24 नवंबर, 1991 को हिंदी दिवस का तथा भुवनेश्वर क्षेत्रीय कार्यालय में 9 सितम्बर, से 13 सितम्बर, 1991 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन करते हुए विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं भी की गईं। राजभाषा पखवाड़े

के उद्घाटन तथा समापन अवसरों पर पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री एस के शर्मा ने निगम के अधिकारियों/कर्मचारियों में हिंदी के प्रति प्रेरणा व प्रोत्साहन की दृष्टि से संदेश भी प्रसारित किए।

"राजभाषा पखवाड़े" के क्रम में ही 26 नवंबर, 1991 को मुख्यालय में हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया जिसमें मुख्यालय के हिंदी विभाग द्वारा निकाली जा रही हिंदी की गृह पत्रिका "आवास भारती" के तीसरे अंक का विमोचन किया गया था पिछले वर्ष हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित हिंदी टिप्पण एवं आलेखन, हिंदी सुलेख प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले पुरस्कार विजेता प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र बांटे गए। इसके अतिरिक्त इस अवसर पर निगम के अनेक अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डा. पी. एस. ए. सुन्दरम् ने हडको में हो रही हिंदी प्रगति पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने का आग्रह किया तथा कार्यकारी निदेशक मानव श्री सुरेश चन्द्र शर्मा ने गलत अंग्रेजी लिखने की बजाय सरल हिंदी में कार्य करने पर जोर दिया।

राजभाषा के प्रयोग में पंजाब नैशनल बैंक की उपलब्धियां

पंजाब नेशनल बैंक भोपाल स्थित अंचल प्रशिक्षण केन्द्र का राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान है। प्रशिक्षण केन्द्र में किये जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों का माध्यम हिंदी रहता है। बैंक की अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित प्रधानकार्यालय राजभाषा शील्ड योजना में वर्ष 1989-90 में द्वितीय स्थान तथा वर्ष 1990-91 में देहरादून के साथ संयुक्त रूप से प्रथम स्थान प्राप्त किया।

केन्द्र में केवल प्रशिक्षण का माध्यम हिंदी नहीं है बल्कि दैनिक पत्राचार रजिस्टर तथा पाठ्य सामग्री राजभाषा में शत-प्रतिशत उपलब्ध है। समय-समय पर तैयार की जाने वाली पुस्तिकाएं हिंदी/द्विभाषिक तैयार की जाती हैं। "सेवा क्षेत्र-दृष्टिकोण" पर आडियो कैसेट राजभाषा हिंदी में तैयार किया गया था, जिसकी सराहना राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के उप सचिव श्री भगवान दास पटैरया ने की। केन्द्र का विजिट श्री पटैरया ने किया तथा राजभाषा के प्रयोग पर संतोष व्यक्त किया।

अप्रैल से दिसंबर, 91 के मध्य 08 हिंदी कार्यशालाएं प्रशिक्षण केन्द्र में आयोजित की गईं। इन कार्यशालाओं में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के भोपाल स्थित उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री चंद्र गोपाल शर्मा को आमंत्रित किया गया। बैंक के मध्यप्रदेश अंचल के अहिंदी भाषी कर्मचारियों के लिए तीन दिवसीय विशेष कार्यक्रम हिंदी प्रशिक्षण योजना के अंतर्गत प्रबोध, प्रवीण प्राज्ञ पर प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यक्रम में राजभाषा पर विस्तृत जानकारी देने के लिए गृह मंत्रालय, भारत सरकार के, राजभाषा विभाग के अनुसंधान अधिकारी तथा विभिन्न बैंकों के राजभाषा अधिकारियों को आमंत्रित किया गया।

□

पृष्ठ 35 का शेष

(7) दिल्ली न्यायिक सेवा में परीक्षा देने के लिए हिंदी को भी वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में रखा जाए और सर्व-सम्मति से निर्णय लिया गया कि प्रशासन के विधि विभाग इस पर आवश्यक कार्यवाही करें और इस संबंध में हुई कार्यवाही के बारे में भाषा विभाग तथा निदेशक (अनुसंधान) गृह मंत्रालय, भारत सरकार, राजभाषा विभाग को भी सूचित किया जाए। इस संबंध में मुख्य सचिव महोदय ने भी पहली बैठक में स्पष्ट निर्देश दिए थे।

(8) गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग ने निदेशक (अनुसंधान) ने भारत सरकार के आदेशों का हवाला देते हुए सुझाव दिया कि दिल्ली प्रशासन द्वारा जारी किए जा रहे ड्राईविंग लाइसेंस तथा गाड़ियों के पंजीकरण संबंधी फार्म इत्यादि दोनों भाषाओं में तैयार किए जाएं। इस संबंध में वित्तीय आयुक्त ने आश्वासन दिया कि ड्राईविंग लाइसेंस के फार्म दोनों भाषाओं में कर दिए जाएंगे तथा लाइसेंस में नाम हिंदी में भर दिया जायगा क्योंकि वित्तीय आयुक्त ही लाइसेंस जारी किए जाने वाले विभाग के विभागाध्यक्ष हैं।

(9) दिल्ली पुलिस तथा डेसू में अंग्रेजी आशुलिपिकों की भर्ती राजभाषा नियमों के अनुसरण में ही की जाये।

(20) आम जनता से पत्र-व्यवहार हिंदी में ही किए जाएं।

□

कोच्चि (केरल)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का संयुक्त रूप से हिन्दी सप्ताह का आयोजन कई वर्षों से हो रहा है। कोचिन के सभी केन्द्रीय संगठनों/कार्यालयों/सार्वजनिक उपक्रमों/कंपनियों को सम्मिलित करते हुए 9 सितम्बर 91 से 13 सितम्बर 91 तक स्पाइसेस बोर्ड के तत्वावधान में उप समिति के गठन के जरिए संयुक्त हिन्दी सप्ताह समारोह का आयोजन किया गया।

उप समिति की पहली बैठक 7 अगस्त, 1991 बुधवार को आयकर भवन, कोचिन-18 में बुलाई गई। कोचिन टॉलिक के अध्यक्ष एवं मुख्य आयकर आयुक्त श्री एम० के० केशवन् ने इसकी अध्यक्षता की। इसी बैठक में कार्यक्रमों के सफल आयोजन के लिए आयोजन समिति एवं कोर ग्रुप में एक अध्यक्ष, एक संयोजक एवं तीन सदस्य के हिसाब से पांच कोर ग्रुप बनाए गए और प्रत्येक कोर ग्रुप को अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंप दी गईं।

उप समिति के अध्यक्ष, डॉ० के०जी० नायर ने सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के भाग के रूप में हिन्दी सप्ताह समारोह आयोजित करने की जरूरत पर जोर दिया और उन्होंने 1991 के हिन्दी सप्ताह समारोह को उचित ढंग से आयोजित करने के लिए सभी संबंधितों का हार्दिक सहयोग एवं सहायता का अनुरोध किया। तदुपरान्त आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं प्रस्तावित आकलनों को मिलाकर कार्यक्रमों की रूप रेखा प्रस्तुत की गयी।

केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों के स्टाफ एवं हिन्दी स्टाफ को अलग से विभिन्न मदों पर प्रतियोगिताएं की गई। जैसे कि हिन्दी निबंध लेखन, प्रशासनिक शब्दावली/टिप्पण/पत्रलेखन, हिन्दी टंकण, हिन्दी आशुलिपि, अनुवाद, प्रश्नोत्तरी, भाषण, हिन्दी स्टाफ के लिए प्रश्नोत्तरी, ललित गान (पुरुष एवं स्त्री) कवितापाठ आदि।

विविध प्रतियोगिताओं के सुव्यवस्थित आयोजन के उपरान्त जज द्वारा विजेताओं का निर्णय लिया गया। विभिन्न संगठनों का प्रतिनिधित्व करते हुए, कोचिन के लगभग 30 केन्द्रीय सरकारी संगठनों के करीब 300 के कर्मचारियों ने प्रतियोगिताओं में भाग लेकर इस लघु प्रयास को सार्थक एवं सफल बना दिया।

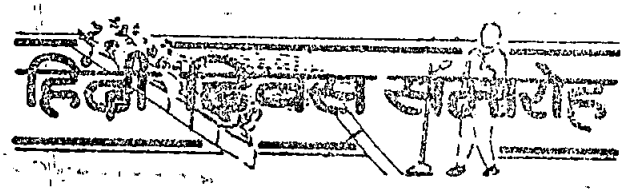

13 सितम्बर, 1991 को हिन्दी सप्ताह समापन समारोह का उद्घाटन किया गया। विविध प्रकार के मनोरंजन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम चलाए गए। इसमें समूह गान, गीत, सेनकोड द्वारा "ओणम" के सिलसिले में आयोजित प्रतियोगिता में प्रथम आए दलों की कैकोट्टिक्कली (स्त्रियां और पुरुष) आदि मुख्य आकर्षक मदें थीं। न्यू इण्डिया एश्योरेन्स की श्रीमती के० गिरिजा के प्रार्थना-गीत के साथ समापन समारोह की शुरुआत की गयी। उसके बाद स्पाइसेस बोर्ड के सचिव डॉ० के०जी० नायर ने विशिष्ट अतिथि न्यायमूर्ति श्री के०टी० तॉमस, श्रीमती के०टी० तोमस, उप निदेशक (का०) श्री रामचन्द्र मिश्रा, नरा का स के अध्यक्ष एवं मुख्य आयकर आयुक्त श्री एम० के० केशवन् और पूरी सभा का सुस्वागत किया।

श्री एम के० केशवन् ने भाषा की सुगन्ध, गुणवत्ता, रंगमयता आदि विशेषताओं की ओर सभा का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने घोषणा की कि कोई भी भाषा मातृभाषा नहीं कही जा सकती। भाषा की मृत्यु नहीं होती क्योंकि भाषा का उद्देश्य भावों का आदान-प्रदान है। यदि किसी भाषा में भावों का, विचारों का विनिमय होता रहता है तो भाषा को मृत कैसे मान लिया जाए?

माननीय न्यायमूर्ति श्री के०टी० तॉमस एक सामान्य भाषा की जरूरत पर जोर दिया और अपने कई अनुभव सभा के सामने रखे।

गीत-प्रतियोगिता में प्रथम आई नेशनल इन्शूरेन्स कं० की श्रीमती गीता ने गीत भी सुनाया। उप निदेशक (का) श्री राम चन्द्र मिश्रा ने अभिनन्दन भाषण भी दिया। तदुपरान्त पुरस्कार वितरण के लिए श्रीमती के०टी० तोमस को निमंत्रित किया गया। सबसे पहले एस एस एल सी/सी बी एस सी 10वीं कक्षा में हिन्दी परीक्षा में प्रथम आए छात्रों को 500 रुपए की पुस्तकों का कूपन वितरित किए गए जिनके नाम नीचे दिए जाते हैं।

एस.एस.एल.सी. 1991

कु० अनुगोपीनाथ (98%) एच०एम०टी० कलमश्शेरी

मा० बी० आनन्द (98%) एफ०ए०सी०टी०

कु० के० गीता (98%) एफ०ए०सी०टी०

सी०बो०एस०सी०/आई०एस०सी०ई० 1991

कु० दिव्या लक्ष्मणन् (94%) एफ०ए०सी०टी०

1991 के निष्पादन के आधार पर सबसे प्रथम आए एफ०ए०सी०टी० को न्यू इंडिया एश्योरेन्स द्वारा प्रवर्तित स्थायी ट्रॉफी एवं सी०आर०एल० द्वारा प्रवर्तित रोलिंग ट्रॉफी प्रदान की गई।

न्यू इंडिया एश्योरेन्स द्वारा प्रवर्तित रोलिंग ट्रॉफी द्वितीय आने वाले सी०आर०एल० को प्रदान की गई।

पुरस्कार वितरण के बाद स्पाइसेस बोर्ड के हिन्दी अधिकारी श्री ए०एन० कृष्णदास के कृतज्ञता-ज्ञापन किया।

लुधियाना नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं आयकर आयुक्त (केन्द्रीय) कार्यालय लुधियाना

16-9-1991 को सांस्कृतिक समारोह पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ की लुधियाना स्थित एक्सटैंशन लाइब्रेरी में आयकर आयुक्त (केन्द्रीय) लुधियाना श्री एस०एस० भाटिया की अध्यक्षता में हुआ। जिसमें आयकर विभाग तथा अन्य विभिन्न केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों/बैंकों/निगमों इत्यादि से लगभग 450 अधिकारी/कर्मचारी शामिल हुए। श्री एस०एस० भाटिया ने दीप प्रज्जवलित करके समारोह का उद्घाटन किया। इसके बाद केन्द्रीय विद्यालय, बद्धोवाल की कु० श्वेता और कु० मोनिका ने स्वागत गान प्रस्तुत किया। आयकर विभाग के कर्मचारियों के बच्चों ने मां सरस्वती की स्तुति की। आयकर विभाग के श्री विनय कुमार तथा उसके सहयोगियों ने समूहगान में समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने के लिए लड़ने की शक्ति तथा आत्म-विश्वास प्रदान करने हेतु ईश्वर से प्रार्थना की। "काव्य पाठ" प्रतियोगिता की गई।

रंगारंग कार्यक्रमों के उपरान्त पुरस्कार वितरण समारोह आरम्भ हुआ। सर्वप्रथम श्रीमती भाटिया ने आयकर विभाग के निम्नलिखित कर्मचारियों को नकद पुरस्कार वितरित किए जिन्होंने वर्ष 1990-91 में अधिक से अधिक काम हिन्दी में किया था :—

आयकर आयुक्त (केन्द्रीय) कार्यालय, लुधियाना :

श्रीमती मीना कुमारी, उ०श्रे०लि०, श्री गुरचैन लाल, क० सहा०, श्री शेर सिंह मीना, उ०श्रे०लि०, श्री एफ०सी० बेदी, नि०श्रे०लि०, श्री जय नारायण, नि०श्रे०लि०

आयकर उप-आयुक्त (केन्द्रीय) रेंज-1, लुधियाना

श्री बूटा राम खोसला, क० सहा०, श्री रघुवीर सिंह, क० सहा०, श्री रिसाल सिंह, नि०श्र०लि०, श्रीमती हरविन्द्र कपूर, उ०श्रे०लि०,

आयकर उप-आयुक्त (केंद्रीय) रेंज-2, लुधियाना

श्रीमती पुष्पा शाही, उ०श्रे०लि०, श्री मंगतराम कपूर, नि०श्रे०लि०, श्रीमती आशा, उ०श्रे०लि०,

इसके बाद आयकर आयुक्त (केन्द्रीय) एवं लुधियाना नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री एस.एस. भाटिया जी ने समिति के सदस्य कार्यालयों के निम्नलिखित कार्यालयध्यक्षों को अपने अपने कार्यालयों में वर्ष 1990-91 में हिन्दी में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए सम्मानित किया।

1. श्री रघुरामन्, — प्रथम
   क्षेत्रीय प्रबंधक,
   सैन्ट्रल बैंक आफ इंडिया, लुधियाना।
2. श्री डी.एस. सिद्धु, — द्वितीय
   आयकर उप-आयुक्त (केन्द्रीय) रेंज-1,
   लुधियाना।

इसके बाद श्री भाटिया ने रंगारंग कार्यक्रमों में श्रेष्ठ निष्पादन/अच्छे प्रदर्शन एवं सहयोग इत्यादि के लिए स्मृति चिह्न भेंट किए।

हिन्दी दिवस के अवसर पर आयकर विभाग एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा 9, 10, 11 एवं 16-9-1991 को विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। इन निम्नलिखित प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले प्रतियोगियों को भी श्री भाटिया ने नकद पुरस्कार प्रदान किए :

देवनागरी टाइप प्रतियोगिता :

1. श्री जय नारायण, नि.श्रे.लि. — प्रथम
   कार्यालय आयकर आयुक्त (केन्द्रीय)
2. कुमारी सुरिन्दर कौर, सहायक — द्वितीय
   यूनाइटिड इंडिया इंश्योरेंस कं.
   प्रादेशिक कार्यालय, लुधियाना।
3. श्री हरिचन्द, आशुलिपिक — तृतीय
   यूनाइटिड इंडिया इंश्योरेंस कं.
   प्रा. कार्यालय, लुधियाना।

हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता :

(क) भारतीय समाज में नारी का स्थान

(ख) राजभाषा हिन्दी का सरकारी कामकाज में प्रयोग कठिनाइयां एवं उनका निराकरण

(ग) हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अहिन्दी भाषियों का योगदान

(घ) अरे छोड़ो! सब चलता है।

(ङ) रुपये के अवमूल्यन का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव।

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :—

(1) श्री शेर सिंह मीना, उ.श्रे.लि. — प्रथम
कार्यालय आयकर आयुक्त (केन्द्रीय)
लुधियाना

(2) श्रीमती अंजू गुप्त — द्वितीय
संयुक्त मुख्य नियंत्रक, आयात व निर्यात
कार्यालय

(3) श्रीमती सुमन प्रभा — तृतीय
तार परियात, कार्यालय

हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता :

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :

1. श्री ओम प्रकाश कश्यप, उ.श्रे.लि. — प्रथम
कार्यालय आयकर आयुक्त (केन्द्रीय) लुधि.

2. श्री मंगत रामकुमार, नि.श्रे.लि. — द्वितीय
कार्यालय आयकर उप-आयुक्त (के) रेंज-2

3. श्री अनील कुमार बतरा, नि.श्रे.लि. — तृतीय
कार्यालय आयकर आयुक्त (के.) लुधि.

काव्य पाठ प्रतियोगिता :

यह प्रतियोगिता 26-9-92 को समारोह में की गई, इसका परिणाम इस प्रकार रहा :—

1. श्री विवेक मल्होत्रा, — प्रथम
आयकर उपायुक्त, रेंज, लुधियाना

2. श्री आर.पी. शर्मा, — द्वितीय
यूनाइटिड इंडिया इंश्यो. कं. लि.प्रा. कार्यालय

3. श्री कुलराज सिंह बंसल, — तृतीय
स्टेट बैंक आफ बीकानेर एंड जयपुर
रेंज लुधियाना।

लघु शस्त्र निर्माणी कानपुर

दिनांक 14 सितम्बर, 1991 को, हिन्दी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर अपरान्ह 3 बजे मनोरंजन कक्ष में महाप्रबन्धक श्री एम० वेंकटरामन् की अध्यक्षता में एक समारोह आयोजित किया गया, जिसमें निर्माणी के अधिकारियों और बड़ी संख्या में कर्मचारियों के अलावा मुख्य अतिथि के रूप में मुख्य आयकर आयुक्त एवं कानपुर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री जी.सी. अग्रवाल उपस्थित हुए। निर्माणी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं हिन्दी परिषद की ओर से अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि का फूल मालाओं से स्वागत किया गया। राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिव श्री आर.आर. नागर ने मुख्य तिथि का संक्षिप्त परिचय दिया। मुख्य अतिथि ने समारोह में सम्बोधन के पूर्व निर्माणी की राजभाषा पत्रिका "आस्त्रेय" के 5वें अंक का विमोचन किया। उन्होंने अपने भाषण में इस पत्रिका की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए इसके रूप रंग की भी खूब सराहना की। उन्होंने हिन्दी को राजभाषा के रूप में शीघ्रातिशीघ्र अपनाए जाने का आह्वान करते हुए कहा कि आज आवश्यकता है कि वातावरण में उसके अनुकूल तेजी से बदलाव लाया जाए क्योंकि संविधान में 15 वर्षों की समय सीमा के भीतर ही हिन्दी को राजभाषा का अपना उचित स्थान मिल जाना था किन्तु आज 40 वर्षों बाद भी वह कार्य पूर्ण नहीं हो सका है। इस कार्य के लिए उच्च अधिकारियों की भूमिका बड़ी ही महत्त्वपूर्ण होगी और अधिकारियों को इस कार्य में आगे आना चाहिए, उन्हें अपने दायरे में हिन्दी को उचित स्थान देना ही चाहिए। हिन्दी भाषियों का तो एक विशेष दायित्व है उन्हें हिन्दीपरक वातावरण के सृजन में सर्वाधिक योगदान करना चाहिए और वे इस कार्य में अहिन्दी भाषियों का भी सप्रेम सहयोग लें। उन्होंने अपने भाषण के अन्त में पत्रिका के लिये एवं निर्माणी में हिन्दी के लिये किये जा रहे सद्प्रयासों के लिये धन्यवाद दिया।

महाप्रबन्धक श्री एम. वेंकटरामन् ने विभिन्न पुरस्कारों का वितरण किया और मुख्य अतिथि द्वारा व्यक्त विचारों का जोरदार समर्थन करते हुए उनके सुझावों को अमल में लाने का आह्वान किया। उन्होंने अतिथि के सारगर्भित विचारों के लिये आभार प्रकट किया और समारोह को संबोधित करते हुये कहा कि देश में अधिकाधिक लोग हिन्दी जानते हैं फिर भी हिन्दी का प्रयोग सुगम बनाने के लिये आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी के लिये ऐसा वातावरण तैयार किया जाए कि अहिन्दी भाषी लोगों को भी हिन्दी बोझ न महसूस हो और उनमें इसके प्रति अरूचि न पैदा हो। यह कार्य हिन्दी जानने वालों व हिन्दी में कार्य करने वालों को करना होगा। हिन्दी के प्रयोग में सामान्य बोलचाल के शब्दों का प्रयोग भी आवश्यक है। ऐसा करने में जल्दी ही हिन्दी को राजभाषा का स्थान मिल सकता है। महाप्रबन्धक जी के संबोधन के बाद श्री डी.आर. नागपाल उप महाप्रबन्धक की अध्यक्षता में एक सरस कवि गोष्ठी आयोजित की गई जिसमें अखिल भारतीय स्तर के सुप्रसिद्ध कवियों ने भाग लिया।

अंत में श्री सी०के० दीक्षित, कार्यशाला प्रबन्धक एवं अध्यक्ष के०स०हि०प० शाखा लघु शस्त्र निर्माणी ने सभी के प्रति आभार प्रदर्शित किया जिसके साथ ही कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

प्रधान कार्यालय, महालेखाकार लेखा एवं हक तमिलनाडु, मद्रास

हिन्दी सप्ताह समारोह का उद्घाटन दीप जलाकर श्री. रा. अ. राव, आई.ए. एवं ए.एस., प्रधान महालेखाकार (ले व हक) ने किया। उन्होंने दीप जलाकर उद्घाटन की शुभ आरंभ की। सहायक महालेखाकार कु० शीबा जार्ज ने सदस्यों को स्वागत करते हुए हिन्दी भाषा के

उपयोग के बारे में भाषण दिया। इसके बाद हिन्दी नाटक "प्यार कहां तक" खेला गया।

सप्ताह के दूसरे दिन हिन्दी निबन्ध तथा हिन्दी टंकण प्रतियोगिताएं की गई। इसमें अठारह कर्मचारियों ने भाग लिया। कु. शीबा जार्ज, सहायक महालेखाकार (हिन्दी कक्ष) निर्णायक रहीं।

सप्ताह के तीसरे दिन हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता की गई। इसमें पांच प्रतियोगियों ने भाग लिया। श्रीमती गीता जोन्स, हिन्दी प्राध्यापिका ने निर्णय किया।

हिन्दी भाषण और संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इनमें ग्यारह कर्मचारियों ने भाग लिया। कु. शीबा जार्ज (सहायक महालेखाकार), अल्ली पद्मासिनी (लेखा अधिकारी), श्री कल्याण रामन (लेखा अधिकारी), और श्री सी.जी. सत्यनारायणन (सहायक लेखा अधिकारी) निर्णायक रहे।

समापन समारोह : हिन्दी सप्ताह में चलाई गई प्रतियोगिताओं में विजेता कर्मचारियों को प्रधान महालेखाकार महोदय ने पुरस्कार दिए। पिछले साल आयोजित हिन्दी प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ परीक्षाओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त कर्मचारियों को भी सम्मानित किया गया। पुरस्कार वितरण के बाद हिन्दी सुगम संगीत कार्यक्रम चलाया गया। कलाकार थे श्रीमती एच.एस. कुसुमा, श्री सी.जी. सत्यनारायन, श्री एस. रामस्वामी और श्री के.आर. प्रकाश।

राष्ट्र गान के साथ समारोह समाप्त हुआ।

भारत निर्वाचन आयोग सचिवालय

प्रति वर्ष की भांति भारत निर्वाचन आयोग में हिन्दी सप्ताह/हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। हिन्दी सप्ताह 9 सितम्बर, 1991 से शुरू किया गया और 13 सितम्बर, 1991 को हिन्दी दिवस की पूर्व संध्या को समापन समारोह किया गया। हिन्दी सप्ताह के दौरान--हिन्दी टाइपिंग, हिन्दी टिप्पण और प्रारूपण तथा हिन्दी निबन्ध लेखन प्रतियोगिताएं की गई। प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतियोगियों का विवरण निम्नानुसार है :--

हिन्दी टाईपिंग प्रतियोगिता

प्रथम : श्री आर.पी. मेहन्दिया

द्वितीय : श्रीमती पूनम सारंग

तृतीय : श्री बी.एम. जोशी

हिन्दी टिप्पण प्रारूपण प्रतियोगिता

प्रथम : श्री राजीव कुमार श्रीवास्तव, श्री तपस कुमार

द्वितीय : श्री एस.के. रूडोला, श्री एस.के. मजुमदार

तृतीय : सुश्री बलजीत कौर, श्री एस के मित्रा

हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता

प्रथम : श्री एस.के. रूडोला, श्री तपस कुमार

द्वितीय : श्री राजीव कुमार श्रीवास्तव, श्री ए.एन. घोष

तृतीय : श्री आर.पी. मेहन्दिया, श्री एस के. मजूमदार

सभी पुरस्कार दिनांक 13-9-1991 को आयोजित हिन्दी दिवस पर प्रधान सचिव ने विजेताओं को दिए। इसी अवसर पर, हिन्दी प्रश्न-मंच प्रतियोगिता की गई, जिसका संचालन सहायक निदेशक (रा.भा.) श्री जीत सिंह ने किया। प्रतियोगिता में 2-2 प्रतियोगियों की 4 टीमें "क" "ख" "ग" "घ" बनाई गई थी। इनमें से प्रथम और द्वितीय आने वाली टीमों को तथा दर्शकों से पूछे गए प्रश्नों में से चार कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया जो इस प्रकार हैं :--

प्रथम टीम "घ"

श्री राजीव कुमार श्रीवास्तव, श्री एस.के. रूडोला

द्वितीय टीम "ख"

श्री हरिसिंह बैंसोया, श्री एस.के. मित्रा

पुरस्कृत दर्शक

श्री राजमल भाटिया, श्री खिला सिंह रावत,

श्री नरेन्द्रनाथ बुटोलिया, श्रीमती हरविन्दरजीत कौर

उप निर्वाचन आयुक्त श्री डी.एस. बग्गा ने सशक्त शब्दों में हिन्दी के प्रति अपनी आस्था का परिचय दिया। उन्होंने कहा "जब तक हिन्दी जिन्दा है, देश जिन्दा है। हमारे संस्कार हिन्दी से जुड़े हुए हैं और हमें इन्हें पानी देते रहना है। हिन्दी कोई मिट्टी की मूर्ति नहीं है जो पानी से पिघल जाएगी।

श्री बग्गा ने हिन्दी के शुद्ध उच्चारण की प्रतियोगिता रखी जिसमें श्री तपस कुमार को प्रथम घोषित किया गया और उन्हें पुरस्कृत करने की घोषणा की और विजेताओं को पुरस्कारों के साथ-साथ प्रमाणपत्र भी दिए। सहायक निदेशक (रा.भा.) ने आभार व्यक्त किया।

केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान, लखनऊ

दिनांक 14-20 सितम्बर, 1991 के मुख्य हिन्दी दिवस/सप्ताह समारोह 1991 के साथ हिन्दी निबन्ध, आलेखन-टिप्पण लेखन तथा भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। मुख्य समारोह दिनांक 19 सितम्बर, 1991 को संस्थान के मुख्य प्रेक्षागृह में आयोजित

किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री श्रीलाल शुक्ल थे जिनका अभिनन्दन संस्थान के निदेशक डॉ. भोलानाथ धावन ने किया। इस अवसर पर कवि-गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमे हिन्दी के प्रसिद्ध कवियों सर्वश्री ठाकुर प्रसाद सिंह, अनूप श्रीवास्तव, ज्योति शंकर, सुहेल काकोरवी, आफताब लखनवी, हसन काजमी, श्याम मिश्र, आलोक शुक्ल, शैलेन्द्र नाथ मेहरोत्रा, सूर्य कुमार पाण्डेय एवं मधुरिमा सिंह ने अपनी कविताओं से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। इस कवि-गोष्ठी का संचालन एवं अध्यक्षता कविवर श्री ठाकुर प्रसाद सिंह ने किया।

मुख्य अतिथि ने हिन्दी दिवस एवं सप्ताह समारोह के अन्तर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं के निम्नलिखित विजेताओं को पुरस्कार दिए :—

निबन्ध प्रतियोगिता (कुल प्रतियोगी 20)

कु. अपर्णा, श्रीमती पुष्पा पटनायक, श्री मलखान सिंह श्री एम प्रकाश, श्री साजु पी. नायर।

आलेखन-टिप्पण लेखन प्रतियोगिता (कुल प्रतियोगी 21)

श्री मुकेश कुमार जैन, श्री शिवाकान्त, श्री जानकी प्रसाद चतुर्वेदी, श्री एम. प्रकाश, श्री साजु पी. नायर

भाषण प्रतियोगिता (कुल प्रतियोगी 16) :

श्रीमती पुष्पा पटनायक, श्रीमती सफिया नसीम, श्री जानकी प्रसाद चतुर्वेदी।

डॉ. पी.वाई. गुरू, श्री साजु पी. नायर, श्री एम. प्रकाश।

अन्त में संस्थान के निदेशक डॉ. भोलानाथ धावन ने मुख्य अतिथि श्री श्रीलाल शुक्ल एवं कवि-गोष्ठी के संचालक/अध्यक्ष श्री ठाकुर प्रसाद सिंह को अलग-अलग स्मृति-चिह्न प्रदान किया एवं उनके प्रति आभार व्यक्त किया।

संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य एवं प्रसिद्ध रंगकर्मी डॉ. अनिल कुमार रस्तोगी ने कवि-गोष्ठी को सफल बनाने के लिए मुख्य अतिथि एवं आमन्त्रित कवियों के प्रति आभार व्यक्त किया तथा साथ ही अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी दिवस/सप्ताह समारोह आयोजन को सफल बनाने हेतु धन्यवाद दिया।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग नई दिल्ली

दिनांक 16-20 सितम्बर 1991 तक "हिन्दी सप्ताह" उत्साहपूर्वक मनाया गया। सप्ताह में विभाग में "निबंध", टिप्पणी और प्रारूप लेखन और "वाक्" प्रतियोगिताएं की गईं। प्रतियोगिताओं में बड़ी संख्या में कर्मचारियों ने भाग लिया। इनमें 29 कर्मचारियों ने पुरस्कार जीते जिन्हें सचिव, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, डा. पि. राम राव ने दि. 20 सितम्बर को "हिन्दी सप्ताह समापन समारोह" के अवसर पर दिए। सचिव महोदय ने विभाग के अधिकारियों, विशेषकर वैज्ञानिकों तथा कर्मचारियों से हिन्दी में अधिक-से-अधिक कार्य करने का आग्रह किया।

अंत में भारत सरकार के गीत एवं नाटक प्रभाग के कलाकारों ने एक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान देहरादून

दि. 16-20 सितम्बर, 1991 तक "हिन्दी सप्ताह" बड़े उत्साह से मनाया गया। सप्ताह में वाद-विवाद, निबंध (आशु) और अंतर कार्यालयीन कविता-पाठ प्रतियोगिताएं की गईं। अंतर कार्यालयीन कविता पाठ प्रतियोगिता में देहरादून के लगभग 12 कार्यालयों ने भाग लिया। इसमें केवल स्वरचित कविताएं ही आमंत्रित की गई थीं। कविताओं ने श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया। दि. 20 सितम्बर, 1991 को हिन्दी सप्ताह समारोह पुरस्कार वितरण के साथ समाप्त हुआ। इस अवसर पर संस्थान के भूतपूर्व निदेशक डा. एस.सी.डी. शाह मुख्य अतिथि थे।

राइफल फैक्टरी ईशापुर (पं. बंगाल)

14 सितम्बर 1991 को केन्टीन हाल में हिंदी दिवस समारोह भव्यता तथा गरिमा के साथ हुआ।

इस अवसर पर हिन्दी कविता-पाठ, वाद-विवाद तथा निबन्ध लेखन प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पाने वाले 18 प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र भी दिए गए। श्री बागीश दत्त तिवारी, सहायक निदशक (पूर्व) ने हिंदी भाषा को आमतौर पर बोली और समझी जानेवाली भाषा बताया।

श्री पी. के. घोष चौधरी, महाप्रबन्धक (राइफल फैक्टरी, ईशापुर) ने समारोह के आयोजन के लिये सभी सम्बन्धित व्यक्तियों तथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों की प्रशंसा की तथा कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति लगन और उत्साह को काफी सराहा। उन्होंने आश्वासन दिया कि हिन्दी के प्रसार हेतु वे हर संभव प्रयास करूंगा।

श्री आर.पी. जौहरी, संयुक्त महाप्रबन्धक एवं अध्यक्ष, (राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने) धन्यवाद ज्ञापन किया।

श्री राजवीरसिंह, सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने निर्माणी में हिन्दी की हुई प्रगति की समीक्षा की तथा समारोह का संचालन श्री योगेन्द्र झा, श्रम अधिकारी, ने किया।

लघु शस्त्र निर्माणी कानपुर

दिनांक 14 सितम्बर 1991 को, महाप्रबन्धक श्री एम. वेंकटरामन की अध्यक्षता में समारोह किया गया, जिसमें निर्माणी के अधिकारियों और बड़ी संख्या में कर्मचारियों के

अलावा मुख्य अतिथि के रूप में आयकर आयुक्त एवं कानपुर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री जी.सी. अग्रवाल उपस्थित हुए। निर्माणी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं हिन्दी परिषद की ओर से अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि का फूल मालाओं से स्वागत किया गया। राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिव श्री आर.आर. नागर ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया। मुख्य अतिथि ने राजभाषा पत्रिका "आस्त्रेय" के 5 वें अंक का विमोचन करके पत्रिका की सराहना की। उन्होंने हिन्दी को राजभाषा के रूप में शीघ्रातिशीघ्र अपनाये जाने का आह्वान किया।

महाप्रबन्धक श्री एम. वेंकटरामन् ने पुरस्कारों का वितरण किया और अध्यक्षीय भाषण में मुख्य अतिथि के विचारों का जोरदार समर्थन किया। श्री डी.आर. नागपाल उप महाप्रबन्धक की अध्यक्षता में कवि गोष्ठी की गई जिसमें अखिल भारतीय स्तर के कवियों ने भाग लिया।

श्री सी.के. दीक्षित, कार्यशाला प्रबन्धक एवं अध्यक्ष के.स.हि.प. शाखा (लघु शस्त्र निर्माणी) ने सभी के प्रति आभार प्रदर्शित किया।

केन्द्रीय उत्तर में दानी उद्यान संस्थान
बी–217 इन्दिरा नगर, लखनऊ

7 से 13 सितम्बर 1991 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया एवं 13 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया गया। हिन्दी सप्ताह के अवसर पर समस्त अधिकारों कर्मचारियों से अनुरोध किया गया था कि वे इस दौरान अपना सरकारी कार्य हिन्दी में ही करें। प्रशासन में लगभग समस्त कार्य हिन्दी में ही किए गए। वैज्ञानिकों और तकनीशियनों ने भी प्रशासनिक मामलों से संबंधित कार्य हिन्दी में ही किए।

13 सितम्बर 1991 को हिन्दी दिवस के अवसर पर संस्थान के मुख्यालय इन्दिरा नगर में वाद-विवाद व हिन्दी प्रश्नमंच प्रतियोगिताएं की गई। वाद-विवाद का विषय था —"बदलते परिवेश में हिन्दी की आवश्यकता।" तीन विजयी प्रतिभागियों को आकर्षक पुरस्कार दिए गए। श्री देवी शरण को प्रथम पुरस्कार, श्री प्रदीप कुमार कुलश्रेष्ठ को द्वितीय व श्री हरीश जोशी को तृतीय पुरस्कार मिले। "क्विज" प्रतियोगिता में 36 अधिकारी/कर्मचारियों ने भाग लिया। सर्वाधिक अंक पाने वाले तीन विजयी प्रतिभागियों को भी पुरस्कृत किया गया। प्रथम पुरस्कार—श्री सत्यदेव दीक्षित, द्वितीय–श्री शशि शर्मा, वैज्ञानिक और तृतीय श्री बब्बन प्रसाद शुक्ला को दिए गए प्रश्नमंच प्रतियोगित की विशेषता थी कि 100 अंकों के 100 से अधिक सामान्य प्रश्न थे जो राजभाषा हिन्दी, साहित्य, संस्कृति एवं अन्य राष्ट्रीय मामलों से संबंधित थे।

प्रतियोगिताओं के पश्चात् अधिकारी/कर्मचारियों ने राजभाषा/राष्ट्रभाषा हिन्दी के विषय में विचार व्यक्त किए। कविता पाठ का कार्यक्रम भी आकर्षक रहा। डा. एस.आर. अब्बास वैज्ञानिक और श्री एस.पी.एस. राठौर, सहायक लेखा एवं वित्त अधिकारी की कविताएं प्रशंसनीय रहीं। संस्थान के हिन्दी अधिकारी ने संस्थान में हुई हिन्दी प्रगति की वार्षिक रिपोर्ट भी प्रस्तुत की।

अन्त में संस्थान के निदेशक डा. सुशील सागर नेगी ने कर्मचारियों का आह्वान किया कि वे राष्ट्रभाषा हिन्दी का सम्मान करें और समस्त सरकारी काम-काज हिन्दी में ही करें।

निदेशक ने वर्ष 1990-91 के दौरान हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने वाले 6 कर्मचारियों को पुरस्कृत किया। श्री भुवन चन्द्र लोहानी प्रथम, श्री सत्यदेव प्रसाद दीक्षित–द्वितीय, श्री कैलाश चन्द्र, श्री श्याम सुन्दर अरोड़ा, श्री धीरज कुमार और श्री ए.के. सेठ को तृतीय पुरस्कार दिए गए। इन कर्मचारियों को हिन्दी प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के अन्तर्गत क्रमशः 400 रु., 200 रु. व 150 रु. नकद धनराशि के रूप में पुरस्कृत किया गया। दोनों प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को भी निदेशक ने पुरस्कार प्रदान किए।

केन्द्रीय टसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
नगड़ी, रांची

दिनांक 16.9.91 से 21.9.91 तक हिन्दी सप्ताह व्यापक पैमाने पर मनाया गया। कार्यशाला का उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ. क. तंगावेलु ने मंगलदीप जला कर किया। हिन्दी अधिकारी ने राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में अब तक प्राप्त प्रगति का ब्यौरा प्रस्तुत किया तथा संस्थान में राजभाषा हिन्दी की प्रगति में हिन्दी दिवस एवं हिन्दी सप्ताह के आयोजन की भूमिका पर प्रकाश डाला। संयुक्त निदेशक श्री के.एन. सिंह ने केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में हिन्दी दिवस/हिन्दी सप्ताह के उद्देश्य एवं महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए अधिक से अधिक काम हिन्दी में करने की अपील की। संयुक्त निदेशक श्री बी.आर.आर.प्र. सिन्हा ने राजभाषा हिन्दी के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए इसके उत्थान में हिन्दीतर भाषियों के योगदान की विशेष रूप से चर्चा की।

निदेशक डा. क. तंगावेलु देश की एकता के लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी के महत्त्व पर विशेष प्रकाश डाला। उन्होंने अधिकारियों/कर्मचारियों से अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में ही करने की अपील की। धन्यवाद ज्ञापन उपनिदेशक श्री सुरेन्द्र प्रसाद ने किया।

दिनांक 16-9-91 को शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 33 प्रतियोगी सम्मिलित हुए। डा. पी.पी. श्रीवास्तव ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। दूसरा स्थान संयुक्त रूप से सहायक अधीक्षक श्री एस.के. घोष एवं सहायक

श्रीमती जोगिन्दर शेरगील ने प्राप्त किया। तीसरा स्थान व.अ.स., डॉ. राममूर्ति ने प्राप्त किया। द्वितीय वर्ग में श्री मदन मोहन भट्ट प्रथम स्थान, श्री देवाशीष पुरकायस्था एवं अधीक्षक श्री मनोरंजन दास क्रमशः द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे। इन्हें दिनांक 25-9-91 को हिन्दी सप्ताह के समापन समारोह में प्रमाण पत्र एवं नकद पुरस्कार दिए गए।

दिनांक 17-9-91 को आयोजित हिन्दी टिप्पण प्रारूपण प्रतियोगिता में 36 प्रतियोगी सम्मिलित हुए। प्रथम वर्ग में प्रथम स्थान सहायक अधीक्षक श्री एस.के. घोष ने प्राप्त किया। दूसरा स्थान सहायक श्री आनन्द सिंह ने एवं तीसरा स्थान संयुक्त रूप से व.अ.अ., डॉ. वरुण कुलश्रेष्ठ एवं सहायक श्रीमती जोगिन्दर शेरगील ने प्राप्त किया। द्वितीय वर्ग में श्री देवाशीष पुरकायस्था प्रथम स्थान पर रहे। दूसरा स्थान रिपोर्टर श्री के. स्वामीनाथन एवं तीसरा स्थान श्री मदन मोहन भट्ट ने प्राप्त किया। इन सभी को भी 25-9-91 को हिन्दी सप्ताह के समापन समारोह में नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र दिए गए।

दिनांक 25-9-91 को सांस्कृतिक कार्यक्रम और समापन समारोह हुए। अधिकारियों/कर्मचारियों ने सुरुचिपूर्ण नाटक, गजल, गीत, कविता, हास्य-व्यंग्य आदि प्रस्तुत किए। संस्थान के मणिपुरी स्नातकोत्तर प्रशिक्षणार्थियों जिनमें युवक व युवतियां दोनों शामिल थे, ने समूह गान, मणिपुरी नृत्य, थावल चोंगवा नृत्य, मूर्ति अभिनय (स्टेच्यू एक्टिंग) मिक्री आदि विभिन्न प्रकार के सुरुचिपूर्ण अभिनय, संगीत एवं कला प्रदर्शन किए। उत्तम अभिनय, संगीत एवं कला प्रदर्शन के लिए अधिकारियों, कर्मचारियों एवं प्रशिक्षणार्थियों को पुरस्कृत किया गया। मणिपुरी कार्यक्रमों में सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार थावलर-चोंगवा नृत्य को प्राप्त हुआ। सांस्कृतिक समारोह में श्रीमती कृष्णा पुरी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। श्री राम पाण्डेय एवं डॉ. राममूर्ति ने क्रमशः द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किए। अन्य प्रतिभागियों को भी सांत्वना पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

निदेशक डॉ. तंगावेलु ने समापन समारोह की अध्यक्षता की एवं विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कारों एवं प्रमाण-पत्रों से सम्मानित किया।

अपारंपरिक ऊर्जा स्रोत विभाग

हिन्दी दिवस 16 सितम्बर, 1991 को मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता विभाग के सचिव श्री राधा कान्त शर्मा ने की। संयुक्त सचिव ने विभाग में राजभाषा के प्रयोग में हुई उपलब्धियों का उल्लेख किया। श्री अशोक कुमार, अवर सचिव ने हिन्दी दिवस के महत्व को बताते हुए कहा कि 14 सितम्बर, 1949 को भारत की संविधान सभा ने हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। सात प्रतियोगिताएं रखी गई : (1) हिन्दी निबन्ध (2) हिन्दी टिप्पण आलेखन (3) हिन्दी टाइप/हिन्दी आशु-लिपि (4) कविता (5) भाषण (6) आदर्श कथन, वाक्य-नारा तथा (7) अंत्याक्षरी प्रतियोगिता। सचिव महोदय ने सफल प्रतियोगियों को पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र और वर्ष के दौरान आयोजित हिन्दी कार्यशाला में भाग लेने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रमाण पत्र दिए।

निम्नलिखित कर्मचारियों/अधिकारियों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार दिए गए :

निबंध प्रतियोगिता

(1) श्री कालीचरन, श्री लाल चन्द को प्रथम पुरस्कार 200 रुपये। (2) श्री नंद किशोर जोशी, श्री एस. सुन्दरम को द्वितीय पुरस्कार 150/- रुपये। (3) श्री महेश चन्द शर्मा श्री एम.एस. वेंकटाचलम् को तृतीय पुरस्कार 100/- रुपये।

हिन्दी टिप्पण और आलेखन प्रतियोगिता

निम्नलिखित अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया :—

प्रथम वर्ग

(1) श्री गोविन्द कुमार मिश्र, कनि.तक. सहायक प्रथम पुरस्कार, 200 रुपये।

(2) श्री नंद किशोर जोशी, सहायक, द्वितीय पुरस्कार, 150 रुपये।

(3) श्री विश्वामित्र मेहता, डेस्क अधिकारी, तृतीय पुरस्कार 100 रुपये।

द्वितीय वर्ग

(1) श्री एम.एस. वेंकटाचलम् आशुलिपिक "सी" द्वितीय पुरस्कार 150 रुपये।

(2) श्रीमती कनका बालचन्द्रन्, आशुलिपिक "डी" तृतीय पुरस्कार 100 रुपये।

हिन्दी टाइप

निम्नलिखित कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया :

(1) श्री जगदेव सिंह, प्रथम पुरस्कार, 200 रु.।

(2) श्री राम नारायण, द्वितीय पुरस्कार, 150 रु.।

(3) कुमारी सरिता रानी, तृतीय पुरस्कार, 100 रु.।

हिन्दी आशुलिपि

(1) कुमारी सरिता रानी प्रथम पुरस्कार 200 रुपये।

कविता पाठ प्रतियोगिता

कविता पाठ प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, आदर्श कथन/नारा प्रतियोगिता और अंत्याक्षरी प्रतियोगिता समारोह

के दौरान हुई। कविता पाठ प्रतियोगिता में निम्नलिखित अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कार दिए गए :—

(1) श्री ईश्वर चन्द्र, श्री अशोक घोष, प्रथम पुरस्कार 200 रुपये।

(2) श्री दूधनाथ मेहतो, श्री एस. सुन्दरम्, द्वितीय पुरस्कार 150 रुपये।

(3) श्री मान सिंह, श्री वी. कृष्णामूर्ति, तृतीय पुरस्कार 100 रुपये।

भाषण प्रतियोगिता

भाषण प्रतियोगिता के दो विभाग रखे गए थे :—

(1) धर्मनिरपेक्षता।

(2) राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग।

निम्नलिखित अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कृत घोषित किया गया :—

(1) श्री दूधनाथ मेहतो, श्री वी. कृष्णामूर्ति, प्रथम पुरस्कार, 200 रुपये।

(2) श्री ईश्वर चन्द, श्री के. आर. वेंकटाचलम, द्वितीय पुरस्कार, 150 रुपये।

(3) श्री राकेश रामन, श्री एस. सुन्दरम, तृतीय पुरस्कार 100 रुपये।

आदर्श कथन/नारा प्रतियोगिता

आदर्श कथन/नारा प्रतियोगिता में विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों ने अपारंपरिक ऊर्जा स्रोतों और राजभाषा हिन्दी के संबंध में आकर्षक कथन, वाक्य, नारे, आदि सुनाए। इस प्रतियोगिता में निम्नलिखित अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कार दिए गए :—

(1) श्री रणजीत सिंह सौंढ़ी, प्रथम पुरस्कार 200 रुपये।

(2) श्री जोगिन्दर सिंह भाटिया, द्वितीय पुरस्कार 150 रुपये।

(3) श्री ईश्वर चन्द्र, तृतीय पुरस्कार 100 रुपये।

(1) श्री वी. कृष्णामूर्ति, प्रथम पुरस्कार 200 रुपये।

(2) श्री एस. सुन्दरम्, द्वितीय पुरस्कार 150 रुपये।

(3) श्री के. आर. वेंकटाचलम्, 'सी' तृतीय पुरस्कार। 100 रुपए।

अंत्याक्षरी प्रतियोगिता

निम्नलिखित कर्मचारियों के चार-चार के वर्ग में दो समूह बनाए गए। इन सभी कर्मचारियों को 200 रुपए की राशि पुरस्कार स्वरूप दी गई।

श्री गोविन्द कुमार मिश्र, श्री रणजीत सिंह सौंढी, श्री नंद किशोर जोशी, श्री विरेन्द्र सिंह, श्री अवतार सिंह बंगा, श्री अशोक घोष, श्री एस सुन्दरम्, श्री हरविलास सिंह।

उपर्युक्त प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त, इस विभाग में पिछले वर्ष चलाई गई हिन्दी टिप्पण/प्रारूप लेखन प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित अधिकारियों/कर्मचारियों को उनके द्वारा किए गए सराहनीय कार्य के लिए पुरस्कृत किया गया।

(1) डा. राकेश रामन, वरि. वै. अधि., प्रथम पुरस्कार 500 रुपये।

(2) श्री गोविन्द कुमार मिश्र, कनि. तक. सहा. द्वितीय 300 रुपये।

(3) श्री नन्द किशोर जोशी, सहायक, तृतीय पुरस्कार 150 रुपये।

सचिव महोदय ने अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अधिक से अधिक काम हिन्दी में करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने विभाग में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में किए गए प्रयत्नों की, विशेषतया जयंती समारोहों के मनाने की सराहना की तथा आदेश दिया कि जयंती समारोहों की संख्या बढ़ाई जाए।

केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

दिनांक 8 अक्तूबर से 11 अक्तूबर 1991 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। 21 अक्तूबर को हिन्दी दिवस के रूप में हिन्दी सप्ताह समारोह का समापन हुआ।

इस अवसर पर निबंध, टिप्पण, प्रारूपण, टंक लेखन, अंग्रेजी हिन्दी शब्द अर्थ व वाद-विवाद प्रतियोगिताएं की गई जिनमें बड़ी संख्या में अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

डॉ. महेन्द्र सिंह यादव निबंध, श्री अफजल खान नवाज खान टिप्पण–प्रारूपण, श्रीमती शैला कुलकर्णी टंक लेखन, डा. रामरतन शब्द अर्थ व श्री एजाज अहमद ने वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किए। वर्ष भर में किए गए हिन्दी के सार्वाधिक कार्यालयीन कार्य के लिए श्री एजाज अहमद को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

हिन्दी दिवस का उद्घाटन दीप प्रज्वलन व सरस्वती वंदना के साथ हुआ। इस अवसर पर सुपरिचित साहित्यकार डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र ने कहा कि सभी को हिन्दी में कार्य करके राज-भाषा को प्रतिष्ठित करने में अपना सहयोग प्रदान करना चाहिए। निदेशक डॉ. ए. के. बसु ने कहा कि संस्थान में हिन्दी के कार्य की प्रगति हुई है और मुझे विश्वास है कि भविष्य में हिन्दी का प्रयोग और बढ़ेगा। इस अवसर पर संस्थान की प्रथम हिन्दी पत्रिका "श्वेत स्वर्णिमा" का विमोचन भी हुआ।

डॉ. शिवराज, विभागाध्यक्ष, पौध रोग विज्ञान विभाग एवं प्रभारी अधिकारी "राजभाषा" ने मंच का संचालन किया व संस्थान में हुए हिन्दी के कार्य का विवरण दिया।

योजना आयोग

सितम्बर, 1991 में हिन्दी पखवाड़ा दिनांक 16-9-91 से 27-9-91 तक मनाया गया। इसके दौरान निबंध, भाषण हिन्दी आशुलिपि और हिन्दी टाईपिंग प्रतियोगिताएं की गई

मंत्री जी की ओर से अपील भी जारी की गई जिसमें अपील की गई कि रोजमर्रा के काम में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करें। हिन्दी पखवाड़े के दौरान जो प्रतियोगिताएं की गई थी और उनमें जिन प्रतियोगियों ने पुरस्कार जीते थे उन्हें योजना राज्य मंत्री श्री हंस राज भारद्वाज ने पुरस्कार दिये। दिनांक 16-9-91 से 27-9-91 तक आयोजित हिन्दी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार पाने वालों की सूची :—

श्री मोहिन्दर कुमार, श्रीमती उषा गुप्ता, श्री मंजीत सिंह मूंजाल, श्री किशन लाल, श्री वीरेन्द्र सिंह, श्री डामी मनोज कुमार, श्रीमती कुसुम रानी सिंघल, श्री सी. एस. निगम, श्रीमती प्रमिला त्यागी, श्रीमती निर्मल छिब्बर, श्री रमेश सिंह, श्री सुरेन्द्र कुमार नागी, श्रीराम दत्त।

राष्ट्रीय पुनर्वास प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, कटक, उड़ीसा

संस्थान में इस वर्ष हिन्दी/दिवस सप्ताह 16 सितम्बर 91 एवं 20 सितम्बर 91 को मनायी गया। उद्घाटन भाषण में विंग कमां. एस.एन. महान्ति (सेवानिवृत्त) निदेशक ने हिन्दी में कामकाज पर बल देते हुए कहा कि हिन्दी जानने वाले सभी कर्मचारियों को चाहिए कि वे कार्यालयीन कामकाज हिन्दी में करे ताकि अहिन्दी भाषी कर्मचारी उनसे प्रोत्साहित होकर हिन्दी सीखना आरंभ करेंगे।

आयोजित प्रतियोगिताओं में सफल विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गये जिनके नाम इस प्रकार हैं :—

कर्मचारियों हेतु प्रतियोगिताएं

निबंध प्रतियोगिता

श्रीमती विनोदिनी मेहेर, कुमारी मीना बराई, श्री. पुरूषोतम भोई, श्री. श्रीनिवास महापात्र, श्री एम. रामकिशन।

हिन्दी टाईपिंग प्रतियोगिता

श्री बसन्त कुमार सेठी, श्री सुदीराम मारंडी, श्री रमेश चंद्र बेहेरा, श्री रघुनाथ आचार्य।

टिप्पण, आलेखन प्रतियोगिता

श्रीमती इंदु सिंघा, श्री श्रीनिवास महापात्र, श्री रामचन्द्र साहू, श्री वसन्त कुमार सेठी, श्री एम. डी. वर्मन।

कविता पाठ प्रतियोगिता

श्रीमती विनोदिनी मेहेर, श्री पी. के. जेना, श्री गोपाल पात्र, श्री रंजन दास।

भाषण प्रतियोगिता

डा. आर. एन. महान्ति, कु. मीना बराई, श्री एस. एन. राउत, कु. सुजाता सिकदार।

20 सितम्बर 91 को "हिन्दी दिवस" के उपलक्ष्य में छात्र-छात्राओं के लिए आयोजित की गयी प्रतियोगिताएं:—

निबंध प्रतियोगिता—"ख" वर्ग

कु. प्रियदर्शिनी त्रिपाठी, दिप्ती मित्रा, शशीधर राव, स्नेहधन, फरजाना शमीम।

निबंध प्रतियोगिता—"अ" वर्ग

संजय ठुकराल, सुनील कमार शर्मा, अर्चना रोहिल्ला, मदन मोहन तिवारी, राजीव मित्तल।

चुटकला वाक प्रतियोगिता

दीपक कुमार, राजीव मित्तल, सुनील शर्मा, आनन्द तिवारी।

कविता पाठ प्रतियोगिता

अखौरी गौरांग सिन्हा, शालिनी महेन्द्र, सुनील शर्मा।

भाषण प्रतियोगिता—"अ" वर्ग

अखौरी गौरांग सिन्हा, विकास शर्मा, आनन्द तिवारी ब्रजेश कपूर।

भाषण प्रतियोगिता—"ब" वर्ग

प्रियदर्शिनी त्रिपाठी, फरजाना शमीम, रूपेश दोषी, नवनीता चक्रवर्ती।

इस दिवस पर राजभाषा प्रश्नमंच का आयोजन भी किया गया। प्रश्नमंच में राजभाषा से संबंधित प्रश्न पूछे गये। प्रत्येक सही उत्तर बताने वाले को पुरस्कृत किया गया। इस तरह प्रश्न मंच में 20 पुरस्कारों को वितरित किया गया वहां उपस्थित सभी कर्मचारियों ने प्रश्न-मंच में सोत्साह भाग लिया।

सरकारी कामकाज मूल रूप से हिन्दी में करके, जिन कर्मचारियों ने 10 हजार शब्दों का लक्ष्य वर्ष भर में पूरा किया, उन कर्मचारियों को मिलाकर अन्य चार कर्मचारियों को भी उनके संतोषपूर्ण कार्य के लिए पुरस्कृत किया गया।

"प्रवीण" परीक्षा में विशेष अंकों से उत्तीर्ण श्री एम. डी. वर्मन, निदेशक को, नियमानुसार रु. 150 की नकद राशि से सम्मानित किया गया।

भाषा विभाग, राजस्थान

अखिल भारतीय संपर्क हेतु भाषिक सेतु की तलाश संगोष्ठी

भाषा विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा दिनांक 13 सितम्बर, 91 को "हिन्दी दिवस" की पूर्व संध्या पर राजस्थान विश्वविद्यालय के एकेडेमिक स्टाफ कालेज में हिन्दी दिवस समारोह किया गया। इस अवसर पर "अखिल भारतीय संपर्क हेतु भाषिक सेतु की तलाश" विषयक विभिन्न भाषाविदों की संगोष्ठी की गई और राजभाषा हिन्दी के बहुआयामी विकास व उपलब्धियों को दर्शाने वाली राजभाषा प्रदर्शनी भी लगाई गई।

समारोह की अध्यक्षता राजस्थान सरकार के शिक्षा एवं भाषा मंत्री श्री हरिकुमार औदीच्य ने की तथा प्रमुख अतिथि थे जगत के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विशेषज्ञ एंव चिकित्सक राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति डा. रामेश्वर शर्मा।

सर्वप्रथम शिक्षा एवं भाषा मंत्री श्री हरि कुमार औदीच्य ने हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान राजर्षि पुरूषोत्तम दास जी टंडन के चित्र पर माल्यार्पण किया तथा दीप प्रज्जवलित कर के राजभाषा प्रदर्शनी तथा "संगोष्ठी" का उद्घाटन किया। अखिल भारतीय संपर्क हेतु भाषिक सेतु की तलाश संगोष्ठी का शुभारम्भ महारानी गायत्री देवी स्कूल की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत मधुर गीत "भारत जननी एक हृदय हो" के साथ हुआ। विषय प्रवर्तन करते हुए राजस्थान सरकार के भाषा निदेशक श्री कलानाथ शास्त्री ने बताया कि भाषिक एवं राष्ट्रीय एकता के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी ने एक सेतु का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। विभिन्न भारतीय भाषाओं को जोड़ने वाली कड़ी के रूप में हिन्दी की अनिवार्यता सर्व-विदित व सर्वमान्य है। आज भी राजभाषा हिन्दी की शब्दावली सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करते हुए संकलित की जा रही है।

शिक्षा एवं भाषा मंत्री श्री हरिकुमार औदीच्य ने कहा कि राजस्थान एक ऐसा प्रदेश है जिसने सर्वप्रथम संविधान लागू होने के साथ ही हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकारा।

शिक्षा एवं भाषा सचिव श्री आई. सी. श्रीवास्तव ने बताया कि राजस्थान पहला प्रदेश है जहां सब न्यायालय तक हिन्दी में निर्णय देना सन 1976 से अनिवार्य है। उन्होंने राजस्थान में प्रशासन विधि, न्याय व शिक्षा क्षेत्र में हिन्दी की प्रगति की जानकारी भी दी।

इस अवसर पर मराठी भाषा के विद्वान व दूरदर्शन जयपुर केन्द्र के कार्यक्रम अधिकारी डा. चन्द्र कुमार वरठे ने कहा कि भाषिक सेतु के रूप में हिन्दी की भूमिका अहम है।

बंगला भाषा के विद्वान तथा पूर्व कालेज शिक्षा निदेशक श्री आर. एन. चौधरी ने सूचित किया कि भाषिक सेतु के रूप में हिन्दी पूर्व में भी प्रतिष्ठित हो चुकी है। अब प्रश्न इस सेतु को व्यापक बनाने का है।

बंगला के दूसरे विद्वान तथा पुरातत्व विभाग के निदेशक श्री फणिलाल चक्रवर्ती ने कहा कि हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये हिन्दी भाषी लोगों को अधिक सक्रियता से काम करना आवश्यक है उन्होंने कहा कि बंगला ने हिन्दी के विकास में बहुत योगदान किया है।

उदयपुर विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर डा. कल्याण लाल शर्मा ने कहा कि कुछ समय पूर्व हिन्दी के सम्मान व अस्मिता का संकट उत्पन्न हुआ था जब उर्दू व अन्य प्रादेशिक भाषाओं ने अपने को हिन्दी से काट कर अपना अलग से अस्तित्व बनाए रखने के लिये आन्दोलनात्मक रुख अपनाया था।

प्रमुख अतिथि राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति डा. रामेश्वर शर्मा ने कहा कि हिन्दी भाषा देश की अभिव्यक्ति की सबसे सशक्त कड़ी है। तथा हिन्दी प्रयोग को सभी क्षेत्रों/विषयों पर लागू किया जा रहा है। प्रोस्पेक्टस इस वर्ष हिन्दी में छपते है तथा अन्य सामग्री को भी हिन्दी में बनाया जाता रहा है। भाषा विभाग के सहयोग से राजस्थान विश्वविद्यालय में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग और भी अधिक गति में हो, ऐसे प्रयास किए जा रहे हैं। इस अवसर पर राजस्थान विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार रोहित ब्राडन ने भी विचार प्रकट किए। विश्वविद्यालय की उप कुल सचिव डा. उषा भार्गव व रसायन शास्त्र के प्राध्यापक डा. पी. सी. भसीन तथा एकेडेमिक स्टाफ कालेज के निदेशक डा. एम. एल. सिसोदिया ने भी विचार प्रकट किए।

संगोष्ठी में विभिन्न भारतीय भाषाओं व राजस्थान विश्वविद्यालय के विद्वानों, राजस्थान प्रशासन के अधिकारियों तथा हिन्दी सेवियों व विभिन्न बैंकों के हिन्दी अधिकारियों ने भाग लिया।

मुख्यालय पश्चिम नौसेना कमान, बम्बई

मुख्यालय, पश्चिम नौसेना कमान, बम्बई एंव इसके अधीनस्थ सभी स्थापनाओं/यूनिटों और जहाजों में 16 सितम्बर से 20 सितम्बर 91 तक "हिंदी सप्ताह" मनाया गया। हिन्दी सप्ताह के दौरान हिन्दी निबन्ध वाक नोटिंग/ड्राफ्टिंग हिन्दी टाईपिंग तथा प्रश्न-मंच प्रतियोगिताएं की गई। हिन्दी सप्ताह के दौरान 19 सितम्बर को कमान स्तर पर आयोजित कवि सम्मेलन कर्मचारियों ने स्वरचित कविताओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसी अवसर पर हुई विचार-गोष्ठी का विषय था "हिंदी के कार्यान्वियन में कठिनाइयां एवं उनका समाधान"। श्रेष्ठ तीन कवियों एवं वक्ताओं को पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया।

हिन्दी सप्ताह के समापन के दिन 20 सितम्बर 91 को मुख्यालय में हुए समारोह में अफसर कमान इनचीफ, वाइस एडमिरल एच जानसन पीवीएसएम, वीएसएम, एसडी ने दीप प्रज्वलित करके समारोह का शुभारम्भ किया तथा हिंदी सप्ताह एवं वर्ष 1990-91 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार दिए। वर्ष 1990-91

के दौरान हिंदी में सर्वाधिक काम करने वाली स्थापनाओं को भी राजभाषा शील्ड प्रदान की गई। इस अवसर पर सभी स्थापनाओं के कमान अफसर मौजूद थे। कमान-इन-चीफ ने सभी विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि हमें अपने सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाना है तथा हिंदी के सरल और प्रचलित शब्दों का प्रयोग करना है। कमान शिक्षा अफसर कमोडोर पी कुमार ने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वागत किया तथा मुख्यालय में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में हुई प्रगति के बारे में जानकारी दी। हिंदी अधिकारी श्रीमती निर्मला द्विवेदी ने समारोह का संचालन किया।

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद मुख्यालय

सीएसआइआर मुख्यालय तथा उसकी विभिन्न राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं/संस्थानों में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिंदी दिवस समारोहों का आयोजन किया गया। विभिन्न प्रयोगशालाओं/संस्थानों में आयोजित हिंदी दिवस समारोहों में सभी कर्मचारियों ने उत्साह-पूर्वक भाग लिया।

सी एस आइ आर मुख्यालय में 16 सितम्बर, 1991 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया गया। इस समारोह में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लेते हुए अपना कामकाज हिंदी में करने का संकल्प लिया।

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला पुणे में इस अवसर पर पहली बार प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका 'एनसीएल आलोक' का विमोचन किया गया।

क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, भोपाल में 10-9-91 से 16-9-91 तक हिंदी सप्ताह मनाते हुए 16-9-91 को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रयोगशाला में विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे श्रुतलेख प्रतियोगिता, निबंध लेखन, टिप्पण लेखन तत्कालीन भाषा प्रतियोगिता एवं प्रश्न मंच के आयोजन किए गए।

क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, जम्मूतवी में हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर निबंध, कविता एवं भाषण प्रतियोगिताएं की गई।

केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की में हिंदी दिवस को "संकल्प दिवस" के रूप में मनाया गया जिसमें एक संकल्प पत्र जारी किया गया कि कर्मचारी अपना अधिकतम काम हिंदी में करेंगे।

केन्द्रीय औषधीय एवं संगध पौधा संस्थान लखनऊ, में 9 सितम्बर से 13 सितम्बर 1991 तक हिंदी सप्ताह मनाया गया जिसमें पत्र लेखन, टिप्पण लेखन तथा आशुभाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला भुवनेश्वर में हिंदी दिवस के अवसर पर कविता पाठ, हिंदी निबंध लेखन, टिप्पण-प्रारूपण लेखन तथा हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रयोगशाला में हिंदी दिवस समारोह की समाप्ति के अवसर पर 29-9-1991 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कर्मचारियों को हिंदी में नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग की जानकारी दी गई तथा उन्हें इसका अभ्यास कराया गया।

प्रकाशन एवं सूचना निदेशालय, नई दिल्ली में 18-9-1991 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिंदी प्रगति का साल भर का लेखा जोखा एवं वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। इसके अतिरिक्त निदेशालय के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके बच्चों के लिए आशु-व्याख्यान प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। साथ ही कविता पाठ, राष्ट्रभक्ति गीत गायन तथा हिंदी में कार्य करने का सामूहिक संकल्प भी लिया गया।

भारतीय पट्रोलियम संस्थान देहरादून में 18 व 19 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर दो पृष्ठीय मासिक पत्रिका "विकल्प" का विमोचन किया गया। साथ ही निबंध एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताओं, प्रश्न मंच एवं नाटक का आयोजन भी किया गया।

आइआइसीटी एनजीआइ एवं सीसीएमबी, हैदराबाद— तीनों संस्थानों के सम्मिलित प्रयासों से एनसीजी आरआइ में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन 18 सितम्बर को किया गया। इस अवसर पर निबंध, वाक्, स्मृति एवं टंकण प्रतियोगिताओं का तथा साथ ही तीन दिवसीय हिंदी कार्य-शाला का भी आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय समुद्र-विज्ञान संस्थान, गोवा में 16 से 19 सितम्बर तक हिंदी सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर संस्थान द्वारा हिंदी कार्यशाला एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे–सुलेख तथा हस्ताक्षर, निबंध, वाद-विवाद, टिप्पण लेखन एवं गायन का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला नई दिल्ली में 16 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाते हुए टिप्पण लेखन एवं टंकण प्रति-योगिताओं का आयोजन किया गया तथा हिंदी में काम करने वाले कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया।

निस्टैड्स, नई दिल्ली में 17 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाते हुए में हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं एवं संदर्भ-साहित्य तथा हिंदी कंप्यूटर और टाइपराइटरों के प्रयोग का प्रदर्शन किया गया। साथ हिंदी टंकण परीक्षा का आयोजन भी किया गया तथा हिंदी में काम करने वाले कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया।

केन्द्रीय खनन संस्थान धनबाद में 9 से 25 सितम्बर तक हिंदी पखवारा मनाया गया। इस अवसर पर कर्मचारियों एवं उनके बच्चों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जैसे टिप्पण, अनुवाद, निबंध, टंकण तथा कविता पाठ।

केन्द्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली में 13 तथा 16 सितम्बर को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया । इस समारोह में प्रशासनिक एवं तकनीकी शब्दावली प्रतियोगिता प्रारूप लेखन प्रार्थना पत्र लेखन तथा भाषण प्रतियोगिताओं एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

राष्ट्रीय वैमानिकीय प्रयोगशाला, बंगलौर में 19 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया गया । प्रयोगशाला में वार्षिक रिपोर्ट के हिंदी रूपान्तर का विमोचन किया गया तथा हिंदी निबंध लेखन वाद-विवाद, गीत प्रतियोगिताएं तथा हिंदी प्रश्नोतरी का आयोजन किया गया । इस अवसर पर एक लघु नाटक का मंचन भी किया गया ।

भारतीय रासायनिक जीव विज्ञान संस्थान, कलकत्ता में 18 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाते हुए टिप्पण तथा मसौदा लेखन, निबंध लेखन, वाद-विवाद एवं कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

इसके अतिरिक्त, एस ई आर सी, गाजियाबाद, सी एस आई ओ, चण्डीगढ़, आई एम टी, चण्डीगढ़ तथा सी एस ई आर आई, दुर्गापुर में भी हिंदी दिवस समारोहों का आयोजन किया गया ।

आयकर आयुक्त कार्यालय
तिरुअनंतपुरम

आयकर विभाग के तिरुअनंतपुरम प्रभार के कार्यालयों में 14 सितंबर, 1991 से 20 सितम्बर, 1991 तक हिंदी सप्ताह समारोह का भव्य आयोजन किया गया । प्रभार की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं आयकर आयुक्त (अपील) श्री एच.एस. सुब्रहमण्य की ओर से दिनांक 13-9-91 को जारी किए गए विशेष राजभाषा संदेश से समारोह का शुभारंभ हुआ । आयुक्त ने अपने संदेश में सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अपील की कि हिंदी के प्रयोग में प्रगति लाने के लिए प्रत्येक सदस्य अपना योगदान अवश्य करें ।

केंद्रीय हिंदी समिति के भूत-पूर्व सदस्य एवं जाने माने साहित्यकार प्रोफेसर सी.जी. राजगोपाल ने समारोह का उद्घाटन किया । उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हिंदी भारत की संविधान सम्मत राजभाषा है तथा कार्यालयों में इसका प्रचार एवं विकास खुले ढंग से होना चाहिए । समारोह की सर्व मंगल प्रदान करते हुए उन्होंने आह्वान किया कि वे अपने कार्यालयों के दैनिक कामकाजी हिंदी में समर्पित भाव से निभाने का भरसक प्रयास करें ताकि हिंदी पूरी तरह प्रशासन की मुख्य भाषा बन जाए । श्रीमती जयश्री रामचन्द्रन, आयकर उप आयुक्त (निर्धारण) ने समारोह की अध्यक्षता की । उन्होंने विभाग के समस्त अधिकारियों और कर्मचारियों से अनुरोध किया कि वे भारत सरकार की भाषा नीति के अनुसार कार्यालयों में अधिक से अधिक काम हिंदी में करने का प्रयास करें ।

कर्मचारियों के लिए हिंदी में टिप्पण, आलेखन, तकनीकी शब्दावली, टंकण, प्रश्नोतरी, कविता पाठ, गीत आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । सप्ताह के दौरान हिंदी में अधिक मात्रा में काम करने वाले कर्मचारियों के लिए विशेष प्रोत्साहन योजना भी चलाई गई । इसके अलावा कर्मचारियों के बच्चों के लिए हिंदी में निबंध, सुलेख, कविता पाठ जैसी प्रतियोगिताएं की गई । सप्ताह के दौरान उदयांजलि, एकता का पर्व, हिंदी सब संसार, हिंद की वाणी, देश की वाणी, 14 सितंबर, 1949, भारत की वाणी जैसी हिंदी की विशेषता से संबंधित फिल्मों का प्रदर्शन किया गया । कर्मचारियों को हर दिन एक हिंदी शब्द सिखाने की एक नई योजना भी सप्ताह समारोह के साथ शुरू की गई ।

हिंदी सप्ताह का समापन समारोह दिनांक 20-9-91 को हुआ । समापन समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित बैठक के मुख्य अतिथि केरल विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के वर्तमान अध्यक्ष एवं प्रोफेसर डा. रवीन्द्र नाथ थे । अध्यक्ष पद पर प्रभार के राजभाषा अधिकारी एवं तिरुअनंतपुरम् रेंज का उप आयुक्त श्री एब्रहाम पोत्तन् आसीन थे । मुख्य अतिथि ने भारत सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग में जो प्रगति हो रही है उस पर संतोष प्रकट किया । उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हिंदी के विकास को सार्थक बनाने के लिए कार्यालय के हर सदस्य को ईमानदारी से काम करना चाहिए । उन्होंने आगे बताया कि कार्यालयीन हिंदी को बोझिल एवं कठिन शब्दों से बचा देना चाहिए । उसे सुबोध और सरल बना देना चाहिए । अन्य भाषा के प्रचलित शब्दों से हिंदी को सजाना चाहिए । अध्यक्ष ने सभी सदस्यों को संबोधित करते हुए सूचित किया कि हिंदी सप्ताह समारोह के सही संचालन से आयकर भवन में हिंदी का नव जागरण हुआ है । उन्होंने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को कार्यालय के काम हिंदी में करने का आह्वान किया । सहायक आयुक्त श्रीमती उषा एस. नायर, कंप्यूटर प्रोग्रामर श्री के.वी. पिल्लै आदि ने भी सभी कर्मचारियों को हिंदी में काम करने को प्रेरित किया । मुख्य अतिथि अध्यक्ष ने पुरस्कार देकर प्रतियोगिताओं के विजेताओं का सम्मान किया । हिंदी सप्ताह के दौरान हिंदी में अधिक काम किए दो कर्मचारियों को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए जो दूसरों के लिए प्रेरक था । हिंदी शिक्षण योजना की हिंदी, हिंदी टंकण और आशुलिपि परीक्षाओं में सफल निकले कर्मचारियों को प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए । इसके अलावा, एस.एस.एल.सी., तथा प्रि-डिग्री परीक्षाओं में हिन्दी विषय के कर्मचारियों के बच्चों ने अधिक अंक प्राप्त किए थे उनको भी प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए ।

कार्यालय के समारोह के अतिरिक्त नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में आयोजित संयुक्त सप्ताह हिंदी समारोह में भी आयकर विभाग ने समुचित सहयोग दिया ।

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा वैज्ञानिक, वैज्ञानिक विभाग, नई दिल्ली-2

पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्यालय प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा वैज्ञानिक विभाग, तथा आर्थिक एवं सेवा मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से हिन्दी दिवस समारोह 18 सितम्बर 1991 को श्री अगम प्रसाद सिन्हा अतिरिक्त नियंत्रक की अध्यक्षता में हुआ ।

कुमारी सरोज पुनहानी उप निदेशक कार्यालय प्रधान निदेशक (लेखा परीक्षा) ने अतिथि का स्वागत किया गया ।

समारोह की कार्रवाही सरस्वती वन्दना से प्रारम्भ हुई ।

इसके पश्चात् कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए गए । जिनमें दोहा पाठ तथा काव्य पाठ प्रमुख थे ।

इस कार्यक्रम के बाद श्री सुरेन्द्र सिंह चौहान ने हिन्दी प्रयोग की प्रगति रिपोर्ट पढ़कर सुनाई तथा भविष्य में कार्य की प्रतिशतता और बढ़ाने पर जोर दिया । प्रगति रिपोर्ट के बाद मुख्य अतिथि ने दोनों कार्यालयों द्वारा सामूहिक रूप से आयोजित "वाद-विवाद हिन्दी टंकण तथा निबन्ध लेखन" प्रतियोगिता में विजयी तथा हिन्दी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने वाले प्रत्याशियों को पुरस्कृत किया गया तथा राजभाषा हिन्दी के महत्त्व पर विस्तृत प्रकाश डाला ।

अन्त में प्रधान निदेशक श्री टी.एन.ठाकुर ने मुख्य अतिथि का धन्यवाद किया ।

दूरदर्शन केन्द्र बेंगलूर

16-9-91 को डॉ. तिप्पेस्वामी, (मानस गंगोत्री, मैसूर विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग) ने दीप प्रज्वलित करके हिंदी सप्ताह का उद्घाटन किया ।

राजभाषा की उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए "आदित्य" नामक हिन्दी पत्रिका का विमोचन अध्यक्ष ने किया। समारोह की अध्यक्षता श्री एस. जे. डी. देवसहायम् अधीक्षक अभियंता ने की । उन्होंने कहा कि "बूंद-बूंद से घट भरता है" यदि आप रोज हिन्दी का एक शब्द सीखें तो वर्ष में 365 शब्द सीख जाएंगे।

इस अवसर पर डॉ. तिप्पेस्वामी ने कहा कि हिन्दी देश की सबसे सरल भाषा है और हम सबको राष्ट्रभाषा की श्रीवृद्धि के लिए आगे बढ़ना है। उन्होंने कहा कि वह दिन दूर नहीं जब उत्तर भारत वाले दक्षिण भारत के लोगों से हिन्दी सीखेंगे ।

दि. 17-9-91 को त्रिदिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें श्री डी. हनुमंतराव संपर्क अधिकारी (हिन्दी) सी. क्यू. एल. ने "टिप्पण एवं आलेखन" विषय पर प्रकाश डाला ।

दि. 17-9-91 को दोपहर 3 बजे हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप, एवं हिन्दी निबंध प्रतियोगिता की गई ।

दि. 18-9-91 को हिन्दी कार्यशाला का द्वितीय दिवस का आयोजन रहा । श्री वी. कृष्णमूर्ती (सेवानिवृत्त सहायक निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना) ने "अहिन्दी भाषियों को हिन्दी सीखने में होने वाली कठिनाइयों" विषय पर प्रकाश डाला ।

दि. 18-9-91 को हिन्दी क्विज प्रतियोगिता की गई जिसमें 3 प्रकार के विषय रखे गए । (1) राजभाषा से संबंधित ज्ञान (2) सामान्य ज्ञान (3) फिल्मी ज्ञान । प्रतियोगियों के 3 ग्रुप बनाए गए ।

दि. 19-9-91 को कार्यशाला का तृतीय दिवस रहा जिसमें डॉ. एन. के. नागराज, हिन्दी अधिकारी, रक्षा एवं लेखा नियंत्रक कार्यालय ने "राजभाषा नीति और कार्यान्वयन में होने वाली कठिनाइयों" विषय पर प्रकाश डाला ।

दि. 19-9-91 को हिन्दी अंत्याक्षरी प्रतियोगिता की गई जिसमें कार्यालय के 30 कर्मचारियों ने भाग लिया । कार्यक्रम 1 घंटे तक चलता रहा और अत्यंत ही सफल रहा।

दि. 20-9-91 को हिन्दी भजन प्रतियोगिता की गई जिसमें हिंदी भाषी स्वर साधकों ने हिन्दी के भक्त कवियों के भजन सुनाए । हिन्दी बोलने के प्रयोग का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा । कार्यक्रम अत्यधिक सफल रहा ।

सप्ताह के दौरान दूरदर्शन केन्द्र के अधिकारियों ने यथा श्रीमती ललिता एस. भोज, श्री नाइगीर वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं अन्य अधिकारियों ने हिन्दी में पत्र एवं टिप्पणियां लिखी ।

दि. 23-9-91 को हिन्दी सप्ताह समापन दिवस मनाया गया जिसमें माननीय श्रीमती डॉ. राधाकृष्णमूर्ति (सेवानिवृत्त प्रोफेसर, एम. इ. एस. कालेज) मुख्य अतिथि थीं ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती ललिता भोज, उपनिदेशक ने की और कहा कि "हम सिर्फ हिन्दी सप्ताह या दिवस न मनाकर पूरा वर्ष ही हिन्दी कार्य के लिए समर्पित करें ।

हिन्दी के भजन व गीतों से सभा भवन में एक रंगा-रंग कार्यक्रम चला ।

मुख्य अतिथि ने पुरस्कार वितरण किया । पुरस्कारों में हिन्दी लेखकों की उत्कृष्ट रचनाएं वितरित की गई ।

प्रतियोगिताओं में विजेताओं के अलावा हिन्दी में अच्छा काम करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को भी पुरस्कृत किया गया ।

निम्नलिखित प्रतियोगी पुरस्कृत हुए ।

टिप्पण एवं प्रारूप प्रतियोगिता

1. श्रीमती सावित्री श्रीषा —प्रथम
2. कु. बी. एस. नागमणी —द्वितीय
3. श्रीमती के. आर इंदिरा —तृतीय

निबंध प्रतियोगिता

1. श्रीमती सावित्री श्रीषा —प्रथम
2. श्रीमती के. आर. इंदिरा —द्वितीय
3. श्रीमती ए. छाया —तृतीय

भजन प्रतियोगिता

1. श्रीमती रोहिणी महास्वामी —प्रथम
2. श्रीमती एच. आर. वेंकटलक्ष्मी —द्वितीय
3. श्रीमती ए. छाया —तृतीय
4. श्री मो. जबीउल्लाह विशेष पुरस्कार

किवज प्रतियोगिता

1. श्री जबीउल्लाह एवं पार्टी —प्रथम
2. श्री सुरेन्द्रन एवं पार्टी —द्वितीय
3. श्री शिवकुमार एवं पार्टी —तृतीय

अंत्याक्षरी प्रतियोगिता

1. श्री लाल कुमार एवं पार्टी प्रथम
2. श्रीमती सावित्री एवं पार्टी द्वितीय
3. श्री डी. महादेवराव एवं पार्टी तृतीय

इसके अलावा निम्नलिखित अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान एवं वर्ष में हिन्दी में काम करने वालों को पुरस्कृत किया गया ।

1. श्री जे. शिवकुमार
2. श्री एस. सुरेन्द्रन्
3. श्री जे. वेंकटेश
4. श्री वीरशंकर
5. श्री आर. एस. वेंकटेश
6. श्री कोमलसिंह

निम्नलिखित अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी पत्रिका "आदित्य" में उत्कृष्ट रचनाओं के लिए पुरस्कृत किया गया ।

1. सुश्री के. एस. हेमलता
2. श्री आर. एस. वेंकटेश
3. कु. बी. एस नागमणी
4. श्री जी. सीतारामया
5. श्रीमती रोशनी
6. श्रीमती ए. छाया
7. श्रीमती गिरिजाबाई

अंत में हिन्दी अधिकारी बी. अम्बा ने कार्यक्रम की सफलता पर धन्यवाद ज्ञापन दिया और अपने मनोभाव को इस प्रकार व्यक्त किया :—

हे राष्ट्र भाषे
जिसके शुभ वास से
देश में चेतना जागी
वह हृदय के फूल
तुम्ही हो
वह हृदय के शूल तुम्हीं हो
जिससे हमारा राष्ट्र हुआ सुसन्नत
उस भारती के प्राण तुम्हीं हो ।

दूरदर्शन केन्द्र हैदराबाद

दि. 30-10-91 को "हिन्दी सप्ताह" का समापन समारोह सोत्साह मनाया गया । केन्द्र के हिन्दी अधिकारी श्री एस. एस. धुत्रे ने कार्यालय में हो रही हिन्दी की प्रगति पर रिपोर्ट पढ़ी । सर्वश्री ए. एस. आर. राव, प्रशासनिक अधिकारी और टी. वी. राघवाचारी, सहायक केन्द्र निदेशक ने हिन्दी के महत्त्व पर विचार प्रकट किए ।

अवीक्षक अभियन्ता श्री योगेश्वर प्रताप ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि "हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है और सरकार का यह प्रयास है कि जहां हिन्दी का प्रचार प्रसार हो रहा है वहां देश की दूसरी भाषाओं को भी उन्नति और विकास का अवसर मिले । देश के विभिन्न क्षेत्रों में संपर्क बढ़ाने और राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाने में हिन्दी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है । अतः हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए तथा कार्यालय में कार्यान्वयन के लिए आप सभी मिलकर समर्पित भाव से प्रयास करें" ।

समारोह में केन्द्रीय अंग्रेजी तथा विदेशी भाषाएं संस्थान, हैदराबाद के निदेशक डा. एस. के. वर्मा को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था । उन्होंने हिन्दी सप्ताह के दौरान दि. 23-10-91 से 28-10-91 तक आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार दिए । प्रतियोगिता और विजेताओं की सूची इस प्रकार है :—

निबंध लेखन प्रतियोगिता

1. के. श्रीदेवी
2. एल.जी. अंबेरकर
3. एस. वाई. ऊंडेगांवकर

सुबोध लेखन प्रतियोगिता

1. के. हेमलता
2. एम. शोभा देवी
3. के. श्रीदेवी

प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता

1. पी. गीता
2. पी. श्रीदेवी
3. राधा रामन्

वाचन प्रतियोगिता

1. के. हेमलता
2. के. श्रीदेवी
3. एल. जी. अंबेरकर

अधिकारियों के लिए भी दो प्रतियोगिताएं की गई ।

प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता

1. डी. वसुमति, सहायक अभियन्ता	प्रथम
2. विजयालक्ष्मी, सहायक अभियन्ता	द्वितीय
3. एम. जयंत, प्रस्तुतकर्ता	तृतीय
4. पुष्पलता, कार्यक्रम निष्पादक	प्रोत्साहन
5. बलराज गौड, सहायक केन्द्र अभियन्ता	प्रोत्साहन

वाचन प्रतियोगिता

1. पुष्पलता, कार्यक्रम निष्पादक	प्रथम
2. एम. जयंत, प्रस्तुतकर्ता	द्वितीय
3. बी. आर. सी. रेड्डी, दर्शन अनुसंधान अधिकारी	तृतीय
4. विजयालक्ष्मी, सहायक अभियन्ता	प्रोत्साहन
5. डी. वसुमति, सहायक अभियन्ता	प्रोत्साहन

पुरस्कार वितरण के बाद मुख्य अतिथि डा. एस. के. वर्मा ने कहा कि "भाषा का समाज में बड़ा महत्त्व है। भाषा एक दूसरे से जोड़ने वाली है तोड़नेवाली नहीं। भाषा का धर्म तो संप्रेषण, माध्यम और संपर्क है" । उन्होंने राजभाषा, राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा के बारे में बताते हुए कहा कि "राज्य में अधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा उस राज्य की राजभाषा हो सकती है उसी तरह हिन्दी को पूरे राष्ट्र की राजभाषा होने का सम्मान मिला है" । अंत में उन्होंने विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि "आप हिन्दी भाषा का प्रयोग शुरू तो करें। शुरू में कुछ अटपटा लगेगा किंतु बाद में सरल होगा। भाषा मानव की गहनतम अनुभूतियों का माध्यम है" ।

कुमारी गायत्री देवी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह संपन्न हुआ ।

आकाशवाणी पुणे-411005

आकाशवाणी पुणे केन्द्र में 16 सितम्बर, 91 को हिन्दी दिवस तथा साथ ही सप्ताह 16 सितम्बर, 91 से 23 सितम्बर, 91 तक के मनाया गया।

हिन्दी दिवस के समारोह में केन्द्र के हिन्दी अधिकारी श्री राजाराम नलगे ने हिन्दी दिवस एवं सप्ताह मनाने का प्रयोजन स्पष्ट करते हुए कहा कि यह दिवस हमें याद दिलाता है कि संविधान के अनुसार सरकारी कामकाज की प्रमुख भाषा हमारी हिन्दी है।

हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित विविध प्रतियोगिताओं एवं पुरस्कारों की जानकारी देते हुए कर्मचारियों से प्रतियोगिताओं में भाग लेने तथा पुरस्कार प्राप्त करने का प्रयास करने के लिये अनुरोध किया ।

हिन्दी वैज्ञानिक दृष्टि से परिपूर्ण भाषा है । अब कम्प्यूटर पर भी हिन्दी में सभी कार्य अंग्रेजी की तरह किये जाते हैं । हिन्दी के प्रशिक्षण की सारी सुविधाएं उपलब्ध हुई हैं । हिन्दी कार्यशालाओं का समय-समय पर आयोजन किया जाता है । उन्होंने यह भी कहा कि तकनीकी क्षेत्र में भी हिन्दी में काम किया जा सकता है ।

समारोह में अतिथि बैंक आफ इंडिया के राजभाषा विशेष सहायक डा. जयंत बिष्ट ने महाराष्ट्र के लोकमान्य तिलक, विष्णु पराडकर, विनोबा भावे, अनंत गोपाल शेवडे द्वारा की गई हिन्दी सेवा के बारे में बताते हुए कहा कि मराठी भाषियों को हिन्दी में काम करते समय कोई कठिनाई नहीं है।

हिन्दी कार्यशालाओं में प्रशिक्षित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रमाणपत्र दिये गए ।

कार्यालय अध्यक्षा श्रीमती उषा प्रभा पागे ने "उपयुक्त सहायक सामग्री" नामक पत्रिका का विमोचन किया । उस अवसर पर उन्होंने रूस, जर्मनी, जापान देशों का उदाहरण देते हुए कहा कि हमारे देश में भी उसी तरह राजभाषा हिन्दी को अब पहले से अधिक महत्त्व देने की आवश्यकता है ।

तत्पश्चात् कार्यालय के प्रशासन अधिकारी श्री बसंत भालेराव ने सभी कर्मचारियों से अधिकतम कार्य हिन्दी में करने के लिये अनुरोध किया ।

हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित हिन्दी कवि सम्मेलन का संचालन हिन्दी अधिकारी श्री राजाराम नलगे ने प्रभावी ढंग से किया । इस कवि सम्मेलन में कार्यालय के कार्यक्रम निष्पादन श्री के. शैलेंद्र, प्रशासन अधिकारी श्री वसंत भालेराव, उदघोषक वंडा जोशी, हिन्दी अधिकारी श्री नलगे ने तथा आमंत्रित स्थानीय 12 कवियों ने अपनी प्रभावी रचनाओं द्वारा भरपूर मनोरंजन किया ।

इस सप्ताह के दौरान पांच प्रतियोगिताएं (1) निबंध प्रतियोगिता (2) टिप्पणी और मसौदा (3) हिन्दी टाइपिंग (4) तार लेखन अर्ध सरकारी पत्र (5) कविता वाचन आयोजित की गई। 23 सितम्बर, 91 के समापन समारोह में पुरस्कार वितरित किये गए।

(1) निबंध प्रतियोगिता :—

प्रथम पुरस्कार, श्री बंडा जोशी,	रु. 100/-
द्वितीय पुरस्कार, श्री राजेंद्र देवगावकर	रु. 075/-
तृतीय पुरस्कार कु. मोहनी वेन्द्रे	रु. 050/-

(2) टिप्पण और मसौदा प्रतियोगिता:;—

प्रथम पुरस्कार, श्री शंकर गणपत आगवणे,	रु. 100/-
द्वितीय पुरस्कार, श्रीमती सत्यभामा दूबे	रु. 075/-
तृतीय पुरस्कार, कु. अनिता वाघुडे	रु. 050/-

(3) हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता :—

प्रथम पुरस्कार, श्रीमती सत्यभामा दुबे	रु. 100/-
द्वितीय पुरस्कार, श्री शंकर गणपत आगवणे,	रु. 075/-
तृतीय पुरस्कार, श्री सतीश पारखे,	रु. 050/

(4) तार लेखन अर्धसरकारी पत्र प्रतियोगिता :—

प्रथम पुरस्कार, श्री सतीश पारखे,	रु. 100/-
द्वितीय पुरस्कार, कु. अनिता वाघुंडे,	रु. 075/अ-
तृतीय पुरस्कार, श्री राजेंद्र देवगावकर,	रु. 050/-

(5) कविता वाचन प्रतियोगिता:—

प्रथम पुरस्कार, कु. अनिता वाघुंडे, लिपिक	रु. 100/-
द्वितीय पुरस्कार, श्री विजय चौधरी,	रु. 075/-
तृतीय पुरस्कार, श्री वसंत भालेराव,	रु. 050/-

आकाशवाणी सिलचर

दिनांक 14 सितम्बर, से 20 सितम्बर 1991 तक के हिन्दी सप्ताह का विधिवत् शुभारंभ दिनांक 18 सितम्बर को केन्द्र निदेशक श्री सुव्रत बनर्जी की अध्यक्षता में हुआ। कछार पेपर मिल के वरिष्ठ महाप्रबंधक सह-मुख्य कार्यकारी श्री श्यामा प्रसाद दास गुप्त मुख्य अतिथि थे। सभा का शुभारंभ मंगल ध्वनि एवं देशवंदना से हुआ जिसका संयोजन केन्द्र के संगीत संयोजक श्री अनुपम चौधरी ने किया।

प्रशासन अधिकारी श्री देवेन शर्मा ने कहा कि संविधान में राजभाषा के रूप में हिन्दी भाषा को मान्यता दी गई है।

श्री आशीष कुमार सेन सहायक केन्द्र निदेशक ने कहा कि आवश्यकता इस बात की है कि हम कामकाज में हिन्दी का अधिक प्रयोग करें। और हिन्दी भाषा कोई ऐसी कठिन भाषा नहीं है जिसे प्रयोग में न लाया जा सके।

श्री संतोष कुमार सहायक अभियंता ने कहा कि हिन्दी दिवस या सप्ताह प्रतिवर्ष मनाया जाता है। इसके बाद हम प्रायः भूल जाते हैं कि हिन्दी के क्षेत्र में कुछ करना है। हिन्दी किसी व्यक्ति विशेष या क्षेत्र विशेष की भाषा नहीं है। इसलिए यदि हम सच्चे मन से इसका सम्मान करना चाहते हैं तो सबसे अच्छी बात यह होगी कि हम हिन्दी में ही अपना कार्य करने का संकल्प लें।

मुख्य अतिथि श्री श्यामा प्रसाद दास गुप्त ने कहा कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में आकाशवाणी सिलचर ने सराहनीय कार्य किया है। उन्होंने कहा कि हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो संपर्क भाषा के रूप में कार्य कर रही है। तीस प्रतिशत काम हिन्दी में होना चाहिये। लेकिन हमारा प्रयास इस प्रतिशत को और भी आगे बढ़ाने का होना चाहिये।

केन्द्र निदेशक श्री सुव्रत बनर्जी ने कहा कि हमें हिन्दी भाषा सीख लेनी चाहिये क्योंकि कार्यालय के काम में और कार्यालय के बाहर भी हिन्दी का प्रचार-प्रसार हो रहा है।

हिन्दी अधिकारी श्री वासुदेव सिंह ने संघ सरकार की राजभाषा नीति अधिनियम और उसके अनुपालन के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी।

14 सितम्बर, 1991 प्रातः 8 बजकर 30 मिनट को "हमारे देश में जनभाषा के रूप में हिन्दी की भूमिका" शीर्षक पर 10 मिनट की एक वार्ता और 20 सितम्बर प्रातः 9 बजे 30 मिनट के लिये हिन्दी कवि सम्मेलन प्रसारित किया गया।

दिनांक 10 सितम्बर 1991 को हिन्दी टिप्पण, आलेखन पारिभाषिक शब्दावली एवं निबंध लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। दिनांक 20 सितम्बर समापन दिवस को भाषण प्रतियोगिता एवं स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिताएं की गईं। इस दिन सभा का शुभारंभ श्री सुव्रत बनर्जी की अध्यक्षता में हुआ एवं मुख्य अतिथि रीजनल इंजीनियरिंग कालेज सिलचर के प्राचार्य डा. मोहिचन्द्र बरगोहाई थे .....। विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कार पाने वाले प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि ने पुरस्कार वितरित किया।

बैंक

विजया बैंक

अंचल कार्यालय बम्बई

दिनांक 14-9-1991 को हिन्दी दिवस समारोह को एक सरल कार्यक्रम से शुरू किया और "राजभाषा परिज्ञान मास" का उद्घाटन किया गया। अंचल कार्यालय के उप महाप्रबन्धक महोदय ने इस कार्यक्रम में कर्मचारियों से अपील की और पांच सूत्री कार्यक्रम की घोषणा की जिसके अनुसार राजभाषा का प्रयोग प्रगामी रूप से बढ़ता जाएगा।

विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन किये गये जिसमें निबन्ध बैंकिंग विषय पर लेख, कविता, कहानी, पत्र लेखन व गायन आदि सम्मिलित थे। इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को दि. 10-10-91 को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कार दिये गये।

हिन्दी दैनिक, जनसत्ता, के सम्पादक, श्री राहुल देव मुख्य अतिथि के रूप में आकर हिन्दी के प्रयोग की आवश्यकता पर जोर दिया व कहा कि हिन्दी का प्रचार व प्रसार स्वाभाविक ही हो रहा है और होकर रहेगा। अतः यह अच्छा होगा कि हिन्दी दिवस को रश्मो रिवाज ना बना कर अपने दैनिक कार्य में हिन्दी को समाहित कर लें।

श्री के. दिवाकर शट्टी ने अपने अध्यक्षीय भाषण हिन्दी के प्रयोग पर जोर दिया। पुरस्कार वितरण के पश्चात् मनोरंजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। अंत में श्री पी.वी. मुतालिक, राजभाषा अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

ओरएण्टल बैंक आंफ कामर्स

संसार चन्द रोड, जयपुर

हिन्दी दिवस (14 सितम्बर) के अवसर पर इस वर्ष प्रादेशिक कार्यालय, जयपुर तथा इसके अन्तर्गत आने वाली सभी शाखाओं/कार्यालयों में, विशेषतया जयपुर नगर में स्थित शाखाओं/कार्यालयों में अनेक कार्यक्रम किए गए। जयपुर नगर से बाहर की शाखाओं/कार्यालयों में 7 से 14 सितम्बर तक हिन्दी सप्ताह मनाने के निर्देश दिये गये थे। शाखाओं को यह भी आदेश दिये गये थे कि वे इस सप्ताह के दौरान अपना समस्त कार्य---पत्राचार एवं शाखा का आंतरिक कार्य हिन्दी में ही करें तथा कर्मचारियों को हिन्दी में काम करने के लिये उत्साहित करने हेतु कार्यक्रम करें प्रादेशिक प्रबन्धक ने इस अवसर पर कर्मचारियों के नाम एक अपील जारी की।

सितम्बर 91 को हिन्दी मास के रूप में मनाया गया इस प्रकार प्रादेशिक कार्यालय एवं जयपुर स्थित बैंक की तीनों शाखाओं में सितम्बर, 91 के दौरान लगभग सारा कार्य हिन्दी में किया गया।

प्रादेशिक कार्यालय में प्रादेशिक कार्यालय एवं स्थानीय शाखाओं में कार्यरत कर्मचारियों के लिये विभिन्न प्रतियोगिताएं की गई जिनका विवरण निम्न प्रकार है :---

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता केवल चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के लिए :---यह प्रतियोगिता 10-9-91 को की गई। इस प्रतियोगिता के परिणाम निम्न प्रकार रहे :---

श्री उदयसिंह प्रधान, श्री उम्मेदसिंह, श्री ओम प्रकाश,

वाक्य वर्तनी सुधार प्रतियोगिता:---यह प्रतियोगिता दिनांक 12-9-91 को की गई प्रतियोगिता के परिणाम निम्न प्रकार रहे :---

श्री राजकुमार अरोड़ा, श्रीमती वन्दनासिंह, श्री विश्व नाथ शर्मा, श्री अशोक गोलेछा।

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता:---यह प्रतियोगिता 13-9-91 को की गई। इसके परिणाम निम्नलिखित रहे :---

श्री विश्वनाथ शर्मा, श्री राजीव मेहता, श्री गणेशराम मेघवाल।

उपर्युक्त के अतिरिक्त 21-9-91 को एक अन्त: बैंक आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया जिसमें जयपुर स्थित 40 बैंकों के दो-दो सदस्यों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में सेंट्रल बैंक आंफ इंडिया के श्री सत्यवीरसिंह श्यौकन्द प्रथम, भारतीय रिजर्व बैंक के श्री आर.एन. जैना ने द्वितीय तथा बैंक आंफ इंडिया के श्री राजीव गुप्ता ने तृतीय स्थान प्राप्त किए।

भारतीय औद्योगिक पुनर्निर्माण बैंक, कलकत्ता

सितम्बर 23-27, 1991 के दौरान आयोजित हिन्दी सप्ताह में हिन्दी सुलेख, हिन्दी चित्रकथा, हिन्दी प्रश्नोत्तरी, हिन्दी शब्द-ज्ञान एवं हिन्दी शब्द निर्माण प्रतियोगिताएं की गई तथा सप्ताह के अन्तिम दिन हिन्दी दिवस समारोह किया गया। श्री सिद्धिनाथ झा, उपनिदेशक (कार्यान्वयन) (पूर्वी क्षेत्र, राजभाषा विभाग) समारोह में मुख्य अतिथि थे एवं श्री पी. श्री साईं राम, महाप्रबन्धक ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री झा ने पूर्वी क्षेत्र में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति का उल्लेख करते हुए हिन्दी की उपयोगिता पर प्रकाश डाला तथा राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा का अंतर बतलाया। श्री साईंराम ने बैंक में हो रहे हिन्दी में कामकाज की जानकारी दी तथा इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों में और तेजी लाने का आह्वान किया। सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं हिन्दी शिक्षण-योजना के अन्तर्गत दिए जाने वाले पुरस्कारों का वितरण भी किया गया। हिन्दी अधिकारी श्री विजय कुमार शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

भारतीय औद्योगिक विकास, जयपुर

बैंक के काम काज में हिन्दी का प्रयोग और बढ़ाने तथा उसे स्थायित्व प्रदान करने के लिए सितम्बर 91 हिन्दी माह के रूप में मनाया गया।

उप महा प्रबन्धक श्री स्वा. गणेश ने उद्घाटन के अवसर पर कहा कि हिन्दी प्रयोग की प्रगति को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने दूसरी बार मान्यता प्रदान की है और हमें इससे प्रेरणा मिलनी चाहिए।

प्रबन्धक श्री ए.के. डे ने कहा "हालांकि एक सीमा के बाद हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाना बहुत कठिन होता है फिर भी हमने इस चुनौती को स्वीकार किया है और आप सबके सहयोग से हिन्दी के प्रयोग की नए-नए क्षेत्रों में शुरूआत की है।

उप प्रबन्धक श्री मो. अली ने भी अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने की प्रेरणा दी। स्टाफ अधिकारी (हिन्दी) श्री बी. के. चुघ ने हिन्दी सप्ताह/माह के महत्त्व के बारे में बताते हुए कहा कि हिन्दी प्रयोग को बढ़ाने के लिए आज सर्वाधिक आवश्यकता है—"संकल्प शक्ति" की। उन्होंने कहा कि जयपुर स्थित सभी बैंकों में हिन्दी के प्रयोग को सर्वाधिक बढ़ाने का वातावरण/मानस तैयार हो चुका है और इसमें हमें पीछे नहीं रहना है। इसी में हमारी सफलता है।

माह पर्यन्त कार्यालय के वातावरण को हिन्दी बनाने के लिए कार्यालय परिसर में हिन्दी के बारे में (विद्वानों के कथनों के) बेनर्स लगाए गए। प्रतियोगिताएं (श्रुतलेख, अनुवाद, निबन्ध तथा वाद विवाद) आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त एक प्रतियोगिता (निबन्ध) संयुक्त रूप से की गई।

एक अन्तर बैंक/वित्तीय संस्थान निबन्ध प्रतियोगिता भी की गई इसमें 18 संस्थाओं ने भाग लिया। पहली बार सितम्बर, 17, 1991 को जयपुर स्थित प्रमुख बैंकों तथा वित्तीय संस्थाओं के अधिकारियों की एकदिवसीय हिन्दी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। कार्यशाला उद्घाटन के सत्र में भाषा विभाग के निदेशक श्री कलानाथ शास्त्री ने कहा कि बैंकों के कामकाज में दिनोंदिन हिन्दी के बढ़ते हुए प्रयोग को देखकर उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता होती है। जबकि राज्य सरकार की स्थिति भिन्न है। उनका मत था कि सरकारें जितनी जल्दी राजभाषा नीति का कार्यान्वयन करेंगी राजकोष पर आर्थिक दबाव उतनी ही जल्दी घटेगा। बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर के सदस्य सचिव ने कहा कि कुछ वर्ष पूर्व बैंकों में हिंदी का प्रयोग केवल एक कल्पना मात्र प्रतीत होती थी लेकिन वर्तमान में बैंकों में अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रतिस्पर्धा का वातावरण पैदा हो गया है। उप महा प्रबन्धक श्री स्वा. गणेश ने कहा कि हिन्दी का प्रयोग किसी एक व्यक्ति के प्रयासों से नहीं बल्कि सभी के संयुक्त प्रयासों से ही सम्भव है। सभी प्रतिभागियों ने इस कार्यशाला को आंतरिक काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए उपयोगी बताया।

पंजाब नेशनल बैंक द्वारा आयोजित अंतर बैंक प्रश्नोतरी में हमारे दो स्टाफ सदस्यों को प्रशंसा पत्र मिले।

हिन्दी सप्ताह के दौरान प्रधान कार्यालय द्वारा अपने सभी कार्यालयों के लिए आयोजित "हिन्दी नारा" प्रतियोगिता का एकमात्र पुरस्कार एक अधिकारी को प्राप्त हुआ।

हिन्दी माह का समापन कार्यक्रम 30 सितम्बर को किया गया। इस अवसर पर प्रतियोगिता, विचार-गोष्ठी तथा पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किए गए। सदस्यों ने "निजी बनाम सार्वजनिक क्षेत्र" विषय पर आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में काफी दिलचस्पी दिखाई। प्रसिद्ध लेखक प्रोफेसर राघवप्रकाश तथा सहायक प्रोफेसर श्री अनिल जैन ने हिंदी भाषा के महत्त्व तथा "हिंदी शब्द संरचना" के बारे में बताया।

उप महा प्रबन्धक श्री स्वा. गणेश ने कहा "हमने हिन्दी माह के दौरान जिस उत्साह से हिन्दी में कार्य किया है इसकी समाप्ति के बाद भी हमें वैसे ही, प्रयास करने हैं। स्टाफ अधिकारी श्री बी. के. चुघ ने हिन्दी माह की उपलब्धियों के बारे में बताते हुए कहा कि हिन्दी माह के दौरान 100 प्रतिशत पत्राचार/तार हिन्दी में भेजे गए। हमने पहली बार सर्वाधिक 66 प्रतिशत टेलेक्स हिन्दी में जारी किए।

कार्यक्रम का समापन पुरस्कार वितरण समारोह से हुआ जिसमें श्री स्वा. गणेश ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। पुरस्कार विजेताओं के नाम निम्न-लिखित हैं :—

1. श्रुतलेख प्रतियोगिता

   श्री राम किशोर मीणा, श्री वासुदेव, श्री के.सी. गुप्ता

2. निबन्ध प्रतियोगिता (विकास बैंक/लघु विकास बैंक)

   श्री प्रदीप मालगांवकर, श्री सुरेन्द्र श्रीवास्तव, श्रीमती कमला राजोरा

3. अनुवाद प्रतियोगिता

   श्री वासुदेव, श्री दिनेश डंगायच, कु. राधा खण्डेलवाल, श्री आर. के. मीणा, श्री एस. एल. नागर

4. निबन्ध प्रतियोगिता (अहिन्दी भाषी)

   श्री पी. आर. बालकृष्णन, श्री आर० सुब्रमणियन।

5. वाद-विवाद प्रतियोगिता

   श्री अशोक मोटवानी, कु राधा खंडेलवाल, श्री मो. अली।

6. अन्तः बैंक वित्तीय संस्थान—निबन्ध प्रतियोगिता)

   श्री हीरा लाल साकरवाल (पंजाब नेशनल बैंक), श्री राम प्रकाश बडाया (न्यू बैंक ऑफ इंडिया), श्री सुनील खन्ना (बैंक ऑफ बड़ोदा)।

सैन्ट्रल बैंक आफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, नई दिल्ली

दिल्ली अंचल की ओर से हिन्दी दिवस समारोह दिनांक 14-9-91 को प्यारे लाल भवन, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली में किया गया जिसका उद्घाटन बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री एस. सुब्रमण्यम ने किया। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के उप सचिव श्री भगवान दास पटेरिया मुख्य अतिथि थे। अतिथियों का स्वागत करते हुए दिल्ली अंचल के उप महाप्रबन्धक श्री एस. गोपालकृष्णन ने सूचित किया कि अंचल की सभी शाखाएं तथा कार्यालय राजभाषा नियम 1976 के नियम 10.4 के अधीन भारत सरकार के गजट में अधिसूचित हैं। साथ ही सभी शाखाओं को नियम 8.4 के अधीन हिन्दी में कार्य करने के लिए आदेश भी दिए गए हैं जिसके परिणामस्वरूप राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में काफी प्रगति हुई है तथा अब कोटा तथा जयपुर क्षेत्रों में 90 से 95 प्रतिशत तक कार्य हिन्दी में होने लगा है। साथ ही दिल्ली महानगर की बहुत सी शाखाओं में 80 प्रतिशत तक कार्य हिन्दी में हो रहा है। उन्होंने बताया कि हाल ही में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा शाखाओं एवं कार्यालयों का निरीक्षण किया गया था जिसमें उन्होंने हमारे कार्य को सराहनीय पाया तथा इसकी प्रशंसा भी की। श्री एस. गोपालकृष्णन ने सभी कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे अपना कार्य हिन्दी में ही करें।

श्री रा. वि. तिवारी, मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा) ने सेन्ट्रल बैंक में भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की दिशा में किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। श्री भगवान दास पटेरिया, उप सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि सेन्ट्रल बैंक में हर कार्य को गंभीरता से लिया जा रहा है जिस के परिणामस्वरूप सेन्ट्रल बैंक सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के क्षेत्र में बैंकिंग जगत में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। उन्होंने इस कार्य के लिए प्रबंधक मंडल को धन्यवाद दिया तथा आशा व्यक्त की कि सेन्ट्रल बैंक हमेशा इस कार्य में अन्य वित्तीय संस्थानों को भी मार्गदर्शन देता रहेगा।

उद्घाटन भाषण में श्री एस. सुब्रमण्यम अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने आह्वान किया कि जिस प्रकार हिन्दी के क्षेत्र में सेन्ट्रल बैंक अग्रणी है उसी प्रकार बैंकिंग के अन्य क्षेत्रों में भी अग्रणी स्थान बनाने के लिए प्रयास करें और यह सेन्ट्रल साथियों की कर्तव्यनिष्ठा को देखते हुए असंभव नहीं है। उन्होंने सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की दिशा में किए जा रहे प्रयासों के लिए दिल्ली अंचल के कर्मचारियों को बधाई दी।

स्टाफ तथा स्टाफ के बच्चों द्वारा एक भव्य रंगारंग कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया जिसकी सराहना की गई।

कर्मचारियों को वर्ष के दौरान हिन्दी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने के लिए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने प्रशस्ति पत्र प्रदान किए तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार भी दिए।

सैन्ट्रल बैंक आफ इंडिया आंचलिक, कार्यालय, आगरा

सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में आगरा अंचल में हिन्दी दिवस/हिन्दी सप्ताह/हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन बड़े उत्साह के साथ किया गया। हिन्दी प्रतियोगिताओं और हिन्दी गोष्ठियों आदि में ऐसे विषय रखे गए जो हिन्दी प्रयोग और राजभाषा नीति के साथ-साथ व्यावहारिक बैंकिंग से भी संबंधित थे जैसे अच्छी ग्राहक सेवा हेतु हिन्दी के प्रयोग की आवश्यकता "देश के विकास में राष्ट्रीयकृत बैंकों की भूमिका" आदि। हिन्दी दिवस पर शाखा स्तर पर आयोजित गोष्ठियों में ग्राहकों को भी आमंत्रित किया गया और बैंकों में हिन्दी प्रयोग के संबंध में उनके विचार भी जाने गए। इस प्रकार हिन्दी सप्ताह का उपयोग हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए तो किया ही गया साथ ही ग्राहक सेवा तथा ग्राहक सम्पर्क के लिए भी किया गया और उनमें भी हिन्दी प्रयोग के प्रति जागरूकता लाने के लिए भी किया गया।

सिंडिकेट बैंक मंडल, फरीदाबाद

दिनांक 2-9-91 से 14-9-91 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। दिनांक 14-9-91 को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया।

हिन्दी पखवाड़े में निम्नलिखित प्रतियोगिताएं की गई :-

1- हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता : दि. 2-9-91 से 7-9-91

2- हिन्दी प्रश्नमंच प्रतियोगिता : 9-9-91

3- हिन्दी वाद विवाद प्रतियोगिता : 12-9-91

4- हिन्दी गीत कविता प्रतियोगिता : 14-9-91

चारों प्रतियोगिताओं में विजेताओं को 900 रुपये के पुरस्कार वस्तुरूप में दिनांक 14-9-91 को दिए गए। चतुर्थ स्थान पाने वाले को प्रमाणपत्र दिए गए।

दिनांक 14-09-91 को मुख्य समारोह की अध्यक्षता मंडल प्रबन्धक श्री सुभाष मल्होत्रा ने की। समारोह का संचालन राजभाषा अधिकारी डा. ब्रजमोहन शर्मा ने किया। सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को अध्यक्ष श्री सुभाष मल्होत्रा ने पुरस्कार दिए।

मंडल में हिन्दी का प्रयोग करने वाले कर्मचारियों को भी प्रशंसापत्र दिए गए जिनके नाम इस प्रकार है :-

श्री बलदेव राज अरोड़ा, श्री नन्द कुमार शैणाय, डा. ब्रजमोहन शर्मा, कैप्टन अरविन्द कुमार कम्बोज, श्री जगत प्रकाश मल्होत्रा, श्री श्रीनिवास कौशिक, श्री रामबाबू वर्मा, श्री खेम चन्द, श्री नरेश कौशिक, श्री राजेन्द्र कुमार जैन, श्रीमती उमा मुत्तुकृष्णन्

नगर राजभाषा क्रियान्वयन समिति, फरीदाबाद द्वारा मई, 91 में आयोजित प्रश्न मंच प्रतियोगिता में सारे कार्यालयों में प्रथम स्थान प्राप्त दल के चार विजेताओं 1– श्रीमती मधु गुप्ता 2– श्रीमती तृप्ता भारद्वाज 3– श्री सुधीर शर्मा 4– श्री अनिल कुमार खुल्लर को भी बैंक की ओर से पुरस्कार दिए गए।

1– हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता : 2-9-91 से 7-9-91

श्री सुधीर कुमार शर्मा	पलवल शाखा	प्रथम
श्रीमती तृप्ता भारद्वाज	फरीदाबाद शाखा	द्वितीय
श्री ओमप्रकाश धीर	फरीदाबाद शाखा	तृतीय
श्री के.के. वेदी	मंडल	सांत्वना

2– प्रश्नमंच प्रतियोगिता : 9-9-91

श्री अनिल खुल्लर व सुनील भार्गव	मंडल	प्रथम
श्री के. के. वेदी व जगतप्रकाश मल्होत्रा	मंडल	द्वितीय
श्री राजेश सुनेजा व सुधीर शर्मा	पलवल	तृतीय
श्री अश्विनी चड्ढा व ओमप्रकाश धीर	फरीदाबाद	सांत्वना

3– वाद विवाद प्रतियोगिता : 12-9-91

श्री सुधीर कुमार शर्मा	पलवल	प्रथम
श्री एस. के. भाटिया	छज्जूनगर	द्वितीय
श्री सुनील भार्गव	मंडल कार्यालय	तृतीय
श्री सुरेन्द्र कुमार	मंडल कार्यालय	सांत्वना

4– गीत / कविता प्रतियोगिता 14-9-91

श्री सुधीर कुमार शर्मा	पलवल	प्रथम
श्री अनिल कुमार खुल्लर	मंडल	द्वितीय
श्री जय नारायण	फरीदाबाद	तृतीय
श्री सुभाष नास्वा	पलवल	सांत्वना
श्री ओमप्रकाश धीर	फरीदाबाद	सांत्वना

केनरा बैंक, तिरुअनंतपुरम्

दिनांक 14 सितम्बर, 1991 को आयोजित समारोह में प्रो. एन रवीन्द्रनाथ (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, केरल विश्वविद्यालय) मुख्य अतिथि थे और अध्यक्षता सहायक महाप्रबंधक श्री वी० गणपति ने की। श्री वी० आर० प्रभु, उपमहाप्रबंधक, केनरा बैंक विशेष रूप से आमंत्रित थे।

कार्यक्रम का प्रारम्भ प्रार्थना गीत से हुआ जिसके तुरन्त बाद मंडल प्रबंधक श्री के पदमनाभ ने स्वागत किया।

समूह गान प्रतियोगिता में सात समूहों ने भाग लेकर सुमधुर हिन्दी गीत गाकर समा बांध दिया। स्थानीय वेशभूषा में गायन के लिए उपस्थित कर्मचारीवृन्द ने अनायास ही दर्शकों को अपने मोहपाश में डाल दिया। लगभग 90 कर्मचारियों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगिता में विजेताओं का निर्णय करने के लिए स्थानीय आकाशवाणी केन्द्र के संगीत विभाग से निर्णायकगण आमंत्रित थे।

संगीत की स्वर लहरियों में डूबे दर्शकों को तंद्रा तब टूटी जब मुख्य अतिथि महोदय ने इस अवसर पर अपना भाषण देना प्रारम्भ किया। मंच पर आते ही उन्होंने कर्मचारियों की भूरी–भूरी प्रशंसा की और कहा कि "हमारी धारणा थी कि केरल में कर्मचारियों का हिन्दी ज्ञान अभी तक इस स्तर तक नहीं पहुंच पाया है, किन्तु आज इसका प्रत्यक्ष प्रमाण मिल गया है" उन्होंने कहा कि यह हो ही नहीं सकता कि बिना हिन्दी भाषा ज्ञान के बाल और स्वर का इतना सुन्दर संगम हो सके। उन्होंने कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा कि राजभाषा से बढ़कर महत्त्व भाव का होता है और और यदि हम भाव को पहचान लेते हैं, उसे व्यक्त कर देते हैं तो भाषा की दीवार स्वतः ही चरमरा जाती है।

हिन्दी दिवस के सिलसिले में आयोजित कुल आठ प्रतियोगिताओं के विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार प्रदान किए गए।

अध्यक्षीय भाषण में श्री वी गणपति ने प्रति वर्ष विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले कर्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखकर संतोष व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि "आज का यह पवित्र दिन हिन्दी भाषा के इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ है। हमें वचनबद्ध होना है उस महत्त्व उद्देश्य की पूर्ति के लिए, जिसके उपलक्ष्य में यह आयोजन हुआ है। हमें सजग रहना है कि हम उस प्रतिज्ञा से विचलित न हों जो 14 सितम्बर, 1949 के दिन हमने ली थी"।

"केनरा बैंक राजभाषा अक्षय योजना" के विजेताओं को वर्ष 1990–91 के दौरान उनके श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन के लिए उप महाप्रबंधक श्री बी आर प्रभु ने ट्रॉफियां प्रदान की। उन्होंने कहा कि "आज मैं "क" क्षेत्र (लखनऊ) से सीधा "ग" क्षेत्र में आ रहा हूं। "ग" क्षेत्र में भी हिन्दी के प्रति कर्मचारियों का उत्साह देकर मुझे वास्तव में प्रसन्नता हुई है। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि वह दिन अब ज्यादा दूर नहीं है जब क्षेत्रों का यह भेद समाप्त हो जाएगा और हिन्दुस्तान के एक कोने से दूसरे कोने तक भाषा के स्तर पर समरसता स्थापित हो जाएगी"।

श्री एस.आर शेणाय, प्रबंधक ने आभार प्रदर्शन किया।

मंच संचालन राजभाषा अधिकारी डा. सोहन लाल ने किया।

पुरस्कार विजेता की सूची

प्रश्नोत्तरी

(सर्वश्री)

पूर्णिमा राधाकृष्णन, आर एस कुमार,
एन स्वामिनाथन, डेसी मात्यू

डिक्टेशन

एन स्वामिनाथन, डेसी मात्यू, शांति वेणुगोपाल,
एस हेमलता, वी आर रामचंद्रन

निबन्ध लेखन

सी शोभा रानी, एस एस मुरली मनोहर, के आई सरस्वती

सुगम संगीत

राजु अलेक्सांडर, पूर्णिमा राधाकृष्णन और ए एस सुरेश, टी सी वर्गीस

काव्य पाठ

डेसी मात्यू, आर जयंती, एम एस राजलक्ष्मी, शांति वेणुगोपाल

वाक्कला

डेसी मात्यू, एन. वसंतकुमारी, पूर्णिमा राधाकृष्णन

स्मृति परीक्षा

माला कृष्ण कुमार, पूर्णिमा राधाकृष्णन और एस पदमा, वी आर रामचंद्रन, डेली मात्यू

समूह गान

कर्मचारी अनुभाग,

कृषि वित्त और प्र. सू. भो. व विकास अनुभाग
कैंट तिरूअनंतपुरम्

केनरा बैंक राजभाषा अक्षय योजना के पुरस्कार विजेता

क्षेत्र "ग" में बैंक का सर्वश्रेष्ठ : अंचल का तिरूअनंतपुरम
अंचलाधीन सर्वश्रेष्ठ मंडल कार्यालय : मं. का. कालिकट
अंचलाधीन सर्वश्रेष्ठ बहुत बड़ी शाखा : लोल्लम मुख्य शाखा
अंचलाधीन दूसरी बहुत बड़ी शाखा : कंटोनमेंट तिरूअनंतपुरम
अंचलाधीन तीसरी बहुत बड़ी शाखा : कोट्टयम मेन
अंचल के अन्तर्गत सर्वश्रेष्ठ अनुभाग : वसूली व विधि अनुभाग
अंचल के अन्तर्गत दूसरा स्थान प्राप्त : कर्मचारी अनुभाग (का)
अंचल के अंतर्गत तीसरा स्थान प्राप्त : कर्मचारी अनु० (अ)

केनरा बैंक मेरठ

हिन्दी दिवस का उदघाटन मां सरस्वती को माल्यार्पण और दीप प्रज्वलित करके श्री नाहर सिंह वर्मा उपनिदेशक (राजभाषा) (गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार गाजियाबाद) ने किया। डा. चन्द्रदत्त शर्मा, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष (हिन्दी) (एन एस कालेज, मेरठ) ने बताया कि हिन्दी एक सरल एवं व्यापक भाषा है इसे आसानी से समझा, पढ़ा और सीखा जा सकता है।

बैंक के मंडल प्रबंधक श्री टी. चोक्कालिंगम ने बताया कि हिन्दी में कामकाज के क्षेत्र में बैंक ने रिजर्व बैंक की राजभाषा शील्डें और भारत सरकार की इंदिरा गांधी राजभाषा शील्डें जीती हैं।

बैंक के राजभाषा अधिकारी श्री खेमराज ने समारोह का संचालन किया एवं हिन्दी दिवस के महत्त्व पर प्रकाश डाला। बैंक के प्रबन्धक श्री विजय कुमार ने आभार प्रदर्शित किया।

हिन्दी में आशुभाषण एवं मोनोएक्टिंग नामक दो प्रतियोगिताएं की गई। आशुभाषण प्रतियोगिता में कु. शम्मी बत्रा, श्री एस एस गुप्ता और श्री अनिमेष शर्मा ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय रहे। मोनो एक्टिंग प्रतियोगिता में श्री अनिमेष शर्मा, पी.पी शर्मा और श्री एम के सिंह क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय रहे। मंडल में सितम्बर 91 हिन्दी मांह के रूप में मनाया गया। इस उपलक्ष में दिनांक 27-9-91 को मनोहर लाल इंटर कालेज, मेरठ में विद्यार्थियों के लिए बैंक द्वारा एक आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वाले छात्रों को वरिष्ठ प्रबंधक श्री मूर्ति ने पुरस्कार वितरित किए।

इंडियन ओवरसीज बैंक अंचल कार्यालय, मदुरै

दिनांक 3-10-91 से 10-10-91 तक राजभाषा सप्ताह मनाया गया। स्थानीय राष्ट्रीयकृत बैंकों के कर्मचारियों के लिए हिन्दी में विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसा कि हिन्दी प्रबोध स्तर के स्टाफ सदस्यों के लिए शब्द चयन, श्रुत लेखन, प्रवीण स्तर के स्टाफ सदस्यों के लिए शासकीय व सामान्य पत्र लेखन प्राज्ञ स्तर के स्टाफ के लिए निबंध लेखन, बैंकिंग पाठ्यक्रम के स्टाफ के लिए बैंकिंग विषय पर निबंध लेखन, व सभी बैंकों के कर्मचारियों के लिए हिन्दी निबंध प्रतियोगिता आदि रोज एक एक करके चलाई गई और विजेताओं को दिनांक 10-10-1991 को संपन्न हिन्दी दिवस समारोह में पुरस्कृत किया गया। राजभाषा सप्ताह के समापन के रूप में दिनांक 10-10-1991 को अंचल कार्यालय में हिन्दी दिवस मनाया गया। मदुरै अंचल प्रबंधक श्री ए.डी. रामकृष्णन, सहायक महाप्रबंधक ने अपना भाषण हिन्दी में सुनाया। उन्होंने हिन्दी को राजभाषा के रूप में अपनाने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। श्री आर. बालसुब्रमणियन, क्षेत्रीय प्रबंधक (मदुरै) ने अपने स्वस्तिवचन में हिन्दी भाषार्जन में स्टाफ सदस्यों द्वारा दिखाई जाने वाली लगन की सराहना की। मुख्य अतिथि श्री एस. बापू, आई आर एस अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति मदुरै व आयकर आयुक्त मदुरै ने अपने भाषण में विभिन्न भाषाओं को सीखने से होने वाले लाभ व उत्तम ग्राहक सेवा में हिन्दी का ज्ञान द्वारा प्राप्त होने वाली सहायता आदि पर जोर दिया। विशिष्ट अथिति श्री मेजय डाक्टर सी.के. महादेवन, प्राचार्य व विभागाध्यक्ष,

तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन विभाग तमिल विभाग, मदुरै कामराजर विश्वविद्यालय ने अपने भाषण में राष्ट्रीयता व राष्ट्रभाषा का तात्पर्य समझाते हुए नई भाषाओं को सीखने की "सरल वाक्य पद्धति" की सिफारिश की। तत्पश्चात एक वाद-विवाद कार्यक्रम चला---वाद का विषय था---भारत को, वर्तमान आर्थिक संकट से बचाने के लिए किस के लिए प्राधान्य देना वांछित है---कृषि विकास या औद्योगिक विकास ?" इस वाद-विवाद में स्टाफ सदस्यों ने सक्रिय भाग लिया। निर्णायक महोदय ने प्रो० महादेवन ने दोनों पक्षों का तर्क सुना और अंत में कृषि विकास को प्राथमिकता देने की आवश्यकता पर जोर दिया।

अंत में प्रतियोगिता-विजेताओं को पुरस्कार दिए गए और श्री मकर भूषणम् राजभाषा अधिकारी के धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात राष्ट्रगान के साथ समारोह समाप्त हुआ।

इंडियन बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, बंगलूर

दिनांक 7-9-91 से 14-9-91 तक अत्यंत उल्लास एवं भव्य रूप से "हिन्दी सप्ताह" मनाया गया।

इस दौरान 'हिन्दी निबंध' हिन्दी वाक्', 'हिन्दी गीत', 'हिन्दी क्विज' इत्यादि प्रतियोगिताएं की गईं। और बेंगलूर में स्थित सभी शाखाओं से कर्मचारियों ने अत्यन्त उत्साह से इन प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

हिन्दी ज्ञान को बढ़ाने हेतु "तिमाही स्मरण प्रतियोगिता" की गई।

इसके साथ-साथ सभी शाखाओं में नामांकित "हिन्दी समन्वयक" के लिए "राजभाषा समीक्षा" बैठक की गई। बैठक में राजभाषा प्रयोग के संबंध में प्रत्येक शाखा में हुई प्रगति के बारे में समीक्षा की है और हिन्दी कार्य को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक सुझाव दिए गए।

इंडियन बैंक में पहली बार इस तरह की राजभाषा समीक्षा बैठक आयोजित की गई। इस तरह का कार्यक्रम अब तक किसी भी कार्यालय (इंडियन बैंक) में नहीं हुआ।

"हिन्दी सप्ताह" का अंतिम दिन यानी "हिन्दी दिवस" दिनांक 14-9-91 के दिन कर्मचारी प्रशिक्षण केन्द्र, कोरमंगला बेंगलूर में आयोजित किया गया।

श्री निरंजन के राव, मुख्य अधिकारी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और श्री एच०डी० नागेश, इंडियन बैंक कर्मचारी संघ, कर्नाटक के महा सचिव एवं इंडियन बैंक के भूतपूर्व निदेशक ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में उपस्थित होकर दीप जलाकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री निरंजन के राव ने इस उपलक्ष में बैंगलूर क्षेत्राधीन शाखाओं में हुई प्रगति का विवरण दिया एवं कुछ शाखाओं को राजभाषा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। सभी प्रतियोगिताओं को राजभाषा प्रगति का विस्तृत विवरण श्री टी०एस०वी० प्रसाद, राजभाषा अधिकारी ने दिया और वर्ष 1991-92 के दौरान उत्तम प्रगति दिखाने एवं इंडियन बैंक, क्षे० का० को उत्तम क्षेत्र का दर्जा प्राप्त करने के लिए सभी शाखा प्रबंधकों से हिन्दी में और कार्य की प्रगति दिखाने का अनुरोध किया।

के आर रोड एवं राजाजी नगर शाखाओं ने इस संबंध में अपनी रिपोर्ट दी और पत्राचार लक्ष्य प्राप्त करने के संबंध में कुछ सुझाव भी दिए।

प्रतियोगिताओं में सफल विजेताओं को श्री निरंजन के राव ने पुरस्कार प्रदान किए।

समारोह के दौरान बहुत सी सुन्दर "सांस्कृतिक कार्यक्रम" भी किया गया।

नगर राजभाषा समिति (बैंक), तिरुअनंतपुरम

संयोजक : केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, महात्मा गांधी रोड, तिरुअनंतपुरम

सार्वजनिक क्षेत्र के राष्ट्रीयकृत बैंकों की नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति, तिरुअनंतपुरम (संयोजक : केनरा बैंक) के तत्वावधान में 16 अक्तूबर 1991 को संयुक्त हिन्दी दिवस समारोह किया गया। श्री बी०डी० शेणाय, सहायक महाप्रबंधक ने समारोह की अध्यक्षता की। प्रो० एस पदमकुमारी, अध्यक्षा, (हिन्दी विभाग, महिला महाविद्यालय, तिरुअनंतपुरम) ने मुख्य अतिथि का आसन ग्रहण किया। स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर के उप महाप्रबंधक श्री के० सुकुमारन् ने इस अवसर पर आशीर्वचन कहे।

स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर के प्रधान कार्यालय में हुए कार्यक्रम का शुभारंभ प्रार्थनागीत से हुआ। जिसके उपरांत श्री के० चन्द्रन, वरिष्ठ प्रबंधक, स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर ने अध्यक्ष और मुख्य अतिथि समेत उपस्थित समस्त महानुभाव का स्वागत किया।

स्वागत के उपरांत सुगम संगीत प्रतियोगिता के विजेताओं ने एक से बढ़कर एक सुमधुर गीत गाकर अनायास ही दर्शकों का मन मोह लिया। संगीत कार्यक्रम के बाद मुख्य अतिथि ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करके उन्हें सम्मानित किया। इस क्रम में पांच प्रतियोगिताएं-निबंध लेखन, वाक्कला, सुगम संगीत, बैंकिंग शब्दावली और प्रश्नोत्तरी की गई, जिनमें 27 कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया। प्रो० एस० पदमकुमारी ने यह कहते हुए हर्ष व्यक्त किया कि अनेक क्षेत्रों में बेजोड़ प्रतिभा संपन्न कर्मचारियों को सम्मानित करने का काम इस समिति ने किया है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि हिन्दी के उत्थान में इस तरह के क्रियाकलाप अनिवार्य रूप से सहायक सिद्ध होंगे। कार्यालयीन हिन्दी और साहित्यिक हिन्दी के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि यद्यपि साहित्यिक हिन्दी के मुकाबले में कार्यालयीन हिन्दी को अपनाना कुछ मुश्किल है तथापि यदि भाषा के स्तर पर दोनों में तालमेल बिठाया जाएं तो हिन्दी का जो स्वरूप विकसित होगा वह अत्यधिक लोकप्रिय होगा। उन्होंने जोरदार शब्दों में कहा कि हिन्दी की गति को अब चाहकर भी नहीं रोका जा सकता। आज हिन्दी ने लोगों के दिल में

जगहें बना ली है। आंकड़े देते हुए उन्होंने कहा कि प्रति वर्ष हमारे कालेज से दो हजार से भी अधिक छात्राएं स्नातक स्तर पर हिन्दी का अध्ययन करती हैं जबकि उनके पास हिन्दी अथवा क्षेत्रीय भाषा पढ़ने का विकल्प रहता है।

मुख्य अतिथि के भाषण के उपरांत अध्यक्ष श्री बी०डी० शेणाय ने "टोलिक राजभाषा रोलिंग शील्ड योजना" (केनरा बैंक द्वारा प्रायोजित) के अन्तर्गत निम्नानुसार ट्राफियां एवं प्रमाणपत्र प्रदान किए :

योजना 'क'	प्रशासनिक इकाइयों के लिए
प्रथम :	भारतीय स्टेट बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुअनंतपुरम्।
द्वितीय :	विजया बैंक, प्रभागीय कार्यालय, तिरुअनंतपुरम्
तृतीय :	स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर, आंचलिक कार्यालय, तिरुअनंतपुरम।
योजना 'ख'	शाखाओं के लिए
प्रथम :	बैंक आफ महाराष्ट्र, तिरुअनंतपुरम
द्वितीय :	ओरियंटल बैंक आफ कामर्स, तिरुअनंतपुरम
तृतीय :	इलाहाबाद बैंक, तिरुअनंतपुरम

अपने भाषण के दौरान अध्यक्ष ने कहा कि 'जहां एक ओर केरल अपनी प्राकृतिक छटा और सांस्कृतिक धरोहर के कारण अपना सानी नहीं रखता, वहीं दूसरी ओर आधुनिक ज्ञान विज्ञान का शायद ही कोई क्षेत्र हो जिसे केरल की प्रतिभाओं ने मंडित न किया हो। केरल वासियों का ज्ञान पिपासु मन भाषा के स्तर पर कठिनाई महसूस करता हो, यह बात गले नहीं उतरती। आवश्यकता है तो सिर्फ उन साधनों की जो हिन्दी सिखाने में सहायक हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि "हिन्दी सीखने के लिए आज पर्याप्त अनुकूल वातावरण बन चुका है और फिर केरल में तो स्कूलों में भी हिन्दी पढ़ाई जाती है। ऐसी स्थिति में अर्जित ज्ञान को भूल जाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि आज कदम-कदम पर, मोड़-मोड़ पर हिन्दी में लिखित सूचनाएं, साइन बोर्ड नजर आते हैं। बाहर की बात छोड़ दें तो हर घर में आज हिन्दी का माहौल बन चुका है। हर रोज एक घंटे तक अगर हम दूरदर्शन के हिन्दी कार्यक्रम देखें तो महीने भर में खुद-ब-खुद हिन्दी बोलने लगेंगे। कामकाजी हिन्दी पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने आह्वान किया कि "कल की बात छोड़ कर हम आज हिन्दी में कार्य आरंभ करेंगे"।

श्री के0 सुकुमारन्, उप महाप्रबंधक, स्टेट बैंक त्रावणकोर ने अपने आशीर्वाद भाषण के दौरान अपने कुछ संस्मरण प्रस्तुत करते हुए अनेक व्यावहारिक पक्षों की ओर संकेत किया। उन्होंने कहा कि बैंकिंग उद्योग में होने के नाते अनेक भाषा-भाषियों के बीच रहने के अवसर मुझे मिले हैं। इस सिलसिले में किसी भी नए स्थान में जाने पर हमारी सबसे पहली मांग विचार-विनिमय करने वाली भाषा की होती है। इसमें तनिक भी संदेह नहीं रह गया है कि आज हिन्दुस्तान के किसी कोने में आप चले जाएं, हिन्दी हमारी इस मांग की पूर्ति कर देती है।

अंत में समिति के सदस्य सचिव डा. सोहन लाल ने सभी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। उन्होंने सभी सदस्यों से अपना सक्रिय सहयोग बनाए रखने की अपील की।

मंच संचालन डा0 सोहन लाल, सदस्य सचिव ने किया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन (बैंकर्स) कोच्चि

संयोजक : यूनियन बैंक आफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, एर्णाकुलम

हिंदी सप्ताह के दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताएं की गई।

हिन्दी अनुवाद एवं बैंकिंग समिति शब्दावली :

यह प्रतियोगिता दिनांक 11-9-91 को की गई। सभी प्रतिभागियों को एक प्रश्न पत्र दिया गया। जिसमें हिन्दी से अंग्रेजी या उसके विपरीत अनुवाद हेतु कुछ शब्द/वाक्य दिए गए। प्रतियोगिता का उद्घाटन श्री के० के० सत्यनाथ अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन (बैंक) समिति, कोच्चि एवं क्षेत्रीय प्रबंधक, यूनियन बैंक आफ इंडिया ने किया।

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता :

यह प्रतियोगिता दिनांक 11-9-91 को की गई। प्रतिभागियों को विकल्प रूप में निम्न में से किसी एक विषय पर हिन्दी निबंध लिखना था।

1. यदि मैं शाखा प्रबंधक होता
2. विश्व में आंतक वाद की समस्या
3. देश के आर्थिक विकास में बैंकों का योगदान

इस प्रतियोगिता का उद्घाटन श्री ओ० आर० के० मूर्ति, सहायक निदेशक, (राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, कोच्चि) ने किया।

हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता :

यह प्रतियोगिता 12-9-91 को की गई। सभी प्रतिभागियों को एक हिन्दी में टाइप किया हुआ "पैराग्राफ" दिया गया, जिसे प्रतिभागियों ने अपने हस्तलेख में लिखा। प्रतियोगिता का उद्घाटन श्री रामचन्द्र मिश्र (उपनिदेशक राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, कोच्चिन) ने किया।

गीत/गायन प्रतियोगिता :

यह प्रतियोगिता दिनांक 12-9-91 को की गई। इस प्रतियोगिता में प्रतियोगियों ने अपनी पसन्द का एक हिन्दी गाना गया। इस प्रतियोगिता का उद्घाटन श्री राम चन्द्र मिश्र, उप निदेशक (राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय—कोच्चिन) ने किया।

संयुक्त हिन्दी सप्ताह समारोह का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 20-9-91 को हुआ, जिसकी अध्यक्षता नगर राजभाषा कार्यान्वयन (बैंक) समिति--कोच्चि के अध्यक्ष श्री के. के. सत्यनाथन ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री लोकनाथ बेहेरा (आई. पी. एस.) पुलिस आयुक्त, थे।

सिंडिकेट बैंक, गाजियाबाद

हिन्दी दिवस/सप्ताह 6-9-91 से 14-9-91 तक बड़े ही उल्लासपूर्वक मनाया गया। इस सप्ताह के दौरान चार प्रकार की हिन्दी प्रतियोगिताएं आयोजित करवाई गई।

1. हिन्दी में निबन्ध लेखन प्रतियोगिता
2. हिन्दी में विज्ञापन प्रतियोगिता
3. हिन्दी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता
4. बैंकिंग शब्दावली---हिन्दी-से-अंग्रेजी तथा अंग्रेजी-से-हिन्दी प्रतियोगिता

इन प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों ने खूब बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले को आकर्षक पुरस्कार दिए गए। समारोह की अध्यक्षता मंडल प्रबन्धक श्री राननाथ भट्ट ने की तथा समारोह में मुख्य अतिथि थे---श्री धनेश्वर प्रसाद बन्दूनी, सहायक निदेशक (भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गाजियाबाद)।

इस अवसर पर राजभाषा अनुभाग द्वारा तैयार की गई पत्रिका "राजभाषा-दर्शिका-91 अंक-2" का भी विमोचन किया गया। इन प्रतियोगिताओं एवं समारोह का संचालन राजभाषा अधिकारी डॉ. रावल ने किया तथा राजभाषा अनुभाग के प्रभारी अधिकारी श्री नरेन्द्र कुमार गोयल ने कर्मचारियों से हिन्दी में अधिक-से-अधिक कार्य करने की अपील की।

उपक्रम

कछाड़ पेपर मिल सिलचर (पंचग्राम)

हिन्दुस्तान पेपर कॉरपोरेशन लि. की इकाई कछाड़ पेपर मिल में 14 सितम्बर, 1991 को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन श्री श्यामा प्रसाद दासगुप्ता, वरिष्ठ महाप्रबंधक-सह-मुख्य अदिशासी की अध्यक्षता में हुआ।

मुख्य अतिथि श्री भट्टाचार्य, उपायुक्त (हैलाकाण्डी) ने हिन्दी के प्रयोग पर जोर देते हुए कहा कि हिन्दी हमारे देश की संपर्क भाषा है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक देश के किसी भी कोने में हिन्दी किसी न किसी रूप में अवश्य ही विद्यमान है। इसकी मधुरता, सरलता, लालित्य एवं आकर्षण ही इसकी विशेषता है। यही कारण है कि हिन्दी का हम सभी आदर करते हैं।

मुख्य अतिथि ने प्रतियोगिताओं के सफल प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया।

श्री दासगुप्ता ने सभी आगन्तुकों को धन्यवाद देते हुए कार्यालयों में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि हिन्दी के लिए मात्र भाषण करने से काम नहीं चलेगा बल्कि उसके प्रगामी प्रयोग के लिए निरन्तर प्रयास की आवश्यकता है। इसके लिए सभी कार्यालय हिन्दी के नए उपकरण जुटाने के लिए प्रयत्नशील हों तो यह सुखद होगा।

उक्त अवसर पर श्री आर. एस. डी. पाण्डेय, महाप्रबंधक (कार्य), श्री बिनोद बिहारी, वरिष्ठ प्रबंधक (कार्मि. एवं प्रशा.) ने भी उद्गार व्यक्त किए।

राष्ट्रीय एकता शपथ ग्रहण समारोह

कछाड़ पेपर मिल में दि. 19 नवम्बर से 25 नवम्बर तक राष्ट्रीय एकता सप्ताह समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें 21 नवम्बर को प्रशासनिक भवन में राष्ट्रीय एकता शपथ ग्रहण समारोह श्री आर. एस. डी. पाण्डेय, महाप्रबंधक (कार्य) की अध्यक्षता में हुआ।

श्री पाण्डेय ने उक्त अवसर पर मिल के सभी अधिकारियों कर्मचारियों से आग्रह किया कि मिल की उत्तरोत्तर प्रगति एवं देश के विकास के लिए हमें अपने अन्तः के भेदभाव को मिटाते हुए आपस में मिल-जुल कर काम करना चाहिए।

इस अवसर पर सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने एक साथ निर्धारित शपथ ली।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
पंचदीप भवन, गणेशपेठ नागपुर

14 सितंबर 1991 को 'हिंदी दिवस' धूम धाम से मनाया गया है।

वर्ष 1990-91 की हिंदी प्रयोग की वार्षिक रिपोर्ट नियमानुसार है:---

हिन्दी में पत्राचार

"क" तथा "ख" क्षेत्रों को भेजे गए कुल पत्र	242
इनमें से हिन्दी में भेजे पत्र	129

वर्ष, 90-91 में कार्यालय के कामकाज का 54 प्रतिशत हिन्दी में किया गया जबकि निर्धारित लक्ष्य 65 प्रतिशत है।

44 अधिकारी/कर्मचारी 75 प्रतिशत से अधिक कार्य हिन्दी में करते हैं। इनमें से 31 कर्मचारी पूर्णरूप से हिन्दी में कार्य करते हैं।

वर्ष, 1990-91 में निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

1. हिन्दी निबंध प्रतियोगिता दि. 9-8-91
2. हिन्दी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता दि. 21-6-91
3. हिन्दी अंताक्षरी प्रतियोगिता
4. हिन्दी पोस्टर प्रतियोगिता दि. 7-6-91

इसके अतिरिक्त केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् द्वारा निम्नलिखित प्रतियोगिताएं की गई।

1. हिन्दी निबंध प्रतियोगिता
2. हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता
3. हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता
4. हिन्दी वाक् प्रतियोगिता

हिन्दी में काम की नकद पुरस्कार योजना

रु. 400/–	2 कर्मचारी पुरस्कृत
रु. 200/–	3 कर्मचारी पुरस्कृत
रु. 150/–	1 कर्मचारी पुरस्कृत

रु. 100/–की नकद योजना में 44 कर्मचारी पुरस्कृत किए गए है जबकि पिछले वर्ष 35 कर्मचारी पुरस्कृत किए गए थे।

हिन्दी कार्यशाला :—वर्ष 1990-91 में 42 हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया इस समय हिन्दी कार्यशाला का पुनश्चर्या कार्यक्रम चालू है।

"अन्तः अनुभागीय राजभाषा शील्ड" योजना के अंतर्गत "कोर शाखा" को वर्ष 90 में सबसे अधिक कार्य हिन्दी में करने पर शील्ड प्रदान की गई।

"आज का शब्द एवं विचार योजना" का शुभारंभ भी आज के दिन से ही किया गया है। प्रथम विचार "अतिथि देवो भव" से प्रारंभ है।

इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लि. गुजरात

गुजरात रिफाइनरी आफीसर्स क्लब के तत्वावधान में दिनांक 11-12-91 को एक काव्य संध्या का आयोजन किया गया।

इस काव्य संध्या की शुरुआत केन्द्रीय विद्यालय ई एम ई के हिंदी प्राध्यापक श्री आशाराम वर्मा द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना से हुई। इसके बाद गुजराती माध्यम स्कूल गुजरात रिफाइनरी के उपाचार्य श्री प्रवीण बलिया ने (शृंगार परक रचना प्रस्तुत की) तत्पश्चात् केन्द्रीय विद्यालय ई एम ई की हिंदी अध्यापिका एवं सुविख्यात कवयित्री श्रीमती सुषमा श्रीवास्तव ने अपने गीतों से समां बांधा इसके बाद अहमदाबाद से पधारी डॉ. प्रणव भारती ने आज की परिस्थितियों को लेकर एक गज़ल प्रस्तुत की। तत्पश्चात् रेलवे से पधारी श्रीमती रचना निगम ने समसायिक गीत प्रस्तुत किए। इसके बाद ओ एन जी सी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. नवीन प्रकाश सिंह 'नवीन' ने प्रदूषण के संबंध में एक सार्थक रचना पढ़ी और अंत में कवि गोष्ठी को उत्कर्ष पर पहुंचाया अपनी ओजमयी कविताओं के माध्यम से म. स. विश्वविद्यालय के हिंदी प्रवक्ता एवं लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. विष्णुविराट चतुर्वेदी ने कवि गोष्ठी का सरस संचालन डॉ. माणिक मृगेश ने किया।

दि न्यु इंडिया एश्योरेन्स कं. लि., प्रादेशिक कार्यालय कलकत्ता

प्रादेशिक कार्यालय में दिनांक 14-19 सितम्बर, 1991 तक विभिन्न प्रतियोगिताएं यथा हिन्दी निबंध, टिप्पण/प्रारूप लेखन, वाक् तथा कविता पाठ प्रतियोगिताएं की गई जिनमें कलकत्ता प्रादेशिक कार्यालय तथा अधीनस्थ सभी मंडल की शाखाओं के करीब 110 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। हिन्दी सप्ताह के समापन पर दिनांक 20 सितम्बर, 1991 को "हिन्दी सप्ताह समापन समारोह" किया गया। श्री एस. के. राय, उप प्रबंधक ने स्वागत किया। श्री शम्भु सेनगुप्ता, प्रादेशिक प्रभारी तथा एस. देवराय, प्रबंधक ने भी इस उपलक्ष्य पर विचार रखे। मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती उषा गांगुली प्राध्यापक (भवानीपुर एजुकेशनल सोसाइटी) तथा संयोजक (रंगकर्मी नाट्य संस्था) उपस्थित थीं। समारोह में कविगुरू रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 50वीं पुण्य तिथि के अवसर पर उनके गीतों, गीति आलेख की हिन्दी रूपान्तर की प्रस्तुति से उन्हें श्रृद्धासुमन अर्पित किए गए। पुरस्कार वितरण श्री शम्भु सेन गुप्ता ने किया। धन्यवाद ज्ञापन श्री चम्पालाल बरमेचा, सहायक प्रबंधक ने किया। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी अधिकारी श्रीमती सुमन साहा ने किया।

नेशनल थर्मल पावर कार्पोरेशन, केन्द्रीय कार्यालय, नई दिल्ली

प्रत्येक वर्ष की तरह निगम के केन्द्रीय कार्यालय में "हिन्दी दिवस समारोह" किया गया।

अपने स्वागत भाषण में कार्पोरेट केन्द्र के उप महाप्रबंधक (प्रशासन) श्री सत्येन्द्र नाथ पाण्डेय ने हिंदी में कामकाज की दिशा में किए जा रहे प्रयासों का विस्तृत ब्यौरा देते हुए आने वाले दिनों में राजभाषा की प्रगति को और भी व्यापक व तेज करने का आश्वासन दिया। निदेशक (कार्मिक) श्री राजेन्द्र सिंह ने कहा कि यह बहुत हर्ष की बात है कि आज हम सभी यहां "हिन्दी दिवस" मनाने एकत्र हुए हैं।

उन्होंने कहा कि हिंदी में काम करने के लिए बाहरी तैयारी की नहीं, बल्कि खुद को भीतर से तैयार करने की आवश्यकता है। उन्होंने प्रारंभ में कम से कम दस प्रतिशत

काम हिंदी में करने हेतु प्रण करने को कहा । कर्मचारियों ने अपने हाथ उठाकर यह प्रण किया कि वे अपना दस प्रतिशत काम हिंदी में करेंगे ।

निगम के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री पी.एस. बामी ने "हिंदी दिवस समारोह" का उद्घाटन करते हुए कहा कि निगम हर क्षेत्र में अग्रणी रहा है । यह कोशिश होनी चाहिए कि हम राजभाषा हिंदी को बढ़ाने में भी आगे रहें । इसके लिए हमारा निगम सभी प्रकार की सुविधाएं देने को तैयार है । जिस गति से हिंदी का प्रचार-प्रसार हो रहा है उसे और तेज करने की जरूरत है ।

समारोह में आमंत्रित विशेष अतिथि डा. आई. पांडुरंग राव ने कहा कि भाषा का काम लोगों को एक-दूसरे से जोड़ना है, तोड़ना नहीं । जो व्यक्ति जितनी अधिक भाषाएं जानता है, वह उतने अधिक लोगों का बनकर रहता है । भारत की सभी भाषाएं मधुर व समृद्ध हैं । हिंदी ने सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों के लिए अपने द्वार खुले रखे हैं । इसलिए इसमें सभी भारतीय भाषाओं के असंख्य शब्द मिल जाते हैं । स्वाधीनता संग्राम में सभी भारतीयों ने एक होकर जिस भाषा को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया था, वह हिंदी ही थी । अतः स्वाधीनता के बाद भारतीय भाषाओं को एक सूत्र में जोड़ने का दायित्व भी हिंदी को सौंपा गया और उल्लेखनीय बात यह है कि इसके प्रचार-प्रसार में हिंदी भाषियों से कहीं अधिक योगदान अहिंदी भाषियों का था । आखिर यह, हम सबकी अपनी भाषा है जिसने हमारी अभिव्यक्ति को जन-जन तक पहुंचाने के सपने को साकार किया, तो फिर आज हम इसे कार्यालयीन कामकाज में अपनाने में झिझकते क्यों हैं ? यह शायद हमारे मन की कुंठा है । जिस दिन हम इस कुंठा से मुक्त हो जाएंगे उस दिन हिंदी में काम करने के लिए आग्रह की आवश्यकता नहीं रहेगी । मैं समझता हूं कि अब हमें देर नहीं करनी है और भारतीय होने के नाते अपने दायित्व को पूरा करना है । मुझे आशा ही नहीं वरन् पूरा विश्वास है कि आप सभी इसमें अपना योगदान देंगे । डा. राव के भाषण के बाद निगम के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री पी.एस. बामी ने दिनांक 3–9 सितंबर, 1991 तक "हिंदी सप्ताह" के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण पत्र व पुरस्कार स्वरूप साहित्यिक पुस्तकें प्रदान की ।

इसके बाद वर्ष 1990-91 के दौरान आयोजित आठ हिंदी कार्यशालाओं के विजेताओं को निदेशक (कार्मिक) श्री राजेन्द्र सिंह ने प्रमाण-पत्र व पुरस्कार प्रदान किए ।

समारोह के समापन पर कार्पोरेट केन्द्र के वरिष्ठ प्रबंधक (प्रशासन) श्री सुशील कुमार संगल ने विशेष अतिथि डा. पांडुरंग राव तथा कार्यालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों का धन्यवाद किया ।

समारोह का संचालन हिंदी अनुभाग के प्रभारी उप प्रबंधक (राजभाषा) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने किया ।

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद

807, अंसल भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद की ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड दिल्ली की शाखा द्वारा 18 सितंबर, 1991 को नई दिल्ली में हिन्दी सप्ताह समारोह के अवसर पर एक "पुस्तक प्रदर्शनी" लगाई गई । प्रदर्शनी में हिन्दी परिषद के प्रकाशन, कम्पनी द्वारा तैयार किया गया साहित्य और राजभाषा विभाग के पोस्टर लगाए गए थे ।

प्रदर्शनी का उद्घाटन मुख्य अतिथि संसद सदस्य डा. रत्नाकर पाण्डेय ने किया । इस अवसर पर कम्पनी के निदेशक श्री ब्रजराज, प्रबंधक श्री सिद्धनाथ गुप्ता, वरिष्ठ अधिकारी और परिषद की शाखा के पदाधिकारी भी उपस्थित थे ।

प्रदर्शनी लगभग एक हजार लोगों ने देखी । इस अवसर पर सभी को "हिन्दी परिचय" नामक पत्रिका शाखा की ओर से निःशुल्क उपलब्ध कराई गई । सभी ने प्रदर्शनी की सराहना की और इसे हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए बहुत उपयोगी बताया ।

इस अवसर पर अनेक लोगों ने परिषद की सदस्यता भी ग्रहण की ।

नेशनल इंशोरेंस कं.
क्षेत्रीय कार्यालय अहमदाबाद

दिनांक 16 सितम्बर, 91 को क्षेत्रीय कार्यालय में हिन्दी संभारोह का उद्घाटन श्री सोनेलाल कोल सहायक निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना एवं श्री विश्वम्भर नाथ मदान क्षेत्रीय प्रबंधक ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित करके किया । श्री कोल सहायक निदेशक ने उद्घाटन भाषण में अन्य कार्यालयों के अपने अनुभव को संक्षिप्त चर्चा करते हुए कहा कि नेशनल इन्श्योरेन्स कंपनी की तिमाही बैठकों में जिस गम्भीरता के साथ हिन्दी के प्रयोग के संबंध में चर्चा होती है वह अन्य कार्यालयों के लिए अनुकरणीय है । श्री विश्वम्बर नाथ मदान, क्षेत्रीय प्रबंधक ने आह्वान किया कि हर स्तर के कर्मचारी अपने कार्यालय का दैनिक कार्य हिन्दी में करें । विभिन्न प्रतियोगिताएं भी की गई । □

हिंदी कार्यशालाएं

पावर इंजीनियर्स ट्रेनिंग सोसाइटी

दुर्गापुर संस्थान में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

तापीय विद्युत केन्द्र कार्मिक प्रशिक्षण संस्थान, दुर्गापुर (पश्चिम बंगाल) में 5-8-91 से 9-8-91 तक पांच दिवसीय हिन्दी कार्यशाला में दुर्गापुर संस्थान के तीन अधिकारियों तथा छह कर्मचारियों ने भाग लिया।

इस कार्यशाला का समापन किया गया जिसमें कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रशिक्षणार्थियों के अतिरिक्त संस्थान के अन्य अधिकारियों तथा कर्मचारियों को भी आमंत्रित किया गया।

श्री बी०एस० कस्तूरिया, राजभाषा अधिकारी, पैट्स मुख्यालय ने कार्यशाला के आयोजनों का महत्त्व बताते हुए कहा कि इससे हिन्दी में काम करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपना संकोच दूर करने में मदद मिलती है। समापन समारोह में मुख्य अतिथि श्री एच० चटर्जी, मुख्य अधीक्षक (प्रशिक्षण) ने सूचित किया कि संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में इस बार महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं तथा संस्थान में कार्यरत हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों को महीने में कम से कम दस पत्र हिन्दी में जारी करने के निर्देश दिए गए हैं।

कार्यशाला में भाग लेने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रमाण-पत्रों के अतिरिक्त "प्रशासनिक शब्दावली" की एक-एक पुस्तक तथा कार्यशाला को सम्बन्धित सामग्री एवं राजभाषा अधिनियम/नियम की एक-एक पुस्तक भेंट की गई।

संस्थान के अनुवादक श्री सुरेश रविदास ने धन्यवाद किया और प्रशिक्षणार्थियों से अनुरोध किया कि वे हिन्दी में कामकाज करें।

कार्यालय, मुख्य आयकर आयुक्त, पटियाला

1991 के दौरान आयकर विभाग, पटियाला की ओर से 4 हिन्दी कार्यशालाएं करवाई गई जिनमें 86 अधिकारियों तथा कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया। जिसका विवरण निम्नानुसार है :—

(1) पटियाला में दिनांक 8 तथा 9 जनवरी, 1991 को आयकर प्रभार के हर सहायकों तथा उच्च श्रेणी लिपिकों के लिए कार्यशाला की गई। अध्यक्षता श्री जमील अहमद, आयकर उपायुक्त, ने की।

(2) चण्डीगढ़ में दिनांक 9 तथा 10 मई, 91 को आयकर विभाग के निरीक्षकों, कर सहायकों तथा उच्च श्रेणी लिपिकों के लिए 2 दिवसीय कार्यशाला की गई, जिसकी अध्यक्षता श्रीमती सरोज बाला, आयकर उपायुक्त ने की।

(3) पटियाला में दिनांक 5 तथा 6 अगस्त, 91 को विभाग के विभिन्न स्टेशनों पर कार्यरत निरीक्षकों/मुख्यलिपिकों/पर्यवेक्षकों को तथा नरा कास पटियाला के विभिन्न कार्यालयों के अधीक्षकों, मुख्य लिपिकों तथा प्रधान लिपिकों को इस कार्यशाला के अन्तर्गत प्रशिक्षण दिया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री जमील अहमद, आयकर उपायुक्त, ने की।

(4) दिनांक 26-8-91 तथा 27-8-91 को 2 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन लुधियाना में कार्यरत अधिकारियों के लिए किया गया जिसमें सहायक आयकर आयुक्त तथा आयकर अधिकारी सम्मिलित हुए। श्री जी०एस० सिद्धू, आयकर आयुक्त, पटियाला ने अध्यक्षता ने की।

उपर्युक्त कार्यशालाओं में श्री जी०एस० सिद्धू, आयकर आयुक्त (पटियाला) ने हिन्दी के अधिक से अधिक प्रयोग के लिए कहा।

श्री जमील अहमद, आयकर उपायुक्त (पटियाला रेंज, पटियाला) ने अधिकारियों तथा कर्मचारियों को हिन्दी में आदेश तैयार करने तथा पारित करने एवं फाइलों पर छोटी-छोटी टिप्पणियां लिखे जाने के संबंध में व्यावहारिक ज्ञान दिया और उन्हें अपने अनुभव बताते हुए कहा कि अंग्रेजी में हम संक्षेप लिख सकते हैं तो हिन्दी को भी उसी प्रकार लिखा जा सकता है। हिन्दी अंग्रेजी से बहुत ही सरल है। इसका कार्यालयों में प्रयोग बढ़ाने में आपका सहयोग प्रार्थनीय है, क्योंकि यह हमारी राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा है।

लुधियाना तथा पटियाला में आयोजित 4 कार्यशालाओं के एक सेट में फिल्म प्रभाग द्वारा तैयार की गई डाकूमैन्टरी फिल्में दिखाई गई, जिसमें अधिकारियों तथा कर्मचारियों को "हिन्द की वाणी", "देश के वाणी" तथा "हिन्दी सब संसार" फिल्म विशेष रूप से पसन्द आयीं और उन्हें प्रेरणादायक लगीं।

केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण, नई दिल्ली

दिनांक 26-11-91 से 2-12-91 तक पांच दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्राधिकरण के अवर सचिव (प्रशासन), श्री संजय विक्रम सिंह ने कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए कहा कि हमें कार्यालयों के कामों में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। सहायक निदेशक (राजभाषा), श्री ओम प्रकाश ने कार्यशाला के आयोजन पर प्रकाश डाला।

समापन समारोह में श्री डी.पी. सिन्हा, मुख्य अभियन्ता एवं अध्यक्ष, (राजभाषा कार्यान्वयन समिति) ने कहा कि हमें विश्वास है कि कार्यशाला में भाग लेने वाले कर्मचारीगण हिन्दी में काम करने की झिझक को त्याग कर, अपना सारा काम हिन्दी में करेंगे।

महासागर विकास विभाग

दिनांक 3 दिसम्बर, 1990 को गोवा में अखिल भारतीय हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें देश के विभिन्न भागों से पहुंचे वैज्ञानिकों ने समुद्र विज्ञान विषय पर हिन्दी में लेख पढ़े। इन्हीं लेखों को समेकित करके एक पुस्तक का रूप दिया गया। "समुद्रविज्ञान की उपलब्धियां" नामक इस पुस्तक का विमोचन 6 अगस्त, 1991 को महामहिम उपराष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा ने किया। इसमें विभाग के लगभग 70 वरिष्ठ वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया।

इंडियन एयरलाइन्स, नई दिल्ली

अखिल भारतीय स्तर पर अधिकारियों एवं प्रबंधकों के लिए दिनांक 11 नवम्बर, 1991 से 15 नवम्बर, 1991 तक उत्तरी क्षेत्र के प्रशिक्षण केन्द्र में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में अलग-अलग क्षेत्रों से अलग-अलग विभागों के अधिकारियों ने भाग लिया। कार्मिक निदेशक श्री सुभाष चन्द्र रस्तोगी ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। उद्घाटन भाषण में श्री रस्तोगी ने कार्यालय कार्य के लिए हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आम बोलचाल में तो लोग हिन्दी का सही उच्चारण करते हैं किन्तु जैसे ही उन्हें कोई उद्घोषणा आदि करने को कहा जाता है तो वे "हिन्दी" को "अंग्रेजी" की तरह बोलने लगते हैं अर्थात् "ऐंग्लिसाइज़्ड हिन्दी" का प्रयोग करते हैं। ऐसी मानसिकता को समाप्त करना होगा। किसी भी भाषा की सुन्दरता उसकी प्रकृति को बनाए रखने में ही होती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी का प्रयोग अधिक से अधिक किया जाए और साथ ही उसकी शुद्धता पर भी ध्यान रखा जाए। उद्घाटन के समय उत्तरी क्षेत्र में प्रबन्धक, कार्मिक सेवाएं श्री वी.एस. रावत भी उपस्थित थे।

कार्यशाला के समापन के अवसर पर सभी अधिकारियों को बृहत्तर प्रशासन शब्दावली की एक-एक प्रति उपलब्ध कराई गई। श्री गौरी शंकर शर्मा, उप कार्मिक प्रबंधक (राजभाषा) ने समापन भाषण में कहा कि कार्यशाला की सार्थकता तभी सिद्ध होगी जब आप अपने-अपने कार्यालयों में जाकर कुछ न कुछ कार्य हिन्दी में करना प्रारम्भ करें और अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को भी इसके लिए प्रेरित करें।

आकाशवाणी धारवाड़

चार दिवसीय हिन्दी कार्यशाला दिनांक 25-11-91 से 28-11-91 तक आयोजित की गई। कार्यशाला में केन्द्र के कर्मचारियों के अलावा, भारतीय जीवन बीमा निगम धारवाड़ के कर्मचारियों ने भी भाग लिया।

दिनांक 25-11-91 को कार्यशाला का उद्घाटन केन्द्र के अधीक्षक अभियंता श्री के.एस. रामकृष्णन ने ज्ञान की देवी मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके किया और कहा कि यह कार्यशाला कर्मचारियों को प्रतिदिन के काम में हिन्दी को उपयोग म लाने के लिए सहायक सिद्ध होगी। अधीक्षक अभियंता ने प्रशिक्षणार्थियों से निवेदन किया कि वे कार्यशाला में अधिक रुचि लें और इस कार्यक्रम को सफल बनाएं।

दिनांक 25-11-91 को प्रथम पारी में सैंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के हिन्दी अधिकारी श्री देवेन्द्रपाल चड्डा ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रयोजन-मूलक हिन्दी तथा देवनागरी लिपि इस विषय पर व्याख्यान दिया तथा उनसे अभ्यास करवाया। द्वितीय पारी में हिन्दी अधिकारी श्री जगदीश लाल ने पत्र लेखन, अर्धसरकारी पत्र, कार्यालय ज्ञापन, कार्यालय आदेश आदि विषयों के बारे में प्रशिक्षणार्थियों को व्याख्यान दिया।

पासपोर्ट कार्यालय, भोपाल

पासपोर्ट कार्यालय, विदेश मंत्रालय भोपाल में दूसरी हिन्दी कार्यशाला दिनांक 25-3-91 से 27-3-91 तक आयोजित की गई जिसमें कार्यालय के दो अधिकारी एवं 18 कर्मचारियों ने भाग लिया।

कार्यशाला का उद्घाटन डा. डी.डी. कौशिक (क्षेत्रीय निदेशक), इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय भोपाल ने गांधीजी के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए किया।

इस कार्यशाला में कार्यालय में प्रतिदिन होने वाले कार्यों को राजभाषा में करने का अभ्यास कराया गया जिसमें पत्र प्रारूप, लेखन, नोटिंग, ड्राफ्टिंग, देवनागरी में तार, एवं हिन्दी का प्रयोग संबंधी समस्त जानकारी दी गई।

कार्यालय का समापन डा० नाथशरण श्रीवास्तव, निदेशक द्वारा दिनांक 27-3-91 को किया गया। इस अवसर पर पासपोर्ट अधिकारी श्री जयराम सिंह ने सभी कर्मचारियों को प्रेरणा देते हुए कहा कि जिस हिन्दी को संविधान ने राजभाषा का सम्मान प्रदान किया है उसके प्रति श्रद्धा उसमें काम करने की इच्छा और लगन ही कार्यालय में हिन्दी का प्रयोग संभव है तभी हिन्दी कार्यशालाएं सार्थक होंगी।

इस अवसर पर कार्यालय अधीक्षक श्री हंसराज ने भी मार्गदर्शन किया और हिन्दी में कार्य करने का संकल्प लिया।

इस तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन की रूपरेखा एवं कार्यक्रम का संचालन कार्यालय के हिन्दी सचिव श्री हेमन्त हेड़ाऊ ने किया। श्री हेड़ाऊ ने इस अवसर पर कार्यालय को वर्ष 89-90 की अवधि में प्राप्त दो राजभाषा पुरस्कार की भी जानकारी दी।

इंडियन आयल कार्पोरेशन लि०, गुजरात रिफाइनरी बड़ोदरा

सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के उद्देश्य से दिनांक 9-12-91 से 11-12-91 तक त्रिदिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन अधिकारी वर्ग के लिए किया गया।

हिंदुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन लि., विशाखापट्टणम्

26-9-91 को कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें आठ सत्र थे। भारत सरकार की राजभाषा नीति-अधिनियम, नियम, वार्षिक कार्यक्रम, लक्ष्य, योजनाएं आदि विषयों पर श्री सुरेश कुमार, स्टेट बैंक आफ इंडिया, विशाखापट्टणम के अधिकारी और प्रशासनिक शब्दावली, वित्तीय शब्दावली, तेजी कार्यालय टिप्पणियां, पत्रों के नमूने आदि विषयों पर श्री जी० रामनारायण, भारतीय निक्षेपण निगम, विशाखापट्टणम के हिन्दी अधिकारी ने व्याख्यान दिए जिससे उपस्थित प्रशिक्षार्थी लाभान्वित हुए।

कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में केन्द्रीय निदेशक श्रीमती विजयलक्ष्मी सुन्दरराजन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। कार्यशाला समापन समारोह में अध्यक्ष श्री एस० बनर्जी, वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक, थे। हिन्दी अधिकारी श्री टी० महादेव राव ने संचालन किया।

प्रशिक्षण एवं विकास केन्द्र, बोकारो स्टील प्लान्ट

14 सितम्बर, 1991 (हिन्दी दिवस) के उपलक्ष में प्रशिक्षण एवं प्रबन्ध विकास विभाग की ओर से प्रशिक्षण केन्द्र के सम्मेलन कक्ष में एक वृहत एवं प्रभावपूर्ण कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन प्रशिक्षण एवं प्रबंध विकास विभाग के उप महा प्रबंधक, श्री अश्विनी कुमार सिंह ने किया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में बोकारो इस्पात संयंत्र के हिन्दी अधिकारी, श्री देवता प्रसाद सिंह आमंत्रित थे। कार्यशाला में मुख्य अधीक्षक (प्रशिक्षण) सहित सभी विभागीय अधिकारी सम्मिलित हुए।

प्रारम्भ में आगत अधिकारियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए सहायक प्रबन्धक (प्रशिक्षण) एवं मनोनीत हिन्दी अधिकारी, श्री शिव शंकर प्रसाद ने विभाग में हुई हिन्दी प्रगति सम्बन्धी प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

ज्ञातव्य है कि विगत पंचांग वर्ष में 220 परीक्षाएं हुई जिनमें डाक्टरों की नियुक्ति सम्बन्धी एक परीक्षा (बिल्कुल तकनीकी) को छोड़कर सभी परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र द्विभाषिक थे। प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अन्तर्गत यहां अधिकांश कार्यक्रम हिन्दी में अथवा द्विभाषिक रूप में संचालित हो रहे हैं।

इस प्रकार हम हिन्दी कार्यान्वयन के क्षेत्र में केवल सैद्धान्तिक चर्चा ही नहीं वरन परिणामोन्मुखी एवं व्यवहारिक कार्यकलापों द्वारा हिन्दी के समग्र प्रयोग की दिशा में अग्रसर हैं।

प्रशिक्षण एवं प्रबन्ध विकास के उप महा प्रबन्धक, श्री अश्विनी कुमार सिंह ने राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास के लिए दृढ़ संकल्प करने का आह्वान किया। श्री सिंह ने विभाग द्वारा चलाए जा रहे हिन्दी आशुलिपि टंकण तथा प्रबोध प्रवीण एवं प्राज्ञ कक्षाओं की चर्चा करते हुए कहा कि यह विभाग हिन्दी कार्यान्वयन के लिए एक ऐसा आधार तैयार करने के कार्य में लगा है, जिस पर राजभाषा हिन्दी की एक सुदृढ़ एवं आकर्षक इमारत बनाई जा सके। श्री सिंह ने बताया कि यहां यूनिट ट्रेनिंग के प्रशिक्षण तथा अति मुख्य तकनीकी विषयों पर भी प्रशिक्षण कार्यक्रम हिन्दी में चलाया जा रहा है। श्री सिंह ने आश्वासन दिया कि प्रत्येक प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं इस्पात उद्योग तथा प्रबन्धकीय एवं प्रशासनिक व्याख्यान माला में हिन्दी में व्याख्यान की व्यवस्था कराई जाएगी।

मुख्य वक्ता हिन्दी अधिकारी, श्री देवता प्रसाद सिंह ने राष्ट्रभाषा हिन्दी की गरिमा राष्ट्र के सर्वांगीण एवं मौलिक विकास एवं राष्ट्रीय सम्मान की पहचान की प्रतीक बताया।

पंजाब नेशनल बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल

दिनांक 25-11-91 से 27-11-91 तक तीन दिवसीय हिन्दी सेमीनार/कार्यशाला बैतूल जिले की पांच शाखाओं में क्रमशः आमला डिपो, बैतूल, मोरा, दहुआ तथा दुनावा में आयोजित की गई। श्री ओम प्रकाश मोदे राजभाषा अधिकारी ने समन्वय किया।

"अंग्रेजी एक विदेशी भाषा है और उसके सीखने में समय और श्रम लगता है। हम भाषा ही सीखते रह जाते हैं, ज्ञान कहां पा सकते हैं? सौ-डेढ़ सौ वर्षों से हमारे वैज्ञानिक अंग्रेजी के माध्यम से अभ्यास कर रहे हैं, फिर भी हम विज्ञान में पिछड़े हुए हैं। और, रूस बिना अंग्रेजी के आगे बढ़ रहा है। इससे बुद्धिमानों को शिक्षा लेनी चाहिए।.....हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं की रक्षा अंग्रेजी के द्वारा नहीं हो सकती। भारतीय संस्कृति का प्रचार तुलसी की भाषा से होगा, शेक्सपियर की भाषा से नहीं। अंग्रेजी से जन-जन के साथ संपर्क भी स्थापित नहीं हो सकेगा और न ही करोड़ो भारतीयों को साक्षर और सुशिक्षित किया जा सकेगा। अंग्रेजी से एक ऐसे वर्ग का निर्माण हुआ है जिसने भारतीयता को बहुत क्षति पहुंचायी है इससे अभारतीय भारतीयों का एक दल बुरी तरह से देश की स्वाभाविक प्रगति में रोड़ा बना हुआ है। थोड़े से अंग्रेजीदानों की सुविधा के लिए शासन के व्यवहार अंग्रेजी में चलाना सर्वसाधारण लोगों के हितों की उपेक्षा करना है। अंग्रेजी या हिन्दी की श्रेष्ठता का प्रश्न नहीं उठना चाहिए। राजकार्य के लिए कोई भाषा हो सकती है, उसके लिए पहले वर्जिल, दांते, शेक्सपियर या कालिदास पैदा करना आवश्यक नहीं है। स्वतंत्रता से पूर्व सभी देशी रियासतों में हिन्दी शासकीय भाषा रही है।"

—डॉ0 हरदेव बाहरी

(हिंदी : उद्भव, विकास और रूप, किताब महल, इलाहाबाद, 1984, पृष्ठ 227)

इंडियन बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, बैंगलूर

दिनांक 14 सितम्बर, 91 को "प्रशिक्षण मार्गदर्शिका" नामक पुस्तक का विमोचन श्री एच. डी. नागेश, महा सचिव (इंडियन बैंक कर्मचारी संघ, बैंगलूर) ने किया।

"प्रशिक्षण मार्गदर्शिका" इंडियन बैंक, दक्षिण क्षेत्र के किसी क्षेत्रीय कार्यालय से प्रकाशित प्रथम प्रकाशन है।

पुस्तक का प्रकाशन विशेष रूप से बैंकों में कार्यरत कर्मचारियों को दृष्टि में रखकर किया गया है।

पुस्तक में बैंकिंग शब्दावली, पत्राचार के नमूने के साथ-साथ विभिन्नार्थी शब्द, कन्नड़-हिन्दी अर्थों में समानता, प्रशासनिक वाक्यांश, दैनिक बही एवं लेजरों के शीर्ष, लेखन सामग्री मद एवं लेखा परीक्षा विवरणियों के हिन्दी समानार्थी शब्द, दस्तावेजों की सूची जैसे बहुमुख्य विषय शामिल किये गये हैं।

शाखा स्तर पर कार्यरत अधिकारी/कर्मचारियों को हिन्दी से संबंधित विभिन्न लक्ष्यों की प्राप्ति में यह पुस्तक जरूर सहायक सिद्ध होगी।

संपादकीय टिप्पणी

कुछ विभाग कार्यालय भारत सरकार के हिंदी टंककों/आशुलिपिकों की विद्यमानता के प्रतिशत सम्बन्धी आदेशों की अनदेखी कर रहे हैं। इस विषय में राजभाषा विभाग की ओर से लिखा गया पत्र मार्गदर्शन के लिए यहां दिया गया है।

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र)

सं. 24/4/92-क्षे. क्र. का. (कल) दिनांक 19-3-1992

सेवा में,

श्री एस. पी. बधावन,
वरिष्ठ मंण्डल प्रबन्धक,
भारतीय जीवन बीमा निगम,
मंडल कार्यालय, "जीवन प्रकाश",
वेस्ट एण्ड, जी. टी. रोड,
आसनसोल
जिला—बर्दवान (प. बंगाल)

विषय:—टाइपिस्टों/आशुलिपिकों की भर्ती

प्रिय महोदय,

तारीख 15-3-92 के अंग्रेजी समाचारपत्र "टेलीग्राफ" में आपने सहायकों, टाइपिस्टों और आशुलिपिकों के क्रमशः 90, 10 और 5 खाली पदों पर भर्ती के लिए विज्ञापन दिया है। बेरोजगारी के जमाने में एक साथ इतने पदों पर रोजगार उपलब्ध कराने के लिए आप निश्चय ही बधाई के पात्र हैं। बेरोजगार युवक तो दुआएं देंगे ही, मैं बधाई देने के साथ-साथ सरकारी कर्तव्यों से बन्धे होने की वजह से निम्नलिखित बातें आपके ध्यान में लाना आवश्यक समझता हूं:—

1. आप भारतीय जीवन बीमा निगम की सेवा के वरिष्ठ अधिकारी हैं तथा इस समय आसनसोल जैसे महत्त्वपूर्ण मंडल कार्यालय के प्रधान हैं। अतः इसमें संदेह नहीं है कि आप संघ की राजभाषा (हिन्दी) से संबंधित अधिनियम, नियम, आदेशों आदि से पूरी तरह वाकिफ होंगे। चूंकि मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति के भी आप अध्यक्ष हैं, आप प्रत्येक तिमाही की बैठक में भारत सरकार के गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा बनाये गये वार्षिक कार्यक्रम की हर मद में हुई प्रगति का जायजा लेते होंगे—इसमें कहीं भी शक नहीं है। फिर भी यह स्मरण करा देना अनुचित नहीं होगा कि वर्ष 1991-92 के लिए बनाये गये वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार आपके कार्यालय में कम-से-कम 15 प्रतिशत टाइपिस्ट और स्टेनो हिन्दी टाईपिंग तथा स्टेनोग्राफी जानने वाले होंगे। यह 15 प्रतिशत कम-से-कम के दायरे में आता

समाचार दर्शन

हिंदी प्रेमी मंडली का आरंभ

दिनांक 9-5-91 रविवार की शाम को पांच बजे स्थानीय शारदा हिन्दी विद्यालय, कुडपा में हिन्दी प्रेमी मंडली (रवीन्द्र नगर) का शुभारंभ हुआ। उस सभा के मुख्य अतिथि की हैसियत से श्री एम. लोकनाथन, परीक्षा सचिव, द.भा. हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास पधारे थे।

सभा विद्यार्थियों की प्रार्थना के साथ प्रारंभ हुई। मुख्य अतिथि के रूप में श्री एम. लोकनाथन् ने अपने गंभीर भाषण में सदस्यों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने कहा कि दक्षिण भारत के अधिकांश लोग हिन्दी का अभ्यास कर रहे हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति सब लोग अपना अनन्य प्रेम व्यक्त कर रहे हैं। अतः हिन्दी का भविष्य उज्जवल है।

तदुपरान्त प्रेमी मंडली के अध्यक्ष डा. पी. चंद्रहास रेड्डी ने अपने भाषण में कहा कि हिन्दी बड़ी मधुर और सुन्दर भाषा है। साथ-साथ सीखने में भी बडी सरल है। इसलिए विद्यार्थियों का यह प्रथम कर्त्तव्य है कि वे दिलोजान से हिन्दी का अभ्यास करें। मैं पेशे से डाक्टर हूं तो भी हिन्दी भाषा के प्रति मुझ में जो आसक्ति और अनुरक्ति है, वही मुझे इस सभा में खींच लायी है। इसलिए मैं दिल से यही चाहता हूं कि दिन दूनी रात-चौगुनी हिन्दी की श्रीवृद्धि हो।

तदनंतर सभा के पुराने प्रचारक और शिक्षा परिषद के सदस्य श्री टी० हनुमत रेड्डी का सम्मान किया गया। हनुमंत रेड्डी ने प्रेमी मंडली के सदस्यों को अपने हार्दिक धन्यवाद समर्पित किये।

वाणी हिन्दी विद्यालय, विजयनगरम्
प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव

दिनांक 6-8-91 को स्थानीय उल्लिविधि, वाणिज्य भवन में उक्त विद्यालय के प्रमाणपत्र वितरणोत्सव धूमधाम से मनाया गया। "सारे जहां से अच्छा·····" गीत से सभा गूंज उठी।

मुख्य अतिथि श्री टी.बी.एस. शास्त्री, जिला विद्याधिकारी, ने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की सेवाओं की प्रशंसा करते हुए हिन्दी प्रचारक श्री वै. आंजनेयुलू की कार्य-क्षमता पर मुग्ध होकर कहा कि श्री आंजनेयुलू के जैसे और दस अध्यापक नगर में रहे तो सब को हिन्दी भाषा का ज्ञान प्राप्त हो सकता है। श्री वू. चैकन्ना, नगर कमीशनर, अध्यक्षासन ग्रहण करते हुए कहा कि आज की परिस्थिति में हिन्दी प्रचार व प्रसार अत्यन्त जरूरी है।

हिन्दी बी० एड० कालेज, विजयवाड़ा
हिन्दी दिवस समारोह

दिनांक 14-9-91 को हिन्दी बी.एड. कालेज, विजयवाड़ा में हिन्दी दिवस समारोह मनाया गया। बी.एड. छात्रों के सरस्वती वंदन के बाद-वाद विवाद प्रतियोगिता "नौकरियों के लिए उपाधियों की अनिवार्यता को समाप्त करना ही श्रेय-स्कर है"; विषय पर शुरू हुई। नौ महाविद्यालयों से अठारह छात्र-छात्राओं के विषय में पक्ष तथा विपक्ष में भाग लिया। पी. लक्ष्मी, राजशेखर, आरती और. गांधी क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए।

हिन्दी विद्यापीठ- मछलीपट्टणम्
नये भवन का उद्घाटन

दिनांक 15-9-91 को आंध्र प्रदेश के समाचार मंत्री श्री येनि कृष्णमूर्ति ने विद्यापीठ के नये भवन का उद्घाटन किया। उसी दिन शाम को हिन्दी दिवस के उपलक्ष में आयोजित सभा में आंध्र प्रदेश के देवालय व्यवहार मंत्री पंत पद्मनाभम् ने ज्योति जलाकर सरस्वती एवं गांधी के चित्रों का अनावरण किया।

विद्यापीठ के गौरवाध्यक्ष एवं स्थानीय हिन्दु कालेज के सचिव श्री डी. मधुसूदन शास्त्री ने अध्यक्षासन ग्रहण किया। विद्यापीठ के कार्याध्यक्ष डा. वी. धनवंतरी आचार्य ने अपने स्वागत भाषण के दौरान विद्यापीठ का संक्षिप्त परिचय दिया। विद्यापीठ के उपाध्यक्ष एवं हिन्दी साहित्य परिषद के अध्यक्ष डा. चलसानि सुब्बाराव ने 'हिन्दी दिवस की विशिष्टता पर बोलते हुए राजभाषा हिन्दी की गतिविधि पर विस्तृत प्रकाश डाला।

है। अधिक-से-अधिक हिन्दी टाइपिंग/स्टेनोग्राफी जानने वालों की भर्ती करने पर कोई रोक नहीं है, बल्कि ऐसा करने से आप दूसरों के लिए उदाहरण बनकर सामने आएंगे। लेकिन आपके कार्यालय की दिसम्बर, 1991 को समाप्त तिमाही की प्रगति रिपोर्ट को देखने से पता चलता है कि अभी तक 61 टाइपिस्टों में से केवल 01 टाइपिस्ट हिन्दी टाइपिंग जानने वाला है। वार्षिक कार्यक्रम के कम-से-कम के लक्ष्य के अनुसार भी कम-से-कम 9 टाइपिस्ट तो हिन्दी जानने वाले होने ही चाहिएं। इसी प्रकार अभी तक के सभी 11 स्टेनों केवल अंग्रेजी स्टेनोग्राफी जानने वाले हैं, जबकि कम-से-कम 2 स्टेनों हिन्दी स्टेनोग्राफी जानने वाले होने चाहिएं। आप मुझसे सहमत होंगे कि इस मद में आपका कार्यालय बहुत पीछे है। फिर 15-3-92 को 10 अंग्रेजी टाइपिस्टों और 5 अंग्रेजी आशुलिपिकों के लिए दिये गये विज्ञापन को मैं समझ नहीं पा रहा हूं इसलिए कि आप जैसे वरिष्ठ तथा राजभाषा नियम 1976 के नियम 12 में दी गई जवाबदेही को अच्छी तरह समझने वाले अधिकारी संसद द्वारा पारित अधिनियम, सरकार द्वारा बनाए गए नियम और समय-समय पर इसके अधीन जारी किए गए आदेशों की अवहेलना निश्चित रूप से नहीं करेंगे। ऐसी स्थिति में मैं एक नतीजे पर पहुँचा हूं कि 31 दिसम्बर 1991 के बाद और 15-3-92 के बीच आपने निश्चित रूप से 8 नए हिन्दी टाइपिस्टों और 3 आशुलिपिकों की भर्ती कर ली होगी या इतनी संख्या में टाइपिस्टों/आशुलिपिकों को हिन्दी टाइपिंग/आशुलिपि में प्रशिक्षण दिला दिया होगा जिसकी सही स्थिति 31 मार्च 1992 को समाप्त तिमाही प्रगति रिपोर्ट में आ जाएगी। यदि ऐसा नहीं हुआ है तो निश्चय ही आपने नियम 12 में दी गई जवाबदेही का ख्याल रखते हुए भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग से इस संबंध में अवश्य ही छूट प्राप्त कर ली है— अन्यथा आप जैसे अनुशासित और जवाबदेह अधिकारी केवल अंग्रेजी टाइपिस्टों/स्टेनों के लिए विज्ञापन दे ही नहीं सकता है। मुझे पूरा विश्वास है कि जिम्मेवार अधिकारी के रूप में आपने सभी स्थितियों में सरकारी आदेशों का पालन किया ही होगा, फिर भी ऊपर दिखाये गये अनुमानों में से मेरा कौन-सा एक अनुमान सही है—उसकी पुष्टि मुझे आपकी तरह ही अपने सरकारी कर्तव्यों को पूरा करने के लिए चाहिए।

आशा है आप अविलम्ब पुष्टि कर मेरा सहयोग करेंगे।

भवदीय

ह/-

(सिद्धिनाथ झा)

उप निदेशक (कार्यान्वयन)

राजभाषा विभाग

तकनीकी कक्ष की गतिविधियां

राजभाषा विभाग के तकनीकी कक्ष द्वारा दिनांक 11-12-91 को "कम्प्यूटरों के द्विलिपीय संचालन" विषय पर एक संगोष्ठी एवं प्रदर्शनी गान्तोक में स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् में आयोजित की गई। इसमें गान्तोक स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के लगभग 70 अधिकारियों ने भाग लिया तथा रोमन के अलावा देवनागरी लिपि में भी शब्द संसाधन तथा डाटा एन्ट्री के कार्य को किए जाने वाले कम्प्यूटरों की प्रदर्शनी भी देखी तथा जानकारी प्राप्त की। इस संगोष्ठी एवं प्रदर्शनी का उद्घाटन गान्तोक स्थित महालेखाकार (सिक्किम) श्री एन. वसुम द्वारा किया गया। प्रदर्शनी में सिक्किम कम्प्यूटर्स प्रा. लि. राहुल कामर्स प्रा. लि., कलकत्ता तथा राजभाषा विभाग के तकनीकी कक्ष द्वारा कम्प्यूटरों पर द्विलिपीय रूप में कार्य-प्रणाली को प्रदर्शित किया गया। □

लघु उद्योग पर भारत सरकार के निम्नलिखित प्रकाशन बिक्री हेतु उपलब्ध

मासिक पत्रिका

		शुल्क
लघु उद्योग समाचार		
लघु उद्योगों पर भारत सरकार की मासिक पत्रिकाएं (हिन्दी एवं अंग्रेजी में प्रकाशित)	अंग्रेजी	हिन्दी
दो वर्ष	80/- रु.	60/- रु.
एक वर्ष	44/- रु.	33/- रु.
एक प्रति	4/- रु.	3/- रु.

प्रोजेक्ट प्रोफाइल्स (हिन्दी)

खण्ड-1 लघु उद्योग परियोजनाएं यान्त्रिक इंजीनियरी उद्योग	पीडीसीएस आई-68-1 (हिन्दी)	90/- रु.
खण्ड-2-रसायन, खाद्य, कांच एवं मृत्तिका उद्योग	पीडीसीएस आई-68-11 (हिन्दी)	90/- रु.
खण्ड-3-विद्युत इलैक्ट्रानिक्स धातु क्रमीय लकड़ी, हौजरी, खेल समान उद्योग	पीडीसीएस आई-69-3 (हिन्दी)	90/- रु.

द्विभाषीय (डिगलाट) प्रकाशन

3. लघु उद्योग प्रक्रियाओं की नियम पुस्तिका	पीडीसीएस आई-66 (द्विभाषी)	15/- रु.
4. लघु उद्योग क्षेत्र के लिए आरक्षित उद्योगों की सूची	पीडीसीएस आई-65 (द्विभाषी)	5/- रु.

"द्वितीय अखिल भारतीय बैंक राजभाषा" सम्मेलन के प्रतिवेदन का विमोचन

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों तथा वित्तीय संस्थानों में भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के उद्देश्य के साथ 15 तथा 16 सितम्बर, 1990 को बम्बई में "द्वितीय अखिल भारतीय बैंक राजभाषा सम्मेलन" आयोजित किया गया था। भारत सरकार के तत्कालीन गृहमंत्री, कई मन्त्रीगण, सांसद, भारतीय रिजर्व बैंक के तत्कालीन गवर्नर, गृह मंत्रालय व वित्त मंत्रालय एवं बैंकिंग उद्योग के वरिष्ठ कार्यपालकों ने उक्त सम्मेलन में भाग लिया था। सम्मेलन में बैंकिंग व राजभाषा से सम्बद्ध विषयों पर पांच सत्रों में गहन चर्चा हुई थी।

उक्त सम्मेलन के प्रतिवेदन का विमोचन-समारोह दिल्ली में दिनांक 3 अगस्त 1991 को किया गया। माननीय प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंहराव ने प्रतिवेदन का विमोचन किया। इस अवसर पर वित्तमंत्री डॉ, मनमोहन सिंह, केन्द्रीय मंत्रीगण श्री गुलामनबी आज़ाद एवं श्रीमती शीला कौल तथा कई सांसद व वरिष्ठ बैंकर आदि उपस्थित थे।

विमोचन समारोह की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए प्रतिवेदन-सम्पादक-मंडल के सदस्य तथा "सम्मेलन" के एक सचिव डॉ. सोहन शर्मा (मुख्य प्रबन्धक: बैंक ऑफ बड़ौदा ने "अखिल भारतीय बैंक राजभाषा सम्मेलन" को एक सारस्वत यज्ञ बताते हुए कहा कि उस यज्ञ की फलश्रुति के रूप में यह प्रतिवेदन है। सम्मेलन के मानद अध्यक्ष सांसद डॉ. रत्नाकर पाण्डेय ने पुष्पगुच्छ व शाल अर्पित करते कहा प्रधानमंत्री श्री नरसिंह राव का स्वागत किया और स्वागत वक्तव्य में हिन्दी को भारत की सामासिक संस्कृति की संवाहक बताया और कहा कि हिन्दी का प्रयोग बढ़ाना हम सबका राष्ट्रीय दायित्व है। डॉ पाण्डेय ने इस बात पर बल दिया कि बम्बई में आयोजित "द्वितीय अखिल भारतीय बैंक राजभाषा सम्मेलन" में पारित प्रस्तावों का पूरा पालन किया जाना चाहिए। वित्त मंत्रालय, बैंकिंग प्रभाग को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बैंकिंग उद्योग में उन प्रस्तावों का पालन हो।

वित्तमंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने बताया कि सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए प्रभावशाली कार्रवाई की गई। तथा इस दिशा में यदि कहीं कोई कमी रही हो तो उसे दूर करने की पूरी कोशिश की जाएगी। हम राजभाषा की प्रगति के लिए प्रतिबद्ध हैं:

"प्रतिवेदन" का विमोचन करते हुए प्रधानमंत्री श्री पी. वी. नरसिंह राव ने कहा कि हिन्दी हमारे राष्ट्रीय स्वाधीनता का एक अंग रही है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय स्तर पर स्वाधीनता के सूत्र संचालन के माध्यम के रूप में हिन्दी को अपनाया था। हमारी पीढ़ी ने स्वाधिनता और राष्ट्रीय भावना के दायित्व बोध के साथ हिन्दी सीखी थी। स्वाधीनता के साथ हिन्दी को राजभाषा की गरिमा प्राप्त हुई। अब हमारा राष्ट्रीय, नैतिक व संवैधानिक दायित्व है कि राजभाषा हिन्दी की समुचित प्रतिष्ठा हो। पर, इस प्रक्रिया में जनतांत्रिक भावना तथा हमारी बहुभाषी सामाजिक संरचना के अनुरूप प्रेरणा व प्रोत्साहन पूर्व कार्य-शैली अपनाना आवश्यक है।

इस अवसर पर हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण सेवाएँ देने के उपलक्ष्य में "द्वितीय अखिल भारतीय बैंक राजभाषा सम्मेलन" के अध्यक्ष श्री आर श्रीनिवासन् (अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, बैंक ऑफ इंडिया) तथा "सम्मेलन" के वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. सूर्यमणि पाठक (सेवानिवृत्त महा-प्रबंधक, बैंक ऑफ इंडिया) का क्रमश: प्रधानमंत्री जी व वित्तमंत्री जी द्वारा सम्मान किया गया।

अंत में "सम्मेलन" के एक अन्य सचिव व प्रतिवेदन-सम्पादक-मंडल के सदस्य श्री रा.वि. तिवारी (मुख्य प्रबंधक: सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया) ने चिन्तक और मनी प्रधानमंत्री के कर-कमलों से "प्रतिवेदन" के विमोचन को राजभाषा हिन्दी के इतिहास का गौरवशाली क्षण कहा और सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। □

न्यू बैंक ऑफ इंडिया, राजेन्द्र भवन, राजेन्द्र प्लेस नई दिल्ली

न्यू बैंक आफ इंडिया ने अपने बैंक के अलवर, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़ और चुरु जिले को क्रमश: 1-12-90, -1-91, 1-1-91 और 15-8-91 से हिन्दी जिला घोषित किया हुआ है तथा मध्य प्रदेश राज्य को 2-10-91 को हिन्दी राज्य घोषित किया हुआ है। इन जिलों और राज्य में शतप्रतिशत कार्य हिन्दी में करने के आदेश जारी किए हुए हैं और आम जनता की सूचनार्थ समाचार पत्रों में इस संबंध में सूचना प्रकाशित की गई है। इसके अलावा, मुजफ्फरनगर जिले को भी 26-1-92 से हिन्दी जिला घोषित किया गया है और प्रभावी तिथि से इस जिले के समस्त शाखाओं/कार्यालयों में शत प्रतिशत कार्य हिन्दी में करने के आदेश जारी किए जा सके हैं। बैंक द्वारा घोषित हिन्दी जिलों/राज्य से संबंधित सूची निम्नानुसार है:-

बैंक का नाम	राज्य	प्रादेशिक कार्यालय	हिन्दी जिला/राज्य
न्यू बैंक ऑफ इंडिया	राजस्थान	जयपुर	अलवर, चुरु, रिवाड़ी, महेन्द्रगढ़
	हरियाणा	रोहतक	
	मध्यप्रदेश	भोपाल	सम्पूर्ण राज्य सभी जिले
	उत्तर प्रदेश	मेरठ	मुजफ्फरनगर 26-1-92 से हिन्दी जिला घोषित

विजया बैंक, अंचल कार्यालय, बम्बई

कार्यपालकों के प्रयोजनार्थ आयोजित हिन्दी कार्यक्रम की रिपोर्ट

"कार्यपालक के इशारे मात्र से सभी अधिकारी व कर्मचारी वर्ग राजभाषा हिन्दी में कार्य करने लगते हैं। जब तक कार्यपालक हिन्दी के प्रयोग में अपनी दिलचस्पी नहीं लेते तब तक राजभाषा का कार्यान्वयन असंभव है। आजकल सरकार इस मुद्दे पर अधिक बल दे रही है और बैंक का निष्पादन अत्यंत निराशापूर्ण है। अतः कार्यपालकों को चाहिए कि वे इस दिशा में ठोस कदम उठाए अन्यथा कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा।"

श्री सी.एच. श्रीधरन्, महाप्रबंधक ने कार्यपालकों के प्रयोजनार्थ आयोजित हिन्दी कार्यक्रम के उद्घाटन करते समय कहा। प्रारंभ में बम्बई अंचल कार्यालय के उप महाप्रबंधक श्री के. दिवाकर शेट्टी ने अतिथियों का स्वागत किया। श्री पी.वी. मुतालिक ने सभी का परिचय कराया।

मुख्य अतिथि के रूप में पधारकर श्री कृष्ण नारायण मेहता, उप निदेशक (कार्यान्वयन) बम्बई ने सरकार की राजभाषा नीति की ओर न केवल इंगित किया बल्कि कार्यपालकों के दायित्व पर जोर दिया।

भारतीय रिजर्व बैंक के डॉ. श्रीनिवास द्विवेदी ने मूल्यांकन व निरीक्षण पर प्रकाश डाला। बैंकर प्रशिक्षण महाविद्यालय के संकाय सदस्य श्री रमाकांत शर्मा ने वार्षिक कार्यान्वयन तथा प्रशिक्षण पर रोचक व्याख्यान दिए। यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के हिन्दी विभाग के प्रभारी श्री हनुमान प्रसाद तिवारी जी ने "कार्यपालकों की भूमि का एवं उनसे अपेक्षाएं" विषय पर अत्यंत सरस व रोचक व्याख्यान दिए। हमारे बैंक के राजभाषा अधिकारी श्री पी.वी. मुतालिक ने "समीक्षा के विभिन्न स्तर, संसदीय राजभाषा समिति, कार्यान्वयन की समस्याएं व सीमाएं" पर चर्चा की और समस्याओं को हल करने के तरीके भी बताए।

कार्यक्रम के अंत में श्री पी.वी. मुतालिक, राजभाषा अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापित किए। □

राष्ट्रीय वस्त्र निगम के निरीक्षण दल की रिपोर्ट

एनटीसी लि. के मुख्यालय में महाप्रबन्धक (कार्मिक) श्री जगदीश प्रसाद गोयल के नेतृत्व में उप प्रबन्धक राजभाषा ने एनटीसी (दि पं.. राज) लि. में हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास और प्रगामी प्रयोग की प्रगति के संबंध में दिनांक 30-12-1991 को निरीक्षण किया, जिसकी रिपोर्ट इस प्रकार है :

1. एनटीसी (दि पं. राज) लि. में कुल पत्रों में हिन्दी पत्रों का प्रतिशत उत्साहवर्धक है, जो 68 प्र.श. है। राजभाषा प्रभारी ने आश्वासन दिया कि वे इसे शीघ्र निर्धारित लक्ष्य तक ले जाएंगे।

पहली बार शब्दों की वर्तनी जांचनेवाला सॉफ्टवेयर बनाया गया है। यह सॉफ्टवेयर एपल के मेकइन्टोश कंप्यूटरों के लिए है।

शब्दों की वर्तनी जांचनेवाला सॉफ्टवेयर, "ओएसबी हिंदी शब्द-संशोधक" नाम से बाजार में उपलब्ध है। इसमें "हिंदी शब्द-सागर" नामका शब्द-कोश है जिसमें 60,000 शब्द हैं और इच्छा तथा आवश्यकतानुसार उसमें 100,000 या उससे भी अधिक शब्दों का संग्रह बड़ी सरलता से किया जा सकता है।

हिंदी "डीटीपी" कार्य पत्रलेखन, वगैरह ..... करनेवालों के लिए यह सॉफ्टवेयर प्रूफ रीडिंग के श्रम साध्य कार्य में समय बचनेवाला वरदान सा है। यह सॉफ्टवेयर "अमृत", "अभिलाषा" तथा "बसंत" नामके तीन आकर्षक तथा सुंदर फोन्ट्स के साथ उपलब्ध है। इस सॉफ्टवेयर की मदद से मुद्रण कार्य दोषरहित, सुंदर तथा आकर्षक हो सकेगा।

सम्पर्क सूत्र : श्री मनोज कुमार जोशी, मै. हिंद साफ्ट, इंकार्पोरेटर, 14, नया नंबू औद्योगिक, महाबली केवस मार्ग अंधेरी (पूर्व) बंबई-400093.

2. इस कार्यालय में सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है। प्रवीणता प्राप्त अधिकारी और कर्मचारी अपना अधिक से अधिक काम हिन्दी में निपटाते हैं।

4. सभी फार्म और मैनुअल नियमानुसार द्विभाषी तैयार किए जा चुके हैं।

5. नियंत्रणाधीन मिलों में हिन्दी की प्रगति का जायजा लेने के उद्देश्य से राजभाषा प्रभारी और हिन्दी अधिकारी आवधिक निरीक्षण करते हैं, जिसकी रिपोर्ट अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक को प्रेषित की जाती है। निरीक्षण के समय पाई गई कमियों को दूर करने के संबंध में जारी अनुदेशों का कार्यान्वयन सुनिश्चित किया जाता है।

6. निगम में केवल कर्मचारी ही नहीं वहां के निदेशक और अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक स्वयं नोटिंग/ड्राफ्टिंग/डिक्टेशन का काम हिन्दी में करते हैं। यह उत्साहवर्धक है कि अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक अंग्रेजी के पत्रों और नोटिंग पर भी हिन्दी में टिप्पणी करते हैं। इससे अधीनस्थ अधिकारियों और कर्मचारियों पर एक अच्छा प्रभाव पड़ता है।

7. इस निगम के मुख्यालय और मिलों के पुस्तकालयों में हिन्दी पुस्तकें काफी संख्या में उपलब्ध हैं, जिसका प्रमाण हिन्दी पुस्तकों की सूचियां हैं जो विषयवार तैयार की गई हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें नियमित रूप से की जाती हैं, जिनमें मिलों के प्रतिनिधि भी शामिल होते हैं।

9. प्रबन्ध में कामगारों की भागीदारी के विषय में जितनी बैठकें मिलों में आयोजित की जाती हैं उन सभी की कार्यसूची और कार्यवृत्त यहां तक कि अनुवर्ती कार्रवाई तथा कार्यवृत्त के संबंध में मुख्यालय के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक द्वारा भेजे गए सभी पत्र केवल हिन्दी में जारी किए जाते हैं, जिससे केवल निगम के मुख्यालय में ही नहीं अपितु मिलों में भी हिन्दी का वातावरण बना हुआ है।

10. निगम द्वारा "प्रेरणा" के नाम से एक हिन्दी पत्रिका जारी की जाती है जिससें मिलों के श्रमिकों से लेकर मुख्यालय के उच्चाधिकारियों द्वारा तैयार की गई सामग्री प्रकाशित की जाती है। पत्रिका में राजभाषा के प्रयोग के संबंध में भी महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रकाशित की जाती है

11. निगम के मुख्यालय ने अपनी एक तकनीकी शब्दावली तैयार करके प्रकाशित कराई है।

12. चैक-प्वाइंटों की व्यवस्था की गई है जो प्रभावी रूप से कार्य कर रहे हैं।

13. सामान्य प्रशासन अनुभाग को हिन्दी का कार्य करने के लिए अधिसूचित किया हुआ है, जिसमें पूरा कार्य हिन्दी में किया जाता है।

14. सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की सेवा पुस्तिकाओं में हिन्दी में प्रविष्टियां की जाती हैं।

निरीक्षण दल : टिप्पणियां और सुझाव

1. वार्षिक कार्यक्रम की प्रतियां सभी विभागाध्यक्षों और मिलों को भेजने के बाद हिन्दी अनुभाग द्वारा समय-समय पर निर्धारित लक्ष्यों की सुनिश्चितता विषयक रिपोर्ट मांगी जानी चाहिए।

2. हिन्दी में प्रवीणता कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त अधिकारियों और कर्मचारियों से अद्यतन प्रोफार्मा भरवाया जाए।

3. द्विभाषी टेलेक्स का प्रयोग सुनिश्चित किया जाए।

4. जब तक हिन्दी टाइपराइटरों का निर्धारित लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लिया जाता तब तक केवल अंग्रेजी के टाइपराइटर न खरीदने के संबंध में सम्बन्धित विभाग को निदेश जारी किए जाएं।

5. जिन अनुभागों/एककों में अभी फाइलों पर विषय हिन्दी में नहीं लिखे जा रहे हैं वहां वह कार्य आरंभ किया जाए।

6. डिविज़नल कार्यालयों में यदि 80 प्रतिशत अधिकारियों व कर्मचारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त हो चुका है तो उन्हें अधिसूचित करने की दिशा में कार्रवाई की जाए।

तमिलनाडु हिन्दी प्रचारक व प्रसार सम्मेलन

समाचार सेवा

तिरुचि: पिछले दिनों यहां 22वां तमिलनाडु हिन्दी प्रचारक व प्रसारक सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में भूतपूर्व संसद सदस्य श्री एम. पलनिपांडि ने हिन्दी प्रचार सभा के साथ अपने पुराने अनुभवों का जिक्र करते हुए कहा कि दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा एक स्वैच्छिक संस्था है। इस सभा के कार्यकलापों के साथ राजनीति का कोई संबंध नहीं है। आजकल तमिलनाडु के लगभग सभी लोग हिन्दी का अध्ययन कर रहे हैं और उत्तरवालों से भी अच्छी तरह धड़ल्ले से बोल लेते हैं। उत्तर भारतवासी भी उसे सुनकर दांतों तले उंगली दबाते हैं। अतः ऐसी संस्था के हिन्दी प्रचार व प्रसार में भाग लेकर भारतीय सांस्कृतिक एकता को बनाए रखना हमारा परम कर्त्तव्य है।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास के प्रधान सचिव श्री ए. रामस्वामी ने कहा कि निःस्वार्थ हिन्दी प्रचारकों को तैयार करना ही गत 10 वर्षों से सभा का प्रयास रहा है। हर्ष की बात है कि हिन्दी प्रचारक, जो त्यागी भी हैं, आज भी किसी तरह के कष्ट सहने को तैयार हैं। उन्होंने सभा के पूर्व व्यवस्थापकों द्वारा किए गए प्रयास व प्रचार के लिए धन्यवाद अर्पण करते हुए कहा कि दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा एक ऐसी संस्था है जो सरकार के अनुदान की प्रतीक्षा न कर स्वायत्त व नैतिक रूप से हिन्दी छात्रों को तैयार करके सच्चे रूप में दक्षिण के चारों प्रांतों में हिंदी प्रचार करने के अपने ध्येय पर दृढ़ है।

केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री अजीत कुमार पांजा ने अपने भाषण में कहा कि यद्यपि मैं हिन्दी नहीं जानता हूं फिर भी मेरे पोते व पोतियां हिन्दी पढ़ रहे हैं और बोल रहे हैं, क्योंकि मात्र हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो भारत भर में आज जनता से आसानी से बोली जा सकती है और समझी जा सकती है। उन्होंने बताया कि भारत के लिए एक आम भाषा की जरूरत है, जिसका स्थान सिर्फ हिन्दी ही प्राप्त कर सकती है। उसके प्रचार व प्रसार में योगदान देना हम जैसे हिन्दीत्तर भाषियों का परम धर्म है।

तमिलनाडु सभा के द्वितीय उपाध्यक्ष श्री चंद्रशेखर ने कहा कि दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा ही केवल एक मात्र संस्था है जिसे पूज्य बापूजी ने स्थापित किया था और जिस के लिए कई मूर्धन्य मनीषियों ने अपने को

बलिदान दिया था। इस संस्था की उपाधियां विश्वविद्यालयों की उपाधियों से मूल्य में कहीं बढ़कर हैं, क्योंकि हमारी सभा केन्द्र सरकार द्वारा कानूनन अंगीकृत व संविधान में स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रास के उच्च शिक्षा व शोध संस्थान के कुल सचिव श्री वि.एस. राधाकृष्णन ने कहा कि पूज्य बापू के कारण ही जनता में हिन्दी का प्रचार हुआ है। हम उनके चेले हैं। हिंदी का विरोध सिर्फ राजनीतिज्ञों के कारण ही हुआ है। परंतु उनके बेटे, पोते पोतियां अवश्य हिन्दी पढ़ते ही हैं। हम प्रचारकों का लक्ष्य भी यही है कि अपनी मातृ भाषा की महत्ता को बनाए रखें न कि बिगाड़े। कुछ लोगों की धारणा है कि भाषावार प्रांत विभाजन ने भारत का अहित किया है। सचमुच यह भावना गलत ही है, क्योंकि भाषा की विविधता के कारण ही भारत आज भी भारत रहा है नहीं तो रूस के समान कभी का विघटन हो जाता। हिन्दी देश की संस्कृति व आचार विचार का एक साधन है। हिन्दी प्रचारक अपने सिद्धांतों के लिए प्राण देने वाले होते हैं। सभा चारों प्रांतों के विद्यार्थियों को अपनी मातृभाषा भी सिखाती आ रही है।

तमिलनाडु शाखा के कोषाध्यक्ष श्री के. सन्तानम् ने जमनालाल बजाज जी की हिन्दी सेवा एवं राजनीति संबंधी सेवाओं का विवरणात्मक परिचय दिया।

पांडिचेरी के श्री रामस्वामी ने बताया कि कोई भी किसी एक भाषा का पंडित बनने से अन्य भाषाओं का अनादर नहीं कर सकता। रवीन्द्रनाथ ठाकुर कई भाषाओं के ज्ञाता होने पर भी बंग भाषा कवि ही कहलाए। कवि भारती की यही स्थिति रही। आज की राजनीतिक विघटन-कारिता को बढ़ावा दे रही है न कि राष्ट्रीयता को। अतः हम हिन्दी प्रचारकों को चाहिए कि राष्ट्रीयता के प्रचार में लगने के साथ एकजुट होकर काम करें।

तमिलनाडु सभा के उपाध्यक्ष श्री जी. रंगनाथन् ने स्वागत भाषण में कहा कि अध्यक्ष श्री मूपनार की अध्यक्षता में हम बापूजी के अमर लक्ष्यों को रचनात्मक कार्यक्रमों को अवश्य लगातार आगे बढ़ाएंगे। उन्होंने यह भी कहा और हिन्दी प्रचारकों को आश्वासन दिया कि तमिलनाडु के प्रचारक अन्य किसी भी शिक्षकों की तुलना में श्रेष्ठ हैं और उनसे अवश्य हिन्दी प्रचार व प्रसार कार्य में चार चांद लगाकर सोने में सुगंध का कार्य करेंगे।

(नवभारत टाइम्स, दिनांक 13-1-92 से साभार)

"किसने कहा कि हम अंग्रेजी से द्वेष करते हैं? अथवा अंग्रेजी का महत्त्व नहीं जानते। हम सिर्फ तीन क्षेत्रों में से अंग्रेजी की प्रधानता, जितनी हो सके, कम करना चाहते हैं। पहला स्थान है—सरकारी कामकाज, अंग्रेजी कितनी भी अच्छी हो, जनता को अपनी भाषा में राजकाज मिलना चाहिए। दूसरा स्थान है शिक्षा, भारत में अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम नहीं हो सकती। कोई भी विषय विदेशी भाषा के द्वारा समझना और अपनी भाषा द्वारा समझना—इसमें जमीन आसमान का अंतर है और तीसरा स्थान है—समाचार पत्र। विचारों का प्रचार प्रसार, विचारों का आदान प्रदान, जनता की अपनी भाषा में ही हो सकता है। इन तीनों स्थानों से अंग्रेजी हटे, तभी देश का उद्धार होगा।"—काका कालेलकर □

यू. बैंक की पत्रिका बैंक प्रतिभा—मार्च 1990, से साभार

दिनांक 10-1-92 को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्था पूसा में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में सूचित किया गया कि :—

(1) संस्थान के विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी में शोध प्रबंध प्रस्तुत करने के प्रस्ताव को "एकेडेमिक कौंसिल" द्वारा स्वीकार कर लिया गया है। अब संस्थान के इच्छुक विद्यार्थी अपना शोध प्रबंध हिन्दी में प्रस्तुत कर सकते हैं।"

रोजगार के लिए हिन्दी

हिन्दी के प्रति हीन भावना का एक कारण यह भी है कि अभी भी अनेक व्यक्तियों को यह भ्रम है कि हिन्दी माध्यम से पढ़कर रोजगार पाने के अवसर नहीं हैं। पिछले वर्षों में हिन्दी प्रेमियों और अन्य हिन्दी सेवी संस्थाओं के सहयोग से केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद भारत सरकार की अनेक भर्ती परीक्षाओं में हिन्दी को वैकल्पिक माध्यम के रूप में स्वीकार कराने में सफल हुई है। इस विषय में संसद, संसदीय राजभाषा समिति और राजभाषा विभाग आदि ने समय-समय पर जो आदेश जारी किए हैं और 30 नवम्बर, 1991 तक जिन-जिन परीक्षाओं में हिन्दी के विकल्प की सुविधा दे दी गई है उन सभी के विवरण केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, नई दिल्ली—23 के प्रकाशन "भर्ती परीक्षाओं में हिन्दी" मूल्य रु. 3/- में दे दिए गए हैं।

श्रम मंत्रालय के केन्द्रीय अनुसंधान और रोजगार प्रशिक्षण-सेवा संस्थान द्वारा एक पुस्तिका "हिन्दी फार ए कैरियर" प्रकाशित की गई है। उसमें हिन्दी, हिन्दी टाइप/शार्टहैंड, दूरदर्शन आकाशवाणी में उद्घोषकों, जनसंपर्क अधिकारियों, पत्रकारों आदि की नौकरी हेतु शैक्षिक योग्यता,

वेतनमान, भर्ती की विधि आदि का विस्तार से विवेचन किया गया है। यह पुस्तिका हिन्दी माध्यम से विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त लोगों के लिए मार्गदर्शिका है। इसका मूल्य मात्र 2 रु. 60 पैसे है और भारत सरकार के प्रकाशन विभाग के सभी बिक्री केन्द्रों पर उपलब्ध है। सम्भवतः इस लम्बी अवधि में पुस्तक का हिन्दी संस्करण भी प्रकाशित हो गया है।

3. इन दोनों पुस्तकों के अध्ययन से पाठकों में यह विश्वास निश्चित रूप से जगेगा कि हिन्दी माध्यम से पढ़ने वालों का भविष्य उज्जवल है। अतः इनकी जानकारी अधिक से अधिक व्यक्तियों को दी जाए। □

देवनागरी टंकण के लिए आदर्श वाक्य

श्री रमेश चन्द्र, सहायक निदेशक (हिंदी), भारतीय मानक ब्यूरो, मानक भवन, नई दिल्ली ने देवनागरी टंकण में एक ऐसा शोध कार्य किया है, जो विश्व में पहली बार हुआ है। यह शोध कार्य देवनागरी टंकण के लिए एक ऐसे आदर्श वाक्य की रचना है, जिसमें देवनागरी लिपि के सभी वर्ण, मात्राएँ आदि सम्मिलित हैं।

प्रेरणा-स्रोत

रोमन टाइपिंग के लिए प्रचलित एक वाक्य "A quick brown fox" था, परन्तु देवनागरी टंकण के लिए ऐसा कोई वाक्य उपलब्ध नहीं था। हिन्दी और हिन्दी टंकण दोनों क्षेत्रों से अविच्छिन्नतः जुड़ा होने के कारण यह कमी श्री रमेश चन्द्र को हमेशा अखरती रही। वर्ष 1982 में भारत सरकार के राजभाषा विभाग के अधीन हिन्दी शिक्षण योजना में सहायक निदेशक (हिन्दी टंकण एवं आशुलिपि) के रूप में भर्ती हो कर जब वे हिन्दी टंकण एवं आशुलिपि पढ़ाने लगे, तो प्रशिक्षार्थियों ने देवनागरी टंकण के लिए ऐसे वाक्य की विद्यमानता के बारे में पूछा, जिसका उत्तर उनको दुःखी मन से "नहीं" में देना पड़ा। परन्तु यह उत्तर देकर अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं कर ली, वे इस कार्य में लग गए। अंततः उन्होंने एक वाक्य की रचना कर डाली, जिसका मार्च 1989 के दौरान समाचार माध्यमों और विभिन्न पत्रिकाओं में व्यापक प्रचार हुआ। हालांकि इस वाक्य के बारे में कोई टीका-टिप्पणी नहीं हुई थी, फिर भी वह वाक्य उन्हें संतुष्ट नहीं कर सका और उन्होंने कोई ऐसा दूसरा वाक्य बनाने का मन बना लिया, जिसकी रचना का आधार ऐतिहासिक हो तथा जो अभ्यास करने में संक्षिप्त और सरल हो। कई वर्षों की सतत मेहनत के परिणामस्वरूप जो विलक्षण, आदर्श वाक्य तैयार किया, वह इस प्रकार है:

शोध वाक्य

"वली पार्थ ऋषि से विद्या एवम् दाऊ भाई (द्वारकाधीश श्रीकृष्ण) से गूढ़ ज्ञान लेकर कुरुक्षेत्र में जूझ पड़े और पांच छः हठी/प्रखर योद्धा मौत के घाट उतारे...।"

इस वाक्य के शोध का विज्ञापन दिनांक 4 दिसम्बर, 1991 को सम्पूर्ण भारत में हुआ। उस दिन निम्नलिखित समाचार-पत्रों में यह समाचार छपा: हिन्दुस्तान (नई दिल्ली), नवभारत टाइम्स (नई दिल्ली), दैनिक ट्रिब्यून (चंडीगढ़), पंजाब केसरी (दिल्ली) आज (इलाहाबाद), अमर उजाला मुरादाबाद, अमर उजाला (बरेली) देशबन्धु (रायपुर), देशबन्धु (बिलासपुर) देशबन्धु (जबलपुर), चौथा संसार, (इंदौर) दैनिक भास्कर (रायपुर), दैनिक भास्कर (भोपाल) नवभारत (रायपुर), नवभारत (भोपाल), राजस्थान पत्रिका (उदयपुर), दैनिक जागरण (नई दिल्ली), दैनिक जागरण (आगरा), नवभास्कर (रायपुर), नवभास्कर (इन्दौर), युगधर्म (नागपुर), दैनिक नवज्योति (कोटा), सेंटिनल (गुवाहाटी), अधिकार (जयपुर), उत्तर उजाला (नैनीताल), गांडीव (काशी), जलते दीप (जोधपुर), सन्मार्ग (कलकत्ता), राँची एक्सप्रेस (राँची), स्वदेश (ग्वालियर) तथा नवभारत (नागपुर—5 दिसम्बर, 1991), राष्ट्र टाइम्स (नई दिल्ली 15, दिसम्बर 1991), पब्लिक एशिया (नई दिल्ली, 18 दिसम्बर, 1991) और सान्ध्य वीर अर्जुन (नई दिल्ली 19 दिसम्बर, 1991) इनमें से अधिकांश समाचार-पत्रों ने यह समाचार मुखपृष्ठ पर प्रकाशित किया। लगभग सभी समाचार-पत्रों ने इसे बाक्स-आइटम बना कर प्रकाशित किया। लिम्का बुक आफ रिकार्ड्स, जो रिकार्ड दर्ज करने की एक भारतीय पुस्तक है, भी इसे अपने 1992 के संस्करण में प्रकाशित करने जा रही है।

वाक्य की विशेषता

इस शोध वाक्य में देवनागरी लिपि के सभी वर्ण, मात्राएँ आदि सम्मिलित हैं। यह वाक्य गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अनुमोदित देवनागरी के मानक कुंजी-पटल पर उपलब्ध सुविधाओं को ध्यान में रखकर और वर्ण की व्यावहारिकता के आधार पर तैयार किया गया है। चूंकि इस वाक्य में देवनागरी के मानक की-बोर्ड के सभी वर्ण, मात्राएं आदि सम्मिलित हैं, अतः इस एक ही वाक्य के टाइप करने से समग्र की-बोर्ड का अभ्यास अपने आप हो जाता है। देवनागरी कुंजी-पटल पर कुछ वर्ण यथावत न हो कर उन्हें कई-कई स्ट्रोकों से टाइप करने की व्यवस्था है। उदाहरणतः अः। कुंजी-पटल पर इसे इस प्रकार टाइप किया जाता है: अ:—अ— : । आ, ई, ऐ, ओ, अ, ख, घ, ण, थ, ध, फ, भ, श, ष, ड, ढ़, आदि वर्ण भी इस प्रकार कई-कई स्ट्रोकों से टाइप किए जाते हैं। इस शोध वाक्य में इन वर्णों को बनाने वाले सभी स्ट्रोक सम्मिलित हैं। चूंकि यह वाक्य हिन्दी

टाइप का अभ्यास करने के लिए है, अतः हिन्दी टाइप करने और जानने वाला हर व्यक्ति यह आसानी से समझ सकता है कि देवनागरी कुंजी-पटल पर इस प्रकार के वर्ण किस प्रकार टाइप किए जाते हैं। दूसरे, देवनागरी कुंजी पटल पर टाइप करने की व्यवस्था नहीं है, अतः इसे वाक्य में सम्मिलित नहीं किया गया है। देवनागरी टाइप सीखना एक कठिन कार्य माना जाता है। यह वाक्य इस कार्य को सुकर बनाने का अब तक उपलब्ध सबसे आसान तथा सरलतम तरीका है। इस वाक्य की सहायता से एक घंटा प्रतिदिन अभ्यास करके केवल 15 दिन में कामचलाऊ हिन्दी टाइप सीखी जा सकती है अभ्यास करने के लिए पहले इसके हर शब्द की पाँच-पाँच दस-दस लाइनें टाइप की जाएं। सभी शब्दों का इस प्रकार अलग-अलग अभ्यास करने के बाद इसके दो-दो शब्दों की और फिर चार-चार पांच-पांच शब्दों की लगभग दस-दस लाइनें टाइप की जाएं। पन्द्रह दिनों के बाद हिन्दी टाइप का कामचलाऊ ज्ञान हो जाने के बाद इसी वाक्य का अभ्यास करके पन्द्रह दिनों में लगभग 25 शब्द प्रति मिनट की गति प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार यह वाक्य हिन्दी टाइप सीखने और गति बनाने वाले दोनों का अभ्यास करने का समय बचा कर उनके लिए अत्यन्त लाभदायक होगा। यह वाक्य देवनागरी टाइपराइटर की असेम्बली/मरम्मत के दौरान अथवा देवनागरी की-बोर्ड का त्वरित निरीक्षण करने तथा किसी अक्षर/शब्द में किसी करैक्टर विशेष के सटीक प्रयोग की जाँच करने में भी लाभदायक होगा। इस वाक्य में पूरा देवनागरी की-बोर्ड कवर होने के अतिरिक्त इसमें प्रायः सभी विरामादि चिह्न भी सम्मिलित है। रोमन टाइपिंग के लिए अब तक प्रचलित अंग्रेजी वाक्य में ऐसा कोई चिह्न उपलब्ध नहीं है। अंग्रेजी वाक्य के 40 करैक्टरों द्वारा 26 करैक्टर टाइप किए जाने के मुकाबले इस वाक्य के 106 करैक्टरों से 159 करैक्टर तथा सभी विरामादि चिह्न भी टाइप किए जा सकने से यह वाक्य अंग्रेजी वाक्य का खरा जवाब है।

इस वाक्य के बारे में सबसे महत्त्वपूर्ण बात है कि यह शब्दों का मात्र ऊट-पटांग संकलन न हो कर एक सार्थक भाषिक इकाई है, जिसकी रचना का आधार भारत का एक महाकाव्य है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में सरल और सुबोध हिन्दी में छोटे-छोटे शब्दों में रचा गया यह वाक्य हर व्यक्ति, चाहे वह उत्तर भारत से हो या दक्षिण भारत से, कम पढ़ा-लिखा हो या सुविज्ञ, की समझ में आसानी से आ जाता है। भारत की संस्कृति को अपनी पृष्ठभूमि में संजोए यह शोध अपनी स्मरणीयता का मनोहारी आधार प्रदान करता है। इस वाक्य में ऐतिहासिक तथ्यों को कहीं तोड़ा-मरोड़ा भी नहीं गया है। यह पाठकों के समक्ष महाभारत के एक पक्ष को सर्वदा उजागर करता रहेगा। इस वाक्य की रचना ने शोधार्थियों के समक्ष इससे भी अधिक संक्षिप्त और सरल वाक्य बनाने का मार्ग भी खोल दिया है। परन्तु यह तभी संभव है, जब शोधार्थी इसे एक चुनौती मान कर चलें, अन्यथा कुछ दिनों बाद यह कार्य यहीं का यहीं रह जाएगा। कोई भी पहला अन्वेषण मील का पत्थर न बनने दिया जाए; क्योंकि इससे विकास वहीं का वहीं रुक जाता है। यूं यह वाक्य गिनीज बुक में दर्ज होने लायक है, परन्तु इसका उस पुस्तक में दर्ज होना उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, जितना महत्त्वपूर्ण इसका शोध था। बात तो यह है कि देवनागरी टंकणार्थियों को अब ऐसे वाक्य से और अधिक वंचित नहीं रहना पड़ेगा। यह कार्य धनोपार्जन से आँख मूंद कर केवल जनहित में किया गया है। आवश्यकता इस बात की है कि केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारें अपने शिक्षा विभागों तथा तकनीकी शिक्षा विभागों के माध्यम से इसका व्यापक प्रचार करें, ताकि इससे ज्यादा से ज्यादा लोगों को लाभ हो सके। अतः देवनागरी टंकण-कर्म के इतिहास में हुए इस विकास को अनदेखा न किया जा कर इसे गम्भीरता से लिया जाए।

पाठकों से अनुरोध है कि यदि वे वाक्य की सम्पूर्णता के बारे में कुछ जानना चाहें, तो पहले हिन्दी टाइप जानने वाले किसी व्यक्ति से सम्पर्क कर लें, ताकि उनकी शंकाओं का तुरन्त समाधान हो सके।

संपर्क सूत्र :

घर का पता :

श्री रमेश चन्द्र,
सुपुत्र श्री हरि किशन, गाँव खेंटावास,

डाकघर फरूखनगर, तह. व जिला गुड़गाँव,
हरियाणा–123506

कार्यालय का पता :

सहायक निदेशक (हिन्दी), भारतीय मानक ब्यूरो
मानक भवन, नई दिल्ली–110002

□

राजभाषा प्रोत्साहन/पुरस्कार समारोह

कार्यालय अपर पुलिस उप-महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, केरिपु बल, पल्लापुरम् तिरुअनंतपुरम् केरल–695 316 (केरल)

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दक्षिण/पश्चिम) कोच्ची (केरल) द्वारा ग्रुप केन्द्र कार्यालय को, गत वर्ष 1991 में राजभाषा संबंधी आदेशों के कार्यान्वयन तथा कार्यालयीन कामकाज में हिन्दी के प्रयोग में वृद्धि करने के लिए कार्यालय द्वारा किए गए प्रशंसनीय कार्य के लिए "प्रशस्ति-पत्र" प्रदान किया गया, जिसे श्री वी० राधाकृष्णन मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, केरल परिमंडल एवं अध्यक्ष (तिरुअनंतपुरम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति) से ग्रुप केन्द्र के अपर पुलिस उप-महानिरीक्षक श्री महेन्द्र प्रसाद ने दिनांक 16-12-1991 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की उन्नीसवीं बैठक के दौरान समिति के सदस्य, कार्यालयों के उपस्थित प्रधानों एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों के समक्ष ग्रहण किया।

श्री वी० राधाकृष्णन्, मुख्य पोस्टमास्टर जनरल एवं समिति के अध्यक्ष और श्री राम चन्द्र मिश्र, उप निदेशक (कार्यान्वयन) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोच्ची (केरल) ने क्रमशः अपने अध्यक्षीय भाषण एवं विभिन्न कार्यालयों में हिन्दी कार्यों के समीक्षा के दौरान ग्रुप केन्द्र कार्यालय द्वारा "प्रशस्ति-पत्र" प्राप्त करने के लिए अपर पुलिस उप-महानिरीक्षक श्री महेन्द्र प्रसाद को बधाई देते हुए राजभाषा नीति को लागू करने के लिए किए गए प्रयासों की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार योजना, 1989-90 के अंतर्गत पंजाब नेशनल बैंक को प्रथम पुरस्कार

गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग), भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीयकृत बैंकों के लिए आयोजित इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार योजना के आधीन 1989-90 के लिए पंजाब नैशनल बैंक को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

पुरस्कार वितरण समारोह बृहस्पतिवार, दिनांक 28 नवम्बर, 1991 को मावलंकर हाल, नई दिल्ली में किया गया तथा पुरस्कार उप-राष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा ने वितरित किए। समारोह में गृह मंत्री श्री शंकर राव बलवंतराव चह्वाण, गृह उप-मंत्री श्री रामलाल राही तथा सचिव, राजभाषा विभाग, श्री जे०एन कौल भी उपस्थित थे। पंजाब नैशनल बैंक की ओर से पुरस्कार बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री राशिद जीलानी ने ग्रहण किया। इसके अतिरिक्त बैंक को प्रधान कार्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष को भी पुरस्कृत किया गया। उनकी ओर से यह पुरस्कार महाप्रबंधक श्री वेद प्रकाश तनेजा ने ग्रहण किया।

बैंक ऑफ बड़ौदा को, "इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड"

भारत सरकार, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा प्रवर्तित "इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार योजना" एक ऐसी प्रेरक योजना है जो बैंकों सहित सार्वजनिक क्षेत्र के सभी संस्थानों, उपक्रमों एवं सरकारी मंत्रालयों तथा विभागों को राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में प्रेरणा एवं उत्साह देती रही है।

इस योजना के अन्तर्गत बैंक ऑफ बड़ौदा को वर्ष 1989-90 के लिए द्वितीय पुरस्कार स्वरूप शील्ड प्राप्त हुई। बैंक की केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति को भी एक विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया। दिनांक 28 नवम्बर, 1991 को मावलंकर हाल, दिल्ली में गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित एक भव्य समारोह में महामहिम उपराष्ट्रपति डॉ शंकर दयाल शर्मा ने पुरस्कार वितरित किए। महामहिम उपराष्ट्रपति से पुरस्कार श्री रतन कपूर, महाप्रबन्धक (कार्मिक) ने ग्रहण किया। बैंक की केन्द्रीय राजभाषा समिति को प्राप्त पुरस्कार बैंक के दिल्ली अंचल के उप महाप्रबंधक श्री कृष्ण बंसल ने ग्रहण किया।

गुजरात रिफाइनरी राजभाषा शील्ड वितरण समारोह

"किसी भी राष्ट्र के विकास में भाषा की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।" यह उद्गार गुजरात रिफाइनरी द्वारा आयोजित राजभाषा शील्ड वितरण समारोह में कार्यकारी निदेशक श्री ए०पी चौधरी ने व्यक्त किए। पूरे देश में इंडियन आयल' की अपनी अलग प्रोत्साहन योजना है जिसके तहत तीन महीने में 2500 शब्द लिखने वाले प्रत्येक कर्मचारी को रु० 200 की नकद राशि प्रोत्साहन के तौर पर दी जाती है, इसके अलावा अनुमोदकों को भी इतनी राशि दी जाती है। इसके साथ-साथ वार्षिक मूल्यांकन के

आधार पर प्रतिवर्ष यूनिट स्तर पर वर्ष में सर्वाधिक शब्द लेखकों/अनुमोदकों को बहुत अच्छी शील्ड प्रदान की जाती है। वर्ष 1990-91 के लिए सर्वाधिक शब्द लिखने के लिए कन्नड़ भाषी दूरभाष प्रचालक श्री के०एम० कुलकर्णी, लेखाधिकारी श्री ईश्वर दवे सर्वाधिक शब्द अनुमोदन के लिए श्री के०जी० करगुप्पी, उप प्रबंधक (वित्त) एवं श्री पटेल गुणता नियंत्रण अधिकारी को दी गई। समारोह में गुजरात विश्वविद्यालय के आचार्य महावीर सिंह चौहान को मुख्य अतिथि के तौर पर आमंत्रित किया गया। श्री चौहान ने इस अवसर पर कहा कि जबसे सरकारी प्रतिष्ठानों के अंतर्गत राजभाषा अनुभागों की स्थापना हुई है तबसे निश्चित ही राजभाषा हिन्दी के विकास में आशातीत वृद्धि हुई है। समारोह में हिन्दी पखवाड़े के अतर्गत कर्मचारीवर्ग के लिए आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं अनुवाद, टिप्पण प्रारूप लेखन, कविता, निबंध आदि से संबंधित विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र भी दिए गए। इसके साथ-साथ हिन्दी कार्यशाला (9-12-91 से 11-12-91) के प्रतिभागियों को भी शब्दकोश एवं प्रमाणपत्र दिए गए।

टाउनशिप की महिलाओं के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं से संबंधित पुरस्कार वितरण समारोह टाउनशिप में किया गया। विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र श्रीमती यू०एस० प्रसाद ने दिए। इस अवसर पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किया गया।

कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डॉ. माणिक मृगेश ने किया।

केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, चण्डीगढ़ अंतः बैंक वाद विवाद एवं वाक् स्पर्धा

सभी बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं के कर्मचारियों के लिए अन्तर-बैंक वाद-विवाद एवं वाक स्पर्धाओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताएं दिनांक 28-08-1991 को की गई जिनमें विभिन्न बैंकों के लगभग 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

समारोह की अध्यक्षता अंचल के सहायक महा प्रबन्धक श्री वी०वी० कामत ने की। उन्होंने कहा "प्रतिभागियों को खिलाड़ी की भावना से प्रतियोगिता में भाग लेना चाहिए। हम चाहते हैं कि राजभाषी हिंदी केवल नियमों, अधिनियमों तक ही सीमित न रह कर अपना वास्तविक आधार बनाकार विकसित हो। इसी उद्देश्य से बैंक द्वारा 15 अगस्त से 14 सितम्बर तक हिन्दी मास का आयोजन किया जा रहा है।"

दैनिक ट्रिब्यून के सह सम्पादक श्री वेद बंसल, आकाशवाणी चण्डीगढ़, के प्रोग्राम एक्जीक्यूटिव श्री भूपिन्द्र सिंह व राजकीय उच्च विद्यालय सैक्टर 31 चण्डीगढ़ के प्राचार्य श्री एस०पी० अरोड़ा निर्णायक थे।

संचालन करते हुए राजभाषा अधिकारी श्री एस०सी० गौड़ ने कहा "प्रत्येक प्रतिभोगी को निश्चित रूप से विजेता के रूप में प्रथम आने के लिए पूरे प्रयास करने चाहिए। आप सभी को अपनी वक्तृत्व कला का प्रदर्शन करने का समान अवसर दिया जा रहा है। हमारी निष्ठा इस बात में निहित रहनी चाहिए कि राजभाषा हिन्दी हमारे विशाल देश की शान है।"

प्रतियोगिता के लिए वर्तमान परिस्थितियों से संबंधित ज्वलन्त विषय चुने गए थे जो कि निम्नानुसार थे :—

वाद विवाद प्रतियोगिता

1. ऋण बैंकिंग उद्योग के लिए निजीकरण ही सर्वोत्तम इलाज है।

वाक् स्पर्धा प्रतियोगिता

1. अपनी राष्ट्रभाषा के अभाव में राष्ट्र गूंगा है।

उक्त विषयों पर सभी प्रतिभागियों ने बेहद उत्साह से अपने मौलिक विचार प्रस्तुत किए। प्रत्येक प्रतिभागी अपने में बेजोड़ था। वक्तृत्व शैली रोमांचक व उद्वेलित करने वाली थी। उक्त प्रतियोगिताओं का परिणाम निम्नलिखित रहा :—

वाद विवाद प्रतियोगिता :—

1. श्री विनोद कुमार, पंजाब एण्ड सिंध बैंक, प्रथम
2. श्री अशोक अग्रवाल, केनरा बैंक, द्वितीय
3. श्री आत्मजीत सिंह, पंजाब एंड सिंध बैंक, तृतीय

वाक् स्पर्धा प्रतियोगिता :—

1. श्री विनोद कुमार, पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रथम
2. श्री आत्मजीत सिंह, पंजाब एंड सिंध बैंक, द्वितीय
3. श्री अशोक अग्रवाल, केनरा बैंक, तृतीय

बैंक के अधिकारी श्री एम०एल० कौशिक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ अविस्मरणीय समारोह का समापन हुआ।

पंजाब नैशनल बैंक क्षेत्रीय कार्यालय, हिसार

पंजाब नैशनल बैंक हिसार को प्रधान कार्यालय की राजभाषा शील्ड से सम्मानित।

वर्ष 1990-91 की अखिल पंजाब नैशनल बैंक राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता में क्षेत्रीय कार्यालय हिसार को तृतीय स्थान के अन्तर्गत शील्ड व प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। यह पुरस्कार बैंक के अध्यक्ष एवं कार्यकारी निदेशक श्री रशीद जिलानी ने दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में श्री रूपचन्द जिन्दल क्षेत्रीय प्रबंधक तथा श्री महीपाल यादव राजभाषा अधिकारी को प्रदान किए।

पंजाब नैशनल बैंक क्षेत्रीय कार्यालय, हिसार

पंजाब नैशनल बैंक के क्षेत्रीय कार्यालय हिसार को अखिल हिसार नगर राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता में प्रथम स्थान

वर्ष 1990-91 की अखिल हिसार नगर राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता में क्षेत्रीय कार्यालय हिसार को हिसार स्थित सभी केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों, निगमों, कम्पनियों, सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। बैंक के वरिष्ठ प्रबंधक श्री शिव कुमार टुटेजा तथा राजभाषा अधिकारी श्री महीपाल यादव ने एक भव्य समारोह में शील्ड व प्रमाण पत्र प्राप्त किए। यह उल्लेखनीय उलपब्धि है।

ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी को राजभाषा शील्ड

भारतीय साधारण बीमा निगम द्वारा जनवरी 1991 में अध्यक्षीय राजभाषा शील्ड आरम्भ की गई। यह शील्ड निगम की चारों सहायक कम्पनियों में हिन्दी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने वाली कम्पनी को प्रतिवर्ष दी जाती है।

"ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी" में गत वर्ष अन्य बीमा कम्पनियों की तुलना में सर्वाधिक कार्य हिन्दी में किया गया। इस कार्य के लिए उन्हें भारतीय साधारण बीमा निगम के अध्यक्ष की अध्यक्षीय राजभाषा शील्ड नई दिल्ली में आयोजित समारोह में भारतीय साधारण बीमा निगम के अध्यक्ष श्री एस०वि० मणि ने ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी के अध्यक्ष-व-प्रबंधक निदेशक श्री जी०वी० राव को प्रदान की।

शील्ड वितरण समारोह के उपरांत कम्पनी के स्टाफ द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। कम्पनी के अध्यक्ष-व-प्रबन्ध-निदेशक श्री जी०वी० राव और निदेशक एवं महाप्रबंधक श्री ब्रजराज ने कहा कि हमें अपना अधिक से अधिक कामकाज हिन्दी में ही करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हिन्दी में कार्य करने वाले कर्मचारियों के लिए कम्पनी ने हिन्दी में कार्य करने वाले कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के लिए नकद पुरस्कार योजना भी आरम्भ की हुई है। इस योजना का अधिक से अधिक कर्मचारियों को लाभ उठाना चाहिए।

भारतीय साधारण बीमा निगम के अध्यक्ष श्री एस०वी० मणि ने कहा कि जिस तेजी से "ओरिएण्टल इंश्योरेंस" ने अपने बीमा व्यवसाय में प्रगति की है उसी प्रकार भारत सरकार की राजभाषा नीति के पालन के साथ बीमा व्यवसाय को और अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए उसने जनभाषा को अपनाया है।

भारतीय रिजर्व बैंक राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता पुरस्कार 1989-90

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा हर वर्ष की जाने वाली "रिजर्व बैंक राजभाषा शील्ड" प्रतियोगिता बैंकिंग उद्योग में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही हैं। इस प्रतियोगिता के मूल्यांकन मानदंडों में राजभाषा अधिनियम, नियम और वार्षिक कार्यक्रम की प्रमुख आवश्यकताओं का समावेश होता है। जिसके कारण यह प्रतियोगिता समग्र रूप से हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने में अत्यन्त प्रेरणादायक आधार भूमि तैयार करती है। एक उच्च स्तरीय मूल्यांकन समिति द्वारा इस प्रतियोगिता के लिए प्राप्त रिपोर्टों का मूल्यांकन किया जाता है। इस मूल्यांकन समिति में गृह मंत्रालय, वित्त मंत्रालय और भारतीय रिजर्व बैंक के वरिष्ठ अधिकारी होते हैं।

बैंक आफ बड़ौदा को इस प्रतियोगिता में, वर्ष 1989 के लिए "क" "ख" तथा "ग" तीनों ही क्षेत्रों में प्रतिष्ठा पूर्ण पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव मिला है। बैंक को "ग" क्षेत्र में द्वितीय पुरस्कार कप और प्रमाण-पत्र "क" क्षेत्र में तृतीय पुरस्कार-कप और प्रमाण-पत्र तथा "ख" क्षेत्र में चतुर्थ पुरस्कार प्रमाण पत्र प्राप्त करने का श्रेय मिला है।

दिनांक 29 जुलाई, 1991 को भारतीय रिजर्व बैंक की ओर से बंबई में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में विजेता बैंकों को पुरस्कार दिए गए। बैंक के तत्कालीन कार्यकारी निदेशक श्री जे०एन० दौलतजादा ने भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर श्री एस. वेंकिटरमणन् से पुरस्कार ग्रहण किया।

"क" "ख" और "ग" तीनों क्षेत्रों में बैंक को प्राप्त हुए पुरस्कार विभिन्न स्तरों पर कार्यरत स्टाफ सदस्यों द्वारा हिन्दी में प्रयोग को बढ़ाने के लिए किए गए प्रयासों का सुपरिणाम है।

भागलपुर क्षेत्रीय कार्यालय में हिन्दी में पत्र-लेखन प्रतियोगिता

बैंक आफ इंडिया, भागलपुर क्षेत्रीय कार्यालय के स्टॉफ सदस्यों हेतु हिन्दी में पत्र-लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सभी स्टाफ-सदस्यों ने बड़ी रुचि के साथ भाग लिया एवं क्षेत्रीय कार्यालय के श्री के०डी० यादव ने प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं श्री निरंजन कुमार घोष द्वितीय रहे। यह आयोजन क्षेत्रीय कार्यालय के राजभाषा-कक्ष के अधिकारी श्री एस०पी० गर्ग 'सुमन' द्वारा किया गया। □

हिंदी प्रेमी श्री जे० आर महाजन

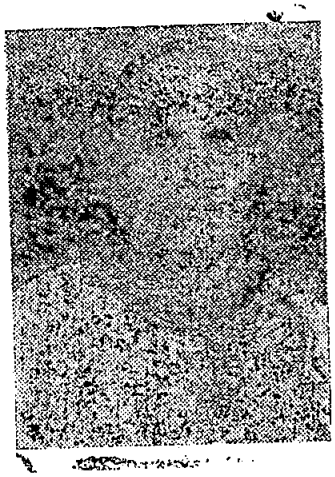

इस समय स्थानीय कार्यालय गोबिंदगढ़ (पंजाब) में मुख्य लिपिक के रूप में कार्यरत श्री जे. आर. महाजन पिछले कई सालों से अपना शतप्रतिशत कार्य हिंदी में निपटा रहे हैं। उनका कहना है कि हिंदी में काम आरम्भ करने से पहले वर्षों तक अंग्रेजी में काम करने के अभ्यस्त होने के कारण दूसरे लोगों की तरह उनके मन में भी यह झिझक थी कि सरकारी कामकाज हिंदी में निपटाना शायद सरल नहीं है परन्तु जहां चाह होती है वहां राह मिल ही जाती है। हिंदी में काम करने का मन बनाकर उन्होंने हिंदी में लिखना शुरू किया और आज उन्हें इस बात का पूर्ण विश्वास है कि सरकारी कामकाज हिंदी में निपटाना अपेक्षाकृत अधिक सरल और सुविधाजनक है।

श्री महाजन इस बीच स्थानीय कार्यालय पठानकोट, धारीवाल व गोविंदगढ़ में प्रबंधक के रूप में व निगम के क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ में विभिन्न अनुभागों में भी काम कर चुके हैं। हर जगह अपना शतप्रतिशत कार्य हिंदी में निपटा कर उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि हर सीट और हर कार्य हिंदी में सफलतापूर्वक निपटाया जा सकता है।

उल्लेखनीय है कि हिंदी में काम करने के उपलक्ष्य में श्री महाजन को निगम तथा केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् की ओर से कई बार नकद पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया जा चुका है। उनका यह कार्य हम सबके लिए अनुकरणीय है।

प्रस्तुति,

(टीकन लाल शर्मा)
हिन्दी अधिकारी
कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चण्डीगढ़

महानिदेशालय के०रि०पु० बल, नई दिल्ली

वर्ष 1990-91 के हिन्दी में टिप्पण आलेखन पुरस्कार

1990-91 के दौरान हिंदी में टिप्पण/आलेखन प्रतियोगिता दिनांक 1 अप्रैल, 1990 से 31 मार्च 1991 तक लागू की गई। इस प्रतियोगिता में लगभग 211 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लेकर सरकारी कामकाज में हिन्दी (राजभाषा) का प्रयोग बढ़ाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनके द्वारा निपटाए गए कामकाज की समीक्षा करने पर पाया गया कि बल में लागू की गई प्रतियोगिता से हिंदी के प्रयोग की दिशा में वस्तुतः बहुत ही उत्साहवर्द्धक परिणाम हासिल हुआ है। इससे प्रेरित होकर बल के कार्यालयों में औसतन 60 प्रतिशत से भी अधिक कामकाज हिंदी में होने लगा है। प्रतियोगियों ने सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देकर पूरे बल को गौरवान्वित किया है। बल के कार्यालयों में प्रतियोगियों ने 20 हजार से 2 लाख तक शब्द हिंदी में लिखे। प्रतियोगियों का लगभग 46,700/- रुपये के नकद इनाम दिये गये। महानिदेशालय के निम्नलिखित प्रतियोगियों को प्रथम स्थान प्राप्त करने पर पांच-पांच सौ रुपये का पुरस्कार विजेता घोषित किया गया है:—

(1) श्री कुलदीप नारायण मेहरा, उपनिरीक्षक

(2) श्री ओम प्रकाश शर्मा, उपनिरीक्षक

प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों के अतिरिक्त 50 हजार से अधिक हिंदी शब्द प्रयोग करने वाले प्रतियोगियों को भी उत्साह तथा रुचि बनाए रखने के लिए 100-100 रुपये के पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया है।

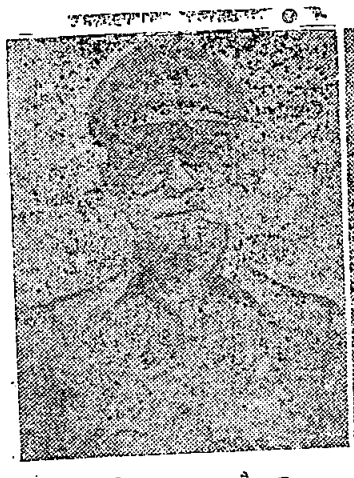

कुलदीप नारायण मेहरा

ओम प्रकाश शर्मा

संस्मरण—हिन्दी में टिप्पणियां

□हरीं बाबू कंसल*

मैं जब (1970/74 में) आकाशवाणी महानिदेशालय में उप निदेशक (प्रशासन) के पद पर कार्यरत था तब मेरी कई फाइलें उप महानिदेशक (प्रशासन) तथा मुख्य इंजीनियर के माध्यम से होती हुई महानिदेशक के पास जाती थीं। काफी समय उप महानिदेशक (प्रशासन) के पद पर श्री आर. बालकृष्णन, आई.ए.एस., मुख्य इंजीनियर श्री वैंकटरमैया, तथा महानिदेशक श्री एस. के. मुखर्जी थे। उनके पास जाने वाली कई फाइलों पर टिप्पणियां हिंदी में लिखी जाती थीं। यद्यपि उपर्युक्त तीनों अधिकारी हिंदीतर भाषी थे, उनमें से कभी किसी ने हिंदी में टिप्पणियां लिखी हुई फाइलें वापस नहीं लौटाई। अपनी ओर से हम इस बात का ध्यान रखते थे कि टिप्पणी टाइप की हुई हो जिससे किसी को पढ़ने में असुविधा न हो। एक और बात का ध्यान रखा जाता था, कहीं-कहीं कर्मचारीगण विशेष महत्त्व के शब्द सामने कोष्ठक में उसका अंग्रेजी पर्याय लिख देते थे। ऐसा करने की आवश्यकता पूरे पृष्ठ की टिप्पणी में 3-4 स्थानों से अधिक नहीं पड़ती थी। उससे उपर्युक्त अधिकारी टिप्पणियों का विषय आसानी से समझ पाते थे और हिंदी में कामकाज बढ़ाने की दृष्टि से उनका सहयोग मूल्यवान सिद्ध होता था।

श्री वैंकटरामैया से पूर्व श्री एस. अय्यर मुख्य इंजीनियर थे। मैं जब कभी सरकारी काम से उनके पास जाता था वह सदा मुझसे बातचीत हिंदी में ही करते थे। मैंने कभी उनसे आग्रह नहीं किया कि वे मुझसे हिंदी में बात करें। वह मुझसे वरिष्ठ थे, ऐसा आग्रह कर भी नहीं सकता था। श्री मुखर्जी से पहले श्री अशोक सेन महानिदेशक थे। उन्होंने भी सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन दिया।

श्री बालकृष्णन् के बाद श्री वी. एस. राव, आई.ए.एस. उप महानिदेशक (प्रशासन) के पद पर आए। वह तेलुगु भाषी थे और उन्हें हिंदी पढ़ने का अधिक अभ्यास नहीं था। फिर भी उन्होंने हिंदी टिप्पणियों का स्वागत किया तथा यह बात कही कि हिंदी टिप्पणियों की फाइलें होने से उन्हें धीरे-धीरे हिंदी का अच्छा अभ्यास हो जाएगा।

उसी अवधि में श्री सुब्रमणियन् आकाशवाणी महा-निदेशालय में स्टेशन इंजीनियर के पद पर थे। उनका कार्य तकनीकी प्रकार का था। फिर भी उन्होंने अपना निजी पत्र व्यवहार का काफी काम हिंदी में करना आरम्भ कर दिया था। वह कभी-कभी आकाशवाणी के स्टाफ ट्रेनिंग स्कूल में तकनीकी विषयों पर भाषण भी देते थे। उन्होंने कुछ विषयों के भाषण हिंदी में ही दिए। एक बार उन्होंने इस बात की भी इच्छा प्रकट की कि वे आकाशवाणी से संबंधित कुछ विषयों पर एक पुस्तक हिंदी में लिखेंगे।

*ई-9/23, बसन्तविहार, नई दिल्ली-110057

श्री दिनेश चन्द्र भट्टाचार्य उप मुख्य-इंजीनियर के पद पर थे, यथा समय अपर मुख्य इंजीनियर बने और कुछ वर्ष बाद मुख्य इंजीनियर। वह भी हिंदी में लिखी टिप्पणियों का स्वागत करते थे और स्वयं भी अनेक फाइलों पर अपनी टिप्पणियां हिंदी में लिखते थे। बातचीत अधिकतर हिंदी में करते थे। □

पारादीप पत्तन न्यास

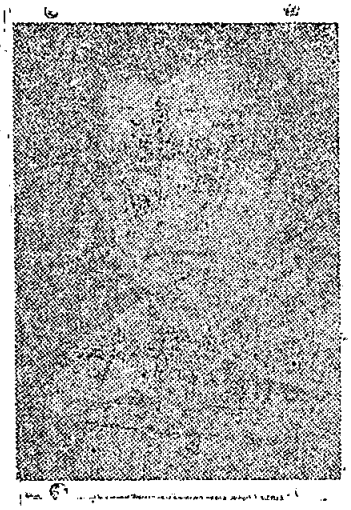

श्री पी० पद्मनाभन्

श्री पी० पदमनाभन् पारादीप पत्तन न्यास में मुख्य इंजीनियर के पद पर कार्यरत हैं। वे अपना सरकारी कार्य राजभाषा हिन्दी में कर रहे हैं जिससे उनके अधीनस्थों एवं अन्य कर्मचारियों को भी हिन्दी में अपना काम-काज करने की प्रेरणा मिलती है। तकनीकी क्षेत्र में वरिष्ठ पद पर कार्य करते हुए श्री पदमानाभन् की राजभाषा के प्रति निष्ठा निश्चय ही अनुकरणीय है।

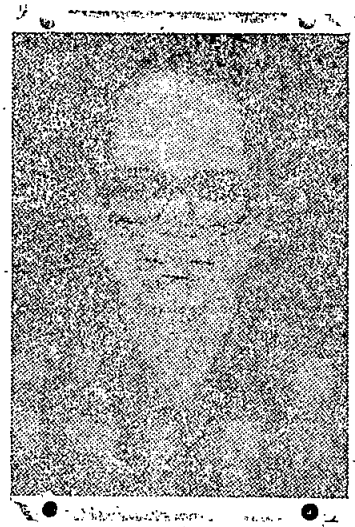

श्री एम० राजेश्वर राव

दक्षिण भारत के निवासी श्री एम० राजेश्वर राव पारादीप पत्तन न्यास में मुख्य अभियंता के निजी सचिव हैं। अहिन्दी भाषी होते हुए भी राजभाषा हिन्दी के प्रति वे

समर्पित हैं और अपना सरकारी काम-काज हिन्दी में करते हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रति श्री राव की ऐसी लगन और निष्ठा निश्चय ही सहकर्मियों के लिए अनुकरणीय है।

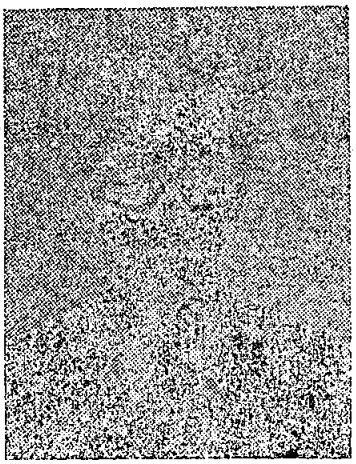

श्री अशोक कुमार जेना

उड़ियाभाषी श्री अशोक कुमार जेना पारादीप पत्तन न्यास के संपदा स्कंध में कार्यरत हैं। अपने दैनिक सरकारी कामकाज में वे हिन्दी का प्रयोग करते हैं जिससे उनके सहकर्मियों को भी अपना सरकारी काम-काज हिन्दी में करने की प्रेरणा मिलती है।

प्रशिक्षण

केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान,

राजभाषा विभाग, नई दिल्ली

विषय:—फरवरी, 1992 की मासिक रिपोर्ट

केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान नई दिल्ली द्वारा फरवरी 1992 में निम्नलिखित पाठ्यक्रमों का आयोजन किया गया। विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षण लेने वाले प्रतिभागियों की संख्या, उनके नाम के सामने दर्शाई गई है:—

क्र.सं.	पाठ्यक्रम का नाम	कार्यदिवस	प्रतिभागी
1.	प्रबोध गहन हिन्दी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	25	06
4.	कार्यशाल गहन हिन्दी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	5	77
5.	टंकण गहन हिन्दी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	40	
6.	आशुलिपि गहन हिन्दी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	80	
7.	हिन्दी प्राध्यापक/सहायक निदेशक के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम		

केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण उपसंस्थान, बम्बई

1.	प्रबोध गहन हिन्दी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	25	32
5.	टंकण गहन हिन्दी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	40	

केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण उपसंस्थान, कलकत्ता

	गहन हिन्दी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	25	17

केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण उपसंस्थान, बेंगलूर

1.	प्रबोध गहन हिन्दी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	25	33

केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान,
राजभाषा विभाग, नई दिल्ली

विषय:—जनवरी 1992 की मासिक रिपोर्ट

केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान नई दिल्ली द्वारा जनवरी 1992 में निम्नलिखित पाठ्यक्रमों का आयोजन किया गया। विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षण लेने वाले प्रतिभागियों की संख्या, उनके नाम के सामने दर्शाई गई है:—

क्र.सं.	पाठ्यक्रम का नाम	कार्यदिवस	प्रतिभागी
3.	प्राज्ञ गहन हिन्दी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	15	15
4.	कार्यशाला गहन हिन्दी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	5	59
5.	टंकण गहन हिन्दी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	40	37
6.	आशुलिपि गहन हिन्दी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	80	32
7.	हिन्दी प्राध्यापक/सहायक निदेशक के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम		

केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण उपसंस्थान, बम्बई

1.	प्राज्ञ गहन हिन्दी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	15	57
2.	टंकण गहन हिन्दी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	40	11

केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण उपसंस्थान, कलकत्ता

4.	प्राज्ञ गहन हिन्दी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	15	147

केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण उपसंस्थान, बेंगलूर

1.	प्राज्ञ गहन हिन्दी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	15	75

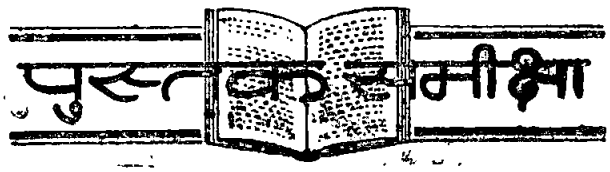

केन्द्रीय भर्ती परीक्षाओं हिन्दी-कितनी बढ़ी, कितनी अटकी

लेखक—श्री जगन्नाथ मूल्य : तीन रुपये

प्रकाशक : केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, एस बाई 68, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली।

प्रायः कहा जाता है कि नौकरी पाने के लिये अंग्रेजी माध्यम आवश्यक है, अतः युवकों को अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। इससे हिन्दी माध्यम से पढ़ने वालों के मन में कुण्ठा होती है।

प्रस्तुत पुस्तक उस कुण्ठा को दूर करके हिन्दी माध्यम से पढ़ने वालों के मन में विश्वास जगाती है।

लेखक ने बड़े परिश्रम से केन्द्र सरकार की विभिन्न भर्ती परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम से परीक्षाओं के विकल्प के विषय में पुस्तक में बहुमूल्य जानकारी एकत्र करके युवा पीढ़ी का मार्गदर्शन किया है और उन्हें भ्रांतियों से बाहर निकाला है।

छोटे बच्चों के माताओं-पिताओं को भी यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए क्योंकि वे अपने बच्चों के भविष्य के प्रति चिन्तित रहते हैं।

हिन्दी माध्यम के साथ-साथ यह पुस्तक शिक्षितों के लिए रोजगार के संबंध में अनेक सूचनाएं देती है। इस पुस्तक के द्वारा लेखक ने उल्लेखनीय जन सेवा की है।

—डा० कृष्ण लाल
आचार्य एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

हिंदी-अंग्रेजी कहावत–कोश

संपादक : डॉ० आलोक कुमार रस्तोगी

प्रकाशक : प्रवीण प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली-110030

मूल्य : रु० 75

कहावतें और मुहावरे हिन्दी भाषा के हों या अन्य भाषाओं के, भाषा की प्रारम्भिक अवस्था बताते हैं। हिन्दी में कोशों की परम्परा भी पुरानी ही है। भारत में शब्द शक्ति का महत्त्व मन्त्र और तन्त्र दोनों में ही स्वीकार किया गया है। प्राकृत और संस्कृत में व्याकरण की समृद्धि इस दिशा में एक उज्जवल अतीत सौंपती है। हिन्दी में इस परम्परा का प्राचीन स्वरूप देशज भाषाओं के मूल में कार्यरत प्राकृतों के व्याकरण ग्रन्थों और उनकी शब्द-व्युत्पत्ति-प्रक्रिया से जाने जाते रहे हैं। देशज प्रयोगों की भाषा लौकिक हिन्दुस्तानी को ध्यान में रखकर सर्व प्रथम जे० फर्गुसन ने 1773 ई० में रोमनलिपि में अंग्रेजी–हिन्दुस्तानी कोश प्रकाशित किया था।

हिन्दी में बहुभाषी कोशों की भी एक लम्बी परम्परा है। मुंशी देवी प्रसाद, वि०क्र० धुरन्दर, डी०एफ०एक्स० डायस, जॉन गिलक्राइस्ट, एफ० ग्लैडविन, भवनाथ मिश्र, नीलकण्ठ प्रसाद, सतेन्द्रनाथ सेन आदि अनेक कोशकारों ने हिन्दी में बहूभाषी कोश तैयार किए।

भारत की स्वतन्त्रता के बाद राष्ट्रभाषा खड़ी बोली हिन्दी के मानक कोश भी बनाए जाने लगे (लेकिन दिन प्रतिदिन देशज बोलियों के शब्द भण्डार को यथोचित स्थान नहीं मिला)।

वर्तमान में डॉ० आलोक रस्तोगी एक ऐसे कोशकार हैं जो कोशों की परम्परा में कुछ नया कर दिखाने के इच्छुक हैं।

डॉ० रस्तोगी की मान्यता है कि "विदेशी भाषाओं के मोह में हम "चौबेजी" से "दुबेजी" बन गए हैं। अपनी भाषा उसकी प्रकृति और रवानी से दूर होते जा रहे हैं।" इस दूरी को कम करने की दिशा में ही सद्यः प्रकाशित उनकी "हिन्दी अंग्रेजी कहावत कोष" स्वतन्त्र भारत के इन्डो-एंगलियन साहित्य में भी एक महत्त्वपूर्ण चरण है।

"कहावत" शब्द स्वयं में एक पूर्ण अभिव्यक्ति देने वाला शब्द है। श्री पुष्पेन्द्र वर्णवाल के अनुसार "इसके मूल में "कथावत्" शब्द को स्वीकार किया जाने पर स्वयं ही स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी में देशज शब्दों में लोक साहित्य कभी इतना समृद्ध था कि लम्बे चौड़े कथानकों को स्मृति में रखने के लिए हमने उसके सारांश को "कथावत्" स्वीकार करने के सूत्र बना लिए और वे ही सूत्र आज कहावत के रूप में सर्वत्र पाए जाते हैं।"

"मुहावरा" शब्द भी स्वयं में एक अभिव्यक्ति के ज्ञापन का सूत्र ही है। श्री पुष्पेन्द्र वर्णवाल के कथनानुसार "मुंह आ पड़ी बातें" ही मुहावरों में बदलती गई। बहुत सी बातें हमारे जीवन में ऐसी होती हैं, जिनको कहा जाना चाहिए परन्तु सामाजिक भय से कहा नहीं जाता। फिर भी न कहे

जाते हुए भी मुंह से निकल ही जाती हैं। उन्हें कम शब्दों में मुंह आपड़ा कथ्य (ज्ञापन) ही मुहावरा कहा जाने लगा।"

कहावत हो या मुहावरा; हर भाषा में उनकी एक महत्त्व-पूर्ण भूमिका, जन-जीवन के बीच आचार संहिता के रूप में बनी रहती है।

कभी-कभी कहावतें अथवा मुहावरें भी विद्रूप हो जाते हैं परन्तु अपने आधारभूत अर्थ में उनकी भिन्नता को समाज स्वीकार नहीं करता। सीधी-सादी बात है कि मछलियां जल की अस्वच्छता को स्वच्छता प्रदान करने में प्रमुख प्राकृतिक घटक हैं। यहां तक कि यदि पानी की स्वच्छता बनाए रख पाना जब उनके लिए वैज्ञानिक कारणों से असम्भव हो जाता है, तो वे यथासम्भव अपना जल क्षेत्र बदलने का प्रयास करती हैं, अन्यथा मर जाती हैं। इसी मूल स्थिति के कारण यह ज्ञान विकसित हुआ कि बड़े तालाब को कम मछलियां स्वच्छ नहीं रख सकतीं। अतः एक प्रचलन में यह बात भी धीरे-धीरे आई कि एक मछली पूरे ताल को स्वच्छ नहीं रख पाती। अर्थ को बनाए रखकर, बाद में भूले भटके यह भी कहा जाने लगा कि एक मछली तो पूरे ताल को गंदा ही रखती है। और अब यह कहावत सर्वत्र अपने मूल अर्थ में इतनी विकृत अवस्था में प्रचलन में है कि कोई इस ओर ध्यान ही नहीं देता। "एक मछली सारे ताल को गन्दा कर देती है" कहावत में मछलियों की अल्प संख्या में सामर्थ्य की सिद्धि का ही लोप स्वीकार कर लिया गया है। अतः इस कहावत का मूल स्वरूप निम्न दो प्रकार से ही ज्ञापित किया जाना चाहिए (1) "एक मछली सारे ताल को तो स्वच्छ नहीं रख सकती।" (2) "एक सड़ी मछली तो सारे ताल को गन्दा कर देती है।" (देखिए हिन्दी अंग्रेजी कहावत कोश पृष्ठ-18)।

स्पष्ट और सही मुद्रण वाले इस कोश की एक विशेषता यह भी है कि एक ही हिन्दी/अंग्रेजी कहावत के अनेक अंग्रेजी/हिन्दी पर्याय भी दिए गए हैं। कागज के बढ़ते मूल्यों से प्रकाशन भी दुरूह होते जा रहे हैं, ऐसे में छात्रों की व्यय क्षमता को ध्यान में रखकर इस हिन्दी अंग्रेजी कहावत कोश का एक छात्र संस्करण भी निकाला जाना उपयुक्त होगा।

समानार्थी कहावतों व मुहावरों की 'एक में अनेक' खण्ड में पाकर अनुवाद की दिशा में अनुवादकों को सम्यक अनुवाद के लिए कुछ सहूलियत तो हुई ही है। यद्यपि मुहावरों और कहावतों का अनुवाद स्वयं में एक दुरूह स्थिति सौंपता है। फिर भी भाषा को प्रमाणपूर्ण, प्रसादयुक्त और आकर्षक बनाने में इस कोश की उपयोगिता है।

—ममता आर. गुप्ता,
बगिया, कटरा बंसीधर,
मुरादाबाद-244001.

कालीदास कथासार

लेखक : सरला शर्मा

मूल्य : 60- रु.

प्रकाशक : ई- 1/4 पेपर मिल कालोनी, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)—226001

महाकवि कालिदास भारतीय संस्कृति के महानतम कवियों एवं नाटकारों में से एक थे। उनकी कृतियां अपने सौंदर्य और काव्य रस से आज भी असंख्य साहित्य-प्रेमियों के आह्लादन तथा उन्हें आनन्द देने की क्षमता रखती है तथा तत्कालीन भारतीय परिवेश और संस्कृति के रूप में सहज रूप से दर्शाती हैं।

उनकी कृतियों की सुन्दरता एवं गुण किसी भी अनुवाद के द्वारा कम हो जाने स्वाभाविक हैं फिर भी श्रीमति सरला शर्मा ने महाकवि कालिदास की रचनाओं को सरल कहानियों के रूप में क्रमवार और अच्छी हिंदी में प्रस्तुत करके उपलब्ध कराने का यत्न किया है।

पुस्तक में वर्तनी संबंधी कुछ अशुद्धियां हैं किन्तु मुद्रण सुन्दर है। साजसज्जा और कागज भी ठीक हैं जिससे पाठक लेखन से जुड़ा रह सकता है। लेखिका ने कथा का प्रतिपाद रोचक ढंग से करके अपनी लेखक-शक्ति का परिचय दिया है।

रचना से हिंदी साहित्य की समृद्धि एवं श्रीवृद्धि में अवश्य वृद्धि होगी।

—शान्ति कुमार स्याल,
ई-43, सैक्टर-15, नोएडा-201301

पृष्ठ 25 का शेष

परिस्थितियों के घनिष्ठ संबंधों पर प्रकाश डाला। उन्होंने लखनऊ, अल्मोड़ा, दिल्ली तथा आगरा में भी अपना कुछ समय व्यतीत किया था।

ऐसे यशस्वी रूसी भारतविद्याविद् का 13 जून, 1990 को सेंट पीटर्सबर्ग में पचास वर्ष की अवस्था में तपेदिक हो जाने से देहाँत हो गया, जिन्होंने अपना समग्र जीवन भारत विषयक अध्ययन-अध्यापन में व्यतीत किया था। वे अविवाहित थे। मिनाएव की 150 वीं जयंती वर्ष पर रूसी प्राच्य अध्ययन में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका का स्वभावतः स्मरण होता है। भारतविद्या में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका का भी स्वभावतः स्मरण हो जाता है, क्योंकि उन्हें रूसी भारतविद्या को समन्वित विज्ञान के रूप में स्थापित करने वाला कहा जाता है। वह उन पुराने रूसी भारतीय सांस्कृतिक संबंधों को जारी रखने वाले महान व्यक्ति थे, जिसकी उत्पत्ति अफानासी निकितिन के दिनों में की गयी थी। □

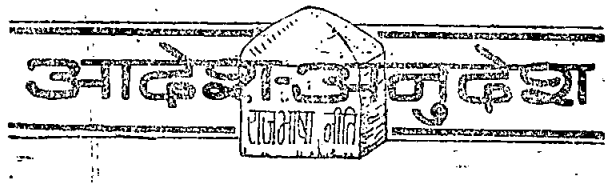

गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग का दिनांक 12 फरवरी, 1992
का पत्र सं. 14012/6/90-रा.भा.(ग)

कार्यालय ज्ञापन

विषय :—राजभाषा हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग के लिए हिन्दी आशुलिपिकों/टाइपिस्टों एवं देवनागरी टाइपराइटरों के अनुपात का निर्धारण करना।

राजभाषा विभाग के कार्यालय ज्ञापन संख्या 14012/19/90-रा.भा.(ग) दिनांक 28-1-91 में केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में आशुलिपिकों/टाइपिस्टों एवं देवनागरी टाइपराइटरों के अनुपात पर जो निर्देश दिए गये थे उन पर पुनर्विचार किया गया तथा निर्णय लिया गया कि उनके अनुपात 1-4-1992 से निम्न प्रकार से निर्धारित किये जाये :—

(क) क क्षेत्र में स्थिति मंत्रालयों/विभागों के मुख्यालयों में 45%

(ख) क क्षेत्र में स्थित शेष कार्यालयों में—75%

(ग) ख क्षेत्र में स्थित सभी कार्यालयों में—45%

(घ) ग क्षेत्र में स्थित सभी कार्यालयों में—18%

2. आशुलिपिकों/टाइपिस्टों के अनुपात के बारे में अन्य निर्देश वही रहेंगे जो इस विभाग के का.ज्ञा.सं. 14012/12/89-रा.भा.(ग) दिनांक 9 फरवरी, 1990 में दिये गये हैं। देवनागरी टाइपराइटरों के बारे में अन्य निर्देश वही रहेंगे जो इस विभाग के का.ज्ञा.सं. 1/14013/9/89-रा.भा.(क-1) दिनांक 9 फरवरी, 1990 में दिये गये है।

3. केन्द्रीय सरकार के समस्त मंत्रालयों/विभागों से अनुरोध है कि उपयुक्त निर्देशों को आवश्यक अनुपालन के लिए अपने संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों और केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व या नियंत्रणाधीन कम्पनियों/उपक्रमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि के ध्यान में ला दें।

4. इस विषय पर की गई कार्रवाई से इस विभाग को भी सूचित करें।

गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग का दिनांक 12-9-1991
का पत्र सं. 12013/1/91-रा. भा. (घ)

कार्यालय ज्ञापन

विषय : हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत ली जाने वाली हिन्दी, हिन्दी टंकण तथा आशुलिपि की परीक्षायें निजी प्रयत्नों से पास करने पर दिये जाने वाले एक मुश्त पुरस्कार को फरवरी 1991 से आगे ली जाने वाली परीक्षाओं के लिये जारी रखना।

मुझे उपर्युक्त विषय पर इस विभाग के दिनांक 22-6-1990 कार्यालय ज्ञापन संख्या 12013/1/90-रा०भा०(घ) के संदर्भ में इस विभाग के 21 मई, 1977 कार्यालय ज्ञापन संख्या 12013/3/76-रा०भा० (घ), कार्यालय ज्ञापन संख्या 12011/5/83-रा०भा० (घ) दिनांक 29-10 1984 व कार्यालय ज्ञापन संख्या 12011/4/87-रा०भा० (घ) दिनांक 11-7-89 में दी गई शर्तों तथा दरों के अनुसार फरवरी 1991 से जनवरी, 1992 तक की अवधि के लिये एक मुश्त पुरस्कार जारी रखने के लिये राष्ट्रपति जी की स्वीकृति सूचित करने का निदेश हुआ है।

2. जहां तक भारतीय लेखा परीक्षा विभाग के कर्मचारियों का सम्बन्ध है, ये आदेश भारत के नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक की सहमति से जारी किये जा रहे है।

3. इसे वित्त मंत्रालय (व्यय विभाग) के दिनांक 30-8-1991 यू०ओ० नं० 1693/ई. III/91 के तहत दी गई सहमति से जारी किया गया है।

4. यह कार्यालय ज्ञापन सभी सम्बन्धितों के ध्यान में ला दिया जाये।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद नई दिल्ली में हिंदी दिवस समारोह में बाएं से—श्रीमती सुशीला रोहगती, वरि. हिंदी अधिकारी, डा. (श्रीमती) गौ.वे. सत्यवती, वीर. उप महानिदेशक डा. बद्री नाथ सक्सेना, वरि. उप महानिदेशक, श्री एम. लक्ष्मीनारायण, वरि. उप महानिदेशक (प्रशा.), श्री प्रेम बहादुर सक्सेना, वित्त सलाहकार, श्री दिनेश चन्द्र त्रिपाठी हिंदी अधिकारी।

दूरदर्शन केन्द्र, हैदराबाद में हिंदी दिवस समारोह में भाषण दे रहे हैं मुख्य अतिथि डा.एस.के. वर्मा, उनके दाएं हैं केन्द्र के अधीक्षक अभियन्ता श्री योगेश्वर प्रताप तथा बांए श्री टी.वी. राघवाचारी, सहायक केन्द्र निदेशक।

परिवहन एवं डीजल संगठन में "स्पेस" सेमिनार के अवसर पर उद्घाटन भाषण करते हुए श्री श्रीकृष्ण गुप्ता मुख्य अधीक्षक (लोको एवं वैगन)।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

"हिन्दी ने, जिसकी एक बड़ी समृद्ध साहित्यिक परम्परा रही है, यह भी प्रमाणित कर दिया है कि वह अपने आपको बदलती हुई आवश्यकताओं के अनुसार ढाल सकती है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा प्रशासन जैसे क्षेत्रों में हिन्दी के बढ़ते हुए प्रयोग ने इस भाषा की बहुमुखी क्षमता को प्रमाणित कर दिया है। पिछले कई वर्षों से यह स्पष्ट हो गया है कि हिन्दी का व्यापक पैमाने पर प्रयोग किया जा सकता है और यह संचार एवं अभिव्यक्ति का एक प्रभावी माध्यम है।"

—नरसिंह राव
प्रधान मंत्री, भारत

("इस्पात भाषा भारती के अक्टूबर-दिसंबर, 1991 के अंक से साभार)

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार के लिए श्री रणजीत कुमार सेन, अनुसंधान अधिकारी द्वारा नई दिल्ली - 110003 से प्रकाशित तथा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय रिंग रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित, 1992.